संगीताञ्जलि

द्वितीय पुष्प

प्रथम कली

लेखक और प्रकाशक—

संगीत मार्तण्ड, संगीत महामहोदय, संगीत सम्राट्

पं० ओम्कारनाथ ठाकुर

कुलगुरु
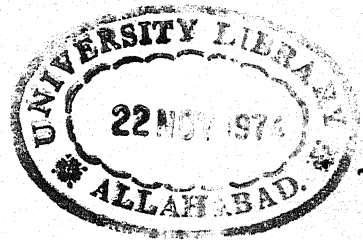
श्री संगीत भारती

काशी विश्वविद्यालय

बनारस।

प्रथम आवृत्ति

अप्रिल १९५५

पुस्तक मिलने का पता—
[illegible]

मूल्य ५)

प्राप्तिस्थानः—

पं० ओम्कारनाथ ठाकुर
कुलगुरु
श्री संगीत भारती,
काशी विश्वविद्यालय
बनारस।

मुद्रक—अमलकुमार वसु, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस ब्रांच।

अनुक्रमणिका

अकारादि क्रम से गीतों की सूची

मातुश्री झवेरबा गौरीशंकर ठाकुर

यदि कहीं स्वर्ग है, तो वह माँ की गोद में है।
यदि कहीं अमृत है, तो वह माँ के अंचल में है।
यदि कहीं भूति है, तो वह माँ के चरणों में है।

अपार आदर और निःसीम श्रद्धा के साथ
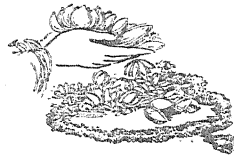
—ओम्कारनाथ ठाकुर

प्राक्कथन

प्राचीन-परंपरानुसार तो जो विद्यार्थी गुरुमुख से सुन कर ही शिक्षा ग्रहण कर सकते थे, उन्हीं के लिये संगीत-शिक्षा का मार्ग प्रशस्त था। किन्तु अधुना इस दैवी विद्या का सभी लाभ उठा सकें इस दृष्टि-बिंदु से विद्यार्थियों का क्रम-विकास सोचा गया और बरसों के अनुभव के बाद जो निष्कर्ष निकला, उसी के अनुसार प्रस्तुत पाठ्यक्रम बनाया गया, जिसका यह तीसरा भाग प्रकाशित हो रहा है।

कुछ लोग विद्यार्थियों की शिक्षा का आरंभ कल्याण अंग से करते हैं और कुछ लोग बिलावल-अंग से। किसी ने तो तोड़ी, मारवा, पूर्वी, भैरव जैसे कठिन रागों को, जो कि पूर्वार्जित शक्ति-संपन्न विद्यार्थियों के लिये भी कष्टसाध्य हैं, प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। अब वह युग आ गया है जब कि प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा तक विद्यार्थी के क्रमिक-विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम बनाना अनिवार्य हो गया है, क्योंकि अब विश्वविद्यालयों में भी संगीत-शिक्षा को स्थान प्राप्त हुआ है। उसी विकास-दृष्टि से यह क्रम बनाया गया है, जिसके प्रथम दो भाग प्रवेशिका-क्रम में प्रकाशित किये गए हैं और इस तीसरे भाग में मध्यमा अथवा इण्टर के प्रथम वर्ष अथवा जूनियर डिप्लोमा का पाठ्यक्रम दिया गया है।

भारतीय संगीत की सूक्ष्मता को देखते हुए उसे पूर्णतया नोटेशन या स्वर-लिपि में आलेखित करना करीब करीब असंभव है। स्वानुभव से मैं यह कह सकता हूँ कि जिस संगीत में पल पल पर स्पर्श-स्वरों वा कणों (Grace notes) का उपयोग होता हो, ऐसे किसी भी संगीत को पूर्णतया लेखबद्ध करना अशक्य है। यथासंभव उसे लेखबद्ध करने का कार्य पूज्यपाद गुरुदेव पं० विष्णुदिगम्बरजी ने किया है। किसी हद तक Staff notation वाले भी उसमें सफल हुए हैं। किन्तु सीधा और स्थूल नोटेशन प्राप्त हो तो उसे छोड़ कर सूक्ष्म और कष्टसाध्य लेखन-शैली कौन अपनाए? इसलिये स्थूल और सूक्ष्म दोनों दृष्टियों को सामने रखकर हमें यह मार्ग अपनाना पड़ा है, जो इन पुस्तकों में प्रयुक्त किया गया है। यह नूतन प्रयोग सफल हुआ है या असफल, यह तो इन पुस्तकों का उपयोग करने वाले ही कह सकेंगे। जिन्हें जो कठिनाइयाँ दिखाई दें, कृपया वे मुक्त रूप से सूचित करें। यथासंभव उन्हें दूर करने का यत्न किया जाएगा। कामना यही है कि सौकर्य को बनाए रखते हुए यथासंभव सूक्ष्मता को निदर्शित किया जाए।

इस लेखन-प्रणाली के समुचित उपयोग के लिये चिह्न-परिचय की ओर विशेष ध्यान दिया जाए, ऐसा अनुरोध है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में अल्पाधिक रूप में तीन व्यक्तियों ने मुझे साहाय्य किया है। तीनों ही मेरे लाड़ले हैं, और तीनों का मुझ पर और मेरा तीनों पर अधिकार है। गायनाचार्य प्रो० बलवंतराय भट्ट, डा० प्रेमलता शर्मा एम० ए०, पी एच० डी० और कुमारी सुभद्रा चौधरी—ये तीनों ही मेरे निगूढ़ प्यार-आशीष के पात्र हैं। इनमें भी डा० प्रेमलता शर्मा ने इस पुस्तक की समग्र पाण्डुलिपि के लेखन में और प्रूफ संशोधन इत्यादि कार्यों में सबसे अधिक श्रम किया है। वे नितान्त रूप से मेरे धन्यवाद की अधिकारिणी हैं।

साथ ही इण्डियन प्रेस प्रयाग की बनारस स्थित शाखा के मैनेजर श्री ए० के० बोस एवं अन्य कर्मचारियों का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने विशेष ध्यान और परिश्रम से इस पुस्तक की शुद्ध, स्वच्छ एवं सुन्दर छपाई की है।

काशी विश्वविद्यालय
गुरुवार, वैशाख शुक्ल
सप्तमी, सं० २०१२

निवेदक,
ओमकारनाथ ठाकुर

प्रस्तावना

अधुना भारत में ख्याल-गान की पद्धति अपनी विकास की भूमिका पर आरूढ़ है। सर्वत्र ख्याल-गायकों की ओर विशेष समादर से देखा जाता है। जिस परंपरा के हम अनुयायी हैं, वह भारत का एक सर्वप्रसिद्ध ख्याल का घराना माना गया है। हमारी गुरु-परंपरा ग्वालियर के सुप्रसिद्ध ख्याल-गायक हद्दू-हस्सूखां—इन बन्धु-द्वय से सीधी संबन्धित है। 'संगीताञ्जलि' के इस क्रमिक पाठ्य-क्रम के तीसरे भाग में उस ख्याल-गायकी की शिक्षा का आरंभ करना उचित माना है। ख्याल-गायकी के भिन्न भिन्न घरानों की परंपरा का उल्लेख यहाँ आवश्यक नहीं है। परन्तु हमारी अपनी ख्याल-गायकी की परंपरा के अंगों को यहाँ समझाना विशेष रूप से समुचित होगा।

ध्रुवपद-अंग—ख्याल-गायकी की पूर्व पीठिका

हमारी गुरुपरंपरा में ख्याल-गायकी सीखने के पूर्व ध्रुवपद-अंग की गायकी को सीखना आवश्यक माना गया है। ध्रुवपद अंग में स्वरों का ठहराव, आलापचारी का विस्तार, स्वरों का स्थैर्य, लय की भिन्न भिन्न बांट, द्विगुन, चौगुन, आड़, तिगुन छैगुन इत्यादि लय-प्रयोग और उनकी तिहाइयाँ इत्यादि का सप्रयोग बोध प्राप्त कर लेना नितान्त आवश्यक है।

सामान्यत: विद्यार्थियों का झुकाव झटपट तानक्रिया की ओर अधिक रहता है और तान-क्रिया में स्वरों की गति द्रुत होती है। कंठ को यदि द्रुत गति से स्वरोच्चार की आदत पड़ जाए, तो भिन्न भिन्न भाव और रस की उत्पत्ति के लिये भिन्न भिन्न स्वरों पर स्थैर्य से जो उच्चार करना चाहिए वह कठिन हो जाता है। कंठ को स्वाधीन बनाने के लिये—जब चाहें उसे स्थिर करें, जब चाहें उसे कंप दें, जब चाहें उसे आन्दोलित बनाएँ, जब चाहें मींड़ से उच्चारें, इन सब क्रियाओं की कुशलता प्राप्त करने के लिये, जो कि ख्याल-अंग में भावाभिव्यक्ति के लिये अनिवार्य हैं,—ध्रुवपद-अंग को गले में बिठाना अत्यावश्यक है।

यह कहना नितान्त रूप से सत्य का निरूपण करना है कि भारत में ख्याल अंग के विकास के पूर्व ध्रुवपद—अंग ही अपने चरम विकास पर स्थित था। और ख्याल, ध्रुवपद—अंग में किये हुए नये विकास का ही नाम है। ध्रुवपद-अंग में तालबद्ध गान के पूर्व राग की आलप्ति की जाती है, जिसे आजकल 'नोम् तोम्' आलापचारी कहते हैं। वह आलापचारी आज ख्याल-अंग में आकारादि अक्षरों द्वारा बढ़त के रूप में प्रयुक्त होती है और गीत के शब्दों द्वारा राग के स्वरालापों में विस्तार किया जाता है, जो शब्दालाप के नाम से भी प्रसिद्ध है। ध्रुवपद-अंग के 'नोम् तोम्' के आलाप तालबद्ध नहीं होते—आगे चल कर मात्र लयबद्ध होते हैं और इस प्रकार उन आलापों के न्यास के अवसर पर 'तना तोम्' कहा जाता है। किन्तु ख्याल-अंग की आलापचारी तालबद्ध ख्याल का स्थायी अन्तरा गाने के पश्चात् ही आरंभ होती है; ताल के साथ ही उसका विस्तार होता है और ख्याल के 'ध्रुव' शब्दों के उच्चार के साथ सम पर उसका न्यास किया जाता है।

तद्वत् द्विगुन, चौगुन, तिगुन, तिहाई इत्यादि लय-विभागों के जो अंग ध्रुवपद-गायकी में लिये और बरते जाते हैं, वे ही अंग ख्याल-गायकी में ख्याल के शब्दों की बोलतान में प्रयुक्त होते हैं। इसीलिये ख्याल-अंग की सविशेष गायकी की शिक्षा आरंभ करने के पूर्व ध्रुवपद-अंग की 'गायकी सीखने और अपनाने का हमारी परंपरा में आग्रह रखा गया है।

संगीताञ्जलि के प्रथम दो भागों में चौताल, झपताल, सूलताल, धमार, तेवरा आदि ध्रुवपद अंग के तालों में गीत, पूर्व-उल्लिखित लय की बाँट सहित विद्यार्थियों को अवगत कराये गए हैं। इसके अतिरिक्त ख्याल-अंग की पूर्व भूमिका के रूप में मध्य लय के गीतों में थोड़े आलाप-तान का शिक्षण भी, विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखते हुए, उनके लाभार्थ दिया गया है। इस तीसरे भाग में ख्याल-अंग का बोध देने जा रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का पाठ्य-क्रम, ख्याल तथा मुक्त एवं बद्ध आलापतान

इस पुस्तक में नौ रागों के ख्याल, उनके तालबद्ध आलाप, बोलतानें और तानें दी गई हैं।

अभ्यास और विकास के लिये मुक्त आलाप और मुक्त तानें प्रथम दो भागों में भी दिए गए हैं और इस भाग में विशेष विस्तार से दिये गए हैं। मुक्त आलाप और मुक्त तानों का अभ्यास करके विद्यार्थी अपनी बुद्धि से उन उन रागों के पदों में स्वयं उनका उपयोग कर सकें, और स्वनिर्मित आलापतान से गीत को अलंकृत कर सकें, इसीलिये उनका समावेश किया गया है। तालबद्ध आलाप, बोलतान और तानें इसलिये दी गई हैं कि जिससे विद्यार्थी किस ढंग से आलाप का क्रमिक विस्तार करें बोलतान को निबद्ध करें, तान का प्रस्तार करें, और तिहाइयों से गीत को सजा कर रंजकता बढ़ाएँ—इन सब बातों में उनका मार्गदर्शन हो सके। इसी उद्देश्य से यह सब देना आवश्यक समझा गया है। एक के बाद एक रखने से दो होंगे, किन्तु एक के साथ एक रखने से ग्यारह होंगे—यह जो विकास की रीति है, उस रीति को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी के दिमाग में आलाप, बोलतान और तान का विकास-क्रम रखे बिना उससे स्वतंत्र विकास की आशा कैसे रखी जा सकती है? यदि वह मार्गदर्शन के बिना स्वतंत्र विकास करेगा, भी, तो उसमें सुन्दरता और सौष्ठव कैसे रहेंगे? इन सब दृष्टि बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही तीसरे और चौथे वर्ष के रागों के ख्यालों में आलापतान निबद्ध करके देने का विचार किया गया है। इस प्रकार चालीस वर्ष के शिक्षण-कार्य से प्राप्त अनुभव के आधार पर ये आलापतान निबद्ध किये गए हैं।

ख्याल-गायकी की क्रम-प्रणाली

देखा गया है कि कुछ ख्याल-गायक ख्याल के शब्दों का मुखड़ा लेकर ही आलापचारी शुरू कर देते हैं और पुनः २ सम दिखाते समय उसी मुखड़े का उच्चार करते हैं। शुरू में पूरा स्थायी अन्तरा गा कर आलापचारी का आरंभ वे नहीं करते। कुछ लोगों का कहना है कि स्थायी अन्तरा याद न होने से वे लोग ऐसा करते हैं, और कुछ की मान्यता है कि स्थायी अन्तरा सुनकर गायक-वर्ग में से कोई उसे याद न कर लें, इस आशंका से—छिपाने के हेतु वे लोग स्थायी-अन्तरा नहीं गाते हैं। इन दोनों कथनों की सचाई को जाँचना कठिन है। किन्तु यह तो सत्य है ही कि कुछ लोग सचमुच स्थायी अन्तरा नहीं ही गाते हैं। परन्तु हमारी परंपरा में ख्याल-गायकी में निम्नोक्त क्रम आवश्यक माना गया है।

(१) आरंभ में षड्ज की स्थिरता।

(२) षड्ज की पूरी हवा फैलने के बाद ख्याल का पूरा स्थायी-अन्तरा तालबद्ध रूप से गाया जाए। (त्रिताल, झपताल वगैरह तालों के गीतों के सदृश ख्याल का स्थायी अन्तरा भी सम, ताली, खाली वगैरह ताल के स्तंभों से भली भाँति निबद्ध हो।)

(३) स्थायी-अन्तरे के गान के पश्चात् ही अकारादि अक्षरों में स्वरालाप शुरू किये जाएँ। आलापचारी में राग के अंग को देखकर, उसके ग्रह, अंश और न्यास स्वरों को केन्द्रित रखकर उनके इर्द गिर्द स्वरों के संविधान से उन उन स्वरों के भावों का परिपोष किया जाए और आलाप के अन्त में मध्य षड्ज

पर पूर्ण न्यास किया जाए। आलापचारी के क्रम-विकास का एक उदाहरण, समझाने के लिये, यहाँ दिया जाता है। मान लीजिए, हम जैमिनि कल्याण गाने जा रहे हैं। आलापचारी के आरंभ में हम मध्य षड्ज को केन्द्र-बिन्दु मान कर मन्द्र सप्तक के भिन्न भिन्न स्वरों की जोड़ियों यथा—ध़ नि़, म़ नि़, ग़ नि़ और अन्य आनुषंगिक स्वरों का विकास करते हुए षड्ज पर बार बार स्थिर होंगे। फिर क्रमशः एक एक करके ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद और तार षड्ज इन सभी स्वरों को केन्द्र-बिन्दु बनाकर हमें आलापचारी को बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार इन आलापों में राग-विकास के साथ भाव-विकास भी करना चाहिए। जैमिनि कल्याण में सभी स्वरों पर ठहर सकते हैं। इसीलिये इन सब स्वरों को केन्द्र-बिन्दु बनाने को कहा है। किन्तु अन्य रागों में उनके आरोहावरोह, स्वर-संगति, अल्पत्व-बहुत्व, वक्रत्व आदि सभी बातों का विचार करके आलापचारी का विकास किया जाए।

आजकल कुछ लोग ख्याल के अन्तरे में भी आलापचारी करने लगे हैं। किन्तु क्रम-विकास से तार षड्ज तक आलापचारी करने के बाद पुनः अन्तरे में वही आलाप दोहराने की आवश्यकता नहीं है। मन्द्र से तार तक दीर्घ आलाप करने के पश्चात् जनता पुनः दोहराये हुए उन आलापों से ऊब जाएगी। भोजन के समय एक ही वस्तु बार बार परोसी जाए तो रुचि-भंग होता है, तद्वत् गाये हुए आलापों को फिर दोहराना, यह रसभंग है। इसलिये प्रायः सभी ख्याल-गायक अन्तरे में आलापचारी नहीं ही करते हैं और हमारी राय में इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

इस आलापचारी में अकारादि अक्षरों के स्थान पर ख्याल के रसात्मक शब्द भी उपयोग में लाये जाते हैं। किन्तु इस आलापचारी में ठुमरी अंग की स्वर—क्रियाओं, मुर्कियों का और खटकों का भूल से भी उपयोग न हो, इसकी सावधानी रखनी चाहिये।

(४) आलापचारी के विशद विस्तार से वातावरण में राग की संपूर्ण छाया छा जाने के बाद मध्यगति की बोलतानों का आरंभ करना चाहिए। इन बोलतानों में दो प्रकार हैं। ख्याल की स्थायी के शब्दों को मध्यगति की तानों में निबद्ध करके स्थायी के शब्द पूरे होते ही ताल का आवर्तन पूरा हो और सम दिखाया जाए। इसके लिये ताल की भिन्न भिन्न मात्राओं से इन बोलतानों का उठाव या आरंभ किया जाता है और ताल के आवर्तन में उसे समाप्त किया जाता है।

यहाँ एक बात का अवश्य ध्यान रखा जाए कि ख्याल के शब्दों को तोड़ा न जाए, उनके अर्थों को मरोड़ा न जाए। अन्यथा वह बोलतान भावाभिव्यक्ति का साधन न रह कर कोरी बोलतान रह जाएगी, क्योंकि शब्दों की तोड़-मरोड़ से अर्थ का अनर्थ होने की संभावना है।

बोलतान का दूसरा प्रकार तिहाई है। स्थायी के बोलों की तान ऐसी मात्रा से आरंभ की जाए कि जिससे सम पर आने का मुखड़ा भिन्न भिन्न प्रकार से तीन बार लिया जाए और सम पर उसे पूर्ण किया जाए।

ध्रुवपद-अंग में गीत के शब्दों का भिन्न भिन्न लयों में जो पुनरुच्चार किया जाता है और ख्याल-अंग में शब्दालाप एवं बोलतान लेने की जो परिपाटी गान-विद्या की विकसित क्रिया में उपयोग में लाई जाती है, उसका मूल, मेरी राय में, वैदिक गान-क्रिया ही है। वेद-पाठ की परंपरा में जटा, घन आदिक जैसे भिन्न भिन्न अर्थ-निदर्शक शब्द-विन्यास किये जाते हैं, तद्वत् उसी का परंपरानुगत अनुकरण संगीत की इस गान-क्रिया में किया जाता है, जिससे अर्थ का, भाव का और रस का परिपोष होता है और श्रोताजन भाव में निमज्जित होते हैं। हाँ, सभी ख्याल-गायक शब्दालाप और बोलतान की क्रियाओं का अपनी गायकी में प्रयोग नहीं करते हैं। किन्तु हमारी परंपरा की यह विशेषता है। और बिना हिचकिचाहट के यह कहने में हम अत्युक्ति नहीं कर रहे हैं कि ख्याल-गायकी में ग्वालियर की परंपरा भारत में अग्रगण्य मानी गई है।

(५) इन बोलतानों के पश्चात् लयबद्ध तानों से ख्याल को सजाया जाता है। इन तानों में विविध वर्णालङ्कारों का समुचित विनियोग करना कुशलता का कार्य है। इस तान-क्रिया के अवसर पर बीच बीच में बहलावे का प्रयोग भी किया जाता है। बहलावे में तीन, पाँच, सात, नौ ऐसे स्वरों की तान लेकर किसी स्वर पर ठहर कर पुनः उसी प्रकार अवरोह करके फिर किसी स्वर पर ठहर जाते हैं और इसके विस्तार को बढ़ा कर रंजकता उत्पन्न करते हैं। यथा बिहाग में—

प़नि़ सा ग–, ग रे सा नि़–, रे सा नि़ प़–, स ग म प–, मं प नि सां–, गं रें सां नि–, ध प म ग–, ग रे सा नि़ –, प़ नि़ सा ग–, रे नि़ सा– –।

बहलावे के ये प्रकार भिन्न भिन्न रागों के नियमों को देख कर ही सावधानी से बनाने चाहिए।

इसके बाद मध्य या द्रुत लय के गीत गाने की परिपाटी है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ख्याल-गायकी का यह चित्र, यह क्रम और विकास ध्यान में रख कर विद्यार्थी साधना करेंगे तो विश्वास है कि वे सफलता पाएँगे।

स्पर्श-स्वरों अथवा कणों का महत्व

इस पुस्तक-मालिका में दिये हुए गीतों, आलापतान इत्यादि में जो स्पर्श-स्वर (grace notes) या कण दिये हुये हैं, विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही उन पर विशेष ध्यान दें। ये स्पर्श-स्वर जो कभी नीचे से और कभी ऊपर से छुए जाते हैं, इनका महत्त्व केवल रंजकता बढ़ाने तक ही सीमित नहीं है, किन्तु ये राग-निदर्शक भी हैं। यथा—प-मं ग (प)म (प)ग, यह स्वरावली बिहाग को स्पष्ट करती है। परन्तु यदि मध्यम और गान्धार पर से स्पर्श-स्वर हटा दिये जाएँ, और अन्तिम गान्धार को कोमल ऋषभ का कण लगा दिया जाए तो प मं ग म (रें)ग, वह पूर्वी हो जाएगी। एक उदाहरण और—, ग प ग रे सा—यह स्वरावली है। इसमें निम्नलिखित भिन्न भिन्न स्पर्श—स्वरों के प्रयोग से वही एक स्वरावली भिन्न भिन्न रागों की निदर्शक बन जाती है :—

(प)ग प (ध)ग, रे सा.	—भूप
ग (रे)प ग, रे सा.	—शंकरा
ग प ग—रे सा—	—देशकार
ग प ग—रे, सा.	—हंसध्वनि
ग प ग (प)रे सा.	—शुद्ध कल्याण

इस प्रकार एक ही स्वरावली होते हुए भी भिन्न भिन्न स्पर्श से, भिन्न भिन्न ठहराव से राग परिवर्तित हो जाता है। गुणी जनों के सहवास से ही स्पर्श स्वरों की यह सूक्ष्मता ध्यान में आएगी। इसीलिये इन स्पर्श-स्वरों के प्रति विशेष ध्यान देने के लिये हमने विद्यार्थियों को और शिक्षकों को साग्रह अनुरोध किया है।

विराम-चिह्नों का महत्त्व

तान-क्रिया में जहाँ जहाँ अर्धविराम-चिह्न दिये गए हैं, उसके पीछे विशेष हेतु है। मान लीजिए कि सारेंसा रेगरे गमग मपम पधप वाला अलंकार किसी राग में प्रयुक्त किया जा रहा है। यों तो यह अलंकार तीन तीन स्वरों का है। यदि एक—तृतीयांश अथवा एक –षष्ठांश मात्रा-विभाग में इसका उपयोग किया जाएगा तो कोई दिक्कत पेश नहीं आएगी। किन्तु एक—द्वितीयांश (१/२), एक—चतुर्थांश (१/४) या एक—अष्टमांश (१/८) मात्रा—विभाग में इसका प्रयोग करने से विषम टुकड़े बन जाएँगे। और इसीलिये विषम तानों को सम लय में और सम तानों को विषम लय में स्पष्टतया समझाने के लिये ही उन अर्धविराम चिह्नों का प्रयोग किया गया है। मुक्त आलापों में अर्ध-विराम, पूर्ण विराम, डैश, ब्रैकेट इत्यादि चिह्नों का भी आलाप के समय पूर्ण ध्यान रखा जाए और यथास्थान और यथाचिह्न उच्चार किया जाए। शिक्षक सिखाते समय और विद्यार्थी अभ्यास के समय पूर्वलिखित सारी बातों पर सविशेष ध्यान देना भूलें नहीं।

मुक्त तानों की लय में परिवर्तन की शक्यता

सुविधा के लिये मुक्त तानें एक-चतुर्थांश (१/४) लय में लिखी गई है। किन्तु अभ्यास से १/६, १/८ इत्यादि लयों में इन्हीं तानों को बिठाने का प्रयत्न करना चाहिये। और इस प्रकार विकास करना चाहिये।

मुक्त आलापों में स्थान-परिवर्तन से नवीनता

शिक्षक इस बात का भी ध्यान रखें कि विद्यार्थी उन मुक्त आलापों का जो मन्द्र या मध्य सप्तक में दिये गए हैं, तार सप्तक में भी उसी प्रकार से यथायोग्य हेरफेर के साथ एक दूसरे प्रकार मिला कर, उपयोग करें। स्थान-परिवर्तन से वही आलाप नवीनता दर्शाएँगे।

परिशिष्ट में दिये हुए ख्याल

इस पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के रूप में पहिले के दो भागों में आये हुए चार रागों के ख्याल दिये गए हैं। उनकी शिक्षा भी साथ साथ दी जाए जिससे इन नित्य प्रचार के रागों में अपने बनाये हुए आलापतान का विद्यार्थी विस्तार कर सकें एवं गाने का अभ्यास बढ़ा सकें।

भावानुरूप स्वरोच्चार

आजकल शास्त्रीय गायन के प्रति सुननेवालों की पर्याप्त मात्रा में उपेक्षा देखी जाती है। केवल स्वरों के Permutation (विनिमय) एवं Combination (सन्धि) बनाकर गानेवाले और केवल आलापतान लेकर सम पर आना—इसी में शास्त्रीय संगीत की अवधि को सीमित मानने वाले पुस्तकी गायकों ने शास्त्रीय संगीत के प्रति अरुचि पैदा की है और कर रहे हैं। यह सत्य कटु है, इसलिये अप्रिय भी लगेगा। किन्तु इसका कोई इलाज नहीं है। सुधारक सर्वप्रिय तो हो ही नहीं सकता। कहने बैठे हैं तो गुण-दोष कहने ही पड़ेंगे। गुण-दोष को देखकर ही क्षीर-नीर-विवेक का उपयोग किया जा सकेगा। इसीलिये इसको निरूपित किया जा रहा है।

भाषा द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति करते समय यानी नित्यप्रति की बोलचाल में, वही व्यक्ति बाजी मार लेता है, जो शब्दोच्चार में स्वरों के उतार-चढ़ाव का यथोचित उपयोग करता है। वाग्व्यवहार में इन उतार चढ़ाव से, लघु, गुरु और प्लुत उच्चार से और आवश्यकतानुसार मृदुता अथवा आघात से शब्दोच्चार करने से ही भावाभिव्यक्ति में प्रभाव पैदा किया जाता है। नित्य की बोलचाल के लिये जो सत्य है, वह व्याख्यान के लिए, कवितापाठ के लिये, अभिनय के लिये और संगीत के लिये भी सत्य है।

वाणी के उपर्युक्त प्रयोगों में तो केवल स्वरों के उतार-चढ़ाव का ही संबन्ध रहता है। किन्तु संगीत में तो स्वर ही प्राण-स्वरूप है। नितान्त रूप से स्वर पर ही भाव-सृष्टि की अभिव्यक्ति अवलम्बित है। संगीत में शब्द हों या न हों, उसका निगूढ़ अर्थ तो स्वर ही वहन करते हैं और आत्मा तक पहुँचा देते हैं। मुरली, शहनाई, वीणा, सारंगी इत्यादि वाद्य-यन्त्रों में कहाँ कोई शब्द होता है? इससे स्पष्ट है कि हृदय के अमूर्त भावों को जिस संगीत में स्वर और रागों द्वारा प्रकट किया जाता है, उस संगीत में स्वरों के उतार-चढ़ाव पर, उनके अल्प और दीर्घ-उच्चार पर, उनकी चौड़ाई-लंबाई पर, उनकी ऊँचाई निचाई पर, उनकी कंपित, आहत, आन्दोलित अवस्था पर, द्रुत-मध्य-विलंबित गति पर, और ऐसे ही उच्चारों के अन्य प्रभेदों पर कितना विशेष आधार रखा जाना चाहिए, इसके संबन्ध में जितना कहा जाए, उतना ही न्यून है।

सामान्य-रूप से गायक वर्ग एक ही ढर्रे से आवाज़ लगाते हैं और आरंभ से अंत तक अनेकों बार आरोहावरोह करने पर भी उनके आवाज़ लगाने के ढंग में कोई परिवर्तन नहीं पाया जाता। (आवाज़ में भावानुकूल परिवर्तन करने वालों के लिये यह नहीं लिखा जा रहा है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है)। हमारी राय में, गाते समय कंठ में रागानुकूल, भावानुकूल और रसानुकूल परिवर्तन करना ही चाहिए। अपितु वह अनिवार्य है।

संगीत के समुचित मूल्य को सर्वजन-ग्राह्य बनाने के लिये उपर्युक्त विषय बहुत महत्वपूर्ण है। अतः उसे कुछ भिन्न शब्दों में पुनः समझ लेना उचित और उपयोगी होगा।

शिक्षक तथा विद्यार्थी इस बात को सदैव ध्यान में रखें कि संगीत द्वारा वे स्वर और लय तथा राग और ताल के माध्यम से एक नई भाषा का—एक universal (विश्वव्यापी) language का अध्ययन कराते हैं और करते हैं। जैसे शब्द की बनी हुई भिन्न भिन्न भाषाएँ हैं, और उन भाषाओं के माध्यम से हम विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, तद्वत् स्वर की भाषा द्वारा हम भाव और भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। वह प्राणीमात्र की भाषा है, जिसके द्वारा संसार में भाव-सृष्टि का निर्माण होता है।

जगत् के मानव, चाहे सैंकड़ों भाषाओं का प्रयोग करें, फिर भी रोने की, गाने की, हँसने की, और अभिनय की भाषा एक है इसमें कोई भी परिवर्तन नहीं पाया जाता है। लिखने और बोलचाल की भाषा में अब तक कितने ही परिवर्तन हुए होंगे, किन्तु संगीत की भाषा में, स्वर, लय और अभिनय में कोई परिवर्तन न तो हुआ है और न होगा। ऐसी तीनों काल में व्याप्त, ब्रह्माण्ड की इस संगीत-भाषा का प्रयोग करते समय उसका हम ऐसा उपयोग करें कि जिससे मानव ही नहीं, प्राणीमात्र उसे समझ सकें। जैसे वर्णों के परस्पर योग से शब्द बनते हैं और भिन्न भिन्न परिणाम उत्पन्न करते हैं, तद्वत् उन वर्णों के आरोहावरोह से भी नूतन अर्थ और नूतन परिणाम प्रकट होते हैं। यथा-दो वर्ण हैं—एक 'व' दूसरा 'न'। इन दोनों को मिलाया 'वन' हुआ। इनका अवरोह किया 'नव' हुआ। इसी वन के साथ 'आ' 'जा' 'खा' 'गा' 'भा' इत्यादि जोड़ने से 'आवन' 'जावन' 'खावन' 'गावन' 'भावन' इत्यादि अनेकों भिन्नार्थक शब्द बन जाएँगे। दूसरा एक शब्द ले लीजिये—'रम'। इसी 'रम' के साथ में 'क' 'ध' 'ग' 'च' इत्यादि वर्ण जोड़ने से नये अर्थ उपजते हैं। इसी का उल्टा करने से 'मर' हो जाएगा, किन्तु इसी 'मर' के साथ 'अ' जोड़ने से 'अमर' हो जाएगा। यहाँ यह दिखाने का इतना ही अभिप्राय है कि शब्दों के सदृश स्वरों के भी भिन्न भिन्न अर्थ होते हैं। उनके संयोग में, वियोग में, आरोहावरोह में, स्पर्श में, संगति में, विसंगति में, भावात्मक भिन्न भिन्न उच्चारों में अपार अर्थ सन्निहित हैं, निगूढ़ परिणाम निविष्ट हैं। संगीत की सारी रस-सृष्टि इन्हीं पर आधारित है। इसलिये इसकी शिक्षा देते और लेते समय स्वर-लय के, राग-ताल के सूक्ष्म-तत्त्व को हम समझें, पचाएँ। तभी 'शास्त्रीय संगीत में भाव नहीं है' ऐसा कहने वालों का मुँह बन्द किया जा सकता है। तभी हम आर्यावर्त की इस अपूर्व स्वर-शक्ति और भाव-सृष्टि की विजय पताका विश्व के उत्तुंग शिखर पर फहरा सकते हैं।

स्वर, लय और अभिनय की भाषा में हमें किस प्रकार बोलना चाहिए, किस प्रकार हम प्राणी मात्र के हृदय तक पहुँच सकते हैं ? शास्त्रों में इसकी विशद विवेचना पाई जाती है। संगीत रसमय होना चाहिए और उसे रसमय बनाने के लिये स्वरों के अन्तर, उनके उच्चार, उनके रसस्थान, उनके वर्ण, अंग एवं काकु इत्यादि का यथार्थ उपयोग समझ कर करना चाहिये। ऐसा संगीत मानव में ही नहीं, प्राणी मात्र में संवेदना जगा सकता है। इस संबन्ध में यहाँ शास्त्र के कुछ उद्धरण देना अनुचित न होगा।

सप्तस्वराः, त्रीणि स्थानानि, चत्वारो वर्णाः, द्विविधा काकुः, षट् अलंकाराः, षट् अंगानि।

हास्यशृंगारयोः कार्यौ स्वरौ मध्यमपंचमौ।
षड्जर्षभौ तथा चैव वीररौद्राद्भुतेषु च ॥
गान्धारश्च निषादश्च कर्तव्यौ करुणे रसे।
धैवतश्च निषादश्च बीभत्से सभयानके ॥
त्रीणि स्थानानि उरःकण्ठशिरांसीति भवन्त्यपि।
शारीर्यामथ वीणायां त्रिभ्यः स्थानेभ्य एव च ॥
उरसः शिरसः कण्ठात् स्वरः काकुः प्रवर्तते।
आभाषणं तु दूरस्थे शिरसा संप्रयोजयेत् ॥

षट् अलंकाराः

उच्चो दीप्तश्च मन्द्रश्च नीचो द्रुतविलम्बिताः।
पाठ्यस्यैते ह्यलंकाराः लक्षणं च निबोधत ॥

उच्चो नाम शिरस्थानगतः तारस्वरः, स च दूरस्थभाषणविस्मयोत्तरोत्तरसंजल्पदूराह्वानत्रासनार्थं वा आदिषु। दीप्तो नाम शिरःस्थानगतः तारतरः, स च आक्षेपकलहविवाद अमर्ष उत्कृष्ट घर्षण क्रोध शौर्य दर्प तीक्ष्ण रुक्षाभिधान निर्भर्त्सना आदिषु। मन्द्रो नाम उरः स्थानगतो निर्वेद ग्लानि शंका चिन्ता औत्सुक्य दैन्य आवेग व्याधि गाढ़शस्त्रक्षत मूर्छा मद आदिषु। नीचो नाम उरःस्थानगतः मन्द्रतरः, स्वभाव आभाषण व्यथित अतिश्रान्त त्रस्त पतित मूर्छित आदिषु। द्रुतो नाम कण्ठगतः स्खलितवेल्लन मदनभय शीत ज्वर त्रस्त गूढ़कार्य-वेदन आदिषु। विलम्बितो नाम कण्ठस्थानगतः मन्द्रः शृङ्गारवितर्कितविचारामर्श असूयिता अव्यक्तार्थं प्रवाद लज्जा चिन्ता तर्जन विस्मय दोषानुकीर्तन दीर्घरोष निपीडन आदिषु।

उत्तरोत्तरसंजल्पे परुषाक्षेपणे तथा।
तीक्ष्णरुक्षाभिनयने आवेगे क्रन्दिते तथा ॥
परोक्षस्य समाह्वाने तर्जने त्रासने तथा।
दूरस्था भाषणे चैव तथा निर्भत्सनेषु च ॥
भावेष्वेतेषु नित्यं हि नानारस समाश्रयात्।
उच्चा दीप्ता द्रुता चैव काकुः कार्या प्रयोक्तृभिः ॥
मल्ले च मर्दने चैव भयार्ते चित्त विप्लुते।
मन्द्रा द्रुता च कर्तव्या काकुर्गीतप्रयोक्तृभिः ॥
दृष्टादृष्टानुसारेण इष्टानिष्टश्रुतौ तथा।
दृष्टार्थव्यापने चैव चिन्तयाने तथैव च ॥
विस्मयामर्षयोश्चैव हर्षे च परिदेविते।
उन्मादेऽसूयने ऽपालम्भे तथैव च ॥
अव्यक्तार्थं प्रदाने च तथा लोके तथैव च।

उत्तरोत्तरसंजल्पे कार्ये अतिशयसंयुते ।।
विप्लुते व्याधिते त्वङ्गे दुःखशोके तथैव च।
विलम्बिता च दीप्ता च काकुर्मन्दा च वै भवेत् ।।
यानि सौम्यार्थयुक्तानि सुस्वभावकृतानि च।
मन्द्रा विलम्बिता चैव तत्र काकुर्विधीयते ।।
उच्चा दीप्ता च कर्तव्या काकुस्तत्र प्रयोक्तृभिः।
हास्यशृङ्गारकरुणेष्विष्टा काकुर्विलम्बिता ।।
वीररौद्राद्भुतेषूच्चा दीप्ता चापि प्रशस्यते।
भयानके सबीभत्से द्रुता नीचा च कीर्तिता ।।
एवं भावरसोपेता काकुर्योज्या प्रयोक्तृभिः ।।

(भरत नाट्यशास्त्र पृ० २२१-२४)

अल्प में इसका सार कह देना समुचित होगा। सभी जानते हैं कि गाते समय सप्तस्वरों के तीव्र-कोमलादि भिन्न-भिन्न रूप प्रयोग में लाये जाते हैं। ये स्वर तीन स्थानों अथवा तीन सप्तकों में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त हम अपने संगीत में कई प्रकार के अलंकारों का उपयोग करते हैं। तदुपरान्त स्वर के वर्ण, काकु आदि भेद रस निर्माण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। वर्ण का अर्थ है—स्वरों का गुणधर्म। स्थान भेद, उच्चार भेद और गति भेद से स्वरों में जो परिवर्तन होते हैं, वही स्वरों के गुणधर्म कहलाते हैं। एक ही स्वर, एक ही स्थान में भिन्न-भिन्न रूप से उच्चारा जा सकता है और उससे उसके भिन्न-भिन्न अर्थ उत्पन्न होते हैं। यथा—स्वरों का उच्चार कभी मन्दता से, कभी आघात से, कभी कम्प से, कभी आन्दोलित रूप से, कभी अल्प मात्रा में, कभी दीर्घ मात्रा में करने से भिन्न-भिन्न भावों की जो अभिव्यक्ति होती है, उसी क्रिया के लिये महर्षि ने 'वर्ण' शब्द का प्रयोग किया है।

भाव की अभिव्यक्ति के लिये स्वरों में काकु का प्रयोग भी अनिवार्य माना गया है। 'काकु' शब्द का अर्थ स्वर-भेद करना चाहिये। गाते समय सुख-दुःखादि संवेदन प्रकट करने के लिये स्वरों में जो परिवर्तन किये जाएँ, उसी स्वर-भेद को काकु कहा है। करुणा के अवसर पर गीतालाप करते समय विलाप की अभिव्यक्ति करने से ही रस की सिद्धि होगी। और ऐसे अवसर पर स्वर गद्‌गद होना ही चाहिए। तद्वत् क्रोधित, चिन्तित, शान्त, नैराश्य, निर्वेद आदिक अनेक मानसिक अवस्थाएँ निदर्शित करने के लिये कण्ठ में उसी प्रकार का स्वर-भेद करना अनिवार्य है। स्वरभेद की इन अवस्थाओं को काकु संज्ञा से संबोधित किया गया है।

किसी को बुलाना हो. पुकारना हो, संबोधन करना हो, आश्चर्य व्यक्त करना हो, विस्मय का भाव दिखाना हो, आवेश दर्शाना हो, डर बताना हो, तो ऐसी अवस्था में मध्यसप्तक के पंचम से तार सप्तक के ऋषभ तक स्वरों की कुछ द्रुतगति में योजना करने से उन भावों की अभिव्यक्ति होगी।

तद्वत् कलह, युद्ध का आह्वान, क्रोध का आवेश, वाताधिक्य, कठोरता, गर्व, शौर्य, निर्भर्त्सना एवं भीति आदि भावनाओं को निवेदित करने के लिये तार सप्तक के उच्च स्वरों का द्रुत गति में उपयोग करना चाहिए। विराग में, दैन्य में, मन की शून्यावस्था में, दीर्घ बीमारी में, निर्वेद में एवं चिन्तित अवस्था में मन्द्र सप्तक के स्वरों का मन्द आवाज में एवं विलम्बित गति से उच्चार करना आवश्यक है। इसी से वांछित भाव अभिव्यक्त हो सकेगा। इसके अतिरिक्त लज्जा, शान्ति. भय, वगैरह भावनाएँ मध्म सप्तक के स्वरों का संकोचन करके सकम्प द्रुतगति से उच्चार करने से अभिव्यक्त हो सकेंगी। तद्वत् निराशा, उच्छ्वास, नितान्त श्रमित अवस्था मूर्छा, चिन्ता, शान्त दशा एवं स्थितप्रज्ञता—मन्द्र सप्तक के स्वरों को मन्द्रगति से गाने से परिस्फुट होंगी।

इन सब भावोत्पादक क्रियाओं को कंठ सुविधा से उपजा सके, इसीलिये गायक को स्वाधीनकंठ बनना चाहिए, और स्वाधीनकंठ बनने के लिये नित्यप्रति का साधन आवश्यक है।

स्वर-साधना

यूरोप में Voice Culture पर बहुत जोर दिया गया है, और उस पर कई ग्रन्थ लिखे गए हैं। किन्तु उन लोगों की स्वर लगाने की शैली, कंठ पर प्रभुत्व पाने की क्रियाएँ, श्वासोच्छ्वास की प्रक्रियाएँ इत्यादि संभवतः भारतीय संगीतोपयोगी कंठ के लिये उपयुक्त होंगी या नहीं, इसमें मतभेद को अवकाश है। किन्तु Voice Culture के लिये भारतीय परंपरा है ही नहीं, ऐसा कहने वाले वास्तविक सत्य की उपेक्षा करते हैं। यहाँ पर एक स्वानुभव उद्धृत करूँ तो अनुचित न होगा।

मेरा बाल—कंठ अतीव मधुर था और तीनों सप्तकों में सुविधा से घूमता था। किन्तु यौवन आते ही फूटे मटके के सदृश मेरा कंठ फट गया। वह आवाज़ इतना कर्णकटु था कि मुझे स्वयं ही उस पर लज्जा आती थी। मैं कतई गाना छोड़कर मृदंग, इसराज और हार्मोनियम पर रियाज करने लगा। किन्तु साथ ही मेरे गुरुदेव पं० विष्णुदिगम्बरजी पलुस्कर की आज्ञानुसार ब्राह्म मुहूर्त में प्रातः चार बजे तानपुरा लेकर उनके सोने के कमरे के बाहर बैठकर उनके बताये हुए मार्ग से मन्द्र साधना करता रहा। बीच बीच में वे मार्गदर्शक सूचना देते रहते थे और मैं उस पर अमल करता था। आज मेरे कंठ में यदि कुछ है तो वह उसी साधना का परिणाम है।

वह मंद्र-साधना क्या थी?—

प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व अपने स्वर का जो षड्ज हो, उस षड्ज से मन्द्र में नीचे से नीचे जहाँ तक आवाज़ जा सके, वहाँ पर कण्ठ स्थिर करके दीर्घ समय तक उस स्वर का प्लुतोच्चार किया जाए। भिन्न भिन्न शारीरिक शक्ति के अनुसार तथा कंठस्थित ध्वन्युत्पादक नाड़ियों (Vocal chords) की रचनानुसार आरंभ का स्वर भिन्न भिन्न हो सकता है। सामान्य रूप से अपने मध्य षड्ज से कम से कम पाँच स्वर मंद्र में आवाज जा सके और अपने तार षड्ज से कम से कम पाँच स्वर ऊपर आवाज़ जा सके, ऐसी मर्यादा बाँधकर ही मध्य षड्ज निश्चित किया जाए। ढाले स्वर से गानेवाले कुछ लोग ऊँचे स्वरवाले अपने शिष्यों को भी ढाले स्वर से गाने के लिये बाध्य करते हैं, और इस प्रकार स्वाभाविक प्रकृति बिगड़ने से मूल्यवान् आवाज़ नष्ट हो जाता है। ऐसी सभी दृष्टियों को ध्यान में रखकर ही मंद्र साधना की जाए।

अपने मध्य षड्ज के नीचे जिनका स्वर मंद्र षड्ज (खरज) को लगा सकता हो, वे कम से कम पंद्रह मिनट और अधिक से अधिक आधा घंटा तक मंद्र के षड्ज पर कण्ठ को स्थिर करें। अकार आकार, ईकार, ऊकार, ओकार इत्यादि स्वरों से उसका उच्चार किया जाए। अकारादि भिन्न भिन्न उच्चारों के समय कंठ में कुछ परिवर्तन होते हैं, जिनके फेफड़ों पर, श्वासनली पर एवं उदर पर भिन्न भिन्न परिणाम होते हैं। षड्ज के के बाद कम से कम पाँच मिनट और अधिक से अधिक दस मिनट तक ऋषभ को स्थिर करें। उसी क्रम से गान्धार मध्यम, धैवत, निषाद को एक एक करके स्थिर करते हुए मध्य षड्ज तक पहुँचा जाए। इसके बाद—४, २, १, १/२, १/४, १/८ आदिक मात्राओं से निबद्ध तानों का अभ्यास किया जाए और भिन्न भिन्न रागों में भिन्न भिन्न अलंकारों को कंठ में बिठाया जाए। तान-क्रिया के अभ्यास के समय रुचि अनुसार और समयानुसार भिन्न भिन्न रागों का उपयोग किया जाए। अकारादि स्वर-समूहों का षड्जादि संगीत के स्वरों के साथ उच्चार करने के अभ्यास से भावानुकूल नाद की अभिव्यंजना करने की क्षमता आ जाती है।

मन्द्र साधना के पश्चात् और गाने के अभ्यास के बाद विद्यार्थी यह सदैव ध्यान रखें कि तत्काल ताल मिश्री की एक डली मुँह में डाल ली जाए। इससे कंठ और ध्वन्युत्पादक नाड़ियाँ (Vocal chords) जिनमें खुश्की पैदा हुई होगी, वे स्निग्ध और तर हो जाएँगी। और पन्द्रह बीस मिनट के पश्चात् उबले हुए दूध में एक चम्मच घी और मिश्री डाल कर पचन की शक्ति अनुसार पी जाएँ। संभव हो तो

बादाम का हलुआ बना कर उस पर से यह घी वाला दूध पी लिया जाए। यदि यह संभव न हो तो कुछ बादाम घिस कर (पीस कर नहीं) दूध में मिला कर पी लिया जाए।

कुछ अन्य शारीरिक प्रक्रियाएँ

मन्द्र साधन के संबन्ध में इतना कहने के बाद कंठ, फेफड़े, छाती, श्वास-नलिका, उदर भाग इत्यादि के संबन्ध में भी कुछ कह देना उचित समझता हूँ।

सामान्यत: यह लोकवाक्यता है कि गायकों को व्यायाम नहीं करना चाहिये। किन्तु यह धारणा वास्तविक तथ्य पर आधारित नहीं है। यदि मुझे निजी अनुभव के बल पर कहने का अधिकार हो तो मैं कह सकता हूँ कि मैं नित्यप्रति लगातार सवा घंटे तक साढ़े सात सौ डण्ड लगाया करता था और आठ आठ मील तक तैरने का मेरा अभ्यास था। साथ ही मुझे कुश्ती का भी शौक रहा। फलस्वरूप विश्वविजयी पहलवान गामा के अखाड़े में खेलने का और उनसे भी थोड़ी तालीम पाने का मुझे सौभाग्य मिला है। छाती में बल न हो, श्वासोच्छ्वास स्वाधीन न हो, तो वांछित आवाज लग नहीं सकता, लगाने के लिये मन भी उड्डयन नहीं करेगा। कसरतबाज मनुष्य मनोवृत्ति से सहज ही ब्रह्मचर्य का पालन करने में बल पाता है, बल्कि विषय के प्रति अनिच्छा सी रखता है। और गान-विद्या में ब्रह्मचर्य का पालन एक अनिवार्य शर्त है। इन सभी दृष्टि बिंदुओं से मैं यह कह सकता हूँ कि गान-क्रिया की कुशलता के लिये उस गान में प्रभाव पैदा करने के लिये व्यायाम और प्राणायाम दोनों को ही करना जरूरी है। व्यायाम और प्राणायाम दोनों ही एक साथ सध जाए, ऐसे मेरी राय में दो व्यायाम हैं—एक समन्त्र सूर्य नमस्कार और दूसरा तैरना। जिन्हें इन दो में से किसी की भी अनुकूलता न हो, वे अपनी शक्ति के अनुसार डण्ड बैठक लगाएँ और प्राणायाम कर लें। यौगिक प्राणायाम और संगीतोपयोगी प्राणायाम में कोई विशेष अन्तर नहीं है। हाँ, संगीतोपयोगी प्राणायाम में क्रमश: अधिकाधिक कुंभक किया जाए। प्राणायाम की सारी विधि और क्रिया यहाँ बताने का अवकाश नहीं है। किन्तु, जब प्राणायाम किया जाए, तब सिद्धासन पर आरूढ़ होकर ही किया जाए।

मंद्रसाधना के समय और गाते समय भी दो आसन प्रशस्त माने हैं—एक वीरासन, जिसमें बांयां घुटना मोड़ कर, उसी एड़ी से गुह्य और गुदा के बीच के स्थान को दबा कर दाहिना घुटना खड़ा रखा जाता है। श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया के लिये यह आसन उचित माना गया है। दूसरा आसन सिद्धासन है। इसमें भी बांई एड़ी को गुह्य और गुदा के बीच में दबा कर दाहिना पैर बांई पिंडली पर चढ़ा कर बैठा जाता है। 'समकायशिरोग्रीव'—इस वचनानुसार सीधे—रीढ़ का कोई हिस्सा झुकने न पाए—इस प्रकार बैठ कर आसन जमाया जाए। गाते समय गर्दन इधर-उधर घूमती रहे, लेकिन मंद्रसाधना के समय हनु (ढुड्डी) कंठ देश में लगाकर ही साधना की जाए।

इस प्रकार की साधना भी एक प्रकार से यौगिक साधना ही है। बल्कि यौगिक क्रिया में तो मन:स्थैर्य के लिये बड़े आयास करने पड़ते हैं, जब कि संगीत में अनायास मन स्थिर हो जाता है। यदि साधक साधना के अवसर पर अकार उकारादि स्वरों पर स्थिर होते समय ओकार का दीर्घ उच्चार करने के बाद मुख बंद कर ले और 'ओम्' के 'म्' का दीर्घ काल तक बंद मुख से उच्चार करे, तो उससे मस्तक प्रदेश में एक प्रकार की झनझनाहट पैदा होगी, जिससे उस प्रदेश के अविकसित विभाग खुल जाएँगे। दुनिया भर की Faculties (शक्तियां) मानव-मस्तिष्क में ही सन्निहित हैं। उनके विकास से ब्रह्म और ब्रह्माण्ड का दर्शन भी सहज हो जाने की संभावना है।

प्रस्तावना पर्याप्त लंबी हुई। जो जिस मार्ग के पथिक होंगे, उन्हें उसके लिये इसमें से कुछ न कुछ मिले, तो मैं श्रम—सार्थक्य मानूँगा।

सर्वज्ञ कोई नहीं है और अल्पज्ञ से भूल होती ही है। भूलनिदर्शन के लिये मेरा अनुरोध है; नये सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

वादी संवादी अनुवादी और विवादी स्वर

आजकल संगीत की सामान्य बोलचाल में रागों में प्रयुक्त होनेवाले सबल और निर्बल स्वरों को दर्शाने के लिये वादी संवादी अनुवादी विवादी आदि शब्दों का प्रयोग प्रचार में है। वास्तविकत: यह स्वर-भाषा है। स्वरों के पारस्परिक सम्बन्ध को निदर्शित करने के लिये इन शब्दों का प्रयोग किया गया है। किस स्वर के साथ किस स्वर का सम्बन्ध है—संवादी है, अनुवादी है या विवादी है, इसको समझाने के लिये ही इन शब्दों का शास्त्रों में प्रयोग हुआ है। रागों में प्रयुक्त स्वरों में पारस्परिक संवाद, अनुवाद या विवाद क्या है, इसको इन शब्दों से समझाया गया है। राग के रागत्व को दर्शानेवाला जो मुख्य स्वर है, वह जब दस लक्षणों से युक्त होता है, तब उसी मुख्य वादी स्वर को अंश कहा जाता है। उसी अंश स्वर के साथ संवाद करनेवाले को संवादी, अनुवाद करनेवाले को अनुवादी और विवाद करनेवाले को विवादी कहते हैं। संवाद की शर्त है कि नव-श्रुत्यंतर यानी षड्ज-मध्यम-भाव और त्रयोदश-श्रुत्यंतर यानी षड्ज-पंचम-भाव से स्वरों का परस्पर अंतर रहना चाहिये। स्थूल कान से भी यह षड्ज मध्यम-संवाद या षड्ज-पंचम-संवाद समझा जा सकता है। इस प्रकार जो स्वर आज हमारी गान-वादन-क्रिया में प्रयुक्त होते हैं, उनका स्थूल स्वरूप भी यदि देखें तो उनमें निम्नोक्त स्वर-संवाद दृष्टिगोचर होंगे। यथा—

षड्ज-मध्यम संवाद	षड्ज-पंचम-संवाद
सा — म	सा — प
रे॒ — म॑	रे॒ — ध॒
रे (त्रिश्रुतिक) प (त्रिश्रुतिक)	रे (त्रिश्रुतिक)—ध (त्रिश्रुतिक)
रे (चतुःश्रुतिक)—प (चतुःश्रुतिक)	रे (चतुःश्रुतिक)—ध (चतुःश्रुतिक)
ग॒ —ध॒	ग॒ —नि॒
ग* —ध (त्रिश्रुतिक)	ग —नि ‡
म —नि॒ †	म —सां

पूर्वांग के इन चार स्वरों का जो संवाद उत्तरांग में है, वही संवाद उत्तरांग के चार स्वरों का पूर्वांग में उसी के उल्टे क्रम से होगा।

पं० भातखंडे के ग्रन्थों में उल्लिखित रागों में दर्शाये हुए वादी-संवादी के परस्पर स्वर संवाद में उपरिलिखित व्याख्या से पर्याप्त अंतर पाया जाता है। स्थूल मान से देखने पर भी कई रागों में उनके द्वारा निदर्शित स्वर-संवाद से किसी प्रकार भी हम सहमत नहीं हो सकते। उदाहरणार्थ श्री राग में निदर्शित कोमल ऋषभ के साथ पंचम का संवाद और भारवा में कोमल ऋषभ के साथ शुद्ध धैवत का संवाद—ये दो संवाद देखें। पं०

---

* यह आधुनिक शुद्ध गान्धार और प्राचीन अंतर गान्धार अथवा स्वयंभू गान्धार है।

† क्षोभिणी श्रुति वाला प्राचीन शुद्ध निषाद और आधुनिक कोमल निषाद, जो मालकौस में लगता है।

‡ यह आधुनिक शुद्ध निषाद और प्राचीन काकली निषाद है।

भातखण्डे ने षड्ज-मध्यम और षड्ज-पंचम संवाद को क्रमशः चौथे और पाँचवें स्वर का अंतर मान लिया है। शास्त्रोक्त नव-त्रयोदश-श्रुत्यंतर की व्याख्या उन्होंने स्वीकृत नहीं की। इतना ही नहीं, षड्ज से चौथा स्वर मध्यम और षड्ज से पाँचवाँ स्वर पञ्चम—इस क्रम से स्वरों का संवाद वास्तव में होता भी है या नहीं, इसकी ओर भी न जाने क्यों उन्होंने ध्यान नहीं दिया है। उन्होंने तो केवल स्थूल मान से ही चौथे और पाँचवें स्वर को संवादी मान कर तदनुसार अपने रागों में प्रयुक्त वादी स्वर से संवादी स्वर को चौथे या पाँचवें स्थान पर रख दिया है। इसीलिये ऋषभ कोमल के साथ पंचम का और शुद्ध धैवत के साथ कोमल ऋषभ का संवाद न होने पर भी उन्होंने इन चौथे और पाँचवें अंतर वाले स्वरों को संवाद कर दिया है। हमारी राय में न यह व्याख्या शास्त्रीय है और न युक्ति संगत ही है। भरतादि ग्रन्थकारों ने नव-त्रयोदश-श्रुत्यंतरों को ही संवादी कहा है। वही सत्य संवाद है।

इन संवादी स्वर-जोड़ियों के अतिरिक्त और जो स्वर रह जाते हैं, जो पारस्परिक संवाद को पुष्ट करते हों, विवाद न करते हों, स्वरों की वादी-संवादी जोड़ियों का अनुगमन करते हों, ऐसे जो स्वर राग में प्रयुक्त होते हों, उन्हें अनुवादी कहा जाता है।

जो स्वर इन वादी-संवादी और अनुवादी स्वरों से किसी प्रकार का मेल न रखते हों, अपितु विरोध करते हों, उन्हें विवादी कहा है। ये विवादी स्वर एक विचित्र प्रकार के कंपन पैदा करते हैं, जिसे अंग्रेजी में beats कहते हैं, जो सारे स्वर-समूह में खलबली पैदा कर देते हैं। जो सारे स्वर-संवाद के दूध को फाड़ देता है, उसीको विवादी कहा है। शास्त्र में तो त्रिश्रुति ऋषभ के साथ द्विश्रुति गान्धार और त्रिश्रुति धैवत के साथ द्विश्रुति निषाद विवाद करता है, ऐसा कहा है। इसीलिये शास्त्रकारों ने विवाद को दर्शाने के लिये दो और बीस श्रुत्यंतर को ही विवादी माना है और उसी का उल्लेख किया है, यथा :—

विवादिनस्तु ते येषां विंशतिस्वरमन्तरम्। तद् यथा ऋषभगान्धारौ, धैवतनिषादौ। (भरतनाट्यशास्त्र पृ० ३१)

प्राचीन काल में वीणा पर ही गान-वादन की क्रिया होती थी। इसलिये पर्दे बँधे रहने के कारण और किसी प्रकार का बेसुरापन होने की संभावना नहीं थी। अतः इन्हीं दो विशेष स्वर-जोड़ियों को प्राचीनों ने विवादी माना है और तदनुसार लिख दिया है। वास्तव में इन दो विवादों के अतिरिक्त और भी विवाद हो सकते हैं। यथा—जो स्वर-जोड़ियाँ संवादी या अनुवादी मानी हैं, वे पूर्णतया यदि संवाद न करें तो विवादी ही मानी जाएँगी। जैसे षड्ज के साथ पंचम का तेरह श्रुत्यंतर से संवाद है। यदि यह पंचम ठीक से न मिलाया जाए, या एक श्रुति कम करके मिलाया जाए, तो वह संवाद न करके विवाद ही करेगा। क्योंकि परस्पर संवाद न होने से भी एक प्रकार का कंप होता है और वह कंप इतना कर्णकटु होता है कि जिसे सुनते ही रोम खड़े हो जाते हैं, और भौंहें तन जाती हैं। इसलिये इन संवाद-भिन्न नादों को भी विवादी मानना चाहिये।

रागों में वादी संवादी, अनुवादी और विवादी स्वर मानने की परंपरावाले विवादी को शत्रुवत् कहते हैं। राग में जो स्वर निषिद्ध हो, उसका प्रयोग निश्चय ही शत्रुवत् माना जाना चाहिये। किन्तु गान-वादन की क्रिया में कुशल गुणी ऐसे निषिद्ध स्वरों का भी कभी कभी ऐसी खूबी के साथ प्रयोग करते हैं, जिससे राग का रंजकत्व बढ़ जाता है। इस प्रकार जो राग के सौन्दर्य को बढ़ाता है, उसे हम शत्रु कैसे कह सकेंगे ? इससे यह सिद्ध है कि शत्रुत्व और विवादित्व भिन्न वस्तु है। उपरिकथित विवरण से समझना सहज होगा कि वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी—स्वरों के इन पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाने के पीछे शास्त्रकारों का क्या हेतु था।

ग्रह—अंश—न्यास—संन्यास—विन्यास—अपन्यास

उपरिलिखित पारिभाषिक शब्दों की सामान्य व्याख्या 'संगीताञ्जलि' के द्वितीय भाग में दी जा चुकी है। विशेष स्पष्टता के लिये मतंगकृत 'बृहद्देशी' में दी हुई व्याख्या, जो कि कुछ भिन्न शब्दों में है, यहाँ उद्धृत करना समुचित माना गया है।

ग्रह स्वर का लक्षण मतंग ने इस प्रकार दिया है—'आदौ जात्यादिप्रयोगो गृह्यते येनासौ ग्रहः।' अर्थात् जाति आदि का गान-प्रयोग जिस स्वर से आरंभ किया जाए, वह ग्रह स्वर है। आज भी राग के आरंभक स्वर को ग्रह कहते हैं।

वादी स्वर जब दस लक्षणों से युक्त होता है, तब अंश स्वर बनता है, यह द्वितीय भाग में स्पष्ट किया जा चुका है। अंश स्वर और ग्रह स्वर में क्या अंतर है, यह समझाते हुए मतंग ने कहा है—

'अंशो वाद्येव परं, ग्रहस्तु वाद्यादिभेद—भिन्नश्चतुर्विधः। यद्वा प्रधानाप्रधानकृतो भेदः। ग्रहो ह्यप्रधानभूतः। रागजनकत्वाद् व्यापकत्वाच्चांशस्यैव प्राधान्यम्। [बृहद्देशी पृ० ५६]

अर्थात्—अंश तो सदैव वादी स्वर ही होता है, किन्तु ग्रह स्वर के लिये यह नियम नहीं कि वह वादी भी हो; वह संवादी, अनुवादी आदि भी हो सकता है। दूसरा एक अन्तर यह भी है कि ग्रह स्वर अंश स्वर की अपेक्षा अप्रधान होता है। अंश स्वर राग का जनक और राग में व्याप्त होने के कारण प्रधान होता है।

अंश स्वर की दस विशेषताओं का विवरण मतंग ने निम्नलिखित प्रकार से दिया है—

'अंशविभागः स दशविधो बोद्धव्यः यस्मिन्नंशे क्रियमाणे रागाभिव्यक्तिर्भवति सोंऽशः। यस्माद्वारभ्य गीतः प्रवर्तते न ग्रहस्स्वरितः। स्वांशो द्वितीया तारमन्द्राभिव्यक्तिहेतुः स्वांशस्तृतीयः, पञ्चमस्वरमारोहणं तारं कदाचित् षष्ठस्वरारोहणमपि तारः।...यथा तारनियामकमन्द्रनियामकस्वरोऽप्यंशस्सप्तस्वरावरोहणा......। यश्च बहुप्रयोगतरः सोऽप्यंशः। यो रागस्य विषयत्वेनावस्थितः स्वरः सोऽप्यंशः।' [बृहद्देशी पृ० ५७]

अर्थात्—अंश स्वर दस प्रकार से बनता है। यथा—१) जिससे रागाभिव्यक्ति होती हो। २) जिस से गीत का आरंभ होता हो, ग्रह स्वर से यह भिन्न होगा। ग्रह स्वर राग के स्वरूप-विकास का आरंभक स्वर होता है, जब कि यहाँ तालबद्ध गीत का आरंभक स्वर अभिप्रेत हो, ऐसा प्रतीत होता है। ३-४) तार और मन्द्र स्थानों के स्वरों की अभिव्यक्ति का हेतु। ५) जिससे आगे पाँच या छैः स्वरों तक तार में आरोह हो सकता हो। ६-७) तार और मन्द्र स्थानों के स्वरों का नियामक। ८) जिससे सात स्वर नीचे तक अवरोह हो सकता हो। ९) जिसका अधिक प्रयोग हो। १०) राग के विषय अर्थात् केन्द्र बिन्दु के रूप में जो स्थित हो।

न्यास स्वरों अर्थात् घूम फिर कर बार बार जिन पर ठहरा जाता है, उनके विषय में मतंग ने निम्नलिखित सूक्ष्मतापूर्ण व्याख्या दी है:—

'तत्र' प्रथममविदारी मध्ये न्यासस्वराः प्रयुक्ताः।...यत्र गीतमिति समाप्तिरिति संभाव्यते, सोऽपन्यासः। सर्वविदारी* मध्यमो भवति।...अंशस्य विवादी यथा न भवति प्रथमविदार्यान्तेर्यादि प्रवृत्तो यदा भवति, तदासौ संन्यास इत्यर्थः......। एष एव तु संन्यासस्वरः पदान्ते विन्यस्यते तदा विन्यासः। [बृहद्देशी पृ० ५८]

अर्थात् गान-क्रिया के खण्डों के बीच बीच में जिस पर घूम फिर कर ठहरा जाए, वह न्यासस्वर कहलाता है।—अर्थात् गान-क्रिया के विभिन्न खण्डों में से एक खण्ड से दूसरे में जाते समय जो ठहराव किया जाता है, उसका द्योतक न होकर न्यास-स्वर एक ही खण्ड के अन्तर्गत किये जाने वाले विभिन्न ठहरावों का द्योतक है। जहाँ ऐसा प्रतीत हो कि गीत समाप्त हुआ चाहता है, (परन्तु वास्तव में समाप्ति न हो) वहाँ अपन्यास समझना चाहिये। यह अवस्था सब खण्डों के पारस्परिक मध्यभाग में रहेगी। जो स्वर अंश का विवादी न हो और गीत के प्रथम खण्ड की समाप्ति जिस पर की जाए वह संन्यास कहलाता है। यही संन्यास स्वर जब पद (समूचे गाने) के अंत में रखा जाए—तब विन्यास कहलाता है।

---

* गान-क्रिया के खण्डों को 'विदारी' कहा है।

उपर्युक्त सूक्ष्म भेदों के अतिरिक्त मातंग ने न्यास की सामान्य व्याख्या इस प्रकार भी दी है—

'न्यस्ते त्यज्यते यस्मिन् येन वा गीतं तन्न्यास इति ।' [बृहद्देशी पृ० ६०]
अर्थात् जिस स्वर पर गीत को समाप्त किया जाए, वही न्यास है।

उपरिलिखित सूक्ष्म और सामान्य व्याख्याओं के आधार पर, विद्यार्थियों की सुगमता के लिये, मध्यम मार्ग अपना कर प्रस्तुत पुस्तक में 'न्यास' शब्द का, राग में बार बार ठहराव का स्थान दर्शाने के लिये और विन्यास शब्द का, पूर्ण समाप्ति दिखाने के लिए, उपयोग किया गया है।

बल-अबल

रागों में कुछ स्वर ऐसे होते हैं कि जिनका बार बार उच्चारण किया जाता है, जिन पर मुकाम किया जाता है। चाहे वह अंश स्वर हो या न हो, फिर भी वह स्वर इतना अधिक बलवान् दिखता है कि जिससे मानों वही वादी हो, वही रागवाची हो ऐसा प्रतीत होता है। ऐसे स्वरों को बलवान् स्वर कहा है। उसके विपरीत जिन स्वरों का उपयोग अत्यल्प मात्रा में होता है, वे निर्बल या अबल कहे जाते हैं। इसका एक उदाहरण समझ लें। देश के पूर्वाङ्ग में ऋषभ पर अधिक ठहरते हैं। यह उसका बलवान् स्वर है और न्यास स्वर भी है, क्योंकि बारंबार उसका उच्चार और उस पर मुकाम किया जाता है। फिर भी यह उसका अंश स्वर नहीं है। विद्यार्थी जानते हैं कि देश के अवरोह में गान्धार धैवत का प्रयोग न किया जाए तो वह देश न रह कर समूचा सारंग ही हो जाएगा। देश राग का देशत्व पूर्वाङ्ग में गान्धार पर और उत्तरांग में धैवत पर ही अवलंबित है, चाहे वे स्वर अल्प मात्रा में ही प्रयुक्त होते हैं। विशाल देह में प्राण की मात्रा अल्प होने पर भी देह उसी पर जीवित रहता है, तद्वत् राग का प्राण या अंश-स्वर अल्पत्व या बहुत्व अथवा अबलत्व और सबलत्व पर निर्भर नहीं है। राग में स्वरों की इन अवस्थाओं को दर्शाने के लिये बल-अबल शब्दों का प्रयोग किया गया है।

'बल' 'अबल' को दर्शाने के लिये 'अलपत्व-बहुत्व' इन शब्दों का भी शास्त्रों में प्रयोग किया गया है। 'संगीत रत्नाकर' में 'बहुत्व' का लक्षण इस प्रकार दिया है :—

अलङ्घनात्तथाऽभ्यासाद्बहुत्वं द्विविधं मतम् ।
पर्यायांशे स्थितं तच्च वादिसंवादिनोरपि ॥
(सं० र० १।४६)

अर्थात् 'अलङ्घन' और 'अनभ्यास' से बहुत्व दो प्रकार का होता है। लङ्घन का अर्थ है स्वर का पूरा उच्चार न करके केवल ईषन् स्पर्श से उच्चार करना। अतएव 'अलङ्घन' का अर्थ हुआ—ऐसे लङ्घन का अभाव अर्थात् संपूर्ण रूप से, साकल्य-सहित स्वर का उच्चार। अभ्यास का अर्थ है—बार बार दोहराना। यह बहुत्व ऐसे स्वरों में भी रह सकता है जो अंश न होते हुए भी वादी या संवादी हो।

'अलपत्व' का लक्षण निम्नोक्त है :—

अलपत्वं च द्विधा प्रोक्तमनभ्यासाच्च लङ्घनात् ।
अनभ्यासस्त्वनंशेषु प्रायः लोप्येष्वपीष्यते ॥
[सं० र० १।५०]

अर्थात्—अनभ्यास (बार बार न दोहराने से) और 'लङ्घन' से अलपत्व दो प्रकार का होता है। यह अलपत्व प्रायः ऐसे स्वरों में रहता है जो अंश न हों अथवा जिनका लोप अभीष्ट हो।

निबद्ध-अनिबद्ध गान

जो गीत, जो आलाप, जो तान, बिना लय या ताल के गाया बजाया जाए, उसे अनिबद्ध गान-क्रिया कहते हैं। जो लयबद्ध और तालबद्ध गीत और आलप्ति-प्रयोग है, वे निबद्धगान कहलाते हैं।

संगीत रत्नाकर में निबद्ध अनिबद्धगान की व्याख्या इस प्रकार की है :—

निबद्धमनिबद्धं तद्द्वेधा निगदितं बुधैः ॥
बद्धं धातुभिरङ्गैश्च निबद्धमभिधीयते।
आलप्तिर्बन्धहीनत्वादनिबद्धमितीरिता ॥
(सं० र० ४।४५)

अर्थात्-गान दो प्रकार का होता है—निबद्ध और अनिबद्ध। जो गान 'धातु' और 'अङ्ग' द्वारा निबद्ध हो, वह 'निबद्ध' कहलाता है। बन्ध रहित होने के कारण आलप्ति को 'अनिबद्ध' कहा जाता है। ['धातु' और 'अङ्ग' प्रबन्धगान के अवयव विशेष हैं]।

रागांग-परिभाषा

शास्त्रकारों ने रागों में प्रयुक्त होनेवाले अंगों के बारे में रागांग, भाषांग, क्रियांग और उपांग—ऐसे कुछ भेद माने हैं। उन शब्दों में से प्रथम तीन की निरुक्ति मतंग ने निम्नोक्त दी है :—

'ग्रामोक्तानां तु रागाणां छायामात्रं भवेदिति।
गीतज्ञैः कथिताः सर्वे रागाङ्गास्तेन हेतुना ॥
भाषाच्छायाऽऽश्रिता येन जायन्ते सदृशाः किल।
भाषाऽङ्गास्तेन कथ्यन्ते गायकैस्तौकिकादिभिः ॥
करुणोत्साहशोकादिप्रबला या क्रिया ततः।
जायन्ते च यतो नाम क्रियाऽङ्गा कारणात्ततः ॥'

प्राचीनकाल में षड्जग्राम और मध्यमग्राम—इन दोनों ग्रामों की मूर्च्छनाओं से जो राग संभूत होते थे, उन मूल रागों की जिन २ रागों में छाया दिखाई देती थी, उन्हें रागांग कहते थे। यहाँ उसकी निगूढ़ व्याख्या करने का अवसर नहीं है। किन्तु आधुनिक गान-वादन के प्रयोग में रागांग का यानी राग के अंग का किस रूप में उपयोग होता है, उसे हम अल्प में समझ लें। यथा कल्याण-अंग ले लें। कल्याण राग का अपना जो अंग है, वह नि रे सा, ध नि रे सा, नि ध नि रे सा—अथवा प रे सा—इन स्वरों में अभिव्यक्त होता है। इसी अंग का किसी अन्य राग में उपयोग होते ही, वहाँ पर कल्याण की छाया दिखाई देगी, ऐसी छाया जहाँ २ दिखाई दे, उसे कल्याण-अंग कहेंगे। जिन रागों में इस अंग की छाया प्रधानरूप से दिखाई देगी, वे कल्याण अंग के ही राग माने जायेंगे। केवल ऋषभ धैवत शुद्ध और तीव्र मध्यम लेनेवाले रागों को, यदि उनमें कल्याण का अंग नहीं है, तो उन्हें उस अंग का नहीं ही माना जाना चाहिये। यथा—केदार और कामोद को देखें। केदार का केदारत्व अथवा केदार का अपना रागत्व—सा म, म प, प ध म, सा म, म प, मी प ध—म, म रे—सा—इसी पर निर्भर है। इसमें कल्याण का अपना अंग कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। इसलिये इसे कल्याण-अंग का राग नहीं ही मानना चाहिये। वही अवस्था कामोद की भी है। जलधर केदार नामक राग में स्वरों की दृष्टि से दुर्गा के स्वर ही लगते हैं। फिर भी क्योंकि सा म, म प, ध म, म रे सा—

यों केदार अंग से इसे गाया जाता है। इसीलिये उसे केदार-अंग का राग मानकर जलधर-केदार कहा गया है। विस्तार भय से अन्य रागों के अंगों का विवरण यहाँ देना संभव नहीं है। फिर भी मुझे विश्वास है कि विद्यार्थी और शिक्षक, रागांग या राग के अंग से क्या अभिप्रेत है, उसे इतने विवरण से समझ जायेंगे।

शास्त्रों में उल्लिखित दूसरा अंग है—भाषांग। भारत बहुत बड़ा देश है और प्रचुर भाषाएँ यहाँ प्रचलित हैं। हरेक भाषा के उच्चारों का अपना एक विशेष अंग रहता है। गीत की या राग की गान-क्रिया के अवसर पर भाषाओं के भिन्न २ उच्चारों की कुछ प्रति क्रियाएँ संगीत के स्वरों के उच्चारों पर भी होती हैं। यदि इंग्लिश की कविता हम लोग अपने राग में गाएँ, तो वह कैसी लगेगी? भारत में भी पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी, महाराष्ट्री, कर्णाटकी, तामिल, तेलगू, हिन्दी, बंगाली इत्यादि भाषाओं के भिन्न २ उच्चारों के अंगों को देखते हुए गान-क्रिया में उन उन भाषांगों का असर गीत पर भी होता है और गीत के सुननेवालों पर भी होता है। इन भिन्न-भिन्न भाषाओं के अंगों को देखकर ही रागांग के बाद भाषांग को एक अलग अंग के रूप में शास्त्रकारों ने माना है। यह अंग आज भी व्यवहार में है, जिसकी प्रत्यक्ष अनुभूति के रूप में भिन्न भिन्न भाषाओं के गीत-गान के अवसर पर उन भाषाओं के अंगों का डोलन सूक्ष्म दृष्टि से देखनेवालों को दिखाई देता है। कर्णाटक संगीत में भाषांग के विशेष उच्चारों से इस तथ्य की हमें प्रत्यक्ष अनुभूति मिलती है।

तीसरा अंग है क्रियांग। आजकल राग की आलप्ति, तान-क्रिया, गमकादि-प्रयोग—सब एक ही रूप से, एक ही आवाज़ से किये जाते हैं। भावाभिव्यक्ति के लिये यह दोषपूर्ण है। शास्त्रकारों ने भिन्न-भिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिये कंठ में भिन्न-भिन्न काक्वादि क्रियाएँ करने के लिये कहा है। जिनके द्वारा नवरस की अभिव्यक्ति साध्य हो सकती है। इन्हीं क्रियाओं का गानादि-प्रयोग में उपयोग किया जाए, तो उसे क्रियांग कहा जाएगा।

अंतिम अंग है—उपांग। इन रागांग-भाषांग-क्रियांग के अतिरिक्त रागों में प्रयुक्त होनेवाले जो सूक्ष्म अंग हैं, यथा—भिन्न रागों के स्वरों के विशेष उच्चार एवं भिन्न-भिन्न कणों के उपयोग से जो अंग उत्थित होते हैं, उन सब का समावेश उपांग शब्द में सन्निहित है। फिर भी, इन अंगों का सूक्ष्म दर्शन निगूढ़ दृष्टिवाले ही कर सकेंगे।

उपरिलिखित स्पष्टीकरण से शिक्षक और विद्यार्थी इन शब्दों का स्थूल भाव अवश्य समझ जायेंगे, ऐसी आशा है।

राग-प्रकृति, रस-भाव

संगीत में प्रयुक्त रसों के सम्बन्ध में भरत-नाट्यशास्त्र में दो विशेष उल्लेख मिलते हैं। एक तो जाति-प्रकरण में, भिन्न भिन्न जातियों का किस किस रस की अभिव्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाना चाहिये, यह बताते समय भरत ने संगीत में रस की चर्चा की है। दूसरे-वाद्य-संगीत में रसाभिव्यक्ति की चर्चा करते हुए भरत ने कहा है:—

वाद्यप्रयोगविहितान् स्वरांश्चैव निबोधत ॥
हास्यश्रृङ्गारयोः कार्यौ स्वरौ मध्यमपञ्चमौ।
षड्जर्षभौ च कर्तव्यौ वीररौद्राद्भुतेष्वथ ॥
गान्धारश्च निषादश्च कर्तव्यौ करुणे रसे।
धैवतश्च प्रयोक्तव्यो बीभत्से सभयानके ॥

[ना० शा० २६ । १६—१८]

अर्थात् हास्य और श्रृङ्गाररस में मध्यम-पंचम, वीर रौद्र और अद्भुत रस में षड्ज-ऋषभ, करुण रस में गान्धार निषाद एवं बीभत्स और भयानक रस में धैवत का प्रयोग करना चाहिये।

संगीत रत्नाकरादि ग्रंथों में भी प्रायः इसी प्रकार विशेष रसों की अभिव्यक्ति के लिये विशेष स्वरों की उपयोगिता के सम्बन्ध में कहा गया है। संगीत-रत्नाकर के प्रबन्धाध्याय में तो प्रबन्धों के भिन्न भिन्न प्रकारों के भिन्न भिन्न रसानुकूल प्रयोग के विषय में भी विधान किया गया है। परन्तु प्राचीन ग्रंथों के इन विधानों का हमारी आज की राग-परंपरा में रसों के निरूपण के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं दीखता। संगीत का रसानुकूल प्रयोग होना चाहिए, इतना तो इन उल्लेखों से निर्विवाद सिद्ध होता है। किन्तु अधुना प्रचलित रागों के रस-निर्णय पर इनके द्वारा कुछ विशेष प्रकाश नहीं डाला जा सकता।

कुल लोगों ने यह दर्शाने का यत्न किया है कि भरतोक्त स्वरों के रस-विधान के अनुसार उन उन स्वरों की प्रधानता जिन रागों में पाई जाए, उन्हें उन उन रसों के उपयोगी मान लिया जाए। इस कथन से भी रस की सिद्धि नहीं होती है।

पं० भातखंडे ने इस विषय की चर्चा करते समय अपने ग्रंथों में यत्र तत्र जो लिखा है, उसका सार यों है। रसशास्त्रोक्त नवरसों के स्थान पर मुख्य तीन ही रस माने जाएँ —श्रृंगार, वीर और करुण। इन तीनों का संबन्ध क्रमशः रि ध तीव्र, गॅनि॑ कोमल और रि॑ धॅ कोमल स्वर-जोड़ियों वाले रागों के साथ जोड़ दिया जाए। इस प्रकार उनके कथनानुसार रि—ध तीव्र वाले राग श्रृंगार रस के लिये, गॅ नी॑ कोमल वाले राग वीर रस के लिये और रि॑ धॅ कोमल वाले राग करुण रस के लिये उपयोगी माने जाएँ। उनके अपने कथनानुसार यह विधान सयुक्तिक और समंजस है, फिर भी वह सर्वग्राही होगा या नहीं, इसमें उन्हें स्वयं संदेह है। और उन का यह संदेह यथार्थ भी है। कारण—

रसों का आविर्भाव केवल स्वरों की तीव्र—कोमलादि अवस्था पर ही निर्भर नहीं है, अपितु सप्तकभेद, उच्चार-भेद, लय-भेद, स्पर्श-भेद, गमकादि प्रयोग-भेद—ऐसी बहुत सी बातों पर अवलंबित है। यथा—हमें नित्य के वाग्व्यवहार में एक ही शब्द के उच्चारण-भेद से भिन्न-भिन्न अर्थों का बोध होता है। एक ही शब्द का स्नेह, प्यार, दुःख, खेद, क्रोध, तिरस्कार इत्यादि भावों के अनुरूप उच्चार करने से ही उसके वास्तविक अथवा अभिप्रेत अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। क्रोध में जिस आवेश से और आघात दे कर स्वरों का उच्च उच्चार किया जाता है, वैसा प्रयोग दुःख में या प्यार में हम नहीं ही करते। इन भिन्न-भिन्न उच्चारणों का जो महत्त्व वाग्व्यवहार में हैं, वैसा ही निगूढ़ महत्त्व रागों में भी है। तभी वाञ्छित भावाभिव्यक्ति हो सकती है, अन्यथा नहीं।

इसके अतिरिक्त स्वरों के आपसी सम्बन्ध, उनके अन्तर (गुणोत्तर प्रमाण से), उन पर ठहरने का समय, ताल और लय की द्रुत मध्य विलंबित गति,—इन पर भी रस की अभिव्यक्ति निर्भर है। पहिले हम कह चुके हैं कि सप्तक-भेद पर भी रस अवलंबित रहता है। उसका यही अभिप्राय है कि मंद्र-मध्य और तार सप्तक के स्वरों के मंद-तीव्रादि भिन्न-भिन्न उच्चार भिन्न भिन्न प्रभाव उत्पन्न करते हैं। रस के विषय में विस्तृत विवरण देना तो यहाँ शक्य नहीं हैं, राग-रस के लिये अलग ही ग्रन्थ लिखा जायगा। किन्तु स्थूल मान से विद्यार्थी कुछ समझ लें, इसलिये इस संक्षिप्त विवरण के बाद कुछ उदाहरण दे देते हैं। यथा—

शंकरा, अडाणा, हिण्डोल जैसे राग, जो कि तारगामी हैं (तार सप्तक में जिनकी विशेष गति है) और जिनकी गति मध्य-द्रुत है, ऐसे रागों की प्रकृति कभी गंभीर नहीं हो सकती। तारगामी एवं द्रुतगति वाले सभी राग तरल, उद्दाम, तीव्र और अस्थिर प्रकृति के ही होते हैं। इस प्रकृति के राग क्रोध, आवेश, उत्साह, निर्भर्त्सना आदि भावों और वीर आदि रसों की अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं।

जिन रागों में षड्ज-मध्यम संवाद और स्वर-संगति का प्राधान्य होता है—यथा—केदार, भिन्नषड्ज, मालकौंस इत्यादि—वे राग शान्त रस और गंभीर प्रौढ़ भाव की अभिव्यक्ति में उपयोगी होते हैं।

खमाज, झिंझोटी, पहाड़ी, मांड़, तिलंग जैसे राग विशेषत: शृंगार रस की अभिव्यक्ति करते हैं, क्योंकि इनकी गति कभी चंचल, कभी स्थिर, कभी तार में, कभी मध्य में—ऐसे बदलती रहती है।

ऋषभ धैवत कोमल और मध्यम शुद्ध जिन रागों में प्रयुक्त होते हैं उन सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वे करुण रस के उपयोगी हैं। यथा—जोगी, गौरी जो करुण रस से पूरित हैं। हाँ, यहाँ भैरव गुणक्री जैसे रागों को अवश्य ही अपवाद मानना होगा, क्योंकि उनके स्वरों के उच्चारों में भीषणता रहने के कारण वे भयानक-रसोपयोगी हैं।

ऋषभ-धैवत कोमल और मध्यम तीव्र वाले जो राग हैं, उनमें से भी श्री जैसे रागों को अपवाद मानते हुए (क्योंकि वह एक प्रकार की भीषणता लिये हुए है), उनके विषय में कहा जा सकता है कि वे प्राकृतिक थकान, उदासीनता, उद्वेग, दैन्य, शैथिल्य आदि भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। यहाँ भी उनमें प्रयुक्त शब्द, स्वर, लय, उच्चारण और गति के अनुसार उनके रस बदलते रहेंगे।

जिस राग का जो रस होता है, जो उसकी लय होती है, जैसे उसके स्वरों के उच्चारण होते हैं, तदनुसार उसकी प्रकृति धीर गंभीर या चंचल होती है। विलम्बित गति सदैव गंभीरता को दर्शाएगी। तद्वत् द्रुत गति चंचल प्रकृति की और मध्य गति पृथक् पृथक् समयों पर उभय प्रकार की प्रकृति की निदर्शक हो सकती है।

सभी रागों के रस, भाव या प्रकृति पूर्ण रूप से निश्चित नहीं किये जा सकते, क्योंकि जैसे हम ऊपर कह आए हैं, तदनुसार रस का दर्शन अनेक सूक्ष्म तत्वों पर निर्भर है। इसीलिए स्थूलों नियमों द्वारा उसका निर्धारण सर्वथा असंभव है। किन्तु इस विषय को सामान्य रूप से समझने का मार्ग उपर्युक्त विवरण से प्राप्त हो जाएगा, ऐसी आशा है।

रागों का समय-निर्धारण

प्राचीनकाल से गान-क्रिया के समय निर्धारित होते आए हैं। यज्ञ-यागादिक के विशेष अवसरों पर सामगान करने वाले सामग भी प्रात:सवन, मध्याह्न सवन और सायंसवन—ऐसे तीन काल-विभागों में भिन्न भिन्न प्रकार का गान गाते थे। जब से राग परंपरा का आरंभ हुआ है, तब से किस समय पर कौन सा राग गाया बजाया जाए, इसका उल्लेख ग्रंथों में पाया जाता है। समय की मर्यादा निर्धारित करने में किसी विशेष नियम का परिपालन होता था या नहीं, यह संशोधन का विषय है। यहाँ पर उसकी विचारणा का अवकाश भी नहीं है। फिर भी, इस काल-निर्णय के सम्बन्ध में अधुना जो विचारणा हुई है, उस पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

पं० भातखंडे ने रसों के सम्बन्ध में जैसे तीन स्वर-जोड़ियों वाले रागों के तीन समूहों को माना है, तद्वत् उन्होंने उन्हीं जोड़ियों का अपनी परंपरा में राग-समय के निर्धारण में भी उपयोग किया है। इस सम्बन्ध में पूर्वांगवादी (जिनका वादी स्वर पूर्वांग में हो, उत्तरांगवादी (जिनका वादी स्वर उत्तरांग में हो) और सन्धि प्रकाश (जो दोनों सन्ध्याकाल में गाए बजाए जाते हों) राग—इस परिभाषा का भी उपयोग किया है। उनके मत से पूर्वांगवादी रागों का गायन-काल दिन के १२ बजे से रात्रि के १२ बजे तक है और उत्तरांगवादी रागों का काल रात्रि के १२ बजे से दिन के १२ बजे तक है। कोमल रि-ध वाले रागों को सन्धि प्रकाश राग माना है।

पं० भातखंडे ने, जैसे जनक रागों के ढाँचे में जन्य रागों को ढाल दिया है, उसी प्रकार काल-निर्णय के लिये अपने बनाये हुए ढाँचे में रागों को ढालने का प्रयत्न किया है। उनके ढाँचे में सब राग समीचीन

रूप से ढल गए होते तो बहुत अच्छा होता और स्थूल मान से ही सही, किन्तु सभी उसे स्वीकार करते। किन्तु उनकी परंपरा में सीखे हुए विद्यार्थी अपनी आशंकाएँ लेकर मेरे पास आते हैं प्रश्न पूछते हैं और समाधान की कामना करते हैं।

ऐसे जिज्ञासुओं के सम्यक् प्रश्न अल्प में ये है :—

(१) भारतीय परंपरानुसार दिवस का आरंभ और अंत सूर्य के उदय और अस्त के साथ होता है। रात्रि के १२ बजे से दिन के १२ बजे तक एवं दिन के १२ बजे से रात्रि के १२ बजे तक वाला काल-विभाजन पाश्चात्य परंपरा में ही मान्य है।

(२) जिन रागों को पं० भातखण्डे ने उत्तरांगप्रधान माना है, ऐसे बहुत से रागों का रागत्व पूर्वांग ही में प्रकट होता है। जैसे बिलावल राग—म ग म रे, ग नि—सा, ध नि—सा—इन स्वरों में ही विशेषतया निदर्शित होता है। बिलावल-अंग के—देवगिरि, ककुभ, लच्छासाख, सरपरदा वगैरह अन्य राग भी पूर्वांग-प्रधान ही है और वे पूर्वांगप्रधान होते हुए भी प्रातर्गेय हैं। इनके प्राण-स्वर भी किसी में षड्ज, किसी में ऋषभ, किसी में गान्धार तो किसी में मध्यम हैं। तद्वत् तोड़ी भी प्रातर्गेय होते हुए भी पूर्वांगप्रधान ही है, क्योंकि उसका मुख्य अंग सा रे॒ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ सा—इन्ही स्वरों में सन्निहित है। यही अवस्था भैरव और ललित की है। भैरव का भैरवत्व म—ग रे॒—सा—विशेषतया यहीं पर निदर्शित होगा। और ललित भी नि रे॒ ग म, मॅ म, ग रे॒ मॅ ग रे॒ सा—इन्हीं स्वरों में आविर्भूत होता है। जैसे ये प्रातर्गेय राग पूर्वांग में ही निदर्शित होते हैं, उत्तरांग में नहीं, तद्वत् ऐसे राग भी हैं जो उत्तरांगप्रधान होते हुए भी रात्रिगेय हैं यथा—हमीर, शंकरा, अडाणा, सोहनी। तद्वत् उन जिज्ञासुओं की यह भी उलझन है कि एक ओर जहाँ मारवा, पूर्वकल्याण जैसे राग उत्तरांगप्रधान होकर भी सायंगेय हैं, वहाँ दूसरी ओर पूर्वी पूरियाधनाश्री जैसे राग पूर्वांगप्रधान होकर उसी समय में गेय हैं। वही अवस्था दिन के १२ बजे के बाद गाए जाने वाले रागों की भी है। गौड़सारंग जहाँ पूर्वांगप्रधान है, वहाँ सूर-मल्हार उत्तरांगप्रधान है। इन सब रागों का समीचीन रूप से कालनिर्णय किस प्रकार किया जाए?

जिज्ञासुओं की यह उलझन स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में बम्बई में एक बार रागों के काल निर्णय का ठोस आधार खोजने के लिये अनेक संगीतकारों के पास परिपत्र द्वारा प्रश्नावली भेजकर सम्मति माँगी गई थी। किसी ने प्राचीन परंपरा की गवाही दी, तो किसी ने, परंपरा से मान्यता बनी हुई है, इसके सिवाय रागों का समय के साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है, ऐसा कहा। किसी किसी ने यह भी कहा कि इसके पीछे कोई नियम अवश्य हैं जो कि ज्ञात नहीं हैं। हम देखते हैं कि रेडियो पर रिकार्ड बजाते समय रागों के समय को नहीं देखा जाता है तद्वत् सिनेमा में और नाटक-कंपनियों की रंग-भूमि पर भी रागों की समय-मर्यादा का परिपालन नहीं किया जाता है। जो इन नियमों को केवल भावुकता पर आधारित मानते हैं, वे लोग सामने से प्रश्न पूछते हैं कि क्या दिन में मालकौंस गाने से कान को खराब लगता है, या रात को भैरवी गाने से वह दिल को चुभती है? और यह भी एक सत्य है कि देवगिरि, यमनी बिलावल, कुकुभ बिलावल वगैरह बिलावल—अंग के राग, जो कि प्रातर्गेय हैं, उन पर आजकल के रात्रिगेय कल्याण आदि रागों की असर है ही। कई गुणियों को देवगिरि को दिन का कल्याण और गौडसारंग को दिन का बिहाग कहते सुना है। यदि हमें रागों के समय को सिद्धान्त रूप से स्थापित करना हो तो हमें ऐसे प्राकृतिक नियम रखने होंगे, जो कि विश्वमान्य हो सकें। किन्तु उसके निगूढ़ विचार का भी यहाँ अवकाश नहीं है।

हम यह भी जानते हैं कि हमारे यहाँ भिन्न भिन्न ऋतुओं में उन उन ऋतुओं के राग चौबीसों घंटे गाए बजाए जाते हैं। जैसे—बसंत में बहार और बसंत और वर्षा में मल्हार। जैसे ये ऋतुओं के राग हैं—वैसे ही कुछ राग विशेष २ मासों में विशेष रूप से गाए जाते हैं। जैसे फागुन में होरी (काफ़ी), चैत में चैती एवं सावन में सावन, बरवा, और कजरी। तद्वत् शिशिर, शरत, हेमंत, ग्रीष्म इत्यादि ऋतुओं के भी विशेष राग हैं। भिन्न-भिन्न प्रसंगों के अनुकूल भी रागों का विभाजन होता है। इसके अतिरिक्त नायक-नायिका-भेद को दर्शाने के लिये भिन्न-भिन्न राग-रागिनियों का उपयोग हमारे यहाँ हुआ है। यहाँ पर यह कह देना उचित होगा कि इन सब रागों के गीतों में तदनुकूल शब्द-योजना पाई जाती है। जैसे बहार—बसंत के गीतों में ऋतुराज बसंत का ही वर्णन रहता है। विशेषतः इस शब्द-विन्यास पर ही यह विभाजन आधारित है। केवल शब्द पर आधारित विभाजन प्राकृतिक नियमों के सर्वथा अनुकूल नहीं हो सकता। उसके लिए तो अधिक निगूढ़ता से स्वर-तत्त्व को देखना पड़ेगा। सूर्य के उदय के साथ जैसे प्रकृति का क्रम-विकास होता है, और मध्याह्न तक वह विकास अपने चरम शिखर पर पहुँच कर फिर ढलने लगता है, वैसे ही संध्या होते होते प्रकृति श्रान्त हो जाती है। इस प्राकृतिक चढ़ाव उतार का स्वरों पर क्या असर होता होगा और उन स्वरों का रागों के साथ क्या संबन्ध है, यह सब सूक्ष्मता से देखना चाहिए। तपते हुए मध्याह्न में सूर्य का जो उग्र रूप होता है और मध्यरात्रि में प्रकृति की जो शान्त अवस्था होती है, इन सबको देख कर रागों का समय निर्धारित किया जाना चाहिये। जब तक यह सब वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं हुआ है, तब तक स्थूल मान से रागों की जो समय-मर्यादा परंपरा से व्यावहृत होती चली आई है, जिसका उल्लेख रागों के विवरण में यथास्थान दिया गया है, विद्यार्थी उसी को मान कर चलें। जिज्ञासुओं और विद्यार्थियों के लिये मेरा यही आप्त वचन है।

गायकों के गुण-दोष

गायकों के गुणों के संबन्ध में 'संगीतरत्नाकर' में कहा है :—

हृद्यशब्दः सुशारीरो ग्रहमोक्षविचक्षणः ॥ १३ ॥
रागरागाङ्गभाषाङ्गक्रियाङ्गोपाङ्गकोविदः।
प्रबन्धगाननिष्णातो विविधालप्तितत्त्ववित् ॥ १४ ॥
सर्वस्थानोत्थगमकेष्वनायासलसद्गतिः।
आयत्तकण्ठस्तालज्ञः सावधानो जितश्रमः ॥ १५ ॥
शुद्धच्छायालगभिज्ञः सर्वकाकविशेषवित्।
अनेकस्थायसंचारः सर्वदोषविवर्जितः ॥ १६ ॥
क्रियापरो युक्तलयः सुघटो धारणान्वितः।
स्फूर्जन्निर्जवनो हारिरहःकृद्भजनोत्कुरः ॥ १७ ॥
सुसंप्रदायो गीतज्ञैर्गीयते गायनाग्रणी।

(सं० र० ३।१३-१७)

अर्थात् निम्नलिखित गुणों से युक्त गायक को सर्वश्रेष्ठ समझना चाहिए :—

(१) हृद्यशब्द :—मनोहर कण्ठ से युक्त।

(२) सुशारीर :—उत्तम 'शारीर' से युक्त। 'सुशारीर' का लक्षण 'संगीतरत्नाकर' में इस प्रकार दिया है :—

रागाभिव्यक्तिशक्तत्वमनभ्यासेऽपि यद्ध्वनेः ।
तच्छारीरमिति प्रोक्तं शरीरेण सहोद्भवात् ॥८२॥

तारानुध्वनिमाधुर्यरक्तिगाम्भीर्यमार्दवैः ।
घनतास्निग्धताकान्तिप्राचुर्यादिगुणैर्युतम् ॥
तत्सुशारीरमित्युक्तं लक्ष्यलक्षणकोविदैः ।

[सं० र० ३।८२-४]

कण्ठ की आवाज़ के जिस गुण से बिना अभ्यास के भी रागाभिव्यक्ति करने की शक्ति रहती है, उसे 'शारीर' कहा जाता है, क्योंकि वह शरीर के साथ ही उत्पन्न होती है। तार-व्याप्ति, अनुरणनयुक्तता, रमणीयता, रञ्जकता, गांभीर्य, सौकुमार्य, सारपूर्णता, कान्ति, प्राचुर्य आदि गुणों से युक्त आवाज को 'सुशारीर' कहते हैं।

(३) **ग्रहमोक्षविचक्षण** :—गीत का आरम्भ (ग्रह) और अन्त (मोक्ष) करने की क्रिया में कुशल।

(४) **राग-रागाङ्ग-भाषाङ्ग क्रियाङ्गोपाङ्गकोविद** :—राग-रागाङ्ग-भाषाङ्ग क्रियाङ्ग और उपाङ्ग का सम्यक् ज्ञाता।

(५) **प्रबन्ध गान-निष्णात** :—प्रबन्ध गान में प्रवीण।

(६) **विविधालप्तितत्त्ववित्**—नाना प्रकार की आलप्ति (आलाप) के तत्त्व को जानने वाला।

(७) **सर्वस्थानोत्थगमकेष्वनायासलसद्गति** :—मंद्र-मध्य और तार-स्थानों से उठने वाली सभी गमकों का जो बिना आयास के प्रयोग कर सकता हो।

(८) **आयत्तकण्ठ** :—जिसका कंठ अपने अधीन हो अर्थात् स्वाधीन कण्ठ वाला।

(९) **तालज्ञ** :—ताल का ज्ञाता।

(१०) **सावधान** :—सावधान।

(११) **जितश्रम** :—गान-क्रिया में जिसे थकान न हो।

(१२) **शुद्धच्छायालगाभिज्ञ** :—शुद्ध, छायालग इत्यादि राग-भेदों का ज्ञाता।

(१३) **सर्वकाकुविशेषवित्** :—सभी प्रकार के काक्वादि भेदों को जानने वाला।

(१४) **अनेकस्थायसंचार** :—अनेक स्थायों (रागावयवों) का प्रयोग करने में समर्थ।

(१५) **सर्वदोषविवर्जित** :—सब दोषों से रहित।

(१६) **क्रियापर** :—गान-क्रिया के अभ्यास में तत्पर।

(१७) **युक्तलय** :—लय के विभिन्न प्रयोगों में प्रवीण।

(१८) **सुघट** :—सुघड़ अर्थात् स्वरवर्ण-ताल की यथायोग्य संयोजना करने वाला।

(१९) **धारणान्वित** :—उत्तम स्मृति से युक्त।

(२०) **स्फूर्जन्निर्जवन** :—'निर्जवन' नामक स्थाय (रागावयव-विशेष) का जो यथायोग्य प्रयोग कर सकता हो। 'निर्जवन' का लक्षण 'संगीतरत्नाकर' में इस प्रकार दिया है :—

सरलः कोमलो रक्तः क्रमान्नीतोऽतिसूक्ष्मताम् ॥
स्वरस्याद्येषु ते स्थायाः प्रोक्ता निर्जवनान्विताः। (सं० र० ३।१४५-४६)

अर्थात्—जिन स्थायों में स्वर को सरल (अवक्र) कोमल (सुकुमार) और रक्त (रागवान्) रखते हुए क्रमशः सूक्ष्म बनाया जाता है, वे निर्जवन संबन्धी स्थाय हैं।

(२१) हारिरहःकृत् :—वेग से गान-क्रिया करके जो श्रोताओं का मन हरण करता है।

(२२) भजनोद्धुर :—'भजन' अर्थात् राग की सम्यक् अभिव्यक्ति में अतिशय प्रवीण।

(२३) सुसंप्रदायो :—उत्तम गुरु-परंपरा वाला।

गायकों के दोषों का 'संगीत-रत्नाकर' में निम्नलिखित विवरण मिलता है :—

संदष्टोद्घुष्टसूत्कारिभीतशङ्कितकम्पिताः।
कराली विकलः काकी वितालकरभोद्भटाः॥ २५॥
झोम्बकस्तुम्बकी वक्रा प्रसारी विनिमीलकः।
विरसापस्वराव्यक्तस्थानभ्रष्टोऽव्यवस्थिताः॥ २६॥
मिश्रकोऽनवधानश्च तथान्यः सानुनासिकः।
पञ्चविंशतिरित्येते गायना निन्दिता मताः॥ २७॥

अर्थात्—गायकों के पचीस दोष माने गये हैं। यथा :—

(१) संदष्ट—दाँत पीस कर गानेवाला।

(२) उद्घुष्ट—विरस चीत्कार करनेवाला।

(३) सूत्कारी—गाते समय जो सीत्कार की आवाज़ करे।

(४) भीत—भयभीत होकर गानेवाला।

(५) शङ्कित—गाते समय जो अनावश्यक त्वरा करे।

(६) कम्पित—गाते समय जिसके शरीर और आवाज़ में कम्प हो।

(७) कराली—भयावने ढङ्ग से मुँह फाड़ कर गानेवाला।

(८) विकल—जिसके गायन में न्यून-अधिक श्रुतियाँ लगती हों।

(९) काकी—कौवे जैसे कर्कश कण्ठ वाला।

(१०) विताला—तालच्युत या बेताला।

(११) करभः—गर्दन ऊँची करके गानेवाला।

(१२) उद्भट—बकरे की तरह मुँह बना कर गानेवाला।

(१३) झोम्बकः—मुँह, माथा और गर्दन की नसें फुला कर गानेवाला।

(१४) तुम्बकी—तूम्बे की तरह गाल फुला कर गानेवाला।

(१५) वक्री—गर्दन टेढ़ी कर के गानेवाला।

(१६) प्रसारी—हाथ पैर पटक कर गानेवाला।

(१७) निमीलकः—आँख मूँद कर गानेवाला।

(१८) विरसः—जिसका गायन नीरस हो।

(१९) **अपस्वर:**—जिसके गायन में वर्ज्य स्वरों का प्रयोग हो।

(२०) **अव्यक्त:**—जिसके गीत के शब्द स्पष्ट न हों।

(२१) **स्थानभ्रष्ट:**—स्वरों के तीनों स्थानों में जिसकी यथायोग्य पहुँच न हो।

(२२) **अव्यवस्थित**—जिसके गायन में व्यवस्था का अभाव हो।

(२३) **मिश्रक:**—शुद्ध छायालग रागों का जिसके गायन में मिश्रण हो जाता हो।

(२४) **अनवधानक:**—गायन में यथा-क्रम विकास की ओर जिसका ध्यान न हो।

(२५) **सानुनासिक:**—नाक से गानेवाला।

कुछ तालों के ठेके

प्रवेशिका-पाठ्य क्रम के दूसरे भाग में जिन तालों का विवरण भूल से छूट गया था, उनका एवं इस तृतीय भाग में सन्निविष्ट नूतन तालों का विवरण नीचे दिया गया है। सामान्यतः हमारे विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को तबला की प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। अतः इन ठेकों को यहाँ देने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। परन्तु फिर भी सौकर्य के लिये वे दिये गए हैं।

ध्रुपद-अंग के ताल

चौताल

मात्रा—१२, विभाग ६, ताली १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

×		०		५		०		९		११	
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन

सूलताल

मात्रा—१०, विभाग ५, ताली १-५-७ पर, खाली ३-९ पर

×		०		५		७		०	
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	किट	तक	गदि	गन

धमार

मात्रा—१४, विभाग ६, ताली १-६-११ पर, खाली ४-८-१३ पर

×			०		६		०			११		०	
त	धि	ट	धि	ट	धा	—	क	ति	ट	ति	ट	ता	—

तीव्रा

मात्रा ७, विभाग ३, ताली १-४-६ पर।

×	७		४		६	
धा	दिं	ता	कि ट	त क	ग दि	ग न

ख्याल अंग के ताल

विलम्बित एकताल

मात्रा—१२, विभाग ६, ताली १-५-६-११ पर, खाली ३-७ पर

×		०		५		०		६		११	
धीं	धीं	धागे	तिरिकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरिकिट	धीं	ना

तिलवाड़ा

मात्रा—१६, विभाग ४, ताली १-५-१३ पर, खाली ६ पर

×				५				०				१३			
धा	तिरकिट	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता	तिरकिट	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं

रूपक

मात्रा—७, विभाग ३, ताली ४-६ पर, खाली १ पर

०			४		६	
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना

मात्रा-विभाग-विवरण

प्रवेशिका के पाठ्यक्रम में विद्यार्थी १/२, १/४ और १/८ इन मात्रा-विभागों अथवा लय-विभागों को सीख चुके हैं। तृतीय वर्ष के पाठ्य-क्रम में निम्नलिखित प्रकार जोड़े गए है :—

१/३, १/६, १/१२, २/३, ३/२, ३/४

१/३ अर्थात् एक—तृतीयांश लय-भेद को समझने के लिये विद्यार्थी दादरा ताल की गति दिमाग में भली भाँति बिठा लें। दादरा के एक विभाग में जिस प्रकार तीन मात्राओं का उच्चारण किया जाता है, उसी प्रकार यहाँ एक मात्रा के तीन टुकड़े करके उन टुकड़ों का एक मात्रा के काल में उच्चारण करना है। यहाँ ध्यान रहे कि ये टुकड़े बिल्कुल समान होने चाहिए। यों एक मात्रा में तीन टुकड़ों का उच्चार तो १/२ + १/४ + १/४—इस प्रकार भी किया जा सकता है। परन्तु वह एक तृतीयांश लय नहीं होती। अतः मात्रा-विभाग समान वजन के हों, इस ओर विशेष ध्यान दिया जाए। यह लय जब पूरी तौर से सध जाएगी, तब इसी की दुगुन और चौगुन करके १/६ और १/१२ लय-विभागों का सुगमता से प्रयोग किया जा सकेगा। निम्नलिखित अलंकारों से ये तीनों प्रकार स्पष्ट हो जाएँगे—

१/३ — सा रे ग	रे ग म	ग म प	म प ध	प ध नि	ध नि सां
अथवा — सा रे सा	रे ग रे	ग म ग	म प म	प ध प	ध नि ध

१/६ सा रे ग, रे ग म	ग म प, म प ध	प ध नि, ध नि सां
अथवा—सा रे सा, रे ग रे	ग म ग, म प म	प ध प, ध नि ध

१/१२ — सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म	प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां
अथवा — सा रे ग म ग रे, रे ग म प म ग	ग म प ध प म, म प ध नि ध प

ये सब प्रकार अभ्यास द्वारा सिद्ध कर लेने के बाद २/३ (दो—तृतीयांश) लय को समझना सरल हो जाएगा। एक—तृतीयांश लय में प्रत्येक मात्रा के तीन टुकड़े करके उन टुकड़ों में से प्रत्येक को पृथक् पृथक् unit या इकाई मान कर चलते हैं। अब इन टुकड़ों में से दो दो की जोड़ियाँ बना लें और इस प्रकार एक unit या इकाई का मूल्य १/३ न रख कर २/३ कर दें। यथा—

२/३ सा–रे	–ग–	रे–ग	–म–	ग–म	–प–	म–प	–ध–	प–ध	–नि–	ध–नि	–सां–

एक—तृतीयांश लय में प्रत्येक स्वर को एक—तृतीयांश मूल्य ही दिया गया था। किन्तु यहाँ दो—तृतीयांश दिया गया है।

इससे स्पष्ट है कि एक—तृतीयांश लय की आधी अर्थात् ड्योढ़ी (तिगुन का आधा) यह लय बनेगी। एक—तृतीयांश लय में एक मात्रा में तीन Unit या इकाइयाँ बनती थीं, तो यहाँ दो मात्रा में बनेंगी, अर्थात् एक मात्रा में ड़ेढ़ इकाइयाँ आएँगी।

३/२ (तीन—द्वितीयांश) लय प्रयोग के लिये १/२ (एक द्वितीयांश) विभाग के तीन विभागों को जोड़ कर एक इकाई का मूल्य देना होगा। यथा :—

$\frac{1}{2}$ सा रे	ग म	प ध	नि सां

$\frac{2}{3}$ सा –	– रे	– –	ग –	– म	प –	– ध	– –	नि –	– सां	– –

इस प्रकार तीन मात्राओं में दो का समावेश होगा।

इसी प्रकार $\frac{1}{4}$ (एक—चतुर्थांश) लय-विभागों में से तीन को मिला कर एक इकाई बनाने से $\frac{3}{4}$ (तीन—चतुर्थांश) लय बन जाएगी। यथा :—

$\frac{1}{4}$ सा रे ग म	प ध नि सां	सां नि ध प	म ग रे सा

$\frac{4}{3}$	सा – – रे	– – ग –	– म – –	प – – ध	– – नि –	– सां – –
	सां – – नि	– – ध –	– प – –	म – – ग	– – रे –	– सा – –

इस प्रकार चार मात्राओं में तीन मात्राओं का समावेश होगा।

ऊपर दिये हुए अलंकारों के अतिरिक्त हाथ से ताली देते हुए गिनती द्वारा भी इन लय-प्रकारों को साध लेना चाहिये।

स्वरलिपि-चिह्न-परिचय

(१) वेद—परंपरानुसार **तीनों सप्तकों के चिह्न—**

सा रे ग म — मध्य सप्तक।
सा̱ रे̱ ग̱ म̱ — मन्द्र ,, ।
सां रें गं मं — तार ,, ।

(२) **कोमल स्वर—**रॅ गॅ।

(३) **तीव्र स्वर—**मि।

(४) **कण या स्पर्श स्वर—**$\overset{\text{सा}}{\text{रे}}$ $\overset{\text{नि̱}}{\text{सा}}$।

(५) **आन्दोलित या कंपित स्वर—**धॅ〰।

(६) **मींड—**$\overparen{\text{सां}\quad\text{प}}$

(७) मोटी खड़ी रेखा ताल के विभाग-स्तंभ को दिखाती है और पतली रेखा एक मात्रा की अवधि को। यथा—

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां

एक मात्रा के स्थान में जितने भी स्वर लिखे हों, उनकी संख्यानुसार वहाँ लय की गति समझकर उच्चार करना होगा। जैसे—यदि एक, दो, तीन, चार, छैः, आठ, बारह या सोलह स्वर एक मात्रा में लिखे हैं तो क्रमशः १, १/२, १/३, १/४, १/६, १/८, १/१२ एवं १/१६ लय समझनी होगी। इसमें भी एक मात्रा के अंतर्गत भिन्न भिन्न स्वरों अथवा गीत के अक्षरों का लय-विभागानुसार मात्रांश-मूल्य समझने के लिये (–) तथा (⌣ ⌴) चिह्नों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। जैसे—

सा रे – ग	म – प रे	ग – म	ग–मे प –ध	सरे ग म प	रे ग मप ध	गम पध नि–	म प ध निसां
१/४ १/२ १/४	१/२ १/४ १/४	२/३ १/३	१/३ १/६ १/३ १/६	१/८ १/८ १/४ १/४ १/४	१/४ १/४ १/८ १/८ १/४	१/८ १/८ १/८ १/८ १/२	१/४ १/४ १/४ १/८ १/८

ऊपर जहाँ २ (⌣) का उपयोग हुआ है वहाँ उसके अंतर्गत दोनों स्वरों का एकत्रित मूल्य तो १/४ ही है, परंतु एक एक स्वर का पृथक मूल्य १/८ है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिये।

(८) **सम**— ×

(९) **खाली**—०

(१०) **ताली**—ताल के उस विभाग की प्रथम मात्रा की संख्या द्वारा निर्दिष्ट की जाती है। यथा—त्रिताल में ५ और १३ मात्रा पर सम के अतिरिक्त ताली पड़ती है।

(११) एक ही स्वर के दीर्घोच्चार को दिखाने के लिये ऽ का प्रयोग किया है। इस अवग्रह का मात्रा-मूल्य तो उस मात्रा के अवान्तर विभागों पर निर्भर रहेगा।

(१२) गीत के एक ही अक्षर का जहाँ दीर्घोच्चार करना हो, अथच स्वरों में परिवर्तन होता हो, वहाँ उन स्वरों के नीचे अवग्रह के स्थान पर शून्य का प्रयोग किया गया है। यथा—

मं	प	ध	प
का	•	•	•

राग तिलककामोद

आरोहावरोह—सा रे म प सां,– –, प ध, म ग रे ग, सा रे म ग – – सा।

जाति—औड़व-वक्रसंपूर्ण।

ग्रह—मध्य षड्ज।

अंश—पूर्वांग में गान्धार और उत्तरांग में धैवत।

न्यास—गान्धार और निषाद।

विन्यास—मध्य षड्ज।

रागवाची स्वर-जोड़ी—सां – – प।

मुख्य अंग—सा रे ग, सा रे म ग, सा नि़, प़ नि़ सा रे ग– –सा।

समय—प्रायः दोपहर से रात तक।

प्रकृति—युवा, तरल।

विशेष विवरण

जो विद्यार्थी देश सीख चुके हैं, वे इस राग को जल्दी समझ जायँगे। 'संगीताञ्जलि' के प्रथम भाग में देश राग का ज्ञान देकर इस विभाग में उसके निकटवर्ती इस राग को स्थान देना समुचित माना है। थोड़े से शब्दों में तिलककामोद का परिचय देना हो तो इतना कह देना पर्याप्त होगा कि देश के आरोहावरोह के नियमों का भंग करने से इस राग का दर्शन होने लगेगा। देश के आरोह में गान्धार धैवत वर्जित हैं और अवरोह में धैवत गान्धार लेते हुए पंचम और ऋषभ पर न्यास किया जाता है। यथा—नि़ सा रे म प नि सां, सां नि ध प – ध म ग रे –, नि़ सा। इस आरोहावरोह के नियमों का भंग करके देखिए। यथा—सा रे ग सा रे म ग, सा नि़, प़ नि़ सा रे ग– –सा, रे म प ध – – म ग रे ग, सा रे म ग, सा नि़, प़ नि सा रे ग– –सा, सा रे म प सां– –प, ध, म ग रे ग, सा रे म ग सा नि़, प़ नि़ सा रे ग– –सा। इतने ही से तिलककामोद अभिव्यक्त हो जाएगा। उपरिलिखित स्वरावली से स्पष्ट है कि गान्धार निषाद पर ठहरने की एक विशेष क्रिया इस राग का आविर्भाव कराने में सहायक होती है। ऋषभ का वक्र प्रयोग, उस पर न्यास का अभाव और कोमल निषाद का अत्यल्प प्रयोग—तिलककामोद की ये विशेषताएँ भी इसे देश से पृथक् करती हैं।

यह राग विलम्बित आलापचारी के लिए उपयुक्त नहीं है और द्रुतगति की लम्बी तानें मारने के लिए भी इसमें कम गुंजाइश है। यह एक मधुर और प्रचलित सामान्य राग है। यह आत्मकथन के लिए सहायक प्रतीत होता है। यदि सोचकर विधिपूर्वक स्वरों पर न्यास किया जाए, तो दो जनों में परस्पर बातचीत हो रही हो, ऐसी भावना जागृत हो जाएगी॥ सा रे ग, सा रे म ग, सा नि़, प़ नि़ सा रे ग, सा रे म ग, सा नि़, रे ग सा रे म ग, सा नि़, प़ नि़ सा रे ग– –सा। आलापचारी के इन शब्दों का गूढ़ अर्थ अनुभव कीजिए—बार बार गा कर देखिए। आपको प्रतीत होगा कि सचमुच कोई बातें कर रहे हैं, कुछ कह रहे हैं—फिर ठहर जाते हैं—कुछ सोचते हैं—फिर कुछ कह उठते हैं। भावोद्रेक की कुछ ऐसी क्रियाएँ इन स्वरों में, इन ठहरने की क्रियाओं में विद्यमान हैं, जो कि सूक्ष्म दृष्टिवालों को ही दिखाई देंगी। राग एक प्रकार से स्वर काव्य ही तो है। एक ही शब्द भिन्न भिन्न योजनाओं से भिन्न भिन्न अर्थ सूचित करता है। तद्वत् स्वर भी भिन्न भिन्न योजनाओं, उच्चारों और मुकामों से भिन्न भिन्न भाव और रस का निर्माण करते हैं। स्वरों के इन अर्थों का दर्शन करना—यही संगीत का जीवन-धर्म है।

राग तिलककामोद

मुक्त आलाप

(१) सा — — रे ग—सा, सा रे ग रे ग— सा, सारे नि़सा ग रे ग—सा।

(२) प़ नि़ सा रे ग—सा, प़नि़ सा रे ग, सा रे म ग—सा; प़ ध़ म़ प़ सारेनि़सा, ग रे ग सा रे म ग — सा।

(३) ग—रे सा नि़, सा रे ग, सा रे म ग, सा नि़, ग रे ग सा रे म ग—रे—सा नि़, प़ नि़ सा रे ग ,सा रे म ग —रे सा नि़, प़ नि़ सा रे ग — सा।

(४) रे सा सा–, ग रे रे–, ग— सा। सा नि़ नि़–, रे सा सा–, ग रे रे–ग— सा; ध़ प़ प़–, सा नि़ नि़–, रे सा सा–, ग रे रे–, ग—सा।

(५) सा नि़, रे सा, ग रे प म ग–सा; सा रे नि़सा, रे ग सा रे, प म ग—सा; प़ ध़ म़ प़, सा रे नि़ सा, रे ग सा रे प म ग—सा, प़ म़ ध़ प़, सा नि़ रे सा, ग रे प म ग—सा।

(६) सा रे म प ध–म ग रे ग, रे म प ध–म ग रे ग; ग रे,प म, ध प, ध- -म ग रे ग; ग रे ग सा म रे प म ध प ध- - -म ग रे ग, सा नि़ रे सा - -म रे प म ध प ध- - -म ग ग, प़ नि़ सा रे ग - - सा; सा रे म प ध- -म ग ग, प़ नि़ सा रे ग, सा रे म प ध, म ग ग, सा रे प म ग - - सा।

(७) रे सा सा–म रे रे–प म म–ध प प–ध, रे ग सा रे प म ध प ध, रेसा–, म रे–, प म–, ध प –, ध —,म ग रे ग; ध़ प़ सा नि़ रे सा म रे प म ध प ध–म ग रे ग; सा रे सा, रे म रे, म प म, प ध ध—, म ग रे ग; प म ग रे ग सा रे ग सा—, नि़ प़ नि़ सा रे ग सा रे म प ध—, म ग ग, रे ग सा रे प म ग — सा।

(८) सा रे म प सां– –प ध, म ग रे ग, रे म प सां– –प ध – म ग रे ग–, रे म प नि ध–, म प ध– म ग रे ग–, म रे प म ध प सां– –प ध– –म ग रे ग; सारेनि़ सा प ध म प सां– –प ध – म ग रे ग–, ग ग रे सा रे म प ध ध प मपनि सां– – प ध म ग रे ग–, ग रे ग सा रे प–, ध ध प म प सां —प ध, म ग रे ग; रे नि़ सा, ग सा रे, प रे म, ध म प, सां– – प ध – म ग रे ग, ग ग रे सा रे प म ग– –सा।

(९) ग ग रे सा रे म प सां– –नि सां, ध प ध म प सां– –नि सां; ग रे ग सा रे, ध प ध म प, सां– –नि सां, सा रे प म सां– –नि सां, म रे प म ध प सां– –नि सां; सा नि़ रे सा म रे प म ध प सां– – नि सां, प़ नि़ सा रे म प सां– –नि सां, सां नि सां– –प, ध प ध – –म ग रे ग; म रे रे प म म ध प प – सांनिनि रें सां सां– प ध – म ग रे ग–, ग रे ग सा रे प म ग– –सा।

(१०) सा रे म प सां– –नि सां, प नि सां रें गं– –सां, सां रें नि सां– – प ध – म ग रे ग, ग रे प म ध प सां नि रें सां – प ध– –म ग रे ग, प़ नि़ सा रे ग– –सा, सा रे म पसां प, ध – म ग रे ग; सां रें गं सां रें मं गं– –सां, सा रे ग सा रे म ग– –सा; रे म प सां– –प ध म ग रे ग; सा रे, रे म, म प, प सां, सां रें, रें गं– –सां, सा रे, रे ग– –सा। सा रे नि़ सा प ध म प सां रें नि सां, प ध– –म ग रे ग; ग रे ग सा रे प म ग– –सा नि़, प़ नि़ सा रे ग, सा रे म ग– –सा।

राग तिलककामोद

मुक्त तानें

सारेमप धपमग रेगसारे गसा–सा। पनिसारे गसा–सा। सारेनिसा मरेपम धपमग
रेगसारे गसा–सा। सारेरे, रे मम, मप प, पधध मगरेग सारेगसा। गगरे, प पम, धध
पमगरे सारेगसा। गरेरे, प मम, धप प, धमम, मगरेग, सारेगसा। सारेरेसा, रेममरे,
मपपम, पधधप, मगरेग सारेगसा। सारेमप सां––प धपमग रेसानिसा। रेसासा, म
रेरे, पम म, धपप, सांनिरेंसां धपमग रेसानिसा। सांरेंसांसां रेंसां, निसां निनिसांनि, पधप, प
धप, मग रेगसारे पपमग रेगनिसा। सारेनिसा, रेगसारे, मपरेम, पधमप, निसांपनि,
सांरेंनिसां धपमग रेसानिसा। साममरे, रेपपम, मधधप, पसांसांनि सांरेंरेंसां धपमग
रेगसा–। सारेमप सांनिरेंसां –सांधप मगरेसा निसा, सरे मपरेम पधमप निसां, पनि
सांरेंगंसां –सां, धप मगरेग सरेगसा। सारे, सारे रेम, रेम, मप, मप, पध, पध, मप, मप,
रेम पध मपनिसां रेंरेंनिसां धपमग रेगसारे पपमग रेसानिसा। साप–प मगरेग
सारेपप मगरेसा। पमधप सांनिरेंसां गंरेंसांनि धपमग रेसानिसा। रेसानिसा गरेसारे
पमरेम धपमप, सांनिपनि रेंसांनिसां गंरेंसांरें पंमंगंरें सांनिधप मगरेसा। सासासा, प
पप, सांसां सां, पंपंपं, मंगंरेंसां सांनिंधप मगरेसा। रेसासा, ग रेरे, पप मगरेग सा–, मरे
रे, पमम, धप, धध मगरेग सा–, पम म, धपप सांनिरेंरें सांनिंधप मगरेग सारेगसा
मरेरे, प मम, धप निंधपम गरेगसा। सा–रे– म–प– सां––प धपमग रेगनिसा।
म–प– नि–सां– रें––रें सांनिधप मगरेसा। प–नि– सां–रें– गं––गं सांरेंमंगं
रेंसांनिसां, धपमग रेसानिसा। सारेमप निसां–सां, मपनिसां रेंरें–रें, पनिसांरें गंगं–रें
सांनिंधप मगरेसा। पनिसारे गगरेग, सरेमप धधमप पनिसांरें गंगंरेंसां धपमग
रेसानिसा।

———

राग तिलककामोद

त्रिताल

गीत—१

स्थायी—मन अटकी छबि नागर नट की,
केसर खौर मुकुट माथे पर,
वनमाला गल लटकी अटकी।

अन्तरा—मृदु मुसकान नैन अनियारे,
चितवन हिय बिच खटकी अटकी।

स्थायी

				५				०				१३			
												रेग म•	सारे न•	रेप अ•	ग म ट
गरे की•	ग--रे •ऽऽ•	नी सा छ	नी बि	स प ना	— ऽ	नी ग	सा र	गरे न•	ग--रे टऽऽ•	नी की	सा •	म रे के	प म •	ध प स	प सां र
सां प खौ	ध •	म र	गरे मु•	रे ग--रे कुऽऽ•	सा ट	सागरे- मा••ऽ	रेपम- •••ऽ	ग थे	-रे ऽ•	सा नी प	सा र	सां प व	नी न	सां मा	रें •
गं रें ला	गं-रें •ऽ•	रें नी ग	सां ल	सां प ल	प ध-प टऽ•	ग म की	ग-रे •ऽ•	सा-ग अऽऽ•	रेग ट•	रे नी की	सा •				

अन्तरा

												नी म मृ	ध प दु	प सां मु	सां स
नी सां का	— ऽ	सां न	सां नै	सां प •	प न	नी अ	सां नि	गं रें या•	गं-रें ••ऽ	रें नी रे	सा •	रेंगं चि•	सां रें त•	रेंपं व•	गं मं न
गंरे हि•	गं-रें यऽ•	सां नी बि	सां च	सां प--ध खऽऽ•	प ध-प टऽ•	ग म की	ग--रे •ऽऽ•	सा--ग अऽऽ•	रे ग-रे ट•ऽ•	रे नी की	सा •				

आलाप

	×				५				०				१३			
१)					सा	–	–	–	प	–	नी	सा	रे ग म•	सारे न•	रेप अ•	म ट
२)					नी	सा	–	–	प	नी	सा	–	,,	,,	,,	,,
३)					नी	सा	–	–	सा	म रे	ग	सा	,,	,,	,,	,,
४)					प	नी	सा	रे	ग	–रे	नी	सा	,,	,,	,,	,,
५)					सा	–	–	–	गरे	ग	रे नी	सा	,,	,,	,,	,,
६)					प	–	नी	सा	गरे	मग	रे -नी	सा	,,	,,	,,	,,
७)					पनी	सारे	ग सा	रेम	ग	रे ग	रे नी	सा	,,	,,	,,	,,
८)					सा	म रे	प म	ध प	ध	म	ग- -रे	नीसा	,,	,,	,,	,,
९)					गरे	सारे	प	–	म	ग	रे ग- -रे	नीसा	,,	,,	,,	,,
१०)					रेसासा-	मरेरे–	पमम–	धपप–	पध–प	म --ग	ग- -रे	नीसा	,,	,,	,,	,,
११)					सारे	मप	सां	–प	ध	म--ग	ग- -रे	नीसा	सा--रे मऽऽ•	नीसा-- न• ऽऽ	- पध ऽऽअ•	पधम- ••टऽ
१२)					सारे	मप	सां	–	–	सांनी	सां	–	–	पध	मप	सांनी
	सां	–	–	गम	रेग	सारे	नीसा	सांनी	सां	–	–	पनी	सारे	मप	सांनी	रेंनीसां
	–	पनी	सारे	मप	सांनी	रेंनीसां	–	पनी	सारे	मप	सांनी	रेंनीसां	–	नीसांनीसां म • न •	- - पप ऽऽअ•	पधम ••टऽ
१३)					सारे	मप	सां	–	–	पनी	सारे	गसा	मरे	पम	धप	सांनी
	सां	–	पनी	सांरें	गं	–सां	रें	–नी	सां	–प	ध	–म	ग-- रे	नीसा	रेममप म•न•	पधम- •अटऽ

× ५ ० १३

१४) | | | | पनी | सारे | ग | –सा | सारें | मप | ध | –म | पनी | सांरें | गं | –सां

गंरें | गं | –सां | सांनी | सां | –प | धप | ध | –म | गरे | ग | सा नी | रेग मन | गसा मन | रेममप म•न• | पधम अ•टऽ

अथवा

| | | | | | | | | | | | सांप मन | धम मन | गरे मन | पम अट

१५) | | | | पनी | सारे | ग | –सा | रेम | पनी | सां | –प | पनी | सांरें | गं | –सां

रें | –नी | सां | –प | ध | म––ग | ग––रे | नीसा | रेम | पनी | सां | सां– मग | सां,सां न,म | – सां, ऽ न, | सांप म न | धम ट

१६) | | | | सारेनीसा | पधमप | सांरेंनीसां | गंरेंसांरें | मं | गं | गं––रें | नीसां | सां म | सांरेंनीसां न••• | प,प •,अ | ध म • ट

तानें

× ५

१) ग रे म ग | रेसा नीसा, | ग रे म ग | रेसा नीसा, | सानी पनी रे ग म • | सारे नीसा, सारे न• | ग रे म ग रेप अ• | रेसा नीसा, म ट

० १३

रेसा, सारे | नीसा, पध | मप, सारे | नीसा, पध | सारे नीसा मप मग | ग रे म ग रेसा नीसा | रे सा, प म गरे मन | ग रे म ग पम अट

× ५

२) | | | | सानी रेसा, | म रे प म, | ध प म ग | रेसा, पम

० १३

ध प म ग | रेसा, पम | ध प म ग | रेसा नीसा | रे सा सा, म म • • न | रे रे, प म ••, •• | म, ध प प •, • • • | ध म अ ट

× ५

४) प म ध प | म ग रे सा | – – ध प | म ग रे सा | सानी रेसा – – ध प | प म ध ध म ग रे सा | सारे नीसा, – – ग – म ऽ | ग रे म ग रे प – म न अ ऽ ट

० १३

५) – प ध प | म ग रे सा, | सां – – प | ध प म ग | सारे मप रेसा नीसा, | सां – – प सां प म न | ध प म ग म ऽ – प ऽ अ | रेसा, सां – ध म • ट

× ५

६) | | | | सासा पप | म ग रे सा | प प सां सां | ध प म ग

० १३

रेसा, सानी | रे सा म रे | प म ध प | सां नी रें सां | –सां ध प | म ग रे सा | ग रे म न | प म अ ट

× ७)				५ प प – प	म ग रे सा	सां सां – सां	ध प म ग
० रेसा, रेसा	सा, म रे रे	प म म ध	प प, सां नी	१३ रें सां – सां	ध प म ग	रेसा, ग सा म •	प – म नअऽट
× ८)				५ सारे नीसा	प ध म प	सांरें नीसां	प ध म प
० ध प म ग	रे सा, म प	ध प म ग	रे सा, म प	१३ ध प म ग	रे सा नी सा	ग रे म न	म ग अ ट
× ९)				५ सारे नीसा	प ध म प	सांरें नीसां	गं रें मं गं
० रेंसां, सांसां	ध प म ग	रेसा, सांसां	ध प म ग	१३ रेसा, सांसां	ध प म ग	रेसा, गसा म•	रे प – म न अ ऽ ट
× १०)				५ सासासा, प	पप, सांसां	सां, पं पं पं	मं गं रें सां
० सांनी धप	म ग रे सा	सारे मन	मप अट	१३ सां की	प ध म – अ • टऽ	ग की	ग रे ग ऽ अ • ट ऽ
× ११) पंपं – पं	मं गं रें सां	सां सां ध प	म ग रे सा	५ पं पं – पं	मं गं रें सां	सांसां–सां	ध प म ग
० पं पं – पं	मं गं रें सां	सांसां ध प	म ग रे सा,	१३ रे ग सा रे म • न •	प म अ	ग – प म की ऽ अ ट	ग – प म की ऽ अ ट
× १२) रेसामरे	प म ध प	सां	ध प म ग	५ रेसा नीसा,	रेसा मरे	प म ध प	सां
० ध प म ग	रेसा नीसा,	रे सा म रे	प म ध प	१३ सां	ध प म ग	रेसा नीसा	ग रे प म म न अ ट
× १३)				५ सारे नीसा	ग म रे ग	सारे नीसा	प ध म प
० ग म रे ग	सारे नीसा,	सांरें नीसां	प ध म प	१३ ग म रे ग	सारे नीसा	गं मं रें गं	सां रें नी सां
× प ध म प	ग म रे ग	सारे नीसा	सांरें नीसां	५ प ध म प	सां–सांरें	नीसां, पध	मप सां –
० सांरें नीसां	प ध म प	सां–, सांसां म न	सांरें नीसां अ ट की•	१३ –प–प ऽमऽन	प ध म ग अट की •	–ग सारे ऽ म • न	रे – प म अऽ • ट

मुखड़े के प्रकार

	×				५				०				१३			
१)													सारे म•	रेम न•	मप अ•	प धम •ट
२)													मरेरे म••	पमम न••	धपप अ••	ध–म •ऽट
३)													रेसासा,म म••, न	रेरे,पम ••,अ•	म,धपप •, •••	धम • ट
४)													रे मरे मऽ••	म–पम नऽ••	प अ	धम • ट
५)													सारेसा,सा म••,•	रेसा,पध ••,न•	प, पधप •,•••	धम अट
६)													रेमपध म•••	मपनीसां न•••	— ऽ	धम अट
७)													सारेमप म•••	धधपम न•••	पनीसां- •••ऽ	–पधम अऽ•ट
८)													रेसामरे म•••	पमधप ••••	सांनीसां- न •• ऽ	–पधम अऽ•ट
९)													धधपम म• न•	पनीसांरें ••••	नीसां- - ••ऽऽ	पध–म अ•ऽट
१०)													पनीसांरें म•••	गं •	–सां ऽन	धम अट

राग तिलककामोद

सूलताल

गीत—२

स्थायी—कान्हा कितिक बार तोहे समझायो,
गोरस है बहुतेरो अपने घर में,
काहे को छुवत तू परायो।
अन्तरा—बरजो नहीं माने करत तू अपनो,
थोरे दही के कारन तू,
माखन चोर कहायो।

स्थायी

×		०		५		७		०	
ग का	– – रे ऽ ऽ•	रे नि॒ न्हा	सा •	रेग कि•	सारे ति •	रे–पम कऽ ••	ग बा	– – रे ऽ ऽ •	नि॒ सा र
म रे तो	प म •	ध प हे	प ध •	म स	ग म	ग रे झा	ग – –रे • ऽ ऽ •	रे नि॒ यो	सा •
म रे गो	प म ऽ	ध प र	प ध स	ध म ब	ध प हु •	सां ते	– – – रें ऽ ऽ ऽ •	नि सां रो	— ऽ
नि अ	प प	नि ने	सां •	रेंगं ••	सांरें • •	पं मं घ	गं – – रें र ऽ ऽ •	नि में	सां •
सां का	— ऽ	सां प हे	— ऽ	ध प को	ध •	ग म छु	ग – – रे • ऽ ऽ •	नि॒ सा व	नि॒ त
सा तू	म रे •	प म •	ध प •	प सां •	सां प •	प ध प	म रा	ग– – रे • ऽ ऽ •	नि॒ सा यो

अन्तरा

×		०		५		७		०	
नि॑	प			ध				नि	
म	म	प	—	म	प	सां	---रें	सां	—
ब	र	जो	ऽ	न	हीं	मा	ऽऽऽ•	ने	ऽ
								रें	
नि	प	—	नि	सां	सां	गं रें	गं--रें	नि	सां
क	र	•	त	•	तू	अ •	पऽऽ•	नो	•
सां								रें	
प	नि	सां	रें	रेंगं	सं रें	रें पंमं-	गं--रें	नि	सां
थो	•	रे	•	• •	• •	द••ऽ	हीऽऽ•	के	•
		सां		ध					
सां	—	प	प	प	ध	म	ग--रे	सा	नि॒
का	ऽ	र	न	तू	•	मा	•ऽऽ•	ख	न
	म	प	ध	नि	सां	ग			
सा	रे	म	प	सां	प--ध	म	ग--रे	नि॒	सां
चो	•	•	•	र	कऽऽ•	हा	•ऽऽ•	यो	•

राग अल्हैया बिलावल

आरोहावरोह—सा रे ग प ध नि सां, ध नि̆ ध प, ध ग, म रे, ग नि, – सा, ध नि – सा।

जाति—षाड़व-वक्रसंपूर्ण।

ग्रह—मध्य षड्ज।

अंश—पूर्वांग में रिषभ और उत्तरांग में धैवत।

न्यास—पंचम।

विन्यास—मध्य षड्ज।

मुख्य अंग—म ग रे, नि, – सा, नि सा।

समय—प्रातः प्रथम प्रहर का अंतिम भाग।

प्रकृति—इस राग की प्रकृति का मैं अभी तक कोई निर्णय नहीं कर सका हूँ। जब कभी बिलावल अपना भेद खोल कर कहेगा, मैं उसे अभिव्यक्त करूँगा। किसी अन्य को इसकी अनुभूति हो तो सूचित करने की कृपा करें।

विशेष विवरण

यह एक प्रातर्गेय राग है। इसमें दो निषाद लगते हैं, आरोह में मध्यम वर्ज्य है। इस राग के धैवत पर एक विशेष प्रकार का आन्दोलन दिया जाता है। सा रे ग प ध∿∿—आरम्भ में इस धैवत पर तीव्र निषाद का स्पर्श होता है और तत्पश्चात् कोमल निषाद के स्पर्श से इसे आन्दोलित किया जाता है। और तभी वह धैवत बिलावल के स्वरूप को खड़ा करता है। यह क्रिया लिखी नहीं जा सकती ; गुरुमुख से ही सीख लेनी चाहिए। साथ ही पूर्वांग में भी एक विशेष ढंग से स्वरों को छुआ जाता है। यथा म ग रे, नि, सा, नि सा, अथवा म ग, म रे–, ग नि–, सा, ध नि–सा। जिन स्वरों के नीचे चिह्न दिए गए हैं, उनका द्रुत गति से उच्चार करना चाहिए या जैसे स्पर्श स्वर लगाए जाते हैं, उस रीति से उनका उच्चार होना चाहिए। यह भी गुरुमुख से ही अभ्यास का विषय है। पूर्वांग में यह क्रिया और उत्तरांग में धैवत का विशेष उच्चार इस-राग को गौड़मल्हार आदि रागों से बचा कर इसका अपना रागत्व स्थापित करेगी।

इस राग की प्रवृत्ति सहसा तार सप्तक की ओर जाने की रहती है। स्वभावतः यह गंभीर नहीं है, यद्यपि इसके अन्य प्रकार गंभीरता से गाये जाते हैं।

सामान्यतः बिलावल कहने से अल्हैया बिलावल का ही बोध होता है। कोमल निषाद का प्रयोग ही अल्हैया बिलावल को बिलावल से पृथक् करता है। कर्णाटक की बेलावली शुद्ध निषाद वाले बिलावल की कृति है।

राग अल्हैया बिलावल

मुक्त आलाप

(१) सा। नि–सा नि सा। सा–नि–सा नि–सा। सा सा नि नि–सा नि–सा–; सा ध–नि ध प, प ध नि–सा–नि–सा। पपधनिसा — नि नि–सा, ग रे– ग नि–सा नि–सा।

(२) सा रे ग, रे ग, म रे—, ग नि–सा नि–सा। प प ध नि सा ग रे–ग नि–सा नि–सा। रे रे सा नि सा रे–ग—, म ग, म ग, म रे—, ग नि–सा नि–सा।

(३) सा सा नि नि—सा, म म ग ग—, म रे–ग नि–सा नि–सा।

(४) सा रे ग प–, म ग—म रे–, ग प, ग रे ग प, ध ग—म रे–, ग प–, म–ग–म–रे–ग नि–सा नि–सा।

(५) सा रे ग प–, सा ग रे ग–प–, म ग म रे ग–प–, सा रे, रे ग, ग प, म–ग–म रे–ग नि–सा ध नि – सा।

(६) ग ग रे सा रे ग प, ध ग—, म रे–ग–प–; रे रे सा सा, ग ग रे रे, म म ग ग, प—, ध ग– म रे–ग–प–, प–ध–, प–ध नि ध–प–, ध ग, म रे, ग प, म–ग–म–रे, नि—सा नि— सा। सा–ध नि ध–प–, प ध ध ग–, म रे, म ग, प, ध नि ध नि ध प–, प ध ध ग–, म रे, प–ध नि ध–प–, ध ग– म रे–, ग प ध नि ध–प, प ध ध ग–, ग म म रे–, ग नि—सा ध नि—सा।

(७) सा ग रे ग प ध नि–सां–, नि सां, सां रें नि सां ध नि ध–प, म ग म रे ग प ध नि

सां—, नि सां, ध निँ ध प; सां रे नि सां, ध - - निँ ध–प–; सा ग रे ग प, नि ध नि सां–ध~निँ ध–प–,

प ध ध ग–, म रे–ग प–, म ग, म रे–ग नि–सा ध नि–सा।

(८) सा ग रे ग प—, प नि ध नि सां–नि सां, सा रें नि सां नि - - सां ध नि सां–, प प ध नि सां–,

नि सां, गं रें सां, सां ध–, निँ ध प, म ग म रे ग प ध नि सां - - नि सां, सा रे ग प ध नि सां—नि सां—,

ध ~, निँ ध–प, ध ग–म रे—म ग–प—, म ग म रे ग नि - - सा नि सा।

(९) सा रे ग प ध नि सां—नि सां, सां रें नि सां रें–गं–नि सां–, प प ध नि सां रें गं नि–सां

ध नि–सां—, सां रें गं–मं रें–, नि—सां ध नि–सां; सां रें नि सां ध ~, ध निँ ध प, प ध ध ग–ग म म रे–

म ग–प——, म–ग रे, ग नि–सा ध नि–सा।

राग अल्हैया बिलावल

मुक्त तानें

[इस राग में तान-क्रिया की सरलता के लिए ख्याल गायक तानों में अवरोह करते समय 'म ग म रे सा' या 'ग म रे सा' न करके 'मगरेस' करते हैं। आलापचारी में स्पर्श-स्वरों का जो उपयोग किया जाता है, वह स्पर्श द्रुत तानों में तिरोहित हो जाता है और आरंभ की आलापचारी से राग की छाया छा जाने के बाद ऐसी तानों की क्रिया राग की रक्तिमा फीकी नहीं कर पाती। साथ ही इन तान क्रियाओं के साथ साथ बीच बीच में पुनः राग के मूल अंग को अभिव्यक्त करने वाले स्वारों के स्पर्श दिखाते रहने से राग का अंग बना रहता है और इसीलिए गुणीजनों ने ऐसी तान-क्रियाओं को इस राग में और ऐसे अन्य रागों में प्रयुक्त करने में अनौचित्य नहीं माना है।]

सासागरे गगपप मगरेसा। गग, रेग गरे, गग पपमग रेसानिसा। सासासा, रे रेरे, गग
ग, पपप मगरेसा। सारेनिसा गमरेग पपमग रेसानिसा। सारेगप –पसासा पप, मग
रेसानिसा। सासासा, प पप, धनिं धपमग रेसानिसा। सारेगप धनिंधप मगरेसा
गरेगप धनिंधप मगरेसा। गरेरे, म गग, पप धनिंधप मगरेसा। सारेसा, सा रेसा, रेग
रेरेगरे, गपग, ग पग, पध प, पधप धनिंधप मगरेसा। सा–रे– ग–प– ––धनिं
धप, मग रेसानिसा। रेसासा, ग रेरे, मग ग, पपप धनिंधप मगरेसा। ध––नि
सांरेंसां नि धपमग रेसानिसा। सारेगरे, रेगपग, गपधप, पधनिध धनिसांनि धनिंधप
मगरेसा। सारेगरे, रेगपग, गपधप, पधनिध धनिसांनि सांरेनिसां –निधप मगरेसा।
सासासा, प पप, सांसां –निधप मगरेसा। प–सा– प–सां– –निधप मगरेसा।
रेरेरे, ध धध, रेंरें सांनिधप मगरेसा। गगगनि निनि, गंगं रेंसां, सांनि धपमग
रेसानिसा। सागगरे गपपग पधधप धनिनिध निसांसांनि सांगंगंरें सांनिधप
मगरेसा। गमरेग –पधनि सांनिधप मगरेसा, निनिधनि –सांगंरें
सांनिधप मगरेसा सारेरेग गपपध धनिनिसां सांगंगंरें सांनिधप
मगरेसा। सागगरे रेसासा– गपपम मगग– धनिनिध धपप– निसांसांनि

ध नि नि सां नि
निधध– सांरेंरेंसां सांनिनि– सांगंगंरें सांनिधप मगरेसा। गंरेंरेंसां सांरेंसांसां

प ग ग रे सा
नि नि, निध धपप, ध पपमम, पममग ग, मगग रेरे, गरे रेसासा–। सारेगप

ध–निसां रेंगंपंपं मंगंरेंसां सांनिधप मगरेसा। सारे, रेग गप, पध धनिंधप

मगरेसा, रेग, गप पध, धनि निसां, सांनि धपमग रेसानिसा, गपपध धनि, निसां

गंरेंसांनि धपमग रेसानिसा। पधनिध –निंधप मगरेसा। सारेसा, रे गरे, गप

ग, पधप धनिध, नि सांनि, सांरें सां, निसांनि धनिंधप मगरेसा। रेगपध निसां–नि

धनिंधप मगरेसा। पपधनि सांगं–रें सांनिधप मगरेसा। सांरेंनिसां धनिंधप

गपमग रेगपध निसां–नि धनिंधप मगरेसा। सारेगप रेगपध गपधनि

रे
पधनिसां धनिसांगं गंरेंसांनि धपमग रेसानिसा। ममगग –पधनिं धपमग

रे रे
रेसानिसा। ममगग –पधनि सांनिधप मगरेसा ममगग –पधनि सांरेंसांनि

रें
धपमग रेसानिसा; मंगंगंगं –पंमंगं रेंसां, सांनि धपमग रेसानिसा। सारेसा, रे

गरे, गप ग, पधप धनिध, नि सांनि, सांगं गंरेंसांनि धपमग रेसानिसा। सा–रे–

नि गं
ग–प– ध––नि सांरेंसांनि धपमग रेसानिसा। पधनिसां रेंगं–– मंगंरेंसां

सांनिधप मगरेसा। पप–प मगरेसा रेंरें–रें सांनिधप पंपं–पं मंगंरेंसां

सांनिधप मगरेसा। मगरेसा धनिंधप मगरेसा। धनिंध– –निसांरें सांनिधप

मगरेसा। मगरेसा सांनिधप मंगंरेंसां सांनिधप मगरेसा।

———

राग अल्हैया बिलावल

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—दैया कहाँ गयेलो, बृज के बसैया ॥

अन्तरा—ना मोरे पंख ना पायल और बल, ना कोऊ सुध को लेवैया ॥

स्थायी

		६		११	
		सा नी॑ध धनी॑ –	प – पप –	नी॑नी॑ पधधग – – म –	रे ग – – म प – धगम
		दै • •• ऽ	या ऽ • • ऽ	• • • • ऽ ऽ • ऽ	• ऽ ऽ • • ऽ • क •

×		०		५	
प ग –	म रे	ग नी – – सा	ध नी सा	सा – – – रे ग – – –	– – मग मग
हाँ	•	• ऽ ऽ •	• •	ग ऽ ऽ ऽ • एऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ • • • •

०		६		११	
म रे	ग म रेगप –	प	पप – – –	प प सां	नी – – – नीं
•	• • • ऽ	लो	• • ऽ ऽ ऽ	बृ ज	के ऽ ऽ ऽ •

×		०		५	
प ध सां-सांनी नी – – –	नी – – – ध नी	सां	– – – – नीसां – – –	सां ध – – – – – – नीं	ध प
• ऽ • • • ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ब •	सै	ऽ ऽ ऽ ऽ • • ऽ ऽ ऽ	• ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ •	• •

०		६		११	
नी॑नी॑ पधधग – – – –	रे मग – –				
या • • • ऽ ऽ ऽ ऽ	• • ऽ ऽ				

अन्तरा

०		६		११	
		सां प	सां — नी ध नी	सां	----सांसां-सां-
		ना	ऽ मो • रे	पं	ऽऽऽऽ••ऽखऽ

×		०		५	
सां	----नीसां---	सां — गं रें	रें गं — — मं	रें गं रें गं —	रें सां
ना	ऽऽऽऽ••ऽऽऽ	पा ऽ य •	ल ऽ ऽ •	औ • र ऽ	ब ल

०		६		११	
—	सां ध------नीँ	ध प	नीँ नीँ प ध ध ग --म-	रे ग — — रे ग	प
ऽ	•ऽऽऽऽऽऽ•	• •	ना••• ऽऽ•ऽ	• ऽ ऽ को •	ऊ

×		०		५	
सां ध नी	सां नी - गं रें -	रें-गंनी-सां---	----नीसां---	सां ध — — — नीँ	ध प
सु ध	को ले ऽ • • ऽ	वैऽ • • ऽ • ऽऽऽ	ऽऽऽऽ••ऽऽऽ	• ऽ ऽ ऽ •	• •

०		६		११	
नीँ नीँ प ध ध ग ----	रे म ग — —				
या • • • ऽऽऽऽ	• • ऽ ऽ				

———

आलाप

×		०		५	
१)				सा	—
०		**६**		**११**	
रे नी - - सां	धनी - - - सा - - -	दै	या	—	- - - क*

×		०		५	
२)				सा	—
०		**६**		**११**	
पपधनी सा - - -	नी - धनी - - - सा-	दै	या	—	- - - क

×		०		५	
३)				ग सा रे	ग
०		**६**		**११**	
मरे- - -गनी - - -	सा - धनी - - सा-	दै	या	—	- - - क

×		०		५	
४)				ग प ग सा रे ग प	नी - - - - ध ग - -
०		**६**		**११**	
मरे- - -गनी - - -	सा - धनी - - - सा-	दै	या	—	- - - क

×		०		५	
५)				सा	—
०		**६**		**११**	
रे नी - - सा	धनी - - - सा - - -	सा	—	पपधनीसा - - -	नी - - धनी - - - सा

* इन मुखड़ों का नोटेशन ख्याल के सदृश ही होगा।

×		०		५	
६) ग सा रे	ग	मरे - - - गनी - - -	सा - धनी - - - सा-	ग प ग सा रे ग प	नी - - - - ध ग

०		६		११	
मरे - - -गनी- - -	सा - धनी - - - सा -	दै	या	—	- - - क

×		०		५	
७)				सा	—

०		६		११	
नी - - - सा - धनी-	सा	सा-सानी धनी - - -	सा	पपधनीसा - नी -	धनी - - - सा - - -

×		०		५	
पपधनीसा - - -	गरे - - - गनी - - -	सा	ग पपधनीसा - रे -	ग	म रे - - -

०		६		११	
गनी - - -	सा - धनी - - - सा-	दै	या	—	- - - क

×		०		५	
८)				ग ग सा रे	प ग ग प

०		६		११	
— -	पप - - -	धग - - मरे - -	ग मग - - प - - -	—	पप - - -

×		०		५	
म ग	म रे	म ग प	- - - पप	धग - - -	मरे - - -

०		६		११	
गनी - - सा	धनी - - - सा - - -	दै	या	—	- - - क

९)

×		०		५	
				सा	ग प - - - - रे - ग -

०		६		११	
प	पप - - -	रे - ग रे, ग - प ग	प-धप, ध - नी -	ध प - -	धग - - मरे - -

×		०		५	
मग - - प - - -	—	पप - - -	गपधनीसां - - -	ध नी ध प	धग - - मरे - -

०		६		११	
गनी - - - - सा -	धनी - - - - - सा -	दै	या	—	- - - क

१०)

×		०		५	
				सा-गरे, ग-प ग,	प-धप, ध-नी -

०		६		११	
धप - -	पपधनीसां - - -	ध नी ध प	धग - - मरे - -	गनी - - सा - - -	नी धपम गम रेगपम दै •••या••••क

११)

×		०		५	
				सारेगपधनीसां -	- - - - नीसां - - -

०		६		११	
मगमरेगपधनी	सां - - - नीसां - - -	ध - - नी ध - प -	धग - - मरे - -	गनी - - सा - - -	ग रे ग प - प ध म दै • • • ऽ या • क

×		०		५	
११)				सारेगपधनीसां -	----नीसां---
०		६		११	
पमगरेगपधनी	सां---नीसां---	सागरेमगपधनी	सां---नीसां---	रेसांसांऽ गरेंरेऽ मगगऽ धपपऽ	नीधध-सांनि नि-सां- निसां-
×		०		५	
सां ध	नी॑ ध प -	धग--मरे--	गपधनी सां---	----नीसां---	धग--म रे--
०		६		११	
गनी--सा---	धनी-----सा-	दै	ऽ	या	---क

बोल तानें

१)

×		०		५	
				ग ग प ग सा रे ग प	---धप--ध
				दै • या •	ऽऽऽकहाँऽऽग

०		६		११	
ग--मरे---	पपधनीसां---	सांसां-नीधपमग	रेग---, नीँधपम	गमरेग,नीँधपमगमरेग,	नीँधपम गमरेग पधगम
येऽऽ•लोऽऽऽ	बृजके ••ऽऽऽ	ब•ऽसै•या•	••ऽऽऽ दै •या•	••••,दै•या•••••,	दै •या•••••••क•

२)

×		०		५	
				प मग मरे ग - प -	---गपध-प
				दै• •• या ऽ•ऽ	ऽऽऽकहाँ•ऽग

०		६		११	
धसांनीसां धनीँ प----	पपधनीसां--रें	रे सांनीधपमग ग-,	सांसां-नीधप मग,	सांसां-नीधप मग,	सांसां-नीधप गम
ये• •• लो• •ऽऽऽऽ	बृजके ••ऽऽब	सै•या• •• •ऽ,	दै•ऽया•• ••,	दै •ऽया•• ••,	दै •ऽ•या• •क

३)

×		०		५	
				सारेगप धनी सां-	---रेंसां नीधप
				दै•••या••ऽ	ऽऽऽकहाँ •••

०		६		११	
---नीँधप मग	---धपम गरे	गप-ग, पध-प,	धनी-धनीसां--	सांनी धप, सांनी धप,	सांनी धप गम रेग पम
ऽऽऽ ग ये• ••	ऽऽऽलो••••	बृ•ऽज, के•ऽब,	सै•ऽ•या•ऽऽ	दै• या•, दै• या•,	दै• या• •• •• •क

४)

×		०		५	
				गंरें सांनीध सांनीरें	सांनी धप --, गप
				दै• या •कहाँ• ग	ये• लो• ऽऽ बृज

०		६		११	
धनी सांरें सांनी धप	--,गपधनीसांरें	सांनीधप--गप	धनी सांरें सांनी धप	सांनी धप गम रेग पम	ग--मंगं-गम
के• •ब सै•या•	ऽऽ, बृजके ••ब	सै•या•ऽऽ•बृज	के• •ब सै•या•	दै• या• •• •• •क	हाँऽऽकहाँऽ•क

५)

×		०		५	
				सारे गरे, रेग पग,	गप धप, पध नीध,
				दै• ••, या• ••,	क •••, हाँ •••,

०		९		११	
धनी सांनी सां – – –	सां – – –	गंरेंसांनीधपगमरे	गपधनीसां – सां –	सा – – – सां – – –	सा – – – सां – गम
ग• •• ये ऽऽऽ	लो ऽऽऽ	बृजके• ••ब••	सै• • • • ऽया •	दै ऽऽऽ • ऽऽऽ	या ऽऽऽ •ऽ•क

६)

×		०		५	
				सा - गरे गप धप म	ग – – रेग – – –
				दै ऽया• कहाँ •• ग	ये ऽऽ • लो ऽऽऽ

०		९		११	
प – नीध नीसां गरें रें	सां -- नीसां ---	सां-गंरें गंपंधंपंमं	गं - - रें गं - - -	गंरें सांनीध सांनी रें	सां – – नी ध प – –
दै ऽ या• कहाँ •• ग	ये ऽऽ•लो ऽ ऽ ऽ	दैऽया• क हाँ •ग	ये ऽऽ • लो ऽऽऽ	बृज के • • • • ब	सै ऽऽ • या • ऽऽ

×		०		५	
धनी धप गप - धप	म - - - ग - - - (प)	गम गरे गप धनी (प ध नी)	सां - - - सां - - -	सां - - - - ग - म	ग – – मग – – म
बृज के• •• ऽ ब•	सै ऽऽऽ या ऽऽऽ	बृज के •••• ब	सै ऽऽऽयाऽऽऽ	दै ऽऽऽऽ या ऽ क	हाँ ऽऽ कहाँ ऽऽ क

०		९		११	
पग – – – – – –	सां - - - - ग - म	ग – – मग – – म	पग – – – – – –	सां – – – – ग – म	ग – – मग – म
हाँ• ऽऽऽऽऽऽ	दै ऽऽऽऽ याऽक	हाँ ऽऽकहाँ ऽऽ क	हाँ• ऽऽऽऽऽऽ	दै ऽ ऽ ऽ ऽ • ऽ क	हाँ ऽऽ कहाँ ऽ क

———

तानें

१)

×		०		५	
				सासा गरे गप मग	रेसा नीसा गरे, गप
०		**६**		**११**	
धप मग रेसा नीसा	गरे गप धनी ˘ धप	मग रेसा, गरे गप	धनी सांनी धप मग	रेस, सांनी धप मग	रेसां, गरें – गपम दै• ऽ या•क

२)
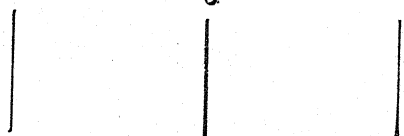
×		०		५	
				सारे गप धनी सांनी	धप मग रेसा, सांनी
०		**६**		**११**	
धनी ˘ धप मग रेग	पध नीसां–नी धप	मग रेसा, नीसां–नी	धप मग रेसा, नीसां	–नी धप मग रेसा	नी ˘ ध मम गम रेग पम दै • या• ••••• क

३)
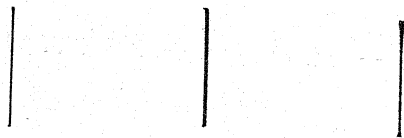
×		०		५	
				सारे गप धनी सांरें	सांनी धप मग रेसा
०		**६**		**११**	
सांरें सांनी धनी ˘ धप	मग रेग पध नीसां	गंरें सांनी धप मग	रेसा नीसा, गंरें सांनी	धप मग रेसा नीसा	सां - - - - ग - म दै ऽऽऽऽ याऽ क

४)
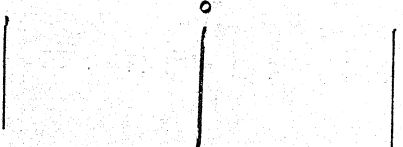
×		०		५	
				सारेसा, रेगरे, गप	ग, पधप, धनीध, नी
०		**६**		**११**	
सांनी, सांरेंसां, नीसांनी	धनी ˘ ध, पधप, गप	मग रेग पध नीसां	-नी धप मग रेसा	गंरें सांनी धप गम दै• या • •• •क	ग - - में गं - ग म हाँ ऽ ऽ कहाँ ऽ • क

×		०		५	
५)				पम गरे, सांनी धप	पंमं गंरें सांनी धप
०		**६**		**११**	
मग रेसा, पंमं गरें	सांनी धप मग रेसा,	पंमं गंरें सांनी धप	मग रेसा, गंगं-रें	सांनी धप मग रेसा	ग रे ग प - प ध म दै • • • ऽ या • क

×		०		५	
६)				पम गरे, सांनी धप	पंमं गंरें सांनी धप
०		**६**		**११**	
मग रेसा, पंमं गंरें	सांनी धप मग रेसा,	पंमं गंरें सांनी धप	मग रेसा, सा - - - दै ऽऽऽ	सां - - - सा - - - • ऽऽऽ या ऽ ऽ ऽ	सां - - - ग - - म • ऽऽऽ • ऽऽक

×		०		५	
७)		ग - - प म ग रेसा	नी - - रेंसां नीध प,	गं - - पंमं गंरें सां	सांनी धप मग रेसा,
०		**६**		**११**	
गं - - पंमं गंरें सां	सांनी धप मग रेसा,	गं - - पंमं गंरेंसा	सांगी धप मग रेसा	सांनी धप, सांनी धप दै• या•, दै• या•,	सांनी धप गम रेग प दै • या• •• •• •

×		०		५	
८)	पप - प म गरेसा,	रेंरें - रेंसांनीधप,	पंपं-पं मं गं रें सां	सांनी धप मग रेसा,	पंपं - पंमं गंरेंसां
०		**६**		**११**	
सांनी धप मग रेसा,	पंमं - पंमं गरेंसां	सांनी धप मग रेसा,	सांसां-नीध पमग, दै •ऽ• या •••	सांसां - नीध पमग, दै • ऽ • या •••	सांसां - नीधप गम दै • ऽ • या• •

राग अल्हैया बिलावल

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—कवन बटरिया गयेलो माई देहो बताय,
लँगरवा कित माई चुरवा गइलवा ॥
अंतरा—लेन गई सुध अरे हठवारे,
इतनी घरी में गयेलो का बनरा माई ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
								गम	गम	रेग	गनी˘	नी˘ध	ध	प	—
								क॰	व॰	न॰	ब॰	ट॰	रि	या	ऽ
गप	धप	म	–ग	रेग	–	गम	रेग	गनी˘	धनी	पध	म	(प) गम	रेग	गप	
गै॰	॰॰	लो	ऽ॰	॰॰	ऽ	मा॰	ई॰	दे॰	॰॰	॰॰	॰॰	॰॰	॰॰	हो॰	ब
पग	–म	रे	—	गनी	सा सा	सां-नी	धनी	सां	सां	सांगं	गंरें	सां	सांनी	ध	नी˘
ता	ऽ॰	॰	ऽ	॰॰	॰य	लँऽ॰	॰॰	ग	र	वा॰	॰॰	कि	त॰	मा	ई
—	सांसां	–ध	–प	मग	प	म	(रे) ग ग								
ऽ	चुर	ऽवा	ऽग	इ॰	ल	वा	॰॰								

अंतरा

×				५				०				१३			
			सांप	—	(नी) ध	—	नी	सां	—	—	—	—	—	नीसां	सां
			ले॰	ऽ	न	ऽ	ग	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	॰॰	सु
सां	—	—	सां	सां	सां	—	सां	सां	ध	नी˘	प	—	—	प	ध
ध	ऽ	ऽ	अ	रे	ह	ऽ	ठ	वा	॰	प	॰	ऽऽ	ऽ	रे	॰
पध	(सां) नी˘	—	ध	प	पध	ग	रेग	प	—	प	—	(नी) ध	नी	सां	—
॰॰	॰	ऽ	इ	त	नी॰	॰	घ॰	री	ऽ	में	ऽ	ग	ये	लो	
सां	सांरें	सां	नी	ध	प	गम	रेग								
का	॰॰	ब	न	रा	॰	मा॰	ई॰								

तानें

	×				५				०				१३			
१)				धनी	सांनी	धप	मग	रेसा	क	व	न	ब	ट	रि	याऽ*	—
२)			गप	धनी	सांनी	धप	मग	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
३)			पप	धनी	सांनी	धप	मग	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
४)	पप	धनी	सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा	—	”	”	”	”	”	”	”	”
५)	गरे	गप	धनी	सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
६)	सांसां	−रें	सांनी	धप	मग	रेसा	धनी	सां	”	”	”	”	”	”	”	”
७)	धनी	सां, ध	नीसां	धनी	सांरें	सांनी	धप	मग	”	”	”	”	”	”	”	”
८)	गग	ग, नी	नीनी,	गंरें	सांनी	धप	मग	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
९)	रे	ग	प	सां	−रें	सांनी	धप	मग	”	”	”	”	”	”	”	”
१०)	सांसां	सां,नी	नीनी,	धनी	सांनी	धप	मग	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
११)	मम	म,ग	−ग,	सांसां	सां,नी	−नी,	मंमं	मं, गं	−गं,	पंपं	मंगं	रेंसां	सांनी	धप	मग	रेसा
	सारे	गप	धनी	सांरें	गंपं	मंगं	रेंसा	सांनी	धप	मग	रेसा	नीसा	कव	नब	टरि	याऽ
१२)	सासा	सा,प	पप	सांनी	धप	मग	रेसा,	रेरे	रे,ध	धध	रेंरें	सांनी	धप	मग	रेसा,	गग

* इन मुखड़ों का नोटेशन गीत के सदृश ही होगा।

	×				५				०				१३			
	ग,नी	नीनी	गंगं	रेसां	सांनी	धप	मग	रेसा	क	व	न	ब	ट	रि	या	
१३)	सारे	गरे	रेग	पग	गप	धप,	पध	नीध,	धनी	सांनी,	सांगं	गंरें	सांनी	धप	मग	रे सा,
	सांगं	गंरें	सांनी	धप	मग	रेसा,	सांगं	गंरें	सांनी	धप	नग	रेसा,	कव	नब	टरि	याऽ
१४)	गंगं	−रें	सांनी	धप	मग	रेसा,	सां	—	कव	नब	टरि	या, ब	टरि	या,ब	टरि	याऽ
१५)	गंगं	−रें	सांनी	धप	मग	रेसा,	गंगं	−रें	सांनी	धप	मग	रेसा,	गंगं	−रें	सांनी	धप
	मग	रेसा,	—	प	—	प	—	प	गग	मनी	धध	प−,	—	प	—	प
				हो	ऽ	हो	ऽ	हो	कव	नब	टरि	याऽ,	ऽ	हो	ऽ	हो
	—	प,	गग	मनी	धध	प−,	—	प	—	प	—	प	गग	मनी	धध	प−
	ऽ	हो	कव	नब	टरि	याऽ,	ऽ	हो	ऽ	हो	ऽ	हो	कव	नब	टरि	याऽ

—

राग अल्हैया बिलावल
झपताल
गीत—३

स्थायी—प्रबल ही श्याम अब, दुर्बल ही देख जन,
झट ही पट झपट करि, गज बचायो ॥

अन्तरा—गोप ही ग्वाल को, संग लियो गिरिधर,
इन्द्र को मान छिन में घटायो ॥

स्थायी

×		३			०		८		
नी ध	सां नी	रें	सां	–	सां ध	नी˘	प	म	ग
प्र •	ब •	ल	ही	ऽ	श्या •	•	म	अ	ब
(ग)रे	(म)ग	प	म	ग	(म)रे	–	सा	सा	सा
दु	•	र्ब	ल	ही	दे	ऽ	ख	ज	न
सा	सा	(नी˘)ध	(नी˘)ध	(नी˘)ध	नी˘ ध	नी˘ प	(नी)ध	नी	सां
झ	ट	ही	प	ट	झ •	प •	ट	क	रि
गं	(रें)गं	रें	सां	–	प	–	(नी)ध	नी	सां
ग	ज	ब	चा	ऽ	यो	ऽ	•	•	•

अन्तरा

×		३			०		८		
प	–	प	नी ध	नी	सां	– नी	सां	सां	–
गो	ऽ	प	ही •	•	ग्वा	ऽ •	ल	को	ऽ
सां	–	(गं)रें	गं	(पं)मं	गं	रें	सां ध	नी˘	प
रा	ऽ	ख	लि	यो	गि	रि	ध •	•	र
प	–	ध	(ध)ग	प	ध	नी	सां	सां	सां
इं	ऽ	द्र	को	•	मा	•	न	छि	न
गं रें	गं	रें	सां	–	प	–	ध	नी	सां
में •	•	घ	टा	ऽ	यो	ऽ	•	•	•

राग जयजयवन्ती

आरोहावरोह—नि॒सा रेग मग रेगँ रेस, गम धनि सांनि धनिँ ध प, मग रेगँ रेसा, धि॒सा ध॒नि॒ँ रे।

जाति—वक्र-संपूर्ण।

ग्रह—आलाप में मन्द्र धैवत और तान-क्रिया में मध्य गान्धार।

अंश—ऋषभ; कोमल गान्धार और कोमल निषाद अनुगामी स्वर।

न्यास—ऋषभ; अपन्यास पंचम।

विन्यास—मध्य षड्ज।

मुख्य अंग—नि॒ सा, ध॒ नि॒ँ (रे) रे, रे (ग) गँ मगँ रे-सा।

समय—रात्रि के प्रथम याम के अन्त में।

प्रकृति—आत्मकथन तथा आत्मनिवेदन को अभिव्यक्त करने के लिए परमोपयोगी।

विशेष विवरण

जयजयवन्ती खूब प्रचार पाया हुआ एक मधुर राग है। इसे राग कहें या रागिनी? क्योंकि 'जयजयवन्ती' ईकारान्त स्त्रीलिंग है और स्वरावली भी उसके कोमलत्व को और मृदुल स्त्रीभाव को अभिव्यक्त करती है।

इसमें द्वि गान्धार और द्वि निषाद का प्रयोग होता है, अन्य सब स्वर शुद्ध हैं।

इसका चलन तीन रूप से देखा जाता है। कुछ लोग इसके उत्तरांग का चलन म प नि सां से करते हैं, कुछ लोग ग म प सां करते हैं और प्रायः गुणीजन ग म ध नि सां यों बरतते हैं। और ग म ध नि सां यही चलन गुणीजन-सम्मत है। म प नि सां कहने से आसान अवश्य होता है, किन्तु वह सोरठ अंग को आविर्भूत कराता है; और ग म प सां कभी २ जाने में आपत्ति नहीं है, किन्तु उसे नियम बना लेना समुचित प्रतीत नहीं होता।

गुणी जन जयजयवन्ती को हमीर के पूर्वांग का जवाब कहते हैं। हमीर के पंचम को सा मान कर और प, मं प ग म ध, निँ ध प, मं प ग म ध—इसी को सा, नि॒ सा ध॒ नि॒ँ रे, गँ रे सा, नि॒ सा ध॒ नि॒ रे,—कह सकते हैं। हमीर में जो मं प ग म ध है, वही जयजयवन्ती में नि॒ सा ध॒ नि॒ँ रे है। इसीलिए जयजयवन्ती को हमीर का जवाब कहा गया है।

इस राग का संपूर्ण चलन यों होगा—सा, नि॒ सा ध॒ (ग) नि॒ँ रे, रे, गरे—ग म ग, रे गँ रे सा, नि॒ सा ध॒ (ग) निँ रे, ध॒ नि॒ँ ध॒ प॒, (ग) रे, रेगमप, म ग रे, रे ग म निँ ध प, म ग रे, ग म ध नि सां निँ ध प, म ग रे, रे गँ रे सा, नि॒ सा ध॒ नि॒ँ रे।

इन स्वरावलियों में जहाँ जहाँ म ग रे और निँ ध प आया है, वहाँ वहाँ उन स्वर-समूहों को एक विशेष रूप से उच्चारना आवश्यक है। अन्यथा म ग रे और निँ ध प देश या सोरठ की छाया को प्रकट करने लगेंगे। इस म ग रे के म और ग को क्रमशः प और म का आन्दोलन देते हुए और हिलते डुलते हुए उच्चारना चाहिए। वैसे ही निँ ध प में भी क्रमशः नि को सा का, ध को नि का और प को ध का आन्दोलित स्पर्श

करना अनिवार्य है। यह भी ध्यान रहे कि मध्यम से ऋषभ पर आते समय ऋषभ को गान्धार का स्पर्श अवश्य ही लगे। अलबत्ता यह नियम आलाप में ही बरता जाता है, क्योंकि तानों के अवसर पर द्रुतगति के कारण उन स्पर्शों की उतनी आवश्यकता नहीं रहती।

मुस्लिम-परंपरा के किन्हीं किन्हीं गायकों ने इस रागिनी को गाते समय एक निराला ढंग अपनाया है। इतना अच्छा है कि वे उसका चलन तो जैसा ऊपर लिख आए हैं, वैसा ही बरतते हैं; किन्तु सम पर आते समय ऋषभ पर जो ठहरना चाहिए, वह न ठहर कर वे षड्ज पर ठहरते हैं। यथा—गँ, रे गँ रे सा रे नि सा—सा सा नि सा रे सा निँ ध निँ—उनके पदों में ऐसी चाल देखने सुनने में आई है। कुछ निराला करने का चाव या अपने घराने को कुछ विशेषता का परिचय देने का भाव इन क्रियाओं के पीछे होने की संभावना है। जो कुछ भी हो—हमें शास्त्र के नियम का परिपालन करना चाहिए और ऋषभ पर ही, जिस पर सारे राग की दारोमदार है, सम देनी चाहिए।

इस रागिनी के दो ग्रह स्वर होंगे। सभी आलापों का उद्गम ध निँ रे, यों मन्द्र धैवत से होता है, और सभी तानों का उद्भव ग म ध नि सां निँ ध प म ग रे गँ रे सा—यों मध्य गान्धार से होता है। इस लिए मन्द्र धैवत और मध्य गान्धार को क्रमशः ग्रह और उपग्रह स्वर मानना होगा।

राग जयजयवन्ती

मुक्त आलाप

रे सा ग रे रे ग सानिप

(१) सा। नि सा ध निँ रे, रे गँ – म गँ रे – सा, रे नि – सा ध – निँ रे, ध निँ ध प, रे, सा

प रे नि रे ध मग ग म

निँ ध प रे, म ध नि सा, ध निँ ध प, रे, नि सा ध निँ ध प रे, ग म ध नि सा – ध निँ रे, रे गँ रे सा।

रे ग सा ग

(२) रे रे सा नि सा ध निँ रे, ग रे, रे सा, रे सा सा निँ, ध निँ रे –, रे गँ सा रे नि सा ध निँ

म

ग रे–, रे ग – रे, ग म – ग, रे गँ रे – सा।

प ग म

(३) नि सा रे ग म ग – म रे, गँ रे – सा, रे ग – रे, ग म – ग, रे गँ – म गँ रे – सा।

प ग म

रे रे सा नि सा रे ग म ग – म रे, गँ रे सा। म ग म रे ग रे ग, म ग म रे, रे नि सा ग रे ग म ग म रे,

प

रे ग – रे, ग म – ग, म प – म, ग म रे –, म म ग रे ग प म – ग, म रे; रे, ग ग – रे, ग, म म – ग, म,

प ग म

प प – म, ग म रे, रे गँ रे सा।

(४) नि़ सा रे ग म प, ध ग, म रे, गँ~~रे सा, नि़ सा रे ग म प, ध ग, म रे गँ~~रे सा।

सा नि़ रे सा ग रे म ग प म ध प ध ग, म रे, गँ~~रे सा; सा नि़, रे सा, ग रे, म ग, प म, ध प,

ध ग, म रे, गँ~~रे – सा; रे रे सा नि़ सा म म ग रे ग प प म ग म ध ध प म प ध ग, म रे, गँ – रे –

सा –, सा रे नि़ सा प ध म प, ध ग, म रे, गँ~~रे सा, ध़ नि़ँ रे –, रे ग म प, ग – म रे, रे गँ – रे – सा।

(५) रे ग म प, ध प – ध ग – म रे, रे ग म निँ ध – प, ध ग – म रे, म म ग रे ग म निँ ध –

–, ध ग – म रे –, रे ग – रे, ग म – ग, म प – म, ध प, ध ग, म रे, ग रे म ग प म ध प ध ग –

म रे, निँ–निँ ध, ध – ध प, प – प म, म – म ग, म रे, रे गँ – म गँ रे – सा।

(६) रे नि़ सा ग रे ग म ग म प म प, म ग म रे, रे ग म प रे ग म निँ ध, ध प, प म, म ग,

म रे; रे ग म प ध ग –, म निँ ध – प, ध ग – म रे –; रे ग म प, ध ध प, प प म, म म ग, रे, निँ, निँ ध,

ध, ध प, प, प म, ग म रे, रे ग म प, ध ग, म रे, रे गँ म गँ रे – सा।

(७) नि़ सा ग म ध नि सां – नि सां, सां निँ ध – प, रे ग म निँ ध – प –, म म ग रे ग,

प प म ग म, ध ध प म प, निँ ध – प, ध ग, म रे, रे ग म ध नि सां, निँ, निँ ध – प, ध, ध प – म, प,

प म – ग, म, म ग – रे, सां, सां निँ, निँ, निँ ध, ध, ध प, प, प म, ग म रे; रे ग म प, ध ग, म रे –,

रे गँ, म गँ रे – सा। नि़ सा ध़ नि़ँ रे – सा।

(८) नि़ सा ग म ध नि सां – नि सां, नि़ सा ग म ध नि सां – नि सां, सां रें नि सां, ध निँ रें –,

सां नि सां ध निं रें—, सां निरें सां सां, निं ध सां निं निं, ध रें, सां निं रें, सां निं ध रें, सां निं निं ध, ध निं, रें, रें सां, सां निं, निं ध, ध प रें; गं गं रें, रें रें सां, नि सां ध—निं रें, रें गं—मं गं रें — सां, ध निं रें —, सां निं ध — प —, ध ग — म रे —, रे गँ म गँ रे — सा।

(६) नि सा ग म ध नि सां, ध — निं रें, रें गं — रें, गं मं गं रें, गं मं गं रें — सां —, नि सां रें गं मं गं — मं रें, रें गं — मं, पं मं मं गं — मं रें —, मं मं गं रें गं — मं, पं पं मं गं — मं रें, रें गं मं गं रें — सां, सां निं ध — प —, ध ग — म निं — ध — प, प ध ध ग—म रे, रे ग—म ध प, ध ग—म रे, रे गँ म गँ रे—सा।

राग जयजयवन्ती

मुक्त तानें

नि सा रे ग म ग रे गँ रे सा नि सा, रे ग म ग रे गँ रे सा नि सा - -। रे ग रे, ग म ग, रे गँ रे सा नि सा। रे ग रे, रे ग रे, ग म ग, ग म ग, रे गँ रे सा नि सा - -। रे ग म प म ग रे गँ रे सा नि सा। रे ग म प रे प म ग रे गँ रे सा नि सा - -। रे ग म ग रे ग रे प म ग रे गँ रे सा नि सा। रे ग म ध प म, ग प म ग, रे गँ रे सा नि सा। नि सां रे ग म ध ध प, प म म ग रे गँ रे सा। ग रे रे, प म म, ध प प, प म ग रे गँ रे सा। रे ग ग रे ग म म ग म प प म प ध ध प म प प म ग म म ग रे गँ रे सा। रे ग ग, ग म म, म प प, प ध ध प ध प म ग प म ग रे गँ रे सा। रे ग म निं ध प, म ध प म, ग प म ग, रे गँ रे सा नि सा। रे - ग - म - निं निं ध प म ग रे गँ रे सा। ग रे रे, ग रे रे, प म म, प म म, ध प प, ध प प, ध निं ध, प ध प म प म, ग म ग, रे गँ रे सा नि सा। रे ग म ध नि सां - नि ध प म ग रे गँ रे सा। नि सा ग म ध नि सां निं ध प म ग रे गँ रे सा। रे ग म प रे प म ग रे गँ रे सा, म ध नि सां म सां सां नि

धनिँधप, गपमग रेगॅरेसा। नि॒सागम धनिसांनिँ निँध, धप पम, मग रेगॅरेसा।

नि॒सागम धनिसांरें सांनिँधप मगरेगॅ रेसानि॒सा। सारेनि॒सा धनिँपध मपगम

रेगॅरेसा। सारेंसां, सां रेंसां, निसां नि, निसांनि, धनिँध, ध निँध, पध प, पधप मपम, म

पम, गम ग, गमग रेगमप मगरेगॅ रेसानि॒सा। गमधनि सांरेंगँ रेंसांनिँधप मगरेगॅ

सा ध म

रेसानि॒सा। सारेरेसा धनिँनिँध धपपम मगरेगॅ रेसांनि॒सा। ध--नि सांरेंसांनिँ

धपमग रेगॅरेसा। ग--म धधप, ग मग, रेगँ रेसानि॒सा। धनिँनिँ, रें रेंरें, सांनिँ

धपमग रेगॅरेसा। रे-ग- म-प- -पमग रेगँरेसा, म-ध- नि-सां- -रेंसांनिँ

धनिँधप, रें-गं- मं-पं- -पंमंगं रेंगंॅरेंसां सांरेंसांनि निसांनिँध धनिँधप पधपम

मपमग रेगॅरेसा। रेगॅरे, रे गॅरे, धनिँ ध, धनिँध, रेंगंॅरें, रें गंॅरें, सांरें सांनिँधप

मगरेगॅ रेसानि॒सा। रेगँरे, रे गँरे, धनिँ ध, धनिँध रेंगंॅरें, रें गंॅरें, रेंगंॅ रें, सांरेंसां

निसांनि, ध निँध, पध प, मपम गमग, ग मग, रेगॅ रेसानि॒सा। रेगगरे गममग मपपम

पधधप धनिँनिँध निसांसांनि सांरेंरेंसां रेंगंॅगंॅरें सांरेंरेंसां निसांसांनि धनिँनिँध

पधधप मपपम गममग रेगॅरेसा। नि॒सागम धनि, निसां रेंगंमंगं रेंगंॅरेंसां, सांनिँधप

मगरेगॅ रेसानि॒सा। रेगम- -गरेगॅ रेसानि॒सा, धनिसां- -रेंसांनिँ धपमग,

रेंगंमं- -गंरेंगंॅ रेंसांनिसां, सांरेंगंॅरें निसांरेंसां धनिसांनिँ पधनिँध मपधप गमपम

रेगमग रेगॅरेसा। रेसानि॒सा मगरेग पमगम निँधपध सांनिँधनिँ रेंसांनिसां गॅरेंसांरें

रेंसांनिसां, सांनिँधप मगरेगॅ रेसानि॒सा। पप-प मगरेगॅ रेसानि॒सा, रेंरें-रे

सांनिँधप मगरेगॅ रेसानि॒सा, पंपं-पं मंगंरेंगंॅ रेंसांनिसां, सांनिँधप मगरेगॅ

रेसानि॒सा। रे-ग- म-प- -पधनि सांनिँधप मगरेगॅ रेसानि॒सा, ध-नि- सां-रें-

-रेंरेंगं मंपंमंगं रेंगंॅरेसा सांनिँधप मगरेगॅ रेसानि॒सा।

राग जयजयवन्ती

ख्याल-विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—ए लरा माई सजन ना आये, कहो कैसे कटें दिन रतियाँ।
अन्तरा—कौन सुने कासे कहूँ, ये दुख बतियाँ ॥

स्थायी

×		०		५	

०		९		११	
				– रे – सा	– स रे ध़ नि़
				ऽ ल ऽ रा	ऽ मा • • ई

×		०		५	
रे	—	ग रे रे ग	– – – म	रे	रे ग म प - ध प ध
स	ऽ	ज • न •	ऽ ऽ ऽ •	•	ना • • • ऽ • • •

०		९		११	
प म म - म म ग -	म ग ग रे –	रे गं – मगं मगं	रे सा	नि़ सा	–सा रे ध़ नि़
आ • • ऽ • • • •	• • • • ऽ	आ • ऽ •• ••	ये ऽ	• •	ऽ क • • हो

×		०		५	
म – – ग रे	रे गं - म गं	रे सा - - रे	नि सा रे सा सा	–सा रे ध़ नि़	म - प म ग रे - -
कै ऽ ऽ • •	• • ऽ • •	से • ऽ ऽ क	टे • • • •	ऽ दि • • न	र ऽ • • ति • ऽ ऽ

०		९		११	
– – रे गं	रे – ग - पम - पम -	रे – गं गं	रे सा	– रे सा –	– सरे ध़ नि़
ऽ ऽ यां •	• ऽ • ऽ • • ऽ • • ऽ	• ऽ • •	ए •	ऽ ल रा ऽ	ऽ मा • • ई

अन्तरा

०		६		११	
			– गम मध धनि	(नि) सां	– – – नि सां
			ऽ कौ• न• सु•	ने	ऽ ऽ ऽ • •

×		०		५		
सां	नि सां – – –	(सां) सां - रें -ग रें - गं -	(सां) रें - गं - रें रें - - -	सां	सां - रें सां रें	निं निं - - ध - नि-
का	• • ऽ ऽ ऽ	से ऽ • ऽ• • ऽ • ऽ	• ऽ • • क• ऽऽऽ	हूँ	• ऽ• • •	ये • ऽ ऽ •ऽ •ऽ

०		६		११	
(प द) ध ध – – प	सां-सां निं ध - निं-	(नि ध प म) ध प म ग	(ग) रे	गं म गं म गं रे सा	– सा रे ध़ नि़
दु • ऽ ऽ •	• ऽ • • • ऽ • ऽ	ख ब ति •	यां	• • • • • ल रा	ऽ मा • • ई

शब्दालाप

×		०		५	
१)				नि़ सा ध़ निं	रे
				स • ज •	न

०		६		११	
(ग) रे	रे – गं मग	रे सा	नि़ – सा रे	नि़ –सा सारे नि़सा	– सारे ध़ निं
स	ज ऽ न ••	• •	• ऽ • ल	रा ऽ• •• ••	ऽ मा• • ई

×		०		५	
२) (म) रे	– – नि़ सा	– निं रें –	– ध़ निं –	ध़ रे – –	नि़ सा – ध़
स	– – ज •	• ऽ न ऽ	ऽ स • ऽ	ज न ऽ ऽ	स • ऽ •

०		६		११	
नि॑ – ध प	रे	रे गरे ग मग	रे गॅ रे सा	– – रे सा	– सारे ध नि॑
• ऽ ज •	न	स •• ज ••	न • • •	ऽ ऽ ल रा	ऽ मा• • ई

× ३)		०		५	
				रे गरे ग मग	म पम प –
				स •• ज ••	न •• • ऽ

०		६		११	
– – प –ध	मग मरे –	– – गॅरे गॅ	रे –गॅ रेसा	निसा रेग मग	रेसा –रे ध नि
ऽ ऽ स •ऽ	ज• न• ऽ	ऽ ऽ स• •	ज ऽ• न •	ए• •• ••	लरा ऽमा • ई

× ४)		०		५	
म रे	– – नि सा	नि॑ रे – –	निसा रेग मप –	– – प –ध	मग मरे –
स	ऽ ऽ ज •	न • ऽ ऽ	स • •• •• ऽ	ऽ ऽ • ऽ•	ज• न• ऽ

०		६		११	
– – रेग मप	रे –ग रे प	– – मग रेगॅ	रेसा निसा – नि	सा – रेसा	– –ग नि –सा
ऽ ऽ स• ••	ज ऽ• न •	ऽ ऽ स• ज•	न• •• ऽ •	• ऽ ल रा	ऽ ऽमा • ऽई

× ५)		०		५	
				सा रेसा रे गरे	ग मग म पम
				स •• ज ••	न •• स ••

०		६		११	
प – – प	मप पनि॑ नि॑ध धप	गम मप पम गम	मग रेगॅ रेसा निसा	रे सा रे सा	रे सा ध नि॑
ज ऽ ऽ न	स• ज• न• ••	स• ज• न• ••	स• ज• न• ••	ल रा ल रा	ल रा मा ई

× ६)		०		५	
मं रे	– निसा गम धनि	सां	– – – निसां	सां	सांरें सां, निसां नि
सा	ऽ ज• •• ••	•	ऽ ऽ ऽ ••	न	स • •, ज• •

०		६		११	
ध निंध, प ध प	म प म, ग म ग	रे	ग मग रे गॅरे	सा –, रे सा	– सारे ध नि॑
न • •, • • •	• • •, • • •	•	स •• ज ••	न ऽ, ल रा	ऽ मा• • •

×		०		५	
७) म रे	– – सारे निसा	पध मप सारें निसां	– – ध नि	गं रें	रें गंरें गं मंगं
स	ऽ ऽ स• ••	•• •• ज• ••	ऽ ऽ • •	न	स •• ज •• ••

०		६		११	
रें गं रें सां	– – ध नि	ध प ग म	रे गॅ रे सा	– – रे सा	– – रे ध नि
न • • •	ऽ ऽ स •	• • ज •	न • • •	ऽ ऽ ल रा	ऽ ऽ मा • ई

×		०		५	
८) म रे	– – निसा गम	धनि सां – –	निसां – धनि	गं रें	रें – गं रें सां
स	ऽ ऽ ज• ••	•• • ऽ ऽ	•• ऽ • •	न	स •• ज •

०		६		११	
– – ध नि	ध प – –	ग म ग रे	– – रे गॅ	रे सा – रे	सा – रे ध नि
ऽ ऽ न •	• • ऽ ऽ	स • ज •	ऽ ऽ न •	• • ऽ ल	रा – मा • ई

बोलतानें

×		०		५	
१) (क)				रे ग रे, ग	म ग, रे –
				ल रा •, मा	• ई, • ऽ

०		६		११	
रे ग म प	निध धप धप पम	पम मग मग गरे	– – रे गॅ	रे सा, रे सा	सा – रे – ग ध
स ज न •	क • हो• कै• से•	क• टे• दि• न•	ऽ ऽ र ति	या •, ल रा	ऽ मा ऽ• ई

×		०		५	
(ख)		रे ग रे, ग	म ग, रे –	रे ग म प	निध धप धप पम
		ल रा •, मा	• ई, • ऽ	स ज न •	क • हो• कै• से•

०		६		११	
पम मग मग गरे	– – रे गॅ	रे सा, रे गॅ	रे सा, रे गॅ	रे गॅ, रे सा	– रे – ग ध
क• टे• दि• न•	ऽ ऽ र ति	या •, र ति	यां • र ति	यां •, ल रा	ऽ मा ऽ• ई

×		०		५	
२) (क)				रे ग – रे, ग म–ग	म प –म ,ध–म–
				ल • ऽ •, रा •ऽ•	मा • ऽ ई,स•ज•
०		६		११	
ग रे	म निं ध निं	प ध म प	– – ध म	ग रे गॅ रे सा	– – ध़ नि़
न	क हो कै से	क टे दि न	ऽ ऽ र ति	या ऽ ल रा	ऽ ऽ मा ई
×		०		५	
(ख)		रे ग – रे, ग म–ग	म प – म, ध –म –	ग रे	म निं ध निं
		ल • ऽ • रा • ऽ•	मा• ऽ ई, स •ज•	न	क हो कै से
०		६ ग		११	
प ध म प	– – म	रे गॅ, रे सा	– – रे सा	– – रे सा	– –रे ध़ नें
क टे दि न	ऽ ऽ र ति	यां •, ल रा	ऽ ऽ ल रा	ऽ ऽ ल रा	ऽ ऽमा • ई
×		०		५	
३) (क)				रेंगं रें,सांरेंसांनिसां	निं,ध निंध,प धप, म
				ल••,रा • • मा •	•, ई ••,स ••,ज
०		६		११	
पम, गमग,रेगॅरे,	रेगॅरे, गमग, मप	म, पधप, धनिं ध,प	धप, मपम, गमग,	रे गॅ रे,– – – रे–	सा –रे ध़ नि़ं
••, न••,•••,	क••,हो••, कै•	•, से••,क • •,टे	••, दि••, न••,	र ति यां,ऽ ऽ ऽ लऽ	रा ऽमा • ई
×		०		५	
(ख)		रेंगं रें,सांरेंसां,निसां	नि, धनिंध,पधप,म	पम, गमग, रेगॅरे	रेगरे, गमग, म प
		ल••, रा• •,मा •	•, ई • •,स••,ज	••, न••, •••	क••,हो••, कै•
०		६		११	
म,पधप,धनिं ध,प	धप, मपम, ममग	रे गॅ रे – – – मग	रे गॅ रे – – – मग	रे गॅ रे – – – गॅरे	सा –रे ध़ नि़ं
•,से••,क• •,टे	••,दि••, न••	र ति यां ऽ ऽ ऽ दिन	र ति यांऽ ऽ ऽ दिन	र ति यां ऽ ऽ ऽ •ल	रा ऽमा • ई
×		०		५	
४) (क)				नि़सा गम धनि सां–	– – – – सांनिं धप
				ल • •• रा• • ऽ	ऽ ऽ ऽऽ मा •••
०		६		११	
मगरेगॅरेसानि़सा	रेंसां – सांध–निंध	पध म– प ग – म	रे गॅ रे – – – मग	रे गॅ रे – – – मग	रे गॅ रे – – ध़–नि़ं
••ई•• • • •	स ज ऽ न कऽहो कै	•से ऽक टे दि ऽ न	र ति यांऽ ऽ ऽ दिन	र ति यां ऽ ऽ ऽ दिन	र तियां ऽ ऽ माऽ ई

×		०		५	
(ख)		निसा गम धनि सां–	– – – – सांनि धप	मग रेगं रेसा निसा	रेंसां–सांध–निंध
		ल • •• रा• • ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ मा • ••	•• ई• • • • •	स जऽ न कऽहूँ कै
०	६		११		
प ध म – प ग–म	रे गं रे – – – प–	– – मग रेगं रे –	– – प – – –मग	रे गं रे– –गं रे–	सा –रे ध नि
• से क ऽ टे दिऽन	र ति यां ऽ ऽ ऽ होऽ	ऽ ऽ दिन रति यांऽ	ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ दिन	रतियां ऽ ऽ• लऽ	रा ऽमा• ई
×		०		५	
५)				रेग मग रेगं रेसा	निसा, धनिसां निधनिं
				ल••• रा• ••	• •, मा••• ई •
०		६		११	
धप गम, रेंगं मंगं	रेंगं रेंसां निसां, सांरें	रेंसां, निसांसांनि, धनिं	निंध, पध धप, मप	पम, मग रेगं रेसा	निसा, रेसा–ध–नि
•• ••,स• ••	ज• न• • •, क•	हो•, कै • से •, क •	टे •, दि•न•, र•	ति•, यां• •• ••	• •, ल राऽमाऽई
×		०		५	
६)				रेग मप रे प मग	रेसा, पधनिसां पसां
				ल••• रा• ••	• •, मा• • • ई •
०		६		११	
सां निं धप, रेंगं मंपं	रेंपं मंगं रेंसां, सांगं	रेंसां, निरेंसांनिं, धसां	निंध, पनिं धप मध	पम गप मग रेगं	रेसा, रेसा–ध–नि
• • ••,स• ••	ज• न• • •, क •	हो•, कै•से •, क•	टे•, दि• न• र•	ति•यां• •• ••	• •, लराऽमाऽई
×		०		५	
७)		साप–पम गरे सा	पसां–सां सां निंधप	सां पं – पं मं गं रें सां	रेंगं रेंसां रेंसां, सांरें
		ल •ऽ•रा •• •	मा•ऽ • ई • ••	स • ऽ • ज • न •	क• • हो• •, कै •
०		६		११	
सांनिसांनि, निसांनिध	निंध, धनिं धप धप,	पधप म पम, मप	पधप, म प मगम	रेगं रेसा निसा, रे-	सा –रे धनिं
• से• •, क• •, टे	• •, दि• •न ••,	र•ति, • यां•, र•	ति••, यां• •र•	ति• यां• • • लऽ	रा ऽमा • ई
×		०		११	
८)		गम रेगं, रेसा निसा	सांनिं धनिं धपगम	मंगं रें गं रेंसां निसां	रेंरेंसांरेंसांनिसांसां
		ल• रा• •• • •	मा • ई • ••••	स • ज • न• • •	क• हो• • • कै •
०		६		११	
निसांनिंध, निं निंधनिं	धप, धध पध पम	पप मप मग मग	रेगं रेसा, रें–सां–	– – रे–सा– – –	रें–सां– – रे ध निं
से • • • क • टे •	••, दि•न• ••	र • ति••• यां•	•• • •, लऽराऽ	ऽ ऽ लऽराऽ ऽ ऽ	लऽरा ऽ ऽ मा • ई

तानें

×   ०   ५
१) | | | | निसा रेग मग रेगॅ | रेसा निसा, रेग मप

०   ६   ११
मगरेगॅरेसानिसा | रेग म नि॑ धप मध | पम गप मग रेग | मप मग रेग मग | रेगॅ रेसा निसा, रे – | सा –रे ध नि॑
लऽ | रा ऽमा • ई

×   ०   ५
२) | | | | रेग रे, रेग रे, गम | ग, गम ग, म पम, म

०   ६   ११
पम, पधप, पधप, | मपम, मपम, गम | ग, गमग, रेगरे, रे | गरे, रेग मप मग | रेगॅ रेसा निसा, रे – | सा –रे ध नि॑
लऽ | रा ऽमा • ई

×   ०   ५
३) | | | | रेगरे, रेगरे, धनि॑ | ध, धनि॑ध, पधप, प

०   ६   ११
धप, मपम, मपम, | गमग, गमग, रेग | रे, रेगरे, धनि॑ध, प | धप, मपम, गमग, | रेगॅ रेसा निसा, रे – | सा –रे ध नि॑
लऽ | रा ऽमा • ई

×   ०   ५
४) | | | | पप – पमग रेगॅ | रेसा निसा, रेंरें–रें

०   ६   ११
सांनि॑धपमगरेगॅ | रेसानिसा, गॅ रेंसांनि॑ | रेंसांनि॑ध, सांनि॑ धप | नि॑ध पम, धपमग | रेगॅ रेसा निसा, रे – | सा –रे ध नि॑
लऽ | रा ऽमा • ई

×   ०   ५
५) | | | | निसागमधनिसांनि॑ | धप मग रेगॅ रेसा

०   ६   ११
निसागमधनिसांरें | सांनि॑ धप मग रेसा | निसागमधनिसांरें | गॅरेंसांनि॑धपमग | रेगॅ रेसा निसा, रे – | सा –रे ध नि॑
लऽ | रा ऽमा • ई

×   ०   ५
६) | | | | निसागमधनिसांनि॑ | धप मग रेगॅ रेसा

०		६		११	
गमधनिसांरेंगं रें	सांनि धप मग रेगं	रेसा, रेंगं मंगं रेंगं	रेंसां,सांनि धपमग	रेगं रेसा निसा,रे – लऽ	सा –रे ध नि रा ऽमा • ई

×		०		५	
७)				रेग मप रेप मग	रेगं रेसा, धनिसांरें

०		६		११	
धरेंसांनिधनि धप	रें गं मं पं रें पं मं गं	रेंगं रेंसां,सांरेंसांनि	धनि धपमपमग	रेंगं रेंसां निसा,रे – लऽ	सा –रे ध नि रा ऽमा • ई

×		०		५	
८)				सा - प - सां - - नि	धप मग रेगं रेसा

०		६		११	
प-सां-रे-–नि	धप मग रेगं रेसा	सा - प - सां - - रें	गं रें सांनि धपमग	रेगं रेसा निसा,रे – ल–	सा –रे ध नि रा ऽमा • ई

×		०		५	
९)				निसागमधनिसांरें	गं रेंसांनि धपमग

०		६		११	
रेग रेसा,रेगं रें,सां	रेंसां,निसांनि,धनि ध,	पधप, मपम, गम	ग,रेगरे,रेगमप	मग रेगं रेसा रे – लऽ	सा –रे ध नि रा ऽमा • ई

×		०		५	
१०)				रे ग म - - ग रे गं	रेसा,रेंगंमं - - गं

०		६		११	
रेंगं रेंसां,सांनिंधप	मगरेगं रेसा, सांनि	धप मग रेगं रेसा	सांनि धप मगरेगं	रेसा, रेग मप रे – लऽ	सा –रे ध नि • ऽमा • ई

×		०		५	
११)				सारे निसा, पध मप	सांरेंनिसां,रेंगंमंगं

०		६		११	
रेंगं रेंसां,सांनिंध	मग रेसा, रेंगं मंगं	रेंगं रेंसां,सांनि धप	मगरेसा,रेंगंमंगं	रेंगंरेंसां,सांनि धप	मग रेसा, ध - नि - मा • ई •

राग जयजयवन्ती

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—रे घन छाये, कारे बदरवा, मोरा जियरा धरके 'प्रणव' पियरवा।
अन्तरा—दादुर मोर पपैया बोले, शोर करे झींगरवा, लागे डरवा॥

स्थायी

×				५				०				१३			
												(रे)नि̱	सा	ध̱	नि̱
												रे	•	ध	न
म	मग	—	रे	(ग)रे	गॅरे	गप	मग	(म)रे	(म)गॅ	रे	सा	(रे)नि̱	सा	ध̱नि̱	प̱प̱
छा	ऽऽ	ऽ	ये	का	••	रे•	ब•	द	रे	वा	•	रे	•	ध•	न•
(मग)रे	—	—	रे	(ग)रे	(म)गॅ	रे	सा	—	(रे)नि̱	—	सा	(ग)रे	(म)गॅ	रे	सा
छा	ऽ	ऽ	ये	छा	•	ये	•	ऽ	मो	ऽ	रा	जि	य	रा	•
—	(सां)सांनि	निध	प	—	(रे)मग	–म	प	म- -ग	रेगॅ	रे	सा				
ऽ	धर	•के	•	ऽ	प्रण	ऽव	पि	यऽऽ•	र•	वा	•				

अन्तरा

								ग	म	(नि)ध	नि	सां	—	ध	नि
								दा	•	दु	र	मो	ऽ	र	प
(मं)रें	—	(गं)रें	—	(गं)रें	(मं)गं	रें	सां	—	सांनि	–सां	रें	नि	—	धनि	पध
पै	ऽ	या	ऽ	बो	•	ले	•	ऽ	शो•	ऽर	क	रे	ऽ	झीं•	••
(ध)सां	(सां)नि	ध	प	—	गम रेग	–म	प	मग	रेगँ	रे	सा				
ग	र	वा	•	ऽ	ला•••	ऽगे	•	ड•	र•	वा	•				

तानें

	×				५				०				१३			
१)									रेग	मग	रेगँ	रेसा	नि़ रे	सा •	ध़ ध	नि़ँ न
२)								नि़सा	रेग	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
३)							नि़सा	रेग	मप	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
४)							पप	मग	रेग	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
५)					रेप	मग	रेप	मग	रेप	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
६)						पध	प,म	पम,	गम	ग,रे	गँरे	सा–	”	”	”	”
७)				रेसा	नि़सा	मग	रेग	पम	गम	रेगँ	रेसा	नि़सा	”	”	”	”
८)		सारे	सारे	रेग	रेग	गम	गम	मप	मप	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
९)					नि़सा	गम	धनि	सांनिं	धप	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
१०)					गम	धनि	सांरें	सांनिं	धप	मग	रेगँ	रेसा	”	”	”	”
११)	रेंसां	सांनिं	सांनिं	निंधं	निंधं	धप	धप	पम	पम	मग	मग	गँरे	गँरे	रेसा	नि़ सा रे •	ध़ नि़ँ ध न

×　　　　　　　　५　　　　　　　　०　　　　　　　　१३

१२) | सांरें | सां,नि | सांनि, | धनि | ध,प | धप, | मप | म,ग | मग, | रेगं | रेसा | नि | सा | ध | नि |
| | | | | | | | | | | | | रे | • | ध | न |

१३) | | | | सांरें | सांरें | निसां | निसां | धनि | धनि | पध | पध | मप | मप | गम | गम |

रेगं | रेगं | सारे | सारे | निसा | गम | धनि | सां— | धनि | सां— | धनि | सां— | नि | सा | ध | नि |
| | | | | | | | | | | | | रे | • | ध | न |

१४) रेरे | सानि | सा,गं | गंरे | सारे, | मम | गरे | ग,प | पम | गम, | धध | पम | प,नि | निध | पध, | सांसां |

निध | नि,रें | रेंसां | निसां | रे नि | सा | ध | नि | ग रे | — | ध | नि | ग रे | सा | ध | नि |
| | | | रे | • | ध | न | छा | ऽ | ध | न | छा | ऽ | ध | न |

१५) निसा | रेग | मप | रेप | मग | रेगं | रेसा | निसा | रेंगं | मंपं | रेंपं | मंगं | रेंगं | रेंसां | सांरें | रेंसां |

निसां | सांनि | धनि | निध | पध | धप | मप | पम | गम | मग | रेगं | रेसा | रे नि | सा | ध | नि |
| | | | | | | | | | | | रे | • | ध | न |

—

राग जयजयवन्ती

तराना—त्रिताल

गीत—३

स्थायी—दिर दिर तनन तन देरे ना, दीं तों तन देरे ना तदानि,
तननन न देरे ना, तननन न देर्नां, देर्ना तदानि ।

अंतरा—उदतन देरे ना, दीं तन देरे ना, तन देरे ना, तन देरे ना, तन देरे ना,
रेग रेसा निसा धनि रे, गरे, मग, पम, धप, किड्धत् धागिन धागि तिरकिट तक्तान् धाधा,
तिरकिट, तक्तान धाधा, तिरकिट तक्तान धाधा ॥

स्थायी

×				५				०				१३				
						नि़ नि़	सा सा	रे	सा	रे	नि़	सा	ध़	—	नि़
						दि र	दि र	त	न	न	त	न	दे	ऽ	रे
रे	—	—	—	—	गँ रे	नि़ नि़	सा सा	रे	सा	रे	नि़	सा	ध़	—	निँ
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	• •	दि र	दि र	त	न	न	त	न	दे	ऽ	रे
म	प म	ग	म ग	रे	गँ रे	नि़ नि़	सा सा	रे	सा	रे	नि़	सा	ध़	—	निँ
ना	• •	•	• •	•	• •	दि र	दि र	त	न	न	त	न	दे	ऽ	रे
रे	—	^(रे)नि़	—	सा	—	रे	ग	म	रे	नि़	सा	रे	ध़	—	निँ
ना	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	त	न	दे	रे	ना	•	त	दा	ऽ	नि
म़	म़	ध़	नि़	सा	रे	नि़	सा	रे	ग	म	प	ध	ग	—	म
त	न	न	न	न	दे	रें	रे	त	न	न	न	ना	दे	ऽ	र्ना
नि सां	सां नि	नि ध	ध प	ग म	ग	रे रे	गँ गँ	रे	सा	रे	नि़	सा	ध़	—	निँ
दे	•	र्ना	त	दा	नि	दि र	दि र	त	न	न	त	न	दे	ऽ	रे

अंतरा

ग	म	ध	नि	सां	नि	सां	—	नि	सां	रें	गँ	रें	सां	नि	सां
उ	द	त	न	दे	रे	ना	ऽ	दीं	रें	त	न	दे	रे	ना	•
रे	सां	निँ	ध	प	ध	सां	निँ	ध	प	म	ग	रे	म	गँ	रे
त	न	दे	रे	ना	•	त	न	दे	रे	ना	•	त	न	दे	रे

×				५				०				१३			
नि॒	सा	रें	गॅं	रे	सा	नि॒	सा	ध॒	नि॒ˇ	रे	—	ग	रे	—	प
ना	•	रे	ग	रे	सा	नि	सा	ध	निं	रे	ऽ	ग	रे	ऽ	प
म	—	ध	प	—	निंˇ	ध	—	प प	सां	–सां	सां	सां	सां	सां	सां
म	ऽ	ध	प	ऽ	नि	ध	ऽ	कि ड़	ध	ऽ त्	धा	गि	न	धा	गि
ध ध	निंनिं	ध ध	(सां) निंˇ	—	ध	प	ध	म म	प प	म म	प	—	म	ग	म
ति र	कि ट	त क्	ता	ऽ	न	धा	धा	ति र	कि ट	त क्	ता	ऽ	न	धा	धा
रे रे	गॅं गॅं	रे रे	गॅं	—	रे	नि॒	सा	रे	सा	रे	नि॒	सा	ध॒	—	नि॒ˇ
ति र	कि ट	त क्	ता	ऽ	न	धा	धा	त	न	न	त	न	दे	ऽ	रे

राग जयजयवन्ती

धमार

गीत—४

स्थायी—श्यामा श्याम सों होरी खेलत
आज नई नन्दनन्दन को राधे कीन्हों, माधव आप भई।

अन्तरा—सखा सखी भए, सखी सखा भईं यशोमती भवन गईं,
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, नाचत थै थै थै ॥

स्थायी

×			०		६		०			११		०	
(ग)रे	(ग)रे	(ग)रे	(ग)रे	प	(प)म	ग रे	ग रे	(म म)गँ गँ गँ	रे सा	(रे)नि̱	सा	(रे)ध̱	नि̱
श्या	•	मा	श्या	•	म	सों •	हो •	• • •	री •	खे	•	ल	त
(रे)नि̱	सा	रे - - सा	(रेम)गँ	रे सा	रे	सा	(रे)नि̱	सा	निँ̱	(प)ध̱	सा नि̱	ध̱	प̱
आ	•	• ऽ ऽ •	•	ज •	न	ई	नं	•	द	नं	• •	द	न
(प)ग̱	म̱	(निँ)ध̱	नि̱	सा	सा	–	(रे)नि̱	सा	सा	सा - - रे	ध̱ नि̱	(म)रे	(ग)रे
को	•	•	रा	•	धे	ऽ	की	•	न्हो	मा ऽ ऽ •	• •	ध	व
(ग)रे	(प)म	(ध)प	(ध)प ध	(ध)म	म	रे	रे	रे	गँ रे	(रे)नि̱	सा	(रे)ध̱	नि̱
आ	•	•	• •	•	•	प	भ	ई	• •	•	•	•	•

अन्तरा

ग	म	(सां)ध	नि	सां	सां	सां	(रें)नि	सां	रें	(सां)रें	(मं)गं	(सां)रें रें - -	सां
स	खा	•	स	खी	भ	ये	स	खी	स	खा	•	भ • ऽ ऽ	ई
सां	निँ	ध प	(प)ध - - प	(सां)निँ	ध-निँध	प-धप	म-पम	ग-मग	(ग)रे	गँ	रे	(रे)नि̱	सा
य	शो	म •	तीऽऽ •	•	भऽ••	वऽ••	नऽ••	गऽ••	ई	•	•	•	•
नि̱	सा	रे	सा	(रे)नि̱	(ध̱)सा	ध̱ नि̱	म	ग	रे	रे	गँ रे	नि̱	सा
बा	•	ज	त	ता	•	ल मृ	दं	•	ग	झाँ	• झ	ड	फ
सां - - नि	रें	सां	निँ	(प)ध	(सां)निँ	ध प	(प)ग	म	ग रे	(रे)नि̱	सा	(रे)ध̱	निँ̱
ना ऽ ऽ •	•	च	त	थै	•	• •	थै	•	• •	थै	•	•	•

राग केदार

आरोहावरोह—सा म, म प, मि प ध-म, मि प प सां, नि ध, धनि धप, मि प ध मि प, म, मरे -सा।

जाति—वक्र औड़व-षाड़व।

ग्रह—मध्य षड्ज।

अंश—शुद्ध मध्यम।

न्यास—पंचम।

विन्यास—मध्य षड्ज।

राग-वाची स्वर-जोड़ी—सा म।

मुख्य अंग—सा म, म प, मि प ध-म।

समय—रात्रि के प्रथम याम के अंत में।

प्रकृति—शान्त गंभीर।

विशेष विवरण

इसको किसी ने कल्याण थाट का राग माना है। कल्याण में शुद्ध मध्यम का संपूर्ण अभाव है और केदार में शुद्ध मध्यम ही प्राण है। जो बीज में नहीं, वह फूल फल में कहाँ से आ सकता है? जनक थाट में जो स्वर नहीं है, वह जन्य राग में कहाँ से, कैसे, किस नियम से आया? उसके लिए क्या शास्त्रीय आधार है? इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं। वास्तव में इन प्रश्नों को सामने रख कर ही पं० व्यंकटमखी ने ७२ थाटों में रागों को विभक्त किया था। दस थाटों का वर्गीकरण उसी का अनुकरण है। क्या यह पद्धति विद्वन्मान्य हो सकेगी?

केदार में दो मध्यम और दो निषाद सर्वसम्मत हैं। इसमें गान्धार वर्ज्य है। गुणी जन इस में गुप्त गांधार बतलाते हैं। शुद्ध मध्यम के प्रबल गुंजन में वह गान्धार छिपा हुआ है। यह कहना यथार्थ है क्योंकि जब सा म-म प, यों मध्यम से पंचम पर आरूढ़ होते हैं, तब स्वभावत: सहज रूप से गान्धार का अज्ञात स्पर्श हो जाता है।

पं० भातखण्डे ने इसका आरोहावरोह यों दिया है :—

सम, मप, धप, निध, सां–, सां, निध, प, मि प ध प, म, ग म रे सा।

वास्तव में यह अन्त का 'ग म रे सा' भारत में कोई भी गायक वादक प्रयुक्त नहीं करते हैं। समझदार मनुष्य बराबर जानते हैं कि 'गम रेसा' करते ही केदार का राग-भाव तिरोहित हो जाएगा। संभव है यह सूक्ष्म-राग-ज्ञान के अभाव का परिणाम हो।

इस राग के मलुहा केदार जलधर केदार एवं चाँदनी केदार—ऐसे अन्य प्रकार भी गाये बजाये जाते हैं। सभी प्रकारों में केदार का मुख्य अंग ज्यों का त्यों रख कर सुरों को घटा बढ़ा कर अथवा उनकी चाल में थोड़ा सा परिवर्तन करके राग का दूसरा रूप उपजाया जाता है। इसका मुख्य अंग ध्यान में आने के बाद अन्य प्रकारों पर प्रभुत्व पाना आसान होगा।

इस राग का सीधा आरोहावरोह नहीं होता। गान्धार तो वर्ज्य है ही, किन्तु रिषभ भी त्याज्य है। यदि रिषभ का आरोह में परित्याग न करें तो सारंग की छाया सम्मुख खड़ी होगी। 'सा रे म' कर ही नहीं करते। इसलिए केदार का अपना निरालापन अभिव्यक्त करने के लिए सा रे सा, म, म–म प, मी प ध मी प म, म–म रे–सा।

यथासंभव आरोह में निषाद का प्रयोग न करना अच्छा है। सभी गुणी जन अन्तरे में मी प प र्सा ही जाते हैं। फिर भी तान-क्रिया में मी प ध नि र्सा नि ध प मी प–यों जलद तानों को सुलभ बनाने के लिए आरोह में निषाद का उपयोग किया जाता है। ध्यान रहे कि केवल तानों में ही निषाद का अल्प प्रयोग ही क्षम्य है, आलाप में नहीं। अन्यथा राग का स्वरूप विरूप होने की संभावना है। विद्यार्थियों को यथासंभव तानों में भी मी प प र्सा–यों ही जाने का प्रयत्न करना चाहिए।

अवरोह करते समय धैवत और रिषभ का दीर्घोच्चार आवश्यक है। निषाद का अल्पत्व है। 'सा म' इन स्वरों का उच्चार करते ही या तो म रे–सा यों करना होगा या तो म प यों करना होगा। इस दूसरी क्रिया में 'सा म' के म का दीर्घोच्चार करना होगा और 'म प' के म के अल्पोच्चार होगा और पंचम पर कुछ समय ठहर कर तीव्र मध्यम से मी प ध,म–यों करने से राग की संपूर्ण छाया वातावरण में छा जाएगी। विद्यार्थियों को चाहिए कि वह क्रिया गुरुमुख से कंठस्थ कर लें।

राग केदार

मुक्त आलाप

(१) सा। सा म –, म रे – सा; सा रे नि सा – ध प, प ध मी प सा – नि सा। सा रे नि सा म –, म प –, प ध मी प – म, सा नि रे सा म –, प ध मी प – म, म – प, ध मी प म – म रे – सा।

(२) सा रे नि सा म –, सा नि रे सा म –, नि रे नि सा म –, रे रे सा नि सा म –, ध ध प मी प, रे रे सा नि सा म –, प ध मी प सा रे नि सा म –, नि सा रे रे सा नि सा म –, म प, ध मी प – म –, मी प ध – म, प मी, प ध – म, सा म – प, ध – म, म रे — सा।

(३) रे रे सा नि सा म –, ध ध प मी प – म, मी प ध – म, सा म म प, प ध – म, मी प –, मी प ध – म, ध ध प मी प – ध मी प – म, म प, ध मी प – म, म रे – सा।

(४) सा म – प – मी प, मी प ध नि ध – प, मी प ध – म, मी प प सां – नि ध – प, मी प ध मी प म, सा – म – प, ध मी प म –, म रे – सा।

(५) सा रे नि सा म –, प ध मी प सां – नि सां, सां रें नि सां ध –, नि ध – प, मी प प सां – नि ध –, नि ध – प, मी प ध ध प मी प सां — मी – प, ध मी प – म, सा म, म प, प ध, मी प सां — मी – प – ध मी प म; सा नि रे सा प मी ध प सां — मी – प ध मी प – म –, म रे, – सा।

(६) सा रे नि सा प ध मी प सां रें नि सां मं – मं रें – सां, सां ध – प, ध मी प – म; मी प प सां — मी – प, ध मी प म –, सा नि रे सा – प मी ध प – म, प मी ध प, सां नि रें सां –, मी – प ध मी प – म –, सा नि रे सा – प मी ध प –, मी – प ध मी प – म –, नि सा रे नि रे नि रे नि सा, मी प ध मी ध मी प, म – ग प – मी ध मी प – म –, म रे – सा।

(७) सा म म प सां सां रें सां – नि सां, सा म म प, प सां सां रें सां – नि सां, सा रे सा म –, प ध प सां – नि सां, रे नि सा म –, ध मी प सां रें नि सां मं –, मं रें – सां नि सां, रें रें सां नि सां ध – प, ध ध प मी प ध – म, म – प ध मी प म –, म रे – सा।

(८) नि सा रे सा, मी प ध प, नि सां रें सां – नि सां, रे रे सा नि सा म –, ध ध प मी प सां – नि सां, नि – रे सा, मी – ध प, म –; मी – ध प, नि – रें सां नि सां; मी – ध प, नि – रे सा, मी – ध प, नि – रें सां, मं – धं पं – मं –, मं रें – सां, सां ध – प, मी – ध प – म –, म रे – सा।

(९) रे रे सा नि सा, ध ध प मं प, रें रें सां नि सां मं –, सा रे नि सा प ध मं प सां रें नि सां

मं –, सा नि रे सा प मं ध प सां नि रें सां मं –, मं प प सां सां मं –, ध मं प – रें नि सां – मं –, सा म –,

म रे – सा –, प सां –, सां ध – प, सां मं –, मं रें सां; सा म – म, म प – प, प सां – सां, सां मं – मं,

मं रें – सां, सां ध – प, ध मं प म –, म रे – सा।

(१०) म – म रे – सा, सां – सां ध – प, मं – मं रें – सां, सां – सां ध – प, म – म रे – सा; मं प

ध – म, सा म ग प मं ध मं प ध – म, सा नि रे सा म ग प मं ध – म; प म ध प सा नि रे सा म ग प मं

ध – म, मं प प सां – सां रें – सां, नि ध – प, मं प ध – म, मं – प ध मं प म –, म रे – सा।

राग केदार
मुक्त तानें

सा सा म म प प ध प म म रे सा। सा रे नि सा प ध मं प मं प ध प म म रे सा। सा सा सा, म

म म, प प प, ध ध प म म रे सा। रे रे सा नि सा, ध ध प मं प, ध प म म रे सा। नि सा रे सा

नि सा, मं प ध प मं प म म रे सा। सा रे रे सा सा प प मं मं प ध प म म रे सा। सा सा सा, प

प प, म म रे सा नि सा। सा – म – प – – प ध मं प म म रे सा सा। सा सा म ग प मं ध प

मं प ध निं ध प मं प ध प म म रे सा नि सा। मं प, प सां सां रें सां नि ध प म म रे सा नि सा।

सा सा म म प प ध ध मं प सां सां रें रें सां नि ध प म म रे सा नि सा। सा सा म म प प ध ध

मं प सां सां मं मं रें सां सां नि ध प म म रे सा। सा – प – सां – – रें सां नि ध प म म रे सा।

सां प – प म म रे सा प रें – रें सां नि ध प सा पं – पं मं मं रें सां सां नि ध प म म रे सा।

सा – प – सां – – रें सां नि ध प म म रे सा, प – सां – सां – – पं मं मं रें सां सां नि ध प

म॑ म रे सा। ध म॑ प, ध म॑ प, ध प म॑ प ध प म म रे सा, रें नि सां, रें नि सां, रें सां नि सां रें सां
सां नि ध प, प ध म॑ प सां रें नि सां म॑ प म॑ म॑ सां रें नि सां प ध म॑ प म म रे सा। नि सा रे सा
म॑ प ध प ध निॅ ध प म॑ प ध प नि सां रें सां म॑ प ध प ध निॅ ध प म म रे सा। म म म, प
प प, ध ध म॑ प, सां सां रें रें सां नि ध प म म रे सा नि॒ सा। रे रे सा, रे रे सा नि॒ सा ध ध प, ध
ध प म॑ प रें रें सां, रें रें सां नि सां ध ध प, ध ध ष म॑ प म म रे सा। रे रे सा, म म ग, प प
म॑, ध ध प म॑ प ध निॅ ध प म॑ प ध प म म रे सा नि॒ सा।

राग केदार

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—ए बनठन का जु चले ऐसे को मनभावन, साँवरे सलोने कन्हाई।
अंतरा—दूजे को सो चंद्रमा, नीको ही लागत, छुप छुप देत दिखाई।

स्थायी

०		९		११	
				ध म॑ – प ध एऽ • ब	ध प म – मग न ठ ऽ नऽ
×		०		५	
ग प का	म॑प – – – •• ऽ ऽ ऽ	प जु	प प ध म॑ प च • • • •	म ले	– – म – – – मग ऽ ऽ ऐ ऽ ऽ ऽ से•
०		९		११	
ग प को	ध नी म॑ प ध प • ऽ म न	ध म भा	म सा सा रे • व	सा न	सा – – सा – रे – – – ऽ ऽ सॉं ऽ व ऽ ऽ ऽ

×		०		५	
सा	---नीसा	सा म--ग	ग प	ध मैप	सां धप
रे	ऽ-- ••	सऽऽ•	लो	ने •	• क

०		६		११	
ध नी मै -ध -	नी मै -प -	धनीसां -----	सां ध	नी मै -पध	ध पम -मग
न्हा ऽ • •	• ऽ • ऽ	ई • • ऽऽऽऽऽ	• •	ऽऽ • ब	न ठ ऽ न•

अंतरा

×		०		५	
सां पप	प सां सां	सां	--नीसां सां	सां	—
दू जे	के सों	चँ	ऽऽ•• द्र	मा	ऽ

०		६		११	
सां ध	धनी सां रें	नी सां	सांरेंसांसां ----	रें नी---सां-नीधप	म
नी	• • को ही	ला	• • • • ऽऽऽऽ	• ऽऽऽ • ऽ • ग •	त

×		०		५	
म सा रे	-सा	म--ग	ग प	ध मैप	मैनी ध -प
छु प	ऽ छु	पऽऽ•	•	दे •	त • • ऽदि

०		६		११	
ध म -मैनी ध	धनी मैप -	धनीसां -----	सां ध	नी मै -पध	ध पम -मग
खाऽ • • •	• • • • ऽ	ई • • ऽऽऽऽऽ	•	• ऽ • ब	न ठ ऽ न•

आलाप

×		०		५	
१)		सा म	– – – म	ग प	मीप – – –
०		६		११	
पधमीप –	ध म	ग म प	धमीप– – म –	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
×		०		५	
२)		सारेनीसा म	– पधमीप	ध – म	म प
०		६		११	
ध - धपमीप - -	धमीप – – म –	ग म प	धमीप– – म –	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
×		०		५	
३)		सानीरेसा म - प -	धमीप– – म –	ध - धपमीप – म	धमीप– – म –
०		६		११	
मीपधनीं	धपमीप	मी ध ध म	ग म प	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
×		०		५	
४)		सा - - नीरे - - सा	म प	धमीप– – म –	मी प प ध
०		६		११	
धनीधप	मी मी प ध –	म	मी - प - धमीप - -	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
×		०		५	
५)	सा म प, ध	मी प प ध	ध म	मीपपसां - - - -	सां मी प
०		६		११	
पधमीप –	ध म	सा म प	धमीप– – म –	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
×		०		५	
६)	सा रे नि सा	– पधमीप	म	पधमीप सां	– पधमीप
०		६		११	
म	पमी धमी पसां नीरे नीसां	पमी धमी पम – – –	म – प – धमीप –	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न

	×		०		५	
७)	सारेनीसा पधमेप	सां	नीसां – – –	सांरेंनीसां –	सां ध	
	०		६		११	
	पधमेप –	ध म	मप	धमेप– – म –	मरे– – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न
	×		०		५	
८)	सारेनीसा पधमेप	सां	नीसां – – –	सानीरेनीसा, पमेधमेप,	सांनीरेंनीसां, पमेधमेप	
	०		६		११	
	सां	नीसां – – –	सां –सां मं –	—	मंरें – – –	सां
	×		०		५	
	रें-रेंसां नीसा- -	सां ध	- धप मेप - -	ध म	ग म प	ध – मे प
	०		६		११	
	सां	मे प	म	मरे – – –	सा – – ध ब	प ध म म न ठ • न
	×		०		५	
९)			सा म प, ध	मे प सां –	—	नीसां – – –
	०		६		११	
	सांरेंनीसां मं - - -	—	मे - पं - धंमे पं - -	धं मं	मंरें – – –	सां
	×		०		५	
	सांरेंनीसां, पधमेप	सां	सांनिरेंनिसां-पमेधमेप-	ध म	मेपपसां सां मं – –	मंरें – सां –
	०		६		११	
	धमेप– – म –	मरे – सा, ध ब	प ध म म न ठ • न	प, ध प ध का, ब न ठ	म म प, ध • न का, ब	प ध म म न ठ • न
	×		०		५	
१०)			सा म म प	प ध मे प	सां	निसां – – –
	०		६		११	
	सारेनिसा, पधमेप	सांरेंनिसां, पधमेप	सां	निसां – – –	सा रे नि सा म	प ध मे प सां

×		०		५	
सांरेंनिसां मं	मंरें – सां –	सां ध – प –	मरे – सा –	सा म म प प ध मंप	सांरेंनिसां मं
०		**६**		**११**	
मं मं	मंरें – सा –	सा सा म म	प – प प	सां सांनि रें –	सांरेंसांसां - ध - प
		ब न ठ न	का ऽ ब न	ठ न • का ऽ	ब • न • ऽ ठ ऽ न
म का ×					

बोलतानें

× १)		०		५	
		सा सा म म	– – प	ध नि सा ध	निं ध पमंप
		ब न ठ न	का ऽ ऽ जु	च • ले ऐ	• सी को• •
०		**६**		**११**	
मंपधप	– ध म –	सा म म प	मं प धनि सां	नि सांनि, धनिं धमंप	ध प म म
म न भा •	ऽ ब न ऽ	साँ व रे स	लो • ने• •	क • •, न्हा• • ई•	ब न ठ न

× २)		०		५	
		सा रे नि सा	म – – म	ध मं प मं	प ध प म –
		ब न ठ न	का ऽ ऽ जु	च ले • ऐ	• सी• कोऽ
०		**६**		**११**	
मंपप ध	ध निं ध प	ध नि सां रें	नि सां ध प	मंप धनि सांनि धप	मंप धप – म – म
म न भा •	• • व न	साँ व रे स	लो • ने •	क• न्हा• • • ईऽ	ब• न• ऽ ठ ऽ न

× ३)		०		५	
	सा निसा, म ग म	प मं प, ध निं ध	प मं प नि सां नि	ध निं ध, प मं प	मं प धप म – –
	ब • न, ठ • न	का• •, जु • च	ले • • ऐ • सी	को • म, न • •	भा• व• न ऽ ऽ
०		**६**		**११**	
मंमं रेंसां निसां	धनिं धप मंप	धनिं धप मंप	सा म ग प मं प	धनिं धप मंप	प ध प म – म
साँ• व रे • स	लो• •ने •क	न्हा• •ई •क	ह्ना • • ई • क	न्हा• •ई ••	ब • न ठ ऽ न

	×	०		५	
४)	प प सां सां रें– – –	सां – सां ध प	म –रे सा –सा	म –म प –प	मं प ध नि सां– – रे
	ब न ठ न काऽ ऽ ऽ	जु ऽ च ले ऽ	ऐ ऽसी को ऽम	न ऽभा व ऽन	साँ• व • रे ऽ ऽस

०		६		११	
सां नि धप–मं– प	ध म म – – मं– प	सां रें सां– – मं– प	ध म म– – मं – प	सां रें सां– –मं– प	ध म म– ध प म म
लो • ने•ऽ•ऽक	न्हा• ई ऽ ऽ रेऽ स	लो • ने ऽ ऽ रेऽक	न्हा•ई ऽ ऽ रे ऽ स	लो • ने ऽ ऽ रेऽक	न्हा•ई ऽ ब न ठ न

	×	०		५	
५)	सां मं – मं मं	रेंसां निसां प –सां-	– – सांनि धप मंप	मं–प– – – मं प	धनिॅ धप मं –प–
	ब न ऽ ठ •	न• • • काऽ•ऽ	ऽ ऽ जु •च• ••	लेऽ•ऽ ऽ ऽ ऐ •	सी • •• कोऽ•ऽ

०		६		११	
– – मंप धप मम	सा–म – – – म म	सा निसा सा–म–	प ध मं प	रेंसां–धसां ध–प	धमं – पध प म म
ऽ ऽम• न• ••	भाऽ• ऽ ऽ ऽ व •	न • • • साँऽवऽ	रे स लो ने	कन्हाऽई कन्हाऽई	कन्हा ऽ ईब न ठ न

	×	०		५	
६)	मंमंरें, मंमंरें,सां सां	रेंरेंसां,रें रें सां,सांध	धनिॅध, धनिॅध, मंप	धधप, धधप, मंप	ममरे ममरे सासा
	ब ••, न••,ठ •	न• •,का• •, जु •	च • •, ले• •, ऐ•	सी••,को••, म•	न•• भा•• व न

०		६		११	
सासा ममप– –	मंमं पप सां – – –	मंमं रेंसां निसां,मंप	ध निसां– – –मंप	धनिसां – – – मंप	धनिसां – – म–म
साँ • ब•रेऽऽऽ	स•लो• ने • • •	क• •न्हा • ई,ब•	न • •ऽ ऽ ऽब•	ब • • ऽ ऽ ऽ ब•	ब • • ऽ ऽ ठऽन

	×	०		५	
७)	सारे निसा, पध मंप	सारें निसां, पध मंप	मंप धनि सां– धनि	सांनि धनिॅ धप मंप	मंपमं, पधप, धनि
	ब • न •, ठ• न•	का• • • ,जु• ••	च• ले• • ऽ ऐ•	• • से• को• ••	म••, न••, भा•

०		६		११	
सांनिधपमम रेसा	सारे साम गप मंप	निसांनि धनिॅ धमंप	सांमंरेंसां रेंसांनिसां	मंपध निसां – सारें	सां ध प–धप मम
• • व •न• • •	साँ• व • रे• ••	स • • लो• •ने•	क •• न्हा•• ई •	बनठ न का ऽ ब न	ठ न काऽबन ठन

८)	सारें निसां– –धनि	सांनि धप मम रेसा	सारे नि̱सा– –पध	मेंप सांनि धप मेंप	मेंप पमें, पध धपें
	ब • न • ऽ ऽ ठ•	न • का• जु• • •	च• ले • ऽ ऽ ऐ•	सी• को • •• ••	म• न•, भा• ••
×		०		५	
निसांसांनिधनिधप	सामं मंरें सांरें निसां	निध सांनि सांरेंनिसां	सांसां–नि धप मम	रेसानि̱सा,सां–सां,सां	–सां, सां–सां,म-म
ब • • •न• ••	सां• व• रे • स •	लो• • • ने •क •	न्हा• ऽ • ई• ••	•• • •,ब ऽ न, ब	ऽ न, ब ऽ न,ठऽन
	×	०		५	
९)	मम–म रेसा नि̱सा	सांसां–नि धप मेंप	मंमं–मं रेंसां निसां	सांसां–नि धप मेंप	मम–म रेसा नि̱सा
	ब•ऽन ठ न का•	जु • ऽ • च•ले•	ऐ•ऽसी को • ••	म • ऽ न भा• ••	व•ऽ• न • • •
०		६		११	
सा – सा प–प	सां–सां पं–पं	मंमं रेंसां, सांसां धप	मम रेसा, मंमं रेंसां	निसां,सांसां धप मेंप	पध धप म–मग
सौं ऽ व रेऽस	लोऽन कऽ•	न्हा•••, ई • ••	•• ••, ब• • न	• •, ब • •न ••	ब• न• ठऽ•न

तानें

०
१) सासा मम पप धप मेंप धम मम रेसा | सासा सा,म मम पप प,प धप मेंप मम रेसा

५
सारे नी̱सा मप मम पध मेंप मम रेसा | सासा मम पप मेंप धनी धप मम रेसा

६
सासा मम पप मेंप धनी सांनी धप मेंप | सारें सांनी धप मेंप धनी धप मम रेसा

११
मेंप धनी सां – ध – प – म – – – म –
ए• • • • ऽ ब ऽ न ऽ ठ ऽ ऽ ऽ न ऽ
| प, मेंप धनीसां– ध –
का, ए• • •• ऽ ब ऽ

०
प – म – – – म –, प
न ऽ ठ ऽ ऽ ऽ न ऽ, का
| मेंप धनीसां – ध–प–म– – –म–
ए• • • • ऽ बऽनऽठऽ ऽ ऽ नऽ

५
प
का

० २)	सा – म – प – – –	धमि प,ध मिप, धमि प,ध मिप, मम रेसा
५	प – सां – रें – – –	रेंनी सां,रें नीसां, रेंनी सा,रें नीसां, सांसां धप
०	प – सां – मं – – –	पंमं मं,पं मंमं, पंमं मं,पं मंमं, मंमं रेंसां
६	रेंनी सां,रें नीसां, रेंनी सां,रें नीसां, सांसां धप	धमि प,ध मिप, धमि प,ध मिप, मम रेसा
११	धप मम प –, धप बन ठन काऽ, बन	मम प –, धप मम ठन का ऽ, बन ठन
० ३)	साप–प मम रेसा, परें–रें सांसां धप	सांपं–पं मंमं रेंसां सांसां धप मम रेसा
५	साम–म,मप–प,पसां–सां,सांमं–मं	सां–पं–पं मंमं रेंसां सांसां धप मम रेसा
०	सांपं–पं मंमं रेंसां सांसां धप मम रेसा	सां–पं मंमं रेंसां सांसां धप मम रेसा
६	ध मिप धप मि –प– बन ठन का ऽ•ऽ	सां, मिपधप • , बनठन
११	ध मि –प–,सां का ऽ•ऽ, •	मिप धप मि –प– बन ठन का ऽ•ऽ
× ध म •		
० ४)	सारें नीसा, पध मिप, सारें नीसां, पंधं मंपं	मंमं रेंसां सासा धप मम रेसा मम रेसा

५	सांसां धप, मंमं रेंसां, सांसां धप मम रेसा	रेनीसा, रेनीसा, धमेंप, धमेंप, रेंनीसां, रें
०	नीसां, धंमंपं, धंमंपं, मंमं रेंसां, सांसां धप	मम रेसा, सा– – –प– – –सां– – –
६	पं– – –मंमं रेंसां सांसां धप ममरेसा	धप – म – म प – बन ऽ ठ ऽ न काऽ
६	सां, धप – म •, बन ऽ ठ	– म प – सां –, धप मम ऽ न काऽ • ऽ, बन ठन
० ५)	सारेनीसा, पधमेंप, सारेंनीसां	पंधं मंपं मंमं रेंसां सांसां धप
५	ममरेसा, ममरेसा, सांसांधप,	मंमंरेंसां, सांसांधप, ममरेसा
०	सारेनीसा, पधमेंप, सारेंनीसां,	पंधंमं पं मंमंरेंसां सांसांधप
६	ममरेसा, ध – प – म – म – ब ऽ न ऽ ठ ऽ न ऽ	प – सां –, धप का ऽ • ऽ, बन
११	म म प – सां –, ठ न का ऽ • ऽ,	ध प म म प – ब न ठ न काऽ
× ध म •		

राग केदार

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—ज्यों ज्यों बूँद परे जिया लरजे, छतियाँ मोरी थरहर करे।

अन्तरा—चहूँ ओर बादल घन छाये, प्यारा अजहूँ घर नहीं आये,
प्यारा आवे गरहूँ लगावे, छतियाँ मोरी थरहर करे।

स्थायी

×				५				०				१३			
								मी	—	प	—	ध नी	सां	ध	प
								ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	बूँ ऽ	•	द	प
ध		म						म				ग			
म	—	रे	रे	सा	रे	सा	—	सा	सा	म	- ग	प	—	प	—
रे	ऽ	जि	या	ल	र	जे	ऽ	छ	ति	याँ	ऽ •	मो	ऽ	री	ऽ
मी प	ध नी	सां रें	सां नी	ध नी◡	नी◡ ध	प मी	प								
थ •	र •	• •	ह •	र •	क रे	रे •	•								

अन्तरा

×				५				०				१३			
								सां							
								प	प	—	सां	—	सां	सां	—
								च	हूँ	ऽ	ओ	ऽ	र	बा	ऽ
								नी◡		नी◡					
सां	सां	नी	ध	सां नी	रें	सां	—	ध	—	ध	—	नी	सां	सां	—
द	ल	घ	न	छा •	ऽ	ये	ऽ	प्या	ऽ	रा	क	अ	ज	हूँ	ऽ
नी				सां											
सां	रें	सां नी	सां	ध	नी◡	ध	प	मी	—	प	—	ध नी	सां नी	ध	प
घ	र	न •	हीं	आ	•	ये	•	प्या	ऽ	रा	ऽ	आ •	• •	वे	•

ध म	म	रे	सा	सा नी	रे	सा	—	म सा	सा	म	– ग	ग प	—	प	—
ग	र	हूँ	ल	गा •	•	वे	ऽ	छ	ति	याँ	ऽ •	मो	ऽ	री	ऽ
मी प	ध नी	सां रें	सां नीं	ध नी	नीं ध	प मी	प								
थ •	र •	• •	ह •	र •	क •	रे •	•								

तानें

×				५				०				१३			
१)					मम	रेम	रेसा	मी	—	प	—	ध नि	सां	ध	प
								ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	बूँ •	•	द	प
२)					धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
३)		मींप	धप	मींप	धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
४) सा	म	प	ध	—	धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
५) सारे	रेसा	पध	धप	मींप	धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
६) सारे	नीसा	पध	मींप	सांसां	धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
७) मींप	पसां	सांरें	सांनी	धप	मम	रेसा	नीसा	”	”	”	”	”	”	”	”
८) मींप	पसां	सांमं	मंरें	सांसां	धप	मम	रेसा	”	”	”	”	”	”	”	”
९) नीसा	रेनी	सारे	सारे	नीसा	मींप	धमीं	पध	पध	मींप	नीसां	रेंनी	सांरें	सांरें	नीसां	धप
मींप	धनी	सांरें	सांनी	धप	मम	रेसा	नीसा	मी	—	प	—	ध नि	सां	ध	प
								ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	बूँ •	•	द	प
१०) धप	मम	रेसा	मम	रेसा	सांसां	धप	मम	रेसा	मम	रेसा	सांसां	धप	मंमं	रेंसां	सांसां
									मी	प	—	धनि	सांनि	ध	प
									ज्यों	ज्यों	ऽ	बूँ •	• •	द	प

	×				५				०				१३			
११)													मम	रे,म	रेसा	सांसां
	धसां	धप	मंमं	रें,मं	रेंसां	सांसां	धसां	धप	मंप	धनी	सांमं	मंरें	सांसां	धप	मम	रेसा
	ज्यों	ज्यों	बूँ	दप	रे	ऽ	मंप	धनी	सांमं	मंरें	सांसां	धप	मम	रेसा	ज्यों	ज्यों
	बूँ	दप	रे	ऽ,	मंप	धनी	सांमं	रें	सांसां	धप	मम	रेसा	ज्यों	ज्यों	बूँ	दप
१२)									नीसा	रेसा	मंप	धप	मम	रेसा	मंप	धप
	नीसां	रेंसां	मंप	धप	मम	रेसा	मंप	धप	धनी	सांनी	धनी	सांनी	धप	मंप	सांरें	सांनी
	धप	मंप	धनी	सांनी	धप	मंप	धनी	सांनी	धनी	धप	मप	धप	मम	रेसा	ध मं	—
															ज्यों	ऽ
	प	—	ध मं	—	प	—	ध मं	—	प	—	ध नि	सां	—	ध	—	प
	ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	बूँद	•	ऽ	द	ऽ	प
१३)	साम	मप	पध	मंप	मम	रेसा	मप	पसां	सांरें	सांनि	धप	मंप	सांमं	मंपं	पंधं	मंपं
	मंमं	रेंसां	सांसां	धप	मम	रेसा	सा	सां	—रें	सांनि	धप	मम	रेसा	धसां	—ध	प
														बूँ •	ऽद	प

—

राग केदार

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—पायल बाजे, शोभा राज की, अत भरी काम सों।

अंतरा—अटल छत्र सब देखो, राजा बहादुर लपक झपक, पग धरत धरत, अत धूमधाम सों॥

स्थायी

×				५				०				३			
											म	-ग	प	—	प
											पा	ऽ•	य	ऽ	ल
नी ध	—	—	—	—	—	पध	मेंप	म	—	—	म	मग	प	पमें	धप
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	••	••	जे	ऽ	ऽ	शो	••	भा	••	••
म	—	—	—	म सा	—	रे	—	सा	—	—	सा	रे	सा	म	-ग
रा	ऽ	ऽ	ऽ	•	ऽ	ज	ऽ	की	ऽ	ऽ	अ	त	भ	री	ऽ•
प	—	—	में	प	धनी	सांनी	धप	म	—	—	म				
•	ऽ	ऽ	का	•	••	••	म•	सों	ऽ	ऽ	पा				

अंतरा

×				५				०				३			
सा	रे	सा	म	—	मग	प	प	प	—	मेंप	धप	म	—	—	—
अ	ट	ल	छ	ऽ	त्र•	स	ब	दे	ऽ	••	••	खो	ऽ	ऽ	ऽ
म	-ग	प	—	पध	पमें	प	पध	पमें	प	म	म	म	रे	सा	सा
रा	ऽ•	जा	ऽ	••	••	•	••	••	•	ब	हा	•	दु	र	•
सा	रे	सा	सा	म	मग	प	प	में	प	प	ध	में	प	में	प
ल	प	क	झ	प	क•	प	ग	ध	र	त	ध	र	त	अ	त
धनि	सां	सां	में	—	प	ध	म	म	—	—	म				
धू•	•	म	धा	ऽ	•	•	म	सों	ऽ	ऽ	पा				

राग केदार

तराना—त्रिताल

गीत—४

स्थायी—ना दिर दिर दानि त दानि तों तनना तदरे दानि, दीं तन तुं द्रे दानि ॥

अंतरा—धीती लीती लन ना दिर दिर दीं तान देरे,
तदरे दानि दीं, देर्नां देर्नां दीं, नितारे तारे दानि ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
								सा	मम	गग	प	म॑	ध	म॑	प
								ना	दिर	दिर	दा	नि	त	दा	नि
सां	—	—	—	म॑	प	नी	ध	प	म॑	–प	ध	ध	प	म	म
तों	ऽ	ऽ	ऽ	•	•	त	न	न	•	ऽ•	त	द	रे	दा	नि
म	—	ध	प	म	म	रे	सा								
दीं	ऽ	त	न	तुं	द्रे	दा	नि								

अंतरा

म॑	प	प	ध	ध	प	म	मग	पप	सां	—	सां	—	पं	पं	पं
धी	ती	ली	ती	ल	न	ना	दिर	दिर	दीं	ऽ	ता	ऽ	न	दे	रे
मं	मं	रें	सां	नी	रें	सां	—	सां	प	प	सां	नी	रें	सां	—
त	द	रे	दा	•	नी	दीं	ऽ	दे	•	र्नां	दे	•	र्नां	दीं	ऽ
म	म	–ग	प	म	म	रे	सा								
नि	ता	ऽ•	रे	ता	रे	दा	नि								

———

राग केदार

ध्रुपद—चौताल

गीत—५

स्थायी—सरस सीस मोर मुकुट पाछन को, राजत कुंडल ललित,
कुटिल अलक भाल विशाल, तिलक मृगमद के नीके झलके ॥

अंतरा—भौंह धनुष नैन कमल, नास कीर अधर बिम्ब,
दशन कुन्द कण्ठ कम्बु, ता मध मणि कौस्तुम शोभे झलके ॥

स्थायी

×		०		५		०		९		११	
						म स	रे र	सा स	म‿ग सीऽ•	प •	प स
ध मो	नी •	ध र	प मु	(ध)मे कु	प ट	पमे पा	ध •	ध छ	प न	म को	— ऽ
प रा	ध •	प •	सां ज	नी त	ध •	(ध)मे कुँ	प •	ध •	प ड	म ल	— ऽ
म ल	म लि	म त	म‿ग कुऽ•	ध टि	प ल	प म अ •	म ल	म क	(म)रे भा	— ऽ	सा ल
सा वि	सा नि̱ शा ऽ	रे ऽ	सा ल	सा ति	सा ल	(सा)म क	म‿ग मृऽ•	ध ग	प म	(ध)मे द	प के
म नी	— ऽ	रे के	सा झ	रे ल	सा के						

अंतरा

×		०		५		०		९		११	
प	ध	प	सां	सां	सां	सां	—	सां	सां	सां	सां
भौं	•	ह	ध	नु	ष	नै	ऽ	न	क	म	ल
सां	मं	मं	मं रें	—	सां	रें नी	सां	सां	ध	—	प
ना	•	स	की	ऽ	र	अ	ध	र	बिं	ऽ	ब
मे	प	प	ध	नी	धप	प मे	ध	प	म	—	म
द	श	न	कुं	•	द•	कं	•	ठ	कं	ऽ	बु
म	— —ग	प	प	नी ध	रें	सां	नी	ध	प मे	ध	प
ता	ऽ ऽ•	म	ध	म	शि	कौ	•	•	स्तु •	•	भ
म	—	रे	सा	रे	सा						
शो	ऽ	मे	भ	ल	के						

राग अडाणा

आरोहावरोह—सारे मप नि॑ सां, सां ध॑ नि॑ प, ग॑ म रेसा ।

जाति—षाड्क-वक्र संपूर्ण ।

ग्रह—मध्यतार षड्ज ।

अंश—पूर्वांग में गान्धार और उत्तरांग में धैवत ।

न्यास—पंचम ।

विन्यास—मध्य षड्ज ।

मुख्य अंग—सां, सां रें निं॑सां, ध॑ नि॑ प ।

समय—रात्रि का द्वितीय प्रहर ।

प्रकृति—तरल-युवा ।

विशेष विवरण

अडाणा कान्हड़ा प्रकार का एक राग है। किसी २ की मान्यता है कि कान्हड़ा कन्नड़ देश से लाया गया है। कोई यह भी कहते हैं कि भूपाली, मुल्तानी आदि रागों के नाम जैसे नगरों पर से रखे गए हैं, वैसे हीं कन्नड़ देश के नाम पर से इस राग का नाम दिया गया है। कान्हड़ा प्रकार के रागों में से अडाणा बहुत प्रसिद्ध, लोकरञ्जक और जन-मानस को शीघ्र आकर्षित करने वाला राग है।

इस राग में, गान्धार, धैवत और निषाद कुछ चढ़े से कोमल लगते हैं। कुछ लोग इसमें दो निषाद का भी प्रयोग करते हैं। इसमें धैवत का उपयोग अल्प मात्रा में छू कर ही किया जाता है। कोमल धैवत का प्रलम्ब उच्चार और विलम्बित गति इस राग के भाव को तिरोहित कर देते हैं। और वहाँ दरबारी की झाँकी होने लगती है। इसलिए धैवत के दीर्घोच्चार विलम्बित गति से सदा बचना चाहिए।

इस राग की प्रकृति चंचल एवं उद्दाम है। सर्वथा तार सप्तक की ओर इसकी गति रहती है। मन्द्र-सप्तक की ओर तो भूल कर भी नहीं जाना चाहिए। मध्य और तार सप्तक में ही इसकी आलप्ति मध्य और द्रुत गति में ही प्रशस्त है।

कान्हड़ा और मल्हार के प्रकारों में सर्वदा सारंग का दर्शन होता रहता है। और प्रायः सभी की तानों में सारंग का बाहुल्य अनिवार्य सा माना गया है। इसके आरोहावरोह के विषय में कुछ मतभेद पाया जाता है। कुछ लोग सारे ग॑, म प ध॑ नि॑ सां, सां ध॑ नि॑ प, म प, ग॑ म रे सा—यों करते हैं। कुछ लोग सारे म प सां—इस प्रकार आरंभ करते हैं और कई सारे म प नि॑ सां करते देखे गए हैं। यदि सा रे म प ध॑ सां-यों जाएँ तो आसावरी का भास होगा और बार बार सारे म प ध॑ नि॑ सां करने से जौनपुरी की छाया दीखने लगेगी। सारे म प नि॑ सां से सारंग की प्रतीति होगी। इसलिए हमारी राय में सारे म प सां यों आरोह करना प्रशस्त है। सा रे म प नि॑ सां जाने में भी कोई आपत्ति नहीं है, कारण इस राग में सारंग अंग विशेष रूप से आता है। तार षड्ज कहते ही ध॑ नि॑ प यों जोड़ देना चाहिए। कान्हड़ा के सभी अंगों में ग॑ म रेसा यह जोड़ी सर्वत्र पाई जाती है। तद्वत् इसमें भी ग॑ म रेसा अवरोह में होगा। इसका पूर्ण अवरोह सां ध॑ नि॑ प, ग॑ म रे सा-यों होगा।

यह राग उत्तरांग में ही निदर्शित होता है, पूर्वांग में नहीं। किन्तु कोई ऐसा न समझ ले कि उत्तरांग प्रधान होने से यह सबेरे का राग है। यह सर्वथा रात्रि में ही गाया जाता है। ध॑ नि॑ प और ग॑ म रे—ये दो

क्रियाएँ इस राग के रागत्व को अभिव्यक्त करती हैं। इसका आरंभक ग्रह स्वर यद्यपि मध्य षड्ज माना है, फिर भी तार षड्ज से ही इसका रागत्व परिदर्शित होता है। इसलिए तार षड्ज को भी मध्य षड्ज के साथ ग्रह स्वर का स्थान दिया जाना चाहिए। धँ नि॒ प और गॅ म रे—इन दो स्वर-क्रियाओं के राग-वाचक होने के कारण कई लोग गॅ धॅ अथवा गॅ नि॒ को वादी संवादी बनाने का प्रयत्न करते हैं।

जब सा से आरोह करते हैं, तब तो सा रे म प सां ही जाएँगे। किन्तु मध्यम या पंचम से जब आरोह होगा, तब मप नि॒सां, पनि॒सां या कभी कभी म प धॅ नि॒ सां, भी जाना होगा। ऐसी अवस्था में धैवत को निषाद का कण दे कर जाना होगा। इसके चलन का मुख्य रूप यों होगा—

म प नि॒ सां धॅ नि॒ प, पनि॒ सां रें नि॒ सां धॅ नि॒ प, मप नि॒सां रें गॅ रें सां नि॒ धॅ नि॒ सां धॅ नि॒ प, म प धॅ नि॒ सां, धॅ नि॒ प, सा प गॅ म रे सा, सारे मप सां (नि॒) धॅ नि॒ सां सारंग के अवरोह में धॅ और गॅ का वक्र प्रयोग करने से अडाणा हो जाएगा।

राग अडाणा

मुक्त आलाप

[यह राग उत्तरांग प्रधान होने से इसकी आलापचारी भी तार षड्ज से ही आरंभ करनी चाहिए। मंद्र सप्तक में स्वर को कतई न छुआ जाए। दरबारी कान्हड़े की असर से बचना इससे सहज हो जाएगा। तद्वत् पूर्वांग में भी कभी कभी ही मध्य षड्ज तक गॅ म रे सा करके अवरोह करना चाहिए और तत्काल सारे मप सां यों आरोह करके पुन: तार षड्ज पर पहुँच जाना चाहिए, क्योंकि उत्तरांग ही इस राग का प्राण है। इसमें आलाप की गति भी मध्य-द्रुत रखी जाए। मन्द्र विलम्बित गति से सदैव ही दूर रहना समुचित होगा।]

(१) सां। धॅ – नि॒ सां। (प) धॅ नि॒ – प, सां। म प सां धॅ नि॒ – प, नि॒ नि॒ प म प सां धॅ – नि॒ – प, म नि॒ नि॒ प प सां सां नि॒ नि॒ रें रें सां धॅ – नि॒ – प, प नि॒ प, म प नि॒ सां धॅ – नि॒ – प, म प नि॒ प प नि॒ सां नि॒ नि॒ सां रें सां धॅ – नि॒ – प, गॅ म प गॅ – म रे सा। सा रे म प सां (म प नि॒ नि॒)।

(२) प नि॒ नि॒ प म प सां धँ,* धॅ नि॒ सां धॅ, धॅ नि॒ रें सां धॅ, रें (नि॒) सां धॅ, धॅ नि॒ सां नि॒ – नि॒, नि॒ सां रें सां – सां, रें नि॒ सां धॅ, सां सां नि॒ (धॅ) नि॒, रें रें सां (नि॒) सां, रें नि॒ सां धॅ, धॅ – नि॒ रें रें सां (नि॒) धॅ धॅ – नि॒ सां नि॒ नि॒, नि॒ – सां रें सां सां धॅ, प नि॒ प सां नि॒ रें सां रें नि॒ सा धॅ, प सां सा नि॒, नि रें रें सां, रें (नि॒) सा धॅ, धॅ नि॒ सां रें गॅ रें रें सां, नि॒ रें सां धॅ, धॅ – नि॒ – प, प म नि॒ प सां धॅ – नि॒ प, म प गॅ – म रे सा। सा रे म प सां (नि॒)।

* इस धैवत को आन्दोलन नहीं देना है और जहाँ तक हो सके, इस धैवत पर पहुँचने तक आवाज़ बहुत छोटी कर दी जाए।

(३) नि़ सा रे म प नि˘ सां रें गं˘, रें सां नि˘ ध˘, नि˘ – रें सां, नि˘ – सां नि˘, ध˘ – नि˘ ध, नि˘ – सां नि˘, सां – रें सां गं˘, सां रें सां रें – सां, नि˘ सां नि˘ सां – नि˘, ध˘ नि˘ ध˘ नि˘ – ध˘, नि˘ सां नि˘ सां – नि˘, सां रें सां रे – सां गं˘, रें सां नि˘ ध˘, नि˘ रें – सां। नि˘ नि˘ प म प सां ध˘, नि˘ रें – सां; नि˘ नि˘ प म प सां सां नि˘ ध˘ नि˘ रें रें सां नि˘ सां रें नि˘ सां ध˘, नि˘ रें – सां; ध˘ नि˘ सां रें गं˘, गं˘ रें सां नि˘ ध˘, ध˘ नि˘ रे – सां, नि˘ नि˘ प म ग˘ म रे सा नि़ सा रे म प नि˘ सां ध, नि˘ रें – सां, प म नि˘ प सां – ग˘ म रे – सा। सा रे म प सां ध˘ – नि˘ – प, सां – नि˘ सां।

(४) म प नि˘ म, प सां – नि˘ सां; ग˘ म प ग˘, म प नि˘ म, प नि˘ सां प, नि˘ रें-सां; ग˘ म प म, म प नि प प नि˘ सां नि˘, नि˘ सां रें सां, रें नि˘ सां ध˘, नि˘ – रें सां –, नि˘ सां; सा रे म प सां – नि˘ सां, नि˘ प नि˘ म नि˘ प सां – नि˘ सां, म ग˘ प म नि˘ प सां नि˘ रें सां रें नि˘ सां ध˘, नि˘ – प सां –, नि˘ सां, सा म म ग˘ म प प म, म नि˘ नि˘ प, प सां सां नि˘, नि˘ रें रें सां –, रें सां ध˘; नि˘ रें रें सां नि˘ सां, नि़ सा रे म प नि˘ सां रें गं˘ रें सां नि˘ ध˘ नि˘ रें – सां, नि˘ सां, ग˘ – म रे सा, सा रे म प, सां – नि˘ सां।

(५) रे सा सा म रे रे प म म नि˘ प प सां – नि सां; रे सा सा, म रे रे, प म म, नि˘ प प, सां नि˘ सां, ध˘ नि˘ सां रें गं˘, सां रें पं गं˘, मं रें – सां; रें रें सां सां, गं˘ गं˘ रें रें, गं˘ – मं रें सां – नि˘ सां; नि˘ रें सां, सां मं गं˘, गं˘ मं रें सां – नि˘ सां, सां गं, मं रें – सां – नि˘ सां, रें रें सां नि˘ सां ध˘ नि˘ – प, म प नि˘ सां रें गं˘, ध˘ नि˘ – प, नि˘ नि˘ प म प सां, ग˘ म – रे, ध˘ नि˘ – प, गं˘ मे – रे, ग˘ म – रे, सा, सां – नि˘ सां।

राग अडाणा

मुक्त तानें

रें रें सां निं धं निं सां–, रें रें सां निं धं निं सां रें गं रें सां निं धं निं सां–। सां रें सां निं धं निं प म
म प निं प म प सां– निं निं प म गं म रे सा। नि़ सा रे म प निं सां–, नि़ सा रे सा सा रे म रे
रे म प म म प निं प पनिं सां निं निं सां रें सां सां रें गं रें सां निं सां–, गं रें सां रें रें सां निं सां
सां निं प निं निं प म प प म गं म गं रे सा रे रे सा नि़ सा। नि़ सा रे म प निं सां रें गं रें सां निं
प म रे सा, नि़ सा रे म प निं सां– सां गं रें सां निं रें सां निं प सा निं प म निं प म गं म रे सा।
रे सा, म रे प म, निं प सां निं, रें सां, गं रें रें सां रें सां सां निं निं प प म म गं म म रे सा, नि़ सा
रे म प निं सां – – –।* सां रें गं सां, गं रें रें सां निं सां रें निं, रें सां सां निं धं निं सां धं, सां निं निं धं
म प निं म, निं निं प म गं म प गं, प म गं म म म रे सा। म म रे सा नि निं प म सां सां निं प
रें रें सां निं मं मं रें सां निं निं प म गं म रे सा। नि़ सा रे म प निं सां–, मं गं गं मं गं गं, मं मं
रें सां निं सां रें सां सां, रें सां सां, रें रें सां निं धं निं, सां निं निं, सां निं निं, सां सां निं प म प
निं प प, निं प प, निं निं प म गं म रे सा नि़ सा। धं – – निं रें रें सां निं धं निं प म गं – – म,
निं निं प म गं म रे सा नि़ सा रे म प निं सां–। गं – – मं पं मं गं मं रें सां निं सां निं निं प म
गं म रे सा, नि़ सा रे म प निं सां–। निं सां निं, निं सां नि, धं निं धं, धं निं धं, निं सां निं, निं,
सां निं, सां रें सां, सां रें सां नि़ सा निं, नि़ सा नि़, धं निं धं, धं निं धं, गं म गं, गं म गं, गं म रे सा नि़ सा।
सां रें सां, सां रें सां, निं सां निं, निं सां निं धं निं धं, धं निं धं, धं निं सां रें गं रें सां निं धं निं
प म, गं म रे सा, नि़ सा रे म प निं सां – – –। गं रें रें सां रें सां सां निं, गं रें रें सां रें सां सां निं

---

* इस तान के टुकड़ों को स्पष्टतया पृथक् पृथक् दिखाने के लिए तथा विद्यार्थियों की सुविधा के लिए आठ आठ स्वरों को एक साथ रखा गया है। एक–चतुर्थांश लय के आघात दिखाने लिए प्रत्येक टुकड़े के मध्य में अर्द्ध-विराम चिह्न लगा दिये गये हैं।

सां नि नि धॅ, गं रें रें सां रें सां सां नि सां नि नि धॅ नि प प म, गं रें रें सां रें सां सां नि सां नि निधॅ

नि प प म प म म गॅ, म म रे सा। म गॅ गॅ, प मम, नि प प,सां नि नि रें सां सां, नि प नि म प

गॅ म रे सा नि सां रे म, प नि सां–। सां रें गं रें नि सां रें सां, सां रें गं रें नि सां रें सां धॅ नि सां नि

सां रें गं रें नि सां रें सां धॅ नि सां नि म प नि प, सां रें गं रें नि सां रें सां धॅ नि सां नि म प नि प

गॅ म प म गॅ म रे सा। सा रे म प नि सां – –।

राग अडाणा

त्रिताल

गीत—१

स्थायी—परदेसवा नित जिन जाहु, वाहू रे मैं तो राखूँगी रस बस, अरे हाँ रे हाँ रे ॥

अंतरा—उनके मिलबे को जियरा अकुलावे, बादल के हियरा हुलसे ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
											नी	प	नी	म	प
											प	र	दे	•	स
सां	—	—	—	—	—	नी	—	प	—	—	नी पप	म	—	प	नी
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	त	ऽ	ऽ	• ••	•	ऽ	जि	न
(म) प	—	म	गॅ	म	—	म	—	—	—	म	प	पनी	सां रें	नी सां	सां
जा	ऽ	•	•	•	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	बा	हू	रे •	• •	• •	•
—	—	नी	—	प	—	प नी	सां रें	रें	—	सां	—	—	प	नी	प
ऽ	ऽ	मैं	ऽ	तो	ऽ	रा •	• •	खूँ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	र	•	स
(म) गॅ	—	(म) गॅ	—	म	—	(सा) रे	—	सा	—	—	म	रे	नी	—	सा
ब	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	स	ऽ	ऽ	अ	रे	हाँ	ऽ	रे
म	रे	प	म	नी	धॅ	धॅ	नी	नी रे	नी सां	सां					
हाँ	रे	•	•	•	•	•	•	रे •	• •	•					

अंतरा

×				५				०				१२			
												म	म	प	[नी॑] ध॑	ध॑ नी॑
												उ	न	के	•	मि •
सां	—	सां	—	सां	—	नी॑ सां	—	सां	—	—	प	पनी॑	सां रें	रें	—
ल	ऽ	बे	ऽ	•	ऽ	• •	ऽ	को	ऽ	ऽ	जि	य •	• •	रा	ऽ
[गं॑] सां	—	सां	रें	नी॑	सां	—	नी॑ सां	रें सां	ध॑	—	नी॑	[मं] गं॑	—	[मं] गं॑	—
•	ऽ	अ	कु	ला	•	ऽ	• •	• •	वे	ऽ	•	बा	ऽ	•	ऽ
गं॑	मं	रें	सां	[नी॑] ध॑	—	[नी॑] ध॑	—	नी॑	नी॑	सां	—	सां	सां	सां	नी॑
•	•	द	ल	के	ऽ	•	ऽ	हि	य	रा	ऽ	हु	ल	से	•
[सां] रें	—	सां	—	रें	—	नी॑	—	सां	—	—	नी॑				
•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	ऽ	प				

आलाप

१) नी॑	सां	—	नी॑	ध॑	नी॑	—	ध॑	नी॑ रें	नि॑ सां	—	नि॑	प	नि॑	म	प
वा	•	ऽ	•	•	•	•	•	• •	• •	ऽ	प	र	दे	•	स
२) नी॑	सां	रें सां	—नी॑	ध॑	नी॑	सांनी॑	—ध॑	नी॑ रें	नी॑ सां	—	”	”	”	”	”
वा	•	• •	ऽ •	•	•	• •	ऽ•	• •	• •	ऽ					
३) सां	नी॑	सां	नी॑	नी॑	ध॑	नी॑	ध॑	नी॑ रें	नी॑ सां	—	”	”	”	”	”
वा	•	•	•	•	•	•	•	• •	• •	ऽ					
४) म	प	ध॑	नी॑	सां	—	ध॑	—नी॑	सां रें	नी॑ सां	—	”	”	”	”	”
वा	•	•	•	•	ऽ	•	ऽ •	• •	• •	ऽ					

	×				५				०				१३			
५)	म	पम	प	धँप	धँ	नीँधँ	नीँ	सां	नीँरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
वा		••	•	••	•	••	•	•	••	••	ऽ					
६)	म	—	प	—	धँ	—	नीँ	—	सांरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
वा		ऽ	•	ऽ	•	ऽ	•	ऽ	••	••	ऽ					
७)	नी धँ	—	—	नीँ	—	—	रें	—	—	सां	—	"	"	"	"	"
वा		ऽ	ऽ	•	ऽ	ऽ	•	ऽ	ऽ	•	ऽ					
८)	धँनीँ	सांरें	गँ	—	—	—	रें	—	—	सां	—	"	"	"	"	"
वा	•	••	•	ऽ	ऽ	ऽ	•	ऽ	ऽ	•	ऽ					
९)	सां	रें	—	सां	नीँ	सां	—	नीँ	धँनीँ	रेंसां	—	"	"	"	"	"
वा		•	•	•	•	•	ऽ	•	••	••	ऽ					
१०)	रेंरें	सांनीँ	सां	—	धँ	—	—	नीँ	सांरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
वा		••	•	ऽ	•	ऽ	ऽ	•	••	••	ऽ					
११)	नीँसा	रे म	पनीँ	सां	—	धँ	—	—नीँ	सांरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
वा	•	••	••	•	ऽ	•	ऽ	••	••	••	ऽ					
१२)	गँरें	सां रेंसां	—	रेंसां	नीँ सांनीँ	—	सांनीँ	नीँधँ	नीँरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
वा	•	••	ऽ	••	••	ऽ	••	••	••	••	ऽ					
१३)	गँरें	सांनीँ	धँनीँ	सांरें	मं गँ	—	नीँ धँ	—नीँ	सांरें	नीँसां	—	"	"	"	"	"
	••	••	••	••	•	ऽ	•	ऽ•	••	••	ऽ					
१४)	मप	नीँसां	रेंगँ	—रें	सांरें	—सां	नीँसां	—नीँ	धँनीँ	रेंसां	—	"	"	"	"	"
वा	•	••	••	••	••	ऽ•	••	ऽ•	••	••	ऽ					
१५)	सां	रें	—	सां	नीँ	सां	—	नीँ	धँ	नीँ	—	रें	सां	सां रें	—	नीँ
वा		•	ऽ	•	•	•	ऽ	•	•	•	ऽ	प	र	दे	ऽ	स

तानें

×				५				०				१३			
१)						धॅ निॅ	सां रें	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ	प	निॅ	म	प
											प	र	दे	•	स
२)				रें रें	सांनिॅ	धॅनिॅ	सां रें	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ	प	नि	म	प
											प	र	दे	•	स
३)				सांगॅ	रें सां	निॅ रें	सांनिॅ	धॅ निॅ	सांरें	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ प	- निॅ	म प
													प र	ऽ दे	• स
४)				सां रें	गॅ रे	निॅ सां	रें सां	धॅ निॅ	सांनिॅ	म प	निॅ प	सां	निॅ प	- निॅ	म प
													प र	ऽ दे	• स
सां	—	—	—	—	निॅ प	- निॅ	म प	सां	—	—	—	—	निॅ प	- निॅ	म प
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प र	ऽ दे	• स	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प र	ऽ दे	• स
५)				सां रें	गॅ रे	निॅ सां	रें सां	धॅ निॅ	सांनिॅ	म प	निॅ प	सां	निॅ प	-निॅ	म प
													प र	ऽ दे	• स
सां	—	म प	निॅ प	सां	निॅ प	-निॅ	म प	सां	—	म प	निॅ प	सां	निॅ प	-निॅ	म प
वा		• •	• •	•	प र	ऽ दे	• स	वा	ऽ	• •	• •	•	प र	ऽ दे	• स
६)				गॅ रें	सां रें	रें सां	निॅ सा,	गॅ रें	सांरें	रेंसां	निॅ सां	सां, निॅ	धॅ निॅ,	गॅ रें	सां रें
रें सां	निॅ सां	सां निॅ	धॅ निॅ	निॅ प	म प	प म	निॅ प	सांनिॅ	रें सां	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ प	-निॅ	म प
													प र	ऽ दे	• स
सां	—	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ प	-निॅ	म प	सां	—	गॅ रें	रें सां	सां	निॅ प	-निॅ	म प
वा	ऽ	• •	• •	•	प र	ऽ दे	• स	वा	ऽ	• •	• •	•	प र	ऽ दे	• स
७)				गॅ रें	सां रें	रें सां	निॅ सां	गॅ रें	सां रें	रें सां	निॅ सां	सांनिॅ	धॅ निॅ	गॅ रे	सां रें
रें सां	निसां	सांनिॅ	धॅ निॅ	निॅ प	म प	प म	निॅ प	सांनिॅ	रें सां	गॅ रे	रें सां	सां	निॅ प	-निॅ	म प
													प र	ऽ दे	• स

× ५ ० १३

सा | — | प म | नि॑ प | सानि॑ | रें सा | गं॑ रें | रें सा | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | — | प म | नि॑ प

वा | ऽ | • • | • • | • • | • • | • • | • • | • | प र | ऽ दे | • स | वा | ऽ | • • | • •

सानि॑ | रें सा | गं॑ रें | रें सा | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प

• • | • • | • • | • • | • | प र | ऽ दे | • स | वा | प र | ऽ दे | • स | वा | प र | ऽ दे | • स

८) | | | | रे सा | सा, म | रे रे, | प म | म, नि॑ | प प | सानि॑ | नि॑ रें | सा सा | गं॑ | — | —

मं मं | रें सा | नि॑ नि॑ | प प | गँ म | रे सा | गँ | — | — | म म | रे सा | नि॒ सा | ध॑ | — | — | नि॑ नि॑

प म | गँ म | गं॑ | — | — | मं मं | रें सा | नि॑ नि॑ | प म | गँ मँ | रे सा | सा | — | नि॑ प | — नि॑ | म प

| | | | | | | | | | | | | प र | ऽ दे | • स

सा | — | सा | — | — | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | — | सा | — | — | नि॑ प | — नि॑ | म प

वा | ऽ | • | ऽ | ऽ | प र | ऽ दे | • स | वा | ऽ | • | ऽ | ऽ | प र | ऽ दे | • स

९) | | | | रें गं॑ | गं॑ रें | सा रें | रें सा | नि॑ सा | सा नि॑ | पनि॑ | नि॑ प | म प | प म | प नि॑ | नि॑ प

नि॑ सा | सानि॑ | सा रें | रें सा | सा रें | गं॑ रें | सानि॑ | प म | गँ म | रे सा, | सा रें | गं॑ रें | सा नि॑ | प म | गँ म | रे सा,

सा रें | गं॑ रें | सानि॑ | प म | गँ म | रे सा | — नि॑ | म प | सा | — | — नि॑ | म प | सा | — | — नि॑ | म प

| | | | | | ऽ दे | • स | वा | ऽ | ऽ दे | • स | वा | ऽ | ऽ दे | • स

१०) | | | | सारें | गं॑ रें | सानि॑, | नि॑ सा | रें सा | नि॑ धँ, | धँ नि॑ | सानि॑ | प म, | म प | नि॑ प, | प नि॑

सा नि॑ | नि॑ सा | रें सा | सा रें | गं॑ रें | सानि॑ | प म | गँ म | रि सा | नि॒ सा | रे म | प नि॑ | सा | नि॑ सा | रे म | प नि॑

सा | नि॒ सा | रे म | प नि॑ | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प | सा | नि॑ प | — नि॑ | म प

| | | | | प र | ऽ दे | • स | वा | प र | ऽ दे | • स | वा | प र | ऽ दे | • स

११) | | | | सा रें | गं॑ रें, | नि॑ सा | रें सा, | धँ नि॑ | सानि॑, | म प | नि॑ प, | गँ म | प म | नि॒ सा | रे सा

×				५				०				१३			
रे सा	नि̃सा,	मरे	सारे,	प म	गॅ म,	नि॑प	म प,	सांनि	पनि॑	रेंसां	नि॑सां	गं रें	सां रेंसां	सांनि	प नि॑प
म प म	गॅ म गॅ	गॅ गॅ म म	रे सा	नि̃सा	रे म	प नि॑	सां	सां	—	नि॑सा	रे म	पनि॑	सां	सां	—
नि̃सा	रे म	पनि॑	सां	सां	नि॑	प नि॑	म प	सां	नि॑	प नि॑	म प	सां	नि॑	प नि॑	म प
					प	र दे	• सा	बा	प	र दे	• स	वा	प	र दे	• स

राग अडाणा

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—छैला देहो छैल छबीले, चरचा करेगी सब घर की मोरी, का कीनवा ।
अन्तरा—और के दिये से का, तुम पावोगे, हमरा तो मन तुम लीनवा ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
									नि॑	प	—	नि॑प	प म	—	प नि॑
									छै	ला	ऽ	• •	• •	ऽ	दे हो
गॅ	—	म गॅ	—	गॅ	म गॅ	म	प	प	—	म गॅ	—	गॅ	म	सा रे	—
छै	ऽ	•	ऽ	•	• •	ल	छ	बी	ऽ	•	ऽ	•	•	•	ऽ
सा	—	—	नि̃	सा	गॅ	—	म	प	म प	नि धॅ	—	—	नि॑	सां	—
ले	ऽ	ऽ	च	र	चा	ऽ	क	रें	• •	गी	ऽ	ऽ	स	ब	ऽ
नि॑	सां	रेंरेंसांनि॑	सां	–नि॑	धॅ	नि॑	प	—	—	म प	नि॑सांरें	मं गं	—	गं	मं
घ	र	की• • •	•	ऽ •	मो	•	री,	ऽ	ऽ	का •	• • •	•	ऽ	•	•
रेंसां	नि ध	—	–नि॑	नि॑ रें	सांरें	नि॑सां	धॅ नि॑	सां	नि॑	प	—	नि॑प	प म	—	प नि॑
की •	• •	ऽ	ऽ न	वा •	• •	• •	• •	•	छै	ला	ऽ	• •	• •	ऽ	दे हो

अन्तरा

×				५				०				१३			
			म	प	[नि॒]ध॒	[नि॒]ध॒	सांनि॒	सां	—	सां	—	—	—	सां	रें
			औ	र	के	•	दि•	ये	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	—	—	प	पनि॒	सांरें	रें	—	रेंगं॒	सां	—	–रें	नि॒	सां	नि॒सां	रेंसां
का	ऽ	ऽ	तु	म•	••	पा	ऽ	••	•	ऽ	ऽ•	वो	•	••	••
ध॒	—	नि॒	म	प	[सां]नि॒	—	सां	रेंगं॒	सांरें	[मं]गं॒	—	गं॒	मं	रें	सां
गे	ऽ	•	ह	म	रा	ऽ	तो	म•	••	न	ऽ	•	•	तु	म
ध॒	—	—	–नि॒	नि॒रें	सांरें	नि॒सां	ध॒नि॒	सां	नि॒	प	—	नि॒प	पम	—	पनि॒
ली	ऽ	ऽ	ऽन	वा•	••	••	••	•	छै	ला	ऽ	••	••	ऽ	देहो

त्रिताल

गीत—३

स्थायी—गगरी मोरी भरन नाहीं देत, ढीठ लँगरवा मतवारो ॥

अन्तरा—जित जाऊँ उत आड़ो ही डोलत, अब न रहूँ मैं तोरी नगरी ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
						रें	सां	रें	नी॒	सां	प	नी॒	म	प	सां
						ग	ग	री	मो	री	भ	र	न	न	हीं
सां	—	—	रेंसां	ध॒	नी॒	रें	सां	रें	नी॒	सां	प	नी॒	म	प	सां
दे	ऽ	ऽ	••	•	त	ग	ग	री	मो	री	भ	र	न	न	हीं

×				५				०				१३			
सां	—	—	ध॒	नी॒	—	प	—	नी॒ म	—	प	प	म प	नी॒ प	ग॒	—
दे	ऽ	ऽ	•	•	ऽ	त	ऽ	ढी	ऽ	ठ	लँ	ग •	र •	वा	ऽ
ग॒ म	प म	सा रे	सा	रे	सा	रें	सां								
• •	• •	म	त	वा	रो	ग	ग								

अंतरा

								म	प	नी॒ ध॒	नी॒	सां	—	सां	सां
								जि	त	जा	•	ऊँ	ऽ	उ	त
नी॒	सां	रें	सां रें	नी॒ सां	ध॒	नी॒	प	म	प	नी॒	सां	ग॒ं	मं	सां रें	सां
आ	•	ड़ो	ही •	डो •	•	ल	त	अ	ब	न	र	हूँ	•	मैं	•
नी॒	सां	रें	सां	ध॒	नी॒	रें	सां								
तों	•	री	न	ग	री	ग	ग								

———

राग आसावरी

आरोहावरोह—सा रे म प धॅ सां, सां निॅ धॅ प, म प धॅ म प, गॅ रे सा।

जाति—औड़व-संपूर्ण।

ग्रह—मध्य षड्ज।

अंश—पूर्वांग में गान्धार और उत्तरांग में धैवत।

न्यास—पंचम।

विन्यास—मध्य षड्ज।

मुख्य अंग—धॅ म प सां, धॅ〰प।

समय—दिन का द्वितीय प्रहर।

प्रकृति—आत्म-निवेदन-उपयोगी। रस—कोमल शृंगार।

विशेष विवरण

आसावरी प्रातःकाल का एक सुमधुर राग है। राग और रागिनी परंपरा के मानने वाले दर्पणादि ग्रन्थों में इसे रागिनी कहा है। इसमें गान्धार धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। स्थूल मान से कान्हड़ा अंग के रागों में भी यही स्वर प्रयुक्त होते हैं। फिर भी इसके गान्धार और धैवत के आन्दोलन में भिन्नता होने से इसका निराला व्यक्तित्व कर्णगोचर होता है। सा रे म धॅ म प, गॅ 〰 रे-सा, यों करने में गान्धार को आन्दोलन देते समय पंचम से गान्धार पर मध्यम को कुछ छूते हुए आते हैं और तदनन्तर वह गान्धार रिषभ के आन्दोलन लेगा। यदि बार-बार गान्धार को मध्यम के आन्दोलन दिये जाएँ तो उस समय वहाँ कान्हड़ा की छाया का आभास होने लगेगा, उससे बचने के लिए रिषभ के आन्दोलन देना अनिवार्य है। आलापचारी में तो रे म प धॅ म प गॅ—यों मध्यम को छोड़ कर ही पंचम से गान्धार का उपयोग किया जाता है। पर तान-क्रिया में त्वरित गति के कारण और सरलता के निमित्त म गॅ र सा का प्रयोग भी सर्वसम्मत है। यहाँ एक और बात भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि आलाप के समय रे म प धॅ म प गॅ〰रे सा—यों करने में रिषभ को षड्ज का स्पर्श और षड्ज को गान्धार का स्पर्श सहज रूप से लिया जाता है। राग के रञ्जकत्व की दृष्टि से ये स्पर्श आवश्यक हैं। यहाँ यह भी ध्यान रहे कि गान्धार को रिषभ के आन्दोलन देते समय रेगॅ रेगॅ न हो जाए, अन्यथा वहाँ देसी-तोड़ी अपना सिर ऊँचा करेगी। इसलिए रिषभ के आन्दोलन का गान्धार गुरुमुख से सीख कर अभ्यास से अपना लेना चाहिए।

इस राग के उत्तरांग में धैवत का प्रयोग भी समझ लेने योग्य है। सा रे म प धॅ प—यों धैवत को निषाद का स्पर्श करके पंचम पर न्यास करना चाहिए। बारंबार धैवत पर निषाद का स्पर्श करते रहने से वहाँ कान्हड़ा की छाया दीख जायेगी। एक या दो बार इस प्रकार धैवत को आन्दोलन देकर पंचम पर मुकाम करना होगा, अन्यथा आसावरी के तिरोहित हो जाने का डर है। कई अनजान लोग इस राग में धॅ निॅ प कर जाते हैं या धैवत पर बहुत ठहर जाते हैं। इससे सर्वथा बचना अच्छा होगा। म प निॅ धॅ प ही किया जाए, म प धॅ निॅ

धॅ प कभी न किया जाए। कोमल आसावरी में मप धॅ नि॒ धॅ म गॅ रे॒सा की स्वर-क्रिया किसी गुणी जन से सुनकर म प धॅ नि॒ धॅ प करने के लिए कुछ कलाकार ललचाते हैं, किन्तु यह समुचित नहीं है। तार षड्ज पर पहुँचते समय म प धॅ सां अथवा म प धॅ प सां या म प धॅ म प सां यों ही जाएँ; म प धॅ नि॒ सां कभी न जाएँ।

इस रागिनी में कोमल निषाद की अवस्था भी समझने योग्य है। नियमपूर्वक इस राग के आरोह में निषाद (कोमल) का प्रयोग नहीं होता, फिर भी सां नि॒ सां रें नि॒ सां यह प्रयोग सर्वसम्मत है, क्योंकि सा या रे से अवरोह ही होता है। प्रचार में सभी कलाकारों में सां नि॒ सां अथवा षड्ज का उच्चार निषाद को छू कर करने का मुहावरा सर्वत्र ही दिखाई देता है। इसको ध्यान में रखते हुए निषाद के चलन को और उसके ढंग को गुरुमुख से सीख लेना अच्छा होगा।

ताना-क्रिया में सा रे म प धॅ सां, सां नि॒ धॅ प म गॅ रेसा, म प धॅ सां, सां नि॒ धॅ प म गॅ रे सा-यों जाना चाहिए। फिर भी प्रचार में तान-क्रिया की सुलभता के लिए और म प धॅ सां द्रुतगति में लेने में जो कष्ट पड़ता है, उसे महसूस करते हुए मप नि॒सां रें गं॒ रें सां. सां नि॒ धॅ प म गॅ रेसा-यों निषाद का आरोह में भी प्रयोग किया जाता है। इसका अधिक बोध आलाप और तान की सक्रिय शिक्षा से मिल सकेगा।

आरोह करते समय म प धॅ नि॒ सां–यों निषाद का प्रयोग कुछ अनजान अथवा गुरुमुख से न सीख कर किसी को सुन कर ही रियाज़ करने वाले और नियम को न समझने वाले 'सुन्नी शागिर्द' करते हुए सुने जाते हैं। किसी गुणी जन के यों पूछने पर कि—'क्यों साहब, यह कहाँ की आसावरी है'—हाजिर जवाबी गवैये जवाब दे देते हैं—'हमारी यह जौनपुरी आसावरी है।' इसी प्रकार 'जौनपुरी' नाम का प्रचार हुआ है। वास्तव में ये दो राग एक ही हैं। रस, भाव और प्रक्रिया की दृष्टि से इनमें कोई अन्तर नहीं है। इसलिए जौनपुरी को अलग राग मानना समुचित नहीं।

राग आसावरी

मुक्त आलाप*

(१) सा। (रे)नि॒ सा (नि॒)धॅ – प, (प)सा। रे नि॒ रे सा, (सा नि॒)रे धॅ – (प)प, नि॒ धॅ प, (नि॒)म प धॅ – सा।
रे रे सा नि॒ सा रे (नि॒)धॅ (प)प, सा। सा (सा)नि॒ रे सा (प)धॅ –, सा। सा – (सा)नि॒ रे – सा (नि॒)धॅ, (प)सा।

(२) सा। सा रे, रे (नि)नि॒ रे, सा धॅ~~, (सा सा)रे रे सा (नि॒)धॅ~~, प (नि॒)धॅ~~, म प धॅ~~, प नि॒ धॅ~~, (प)प सा (नि॒)धॅ~~, (प)म धॅ~~ सां।

(३) रे रे सा नि॒ सा रे धॅ~~, (सा नि॒)सा नि॒ रे सा धॅ~~, (प)प सा, (नि॒)नि॒ रे – सा धॅ~~, (रे)सा। सा

---

* इस राग की आलापचारी में एक बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गान्धार को मध्यम से छू कर ऋषभ के आन्दोलन देना होगा और धैवत को निषाद से छू कर पंचम के आन्दोलन देना होगा।

म प धँ म सा गॅ म प म म
रे म प गॅ, रे सा। सा रे म प धॅ गॅ, रे म प, धॅ गॅ; रे सा म रे प म धॅ प धॅ गॅ रे म,

रे म म रे म धॅ धॅ निॅ
म प, प धॅ, गॅ, रे – म, म – प, प – धँ गॅ; सा रे सा, रे म रे, म प म, प धॅ गॅ, म प धॅ

सा सा सा सा सा रे प प म म म प धॅ प
गॅ, गॅ गॅ रे रे, प प म म, धॅ धॅ प प, म प धॅ – गॅ, रे म प धॅ गॅ, सा रे प गॅ सा रे–सा।

म निॅ निॅ निॅ
(४) सा रे म प धॅ प, रे म प धॅ प, म प म धॅ प, सा रे – सा, रे म – रे, म प–म,

निॅ प प प धॅ निॅ प प म म
प धॅ प, प धॅ प म रे म प धॅ – प, धॅ प धॅ – म, म प धॅ प, रे म प निॅ धॅ प; धॅ धॅ प प प म

धॅ रे निॅ
प निॅ धॅ प, रे म प म – धॅ – प; प धॅ प म प म रे म प धॅ प, प – धॅ निॅ धॅ – प, म – प धॅ प –

धॅ निॅ धॅ प, रे – म प म – प धॅ प – धँ निॅ धँ प; सा रे, सा म, रे प, म धँ, प निॅ धॅ प,

सा
धॅ – म, म प धॅ म प गँ रे सा।

म प निॅ प धॅ निॅ निॅ
(५) सा रे म प धॅ प, म प निॅ धॅ प, म प सां धॅ प, धॅ धॅ प म प सां धॅ प,

निॅ निॅ सा निॅ
प म धॅ प सां धॅ प, रे प म, म धॅ प, प निॅ धॅ, सां सां–धॅ प, प धॅ प म रे म प सां–धॅ प, निॅ

म सा निॅ सा सा सा म म
धॅ प, प धॅ प म प गॅ रे म प सां सां–धॅ प, म रे म प सां सां धॅ प, गॅ गॅ रे रे–म, प प म

रे म निॅ
म–प, धॅ धॅ प प–सां धॅ प, म रे म प सां सां धॅ प, रे म प धॅ म धॅ प, प धॅ प म प सां निॅ सां

निॅ सा
धॅ प, सां निॅ रे सां धॅ प, निॅ धॅ–प, धॅ–म, म प धॅ–गॅ, रे म प गॅ सा रे–सा।

म प धॅ निॅ प प धॅ निॅ म प धॅ
(६) सा रे म प धॅ सां–निॅ सां, म प धॅ सां–निॅ सां, रे म प सां–निॅ सां, रे सा सा म रे रे

सा रे म
प म म धॅ प प सां–निॅ सां, सा रे रे सा–सा, सा म म रे–रे, रे प प म–म, प धॅ धॅ प–प, सां–निॅ सां,

सा रे म प
सां रे, रे म, म प, प धॅ, म प सां–सां सां, सा–रे सा, रे–म रे, म–प म, प–धॅ प, धॅ म धॅ प

प सां निॅ म म
सां–सां सां, रें धॅ〰प, सां धॅ–प, निॅ धॅ–प, धॅ–म, म प धॅ प गॅ〰, रें म प धॅ प गॅ〰, सा रे प

सा
गॅ〰, रे–सा।

(७) सा रे म प, धॅ〰सां–निॅ सां, रें गं॒ रें सां गं॒ रें–सां, रें निॅ रें सां ग॒ 〰 रें सां, रें

निॅ सां निॅ मं सा निॅ
धॅ〰प, म प धॅ, सां रें गं॒ 〰रें–सां, रे धॅ〰प, प म धॅ प सां निॅ रें सां गं॒ 〰, रें–सां, रें धॅ〰प,

प प म सां नि सां सां सां मं सां निॅ मं सा रे
धॅ धॅ प प रें रें सां सां, गं॒ गं॒ रें रें, सां गं॒ 〰रें–सां, रें रें धॅ–प, प म धॅ प सां–गं॒ 〰, रे म, म प,

म सा
प धॅ गॅ–, सा रे प गॅ〰 रे–सा।

राग आसावरी

मुक्त तानें

सा रे म प धॅ प म गॅ रे सा, रे म प निॅ धॅ प म गॅ रे सा। रे सा म रे प म धॅ प निॅ निॅ धॅ प म गॅ रे सा।

सा रे म म
सा रे सा, रे म रे, म प म, प धॅ प सां निॅ धॅ प म गॅ रे सा। सा रे रे सा – सा, सा म म रे – रे रे प प म

प धॅ
– म, म धॅ धॅ प – प निॅ निॅ धॅ प म गॅ रे सा। सा रे म रे रे म प म म प धॅ प प निॅ धॅ प म गॅ रे सा।

म रे सा रे प म रे म धॅ प म प निॅ निॅ धॅ प म गॅ रे सा। सा रे म प धॅ सां, सां निॅ धॅ प म गॅ रे सा –सा।

सा रे म प रे म प धॅ म प धॅ सां – निॅ धॅ प म गॅ रे सा। रे सा, म रे प म, धॅ प सां निॅ धॅ प म गॅ रे सा।

धॅ सा रे म प धॅ सा
सा रे रे, रे म म, म प प, प धॅ धॅ धॅ सां सां, सां रें रें, सां निॅ धॅ प म गॅ रे सा – सा। सा रे रे सा

रे म प प सां
रे म म रे म प प म प धॅ धॅ प प सां सां निॅ सां रें रें सां सां निॅ धॅ प म गॅ रे सा। सा रे सा, सा

रे सा, रे म रे, रे म रे म प म, म प म, प धॅ प, प धॅ प सां निॅ रें सां गं॒ रें सां नि धॅ प म गॅ रे सा–सा।

रे – म – प – – निँ धँ प म गँ रे सा निँ सा, म – प – सां – – रें सां निँ धँ प म गँ रे सा, धँ – सां – गँ – – रें सां निँ धँ प म गँ रे सा। रे सा सा, म रे रे, म रे रे, प म म प म म, धँ प प, सां निँ धँ प म गँ रे सा – सा। प म धँ प सां – – निँ धँ प म गँ रे सा – सा। सा रे म प निँ धँ – – –, म प धँ सां रें गँ रें सां सां निँ धँ प म गँ रे सा। सा – प – सां – – निँ धँ प म गँ रे सा सा –, धँ – सां – गँ – – रें सां निँ धँ प म गँ रे सा। सा सा रे रे रे सा रे म म रे म म प प म प प धँ धँ प धँ धँ सां सां निँ सां सां रें रें सां सां रें गँ रें सां निँ धँ प म गँ रे सा। रें सां रें सां निँ सां, धँ धँ प प म प, रें सां रें सां निँ सां, गँ गँ रें सां रें गँ रें सां निँ धँ प म गँ रे सा निँ सा। सा रे म प म रे – – म प निँ धँ प म गँ रे सा, रे म प धँ म – – प सां निँ धँ प म गँ रे सा। धँ सा रे रे, रे रे म म, म म प प, प प धँ धँ धँ धँ सां सां, सां सां रें रें, रें रें मं मं, मं प प मं गँ रें सां, सां निँ धँ प म गँ रे सा। सा – रे – म – प – धँ – – प म गँ रे सा, म – प – धँ – सां – गँ – – रें सा निँ धँ प म गँ रे सा। सा – रें – मं – पं – धँ – – पं मं गँ रें सां सां निँ धँ प म गँ रे सा। सा रे म प धँ सा, सां रें मं पं धँसां*

सां निँ धँ पं मं गँ रें सां सां निँ धँ प म गँ रे सा। धँ सा सा रे, रे रे म, म म प, प प धँ, धँ धँ सां, सां सां रें, रें रें मं, मं मं पं, पं सां धँ, धँ धँ पं, पं पं मं, मं मं गँ, गँ गँ रें, रें रें सां सां निँ, निँ निँ धँ धँ धँ प, प प म म म गँ, गँ गँ रे रे सा सा –। सा सा रे रे, रे रे म म, म म प प, प प धँ धँ धँ धँ सां सां, सां सां रें रें, रें रें मं मं, मं मं पं पं, पं पं धँ धँ, धँ धँ पं पं, पं पं मं मं, मं मं गँ गँ, गँ गँ रें रें, रें रें सां सां, सां सां निँ निँ, निँ निँ धँ धँ धँ धँ प प, प प म म, म म गँ गँ, गँ गँ रे रे रे सा सा –। सा रे म प निँ धँ – – –, म प धँ सां मं गँ – – –, सां रें मं पं धँ – – पं मं गँ रें सां सां निँ धँ प म गँ रे सा। सा सा सा, प प प, सां सां सां, पं पं पं मं गँ रें सां सां निँ धँ प म गँ रे सा।

---

* यह षड्ज तारतर सप्तक का है।

राग आसावरी

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—पेहरवा जागो रे जागो रे, चुरवा लागिला थारीं घात।
अंतरा—इतना ही में रैन बीतत, चेत पाछली रात॥

स्थायी

०		९		११	
			धॅ प धॅ म	– – प सां निॅ सां	– –, प धॅप पम–पधॅ
			पे • • •	ऽ ऽ ह • र •	ऽ ऽ, वा•• ••ऽ••

×		०		५	
म गॅ	सा रे	गॅ सा – – – रे	धॅ सा सा धॅ	– – म प	म प
जा	•	• ऽ ऽ ऽ •	गो •	ऽ ऽ • •	रे

०		९		११	
—	पधॅप मपधॅ	सा गॅ	सा रे	गॅ सा – – – रे	निॅ सा– –निॅ सा रेगॅ रेसा
ऽ	••• •••	जा	•	• ऽ ऽ ऽ •	गोऽ ऽ • • •• ••

×	०			५	
निॅ धॅ	– – रेगॅ सारे	रे म	– प म प	निॅ धॅ	धॅ धॅ
रे	ऽ ऽ चु• र•	वा	ऽ ला• गि	ला	था री

०		९		११	
सां–निॅसां रें	– – सांरें गॅं	निॅ धॅ	निॅ धॅ प –	धॅप मम पसां निॅसां	– –, प धॅप पम–पधॅ
• ऽ•• •	• • •• •	घा	त पे • ऽ	•• •• ह• र •	ऽ ऽ, वा•• ••ऽ••

अन्तरा

०		६		११	
		म प	निँ धँ	प सां	– – – सां सां
		इ त	ना	ही	ऽ ऽ ऽ • •

×		०		५	
सां	– – – निँ सां रें	धँ	सां – रेंगँ सांरें	मं गँ	मं गँ
में	ऽ ऽ ऽ • •	रे	• ऽ •• ••	न	•

०		६		११	
सांरें – – – रें – – –	गँ सां	—	– – – सां सां रें –	निँ धँ	—
बी• ऽ ऽ ऽ• ऽ ऽ ऽ	•	ऽ	ऽ ऽ ऽ त • •ऽ	त	ऽ

×		०		५	
धँ गँ	– – निँसां रें	धँ	– – – म प	सां	—
चे	ऽ ऽ त • •	पा	ऽ ऽ ऽ छ•	ली	ऽ

०		६		११	
– – निँ सां रें	– – सां रें गँ	धँ	निँ धँ प –	धँप मम पसां निँसां	– –,प धँप पम–पध
ऽ ऽ • •	ऽ ऽ • ••	रा	त पे • ऽ	•• •• ह• र •	ऽ ऽ,वा •• ••ऽ••

आलाप

×		०		५	
१)				सा	–

०		६		११	
सा नि रें रें – धँ –	– प	प सा	निँ सा – धँप धँम	– – पँसां निँसां	– –,प धँप पम – पधँ
			पे• ••	ऽ ऽ ह • र •	ऽ ऽ, वा•• ••ऽ••

×		०		५	
२)				सा रे म प	धॅ – – म

०		६		११	
प	मप – – –	धॅम – प धॅ	गॅ	^{सा} रे – सा सा	रे म पधॅ मप
				पे	ह र वा• ••

×		०		५	
३)				सा रे म प	धॅ – – म

०		६		११	
प	मप – – –	रे म प निॅ	धॅ – – म	प	मप – – –

×		०		५	
सा रे म प	(प) सां	(निॅ) धॅ – – म	प	धॅम – धॅप –	निॅ धॅ

०		६		११	
– प	धॅम – प धॅ	गॅ	(सा) रेसा धॅप धॅम	– – पसां निॅसां	– –, प धॅप पम - पधॅ
			पे• ••	ऽ ऽ ह • र •	ऽऽ, वा •• ••ऽ•ऽ

×		०		५	
४)				सा रे म प	(म) धॅ – – प

०		६		११	
सां	निॅसां – – –	रे म प निॅ	(धॅ) धॅ – – म	(प) सां	निॅसां – – –

×		०		५	
रेंरें सांनिॅसां रें	(धॅ) धॅ – – म	(प) सां	निॅसां – – –	धॅम – धॅप –	सां – – रें

०		६		११	
निॅ धॅ	प	धॅम – प धॅ	गॅ	(सा) रे – सा सा	रे म पधॅ मप
				पे	ह र वा• ••

×		०		५	
५)				सा रे म प	धॅ
०		**६**		**११**	
प सां	निॅ सां - - -	म प धॅ सां	मं रें गं - -	सां रें रें - - -	सां
×		**०**		**५**	
मं रेंनिॅ-रेंसां गॅं -	रेंरें - - - सां - - -	रेंरें सांनिॅ सां - रें -	निॅ धॅ प	धॅम-धॅप-सांनिॅ-रेंसां-	मं गॅं - - - रेंरें - - -
०		**६**		**११**	
सां - रें निॅ	धॅ प	धॅम - प धॅ	सा गॅ - रे सा	रे-म-पसां निॅसां पेऽ•ऽ ह• र •	धॅ प पधॅ म प धॅ वा• • • •

×		०		५	
६)				सा सा रे रे म	रे म मप पधॅ
०		**६**		**११**	
प म, सां	- - निॅसां -	म प प धॅ	धॅसां सां रें	मं गॅं- रें रें -	सां - निॅसां -
×		**०**		**५**	
रेंरें सांनिॅ सां रें	मं गं	रेंरें - - -	सां	रें निॅ सां रें	धॅ प
०		**६**		**११**	
मधॅ सां गॅ रें	निॅ धॅ प	धॅम धॅप सां- - -	गॅ - रे सा	सां - - प पे ऽ ऽ •	प - धॅम प - धॅ - ह• र• वाऽ• ऽ

×		०		५	
७)				सारे - सा रे म - रे	मप - म प धॅ - प
०		**६**		**११**	
प सां	निॅसां - - -	सांनिॅ धॅप सां - रें -	मं गॅं	रेंरें - - -	सां - - निॅसां -
×		**०**		**५**	
सांरेंपं -	गॅं - रें सां	गॅं रें गॅं सां	रें निॅ सां रें	धॅ प	निॅ धॅ पधॅ पम पसां - -

०		६		११	
धॅ प	धॅ म प धॅ	गॅ – रे सा	(म प) रे म प सां	रेंनिॅसां – – – रेंनिॅ	सां – – – धॅम पधॅ
			पे • • •	हरवा ऽऽऽ हर	वा ऽऽऽ हर वा•

×		०		५	
८)				सा रे म प	धॅ सां सां रें

०		६		११	
(मं) गॅ	(सां) रेंरें – सां –	सां रें मं पं	धॅ गॅ	रेंरें – – –	सां – निॅसां –

×		०		५	
मप - म, पधॅ - प	धॅसां - धॅसां रें - सां	(मं) गॅ	रेंरें – सां –	रें निॅ	धॅ प

०		६		११	
पमधॅपसां – – –	– गॅ रे सा	पम धॅप सां – – –	– पम धॅप सां	पम धॅप सां – – –	– – पम पधॅ (म) पं–
पे• •• •ऽऽऽ	ऽ ह र वा	पे• •• • ऽऽऽ	ऽ ह• र• वा	पे• •• • ऽऽऽ	ऽऽ हर वा• •ऽ

×		०		५	
				रेसासा, मरेरे, पम	म, धॅपप, धॅम धॅप

०		६		११	
सां	– – निॅसां –	पमम, धॅपप, सांनिॅ	निॅ, रेंसांसां, रेंगॅसांरें	(म) गॅ	रेंरें – सां –

×		०		५	
(सां) सांरें रेंमं	(रें) मं पं पं मं	गॅ	रेंरें – सां	(सांमं सां) गॅ रें	निॅ धॅ

०		६		११	
(धॅ) प – – म	(प) सां	गॅ	(सा प) रे – सा म	पसांनिॅसां- -सांनिॅ	सां – – – पम पधॅ
			पे	ह र वा • ऽऽ ह र	वा ऽऽऽ हर वा•

———

बोल तानें

(१)

×		०		५	
				सा रे म प	सां – – रें
				पे • ह र	वा ऽ ऽ •

०		६		११		
नि॒ ध॒ – – प	मं ग॒ रें सां रें नि सां –	सां रें ग॒ रें – नि ध॒ –	ध॒ प – प ध॒ म प –	– प – प ध॒ म प –	– प – प ध॒ म पध॒
जा ऽ ऽ गो	चुर वा • ला • गि • ला • • थाऽरी घाऽ	त पेऽ • ह र वाऽ	ऽपेऽ • ह र वाऽ	ऽपेऽह र वा • •	

(२)

×		०		५	
				सारे–सा, रे म–रे	मप – ध॒म–ध॒प
				पे •ऽ •, ह •ऽ•	र• ऽ वा•ऽ• •

०		६		११	
प सां	नि सां – – –	मप सांनिसांरेंग॒रेंसां	रेंनि–सां रेंसां ध॒प	ध॒प–प ध॒म पध॒	ग॒ – –प ग॒ – –प
जा	गो • ऽ ऽ ऽ	चुर वा• •• •ला •	गिलाऽथा • री घा•	त पेऽह • रवा •	जा ऽ ऽहो जाऽ ऽहो

(३)

×		०		५	
				रेसासा, मरेरे, पम	म, ध॒पप, सानिसां–
				पे • •, ह••, र•	•, वा••, जा • गो•

०		६		११	
ग॒रेंग॒सांरेंनिसां–	ग॒ग॒रें, रें रेंसां, सांसां	नि, नि निध॒, ध॒पध॒म	मप – सांसां – ध॒म	मप – सांसां–ध॒म	मप–सांसां–पध॒प
चु रवा •ला•गीऽ	ला• •, था••, री •	•, घा • •, त•पे•	•ह ऽ र वा ऽ पे•	•ह ऽ र वा ऽपे •	•हऽर वा ऽ• • •

(४)

×		०		५	
				सा–रेम प – – –	ध॒म पध॒ पसां – –
				पे ऽह रवा ऽ ऽ ऽ	जा• गो• रे • ऽ ऽ

०		६		११	
रेंनि सांरें मंप ध॒प	मंमंग॒ – –रें सांरें – –सां	निसां रेंसां ध॒प ध॒म	प –निसां रेंसां ध॒प	ध॒म प–निसां रेंसां	ध॒प ध॒म – प ध॒प
चुर वा•ला••गि	ला••ऽऽ•था•ऽऽरी	घा • • त पे• हर	वाऽघा • • त पे•	ह रवाऽघा • • त	पे • ह र ऽ वा ••

×		०		५	
(५)				सारे मप निँनिँ धँप	मपसांनिसांरें गँरेंसां
				पे • ••• • हर	वा•जा• •गो• रे•

०		६		११	
रेंमं पंधं पं–गँ–	सां निँ रें –सां – – रें–सां	धँ – –प– –निँसां	निँ–रेंसां धँ – –प	निँसांनिँ–रेंसां धँ–	–प, रेम पधँ प–
चुर वा• •ऽला ऽ	गिऽला ऽ ऽ थाऽरी	घा ऽ ऽतऽ ऽपे •	• ऽह र वा ऽ ऽ –	पे • • ऽह र वाऽ	ऽ•, पे• हर वा•

×		०		५	
(६)				सारे रेम मप पधँ	धँसां सांरें रेंमं मंपं
				पे • •• ह• र•	वा • जा• गो• रे•

०		६		११	
धँपं पंमं मं गँ गँरें	रेंसां सांनिँ निँ धँधँ	मप सांनिँसां रें गँ रेंसां	सां–मप सांनिँ सांरेंगँ	रेंसांसां–, मपसांनिँ सां	रेंगँ रेंसां सां–धँप
चु • र• वा• ला•	गि• ला• था •री•	घा• • • त पे• हर	वा ऽघा• •• त पे•	हर वा ऽ,घा• • • त	पे• ह र वाऽ••

×		०		५	
(७)				सारे म– रेम प–	मप धँ–प धँ सां–
				पे• •ऽ ह• •ऽ	र• • ऽवा• • ऽ

०		६		११	
धँसां रें–सांरें गँ–	– –गँ गँ रेंसां, रेंरें	सांनिँ, सांसांनिँधँ, निँनिँ	धँप–प, धँम धँप	सां– – – रें निँ सां–	– – – –धँम पधँ मप
जा• •ऽगो• • ऽ	ऽऽचु र वा•, ला•	गि • ला• था• री •	घा•ऽत, पे• हर	वा ऽ ऽ ऽ ह र वा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽहर वा• ••

×		०		५	
(८)				मगँ गँरे रे – सा –	सारेंसां, निँसांनिँ, धँप
				पे• ह• र ऽ वा ऽ	जा••, गो • •, रे•

०		६		११	
धँप धँम धँप सां–	मं सां सांरें गँ– रें–सां–	सांरेंसां रेंसां धँप धँम	प – – –रेंसांरें निँ	सां – – – धँप धँम	प – – – रेम पधँ
चुर वा•ला• गिऽ	ला• • ऽ थाऽरीऽ	घा•• त••पे• हर	वा ऽ ऽ ऽपे • ह र	वा ऽ ऽ ऽ पे• हर	वा ऽ ऽ ऽ • • • •

×		०		५	
(९)				सारे रेसा, रेम मरे	मप पम, प धँ धँप
				पे • • •, ह• र•	वा• ••, जा• ••

०		६		११	
पसांसांनिँ, सांरेंरेंसां,	रेंगँ ग रें, सांरें रेंसां	निँसांसांनिँ, धँनिँनिँधँ	प – –प धँप धँम	प – – पसां– –सां	– –सां– –सां– –
गो• • •, रे • •,	चु• र •, वा• ला•	गि• ला•, था• री •	घा ऽ ऽत पे• हर	वा ऽ ऽ •जाऽ ऽगो	ऽ ऽजाऽ ऽ गोऽ ऽ

तानें

×		०		५	
१)				सारे मप धॅप मगॅ	रेसा, रेमप धॅमप

०		६		११	
धॅपमगॅरेसा,सारे	मपनिॅ निॅ धॅप मगॅ	रेसा,सारे मप धॅसां	सांनिॅ धॅप मगॅ रेसा	धॅपधॅ मप सांनिॅ सां	• • प धॅमपधॅ —
				पे • • • ह • र •	ऽ ऽ वा • • • • ऽ

×		०		५	
२)				सारे रेसा, रेम मरे	मप पम, पधॅ धॅप

०		६		११	
धॅसांसांनिॅ,सांरेंरेंसां	रेंरें सांनिॅ धॅपमग	रेसा,रेंरें सांनिॅ धॅप	मगॅरेसा,रेंरें सांनिॅ	धॅपम गॅरे सा,सा –	रे म प धॅ म प
				पे ऽ	ह र वा • • •

×		०		५	
३)				सारेमपधॅ सांसांनिॅ	धॅप मगॅरेसा,सांसां

०		६		११	
– निॅधॅप मगरेसा	सारे मप धॅसां रें रें	सांनिॅ धॅप मगॅ रेसा	रेंरें–रेंसां निॅधॅप	मगॅ रेसा, सा•••	रे म प धॅ म प
				पे ऽऽऽ	ह र वा • • •

×		०		५	
४)				रेसा मरे पम धॅप	सांनिॅ रेंसांसांरेंगॅ रें

०		६		११	
सांनिॅ धॅप मगॅरेसा	सांरें गॅ रें सांनिॅधॅप	मगॅ रेसा,सांरें गॅ रें	सांनिॅ धॅप मगॅ रेसा	रे म प सा	– – प धॅ – म प —
				पे • • •	ऽ ऽ ह र ऽ वा • ऽ

×		०		५	
५)				रेसासा, मरेरे, पम	म,धॅपप,सानिॅ निॅ,रें

०		६		११	
सांसां,सां-रें-गॅ रें	सांनिॅ धॅप मगॅ रेसा	सां–रें–गॅ रेंसांनिॅ	धॅप मगॅ रेसा, सां –	रें–गॅ रेंसां निॅ धॅप	मगॅ रेसा, पधॅ मप
					हर वा•

×		०		५	
६)				सारे सारे, रेम रेम	मप मप, पधँ पधँ
०		९		११	
मपमपपधनि सां	सांरें सांरें रेंगं रेंगं	सां सां सां रेंरें रें गं रें	सांनि धँप मगँ रेसा	सां - - - सां - - -	सां - - - प धँ म प
				पे ऽ ऽ ऽ पे ऽ ऽ ऽ	पे ऽ ऽ ऽ ह र वा
×		०		५	
७)				रेसासा, मरेरे, पम	म, धँपप, मगरेसा
०		९		११	
पमम, धँपप, सांनि नि, रेंसांसां, सानि धँप	सांनि नि, रेंसांसां, मरें	पंम धं पं मंगं रेंसां	सांनि धँप मगँरेसा	सांनि सांप पधँ मप	
					पे • हर वा• ••
×		०		५	
८)				सारेरे, रेमम, मप	प, पधँधँ, धँसांसां, सां
०		९		११	
रें, रेंमंमं, मंपंपं	धं पंपं, पंमंमं, मंगं	गं, गं रेंरें, रेंसांसां, सां	निंनिं, निंधँधँ, धँपप	पमम, मगँगँ, गँरे	रे, रेसासा, रेसासा, म
×		०		५	
रेरे, पमम, धँपप	सां - - -, गं रेंसांनि	धँप मगँरेसा नि सा	रेसासा, मरेरे, पम	म, धँप प सां - - -	गँरें सांनि धँप मगँ
०		९		११	
रेसानि सा, रेसासा, म	रेरे, पमम, धँपप,	सां - - -, गँरें सांनि	धँप मगँरेसा नि सा	सांनि रेंसां पम धँप	पम धँप पम म धँप
				पे • •• हर वा•	हर वा• हर वा •
×		०		५	
९)				सारे मप सां - - -	सांनि धँप मगँरेसा
०		९		११	
रेंरें -रेंसांनि धँप	मगरेसा, गं गं - रें	सांनि धँप मगँरेसा	पंपं - पं मंगं रेंसां	सांनि धँप मगँरेसा	मगँरेसा, सानि धँप
×		०		५	
मं गँ रेंसां, सानि धँप	मगँरेसा, मगँरेसा	सांनि धँप, मगं रें सां	सांनि धँप मगँरेसा	मगँरेसा, सांनि धँप,	मंगं रेंसां, सांनि धँप
०		९		११	
मगँरेसा, सां - - -	पधँम - पसांनि सां	धं - प - पधँम -	पसां निं सां धँ - प -	पधँम - पसांनि सां	धँ - प - पधँम -
	पे•• ऽ ह• र •	वाऽ • ऽ, पे•• ऽ	ह• र • वाऽ•ऽ	पे•• ऽ ह• र •	वाऽ • ऽ •• • ऽ

———

राग आसावरी

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—हम रैये (रहिये) रात बिरहिन के पास, पट पटबीज नास, बूँद परत ।
अन्तरा—बाट घाट सब रोकत टोकत, अब न मनूँ तेहारी बात ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
														(ध॒)प	सां
														ह	म
नि॒ध॒	—	प	ध॒प	ध॒	म	पध॒	मप	ग॒	(सा)रे	म	प	ध॒	म	प	सां
रै	ऽ	ये	रा•	•	त	बि•	र•	ह	न	के	पा	•	स	ह	म
नि॒ध॒	—	प	ध॒प	ध॒	म	पध॒	मप	ग॒	(सा)रे	म	प	—	प	म	प
रै	ऽ	ये	रा•	•	त	बि•	र•	ह	न	के	पा	ऽ	स	प	ट
सांनि॒	सां	सांरें	(मं)ग॒	रेंसां	रें	नि॒	सां	सांसां	रें	सांनि॒	सां	पध॒	म		
प•	ट	बी•	•	ज•	ना	•	स	बूँ•	•	द•	प	र•	त		

अंतरा

म	—	प	ध॒	—	ध॒	पध॒	म	(नि॒)ध॒	—	सां	ध॒	सां	—	सां	सां
बा	ऽ	ट	घा	ऽ	ट	स•	ब	रो	ऽ	क	त	टो	ऽ	क	त
ध॒	ध॒	सां	रें	सांरें	गं॒	रें	सां	सांसां	रे	सांनि॒	ध॒प	ध॒	म		
अ	ब	न	म	नूं•	•	ते	•	हा•	•	री•	बा•	•	त		

——

तानें

× ५ ० १३

१) | | | | | | | | सारे | मप | नी॒नी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा | प ह | सां म

२) | | | | | | रेसा | मरे | पम | ध॒प | नी॒नी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा | ,, | ,,

३) | | | | रेसा | सा,म | रेरे, | पम | म,ध॒ | पप | नी॒नी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा | ,, | ,,

४) | | | | सारे | मप | ध॒सां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा | सां | — | म | –,प ह | सां म

५) | | | | सां | –रें | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा | सारे | मप | सां | म | –,,, | ,,

६) | | | | रेसा | सा,म | रेरे, | पम | म,ध॒ | पप, | सांनी॒ | नी॒,रें | सांसां | म | –,,, | ,,

७) | | | | रें ग॒ं | रें,सां | रें सां | नी॒सां | नी॒,ध॒ | नी॒ध॒ | पध॒ | प,म | पम | रेम | –,,, | ,,

८) | | | | सारे | मप | ध॒सां | रें मं | ग॒ं रें | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रे सा | म | –,,, | ,,

९) | | | | पध॒ | प,प | ध॒प | मप | म,म | पम, | ध॒नी॒ | ध॒,ध॒ | नी॒ध॒, | पध॒ | प,प | ध॒प,

सां रे | सां,सां | रें सां, | नी॒सां | नी॒,नी॒ | सांनी॒, | रें ग॒ं | रें रें | ग॒ं रें, | सां रें | सां,सां | रें सां, | नी॒सां | नी॒,नी॒ | सांनी॒ | ध॒नी॒

ध॒,ध॒ | नी॒ध॒ | पध॒ | प,प | ध॒प, | मप | म,म | प न. | रेम | पसां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | प ह | सां म

१०) | | | | सा | रे | म | प | — | नी॒नी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | रे | म | प

सां | — | रेंरें | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | सां | रें | मं | प | — | मं ग॒ं | रें सां | सांनी॒ सां | ध॒प नी॒

मग॒ | रेसा, | मं ग॒ं | रें सां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | मं ग॒ं | रें सां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | प ह | सां म

११) | | | | सारे | मप, | रेम | पध॒ | मनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | रेम | पध॒ | मप | ध॒सां,

ध॒रें | सांनी॒ | ध॒प | मप | मध॒ | पम, | पनी॒ | ध॒प, | धसां | नी॒ध॒, | नी॒रें | सांनी॒ | सांग॒ं | रेंसां | सांनी॒ सां | ध॒प नी॒

मग॒ | रेसा, | सांग॒ं | रेंसां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | सांग॒ं | रेंसां | सांनी॒ | ध॒प | मग॒ | रेसा, | प ह | सां म

१३

× ५ ० १३

१२) | | | गॅ गॅ | रे, गॅ | गॅ रे, | सा रे, | धॅ धॅ | प, धॅ | धॅ प | म प, | गॅ गॅ | रें गॅ | गॅ रें | सां रें,

रें सां | नी धॅ, | सांनी | धॅ नी | नी धॅ | प धॅ, | धॅ प | म प, | प म | रे म, | सां प ह | नी सां, म | सां प ह | नी सां, म | सां प ह | नी सां म

१३) | | | गॅ रे | सा रे | प म | रे म | धॅ प | म प | सांनी | गॅ नी | रें सां | नी सां | गॅ रें | सां नी

धॅ प | म गॅ | रे सा, | गॅ रें | सांनी | धॅ प | म गॅ | रे सा, | गॅ रें | सांनी | धॅ प | म-गॅ | रे सा | म | –, प ह | सां म

१४) | | | गॅ रे | सा रे | प म | रे म | धॅ प | म प | नी नी | धॅ प | म गॅ | रे सा, | प म | रे म

धॅ प | म प | सांनी | धॅ नी | रें सां | नी सां | गॅ रें | सांनी | धॅ प- | म गॅ | रे सा, | प धॅ ह म | प प रहि | प धॅ ह म | म म रहि | प सां ह म

१५) | | | | सा रे | म प | धॅ सां | रें गॅ | गॅ, रें | गॅ गॅ, | सां रें | रें, सां | रें रें | नी सां | सां, नी | सां सां

धॅ नी | नी, धॅ | नी नी, | प धॅ | धॅ, प | धॅ धॅ, | म प | प, म | प प | रे म | प नी | धॅ प | म गॅ | रे सा | प ह | सां म

१६) | | | | सा रे | रे सा, | रे म | म रे, | म प | प म | प धॅ | धॅ प | प सां | सांनी, | सां रें | रें सां

रें गॅ | गॅ रें | सां रें | रें सां | नी सां | सांनी | धॅ नी | नी धॅ | प धॅ | धॅ प | म प | प म | म गॅ | रे सा | प ह | सां म

१७) | | | | रें गॅ | गॅ, रें | गॅ गॅ, | रें गॅ | रें गॅ | गॅ रें | सां रें | रें, सां | रें रें | सां रें | सां रें | रें सां

सां रें | रें सां | नी सां | सांनी, | धॅ नी | नी धॅ | नी नी | धॅ नी | धॅ नी | नी धॅ | प धॅ | धॅ प | म प | धॅ सां | रें मं | गॅ रें

सां नी | धॅ प | म गॅ | रे सा, | म गॅ | रे सा | सांनी | धॅ प | मं गॅ | रें सां | सांनी | धॅ प | म गॅ | रे सा, | प ह | सां म

१८) | | | | सा | — | प | — | सां | — | पं | — | मं गॅ | रें सां | सांनी | धॅ प

म गॅ | रे सा, | पं | — | मं गॅ | रें सां | सांनी | धॅ प | म गॅ | रे सा, | पं | — | मं गॅ | रें सां | सांनी | धॅ प

म गॅ | रे सा, | प ह | सां म | सां र | प हि | धॅ • | म, ये, | प ह | सां म | सां र | प हि | धॅ • | म, ये, | प ह | सां म

राग आसावरी

चतुरंग—त्रिताल

गीत—३

स्थायी—चतरंग रस सन गाइए, ले जाइए सुर ताल पर,
आलाप कर सुनाइये ।

अन्तरा—ना दिरि धिति ला नत् दीम् दीम् तननन, नितारे नितारे ता दीम् ,
सासा, सारेम, रेमप, मपधॅ, पनीधॅं,
मपसां, रोज़ में गोयंके फ़र्दा, तर्के मन सौदा कुनम् ,
बादे चूं फ़र्दा शब्द, फ़ीरोज़ रा दुनियाँ कुनम् ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
								प सां	निॅ सां	(निॅ)धॅ	प	प धॅ	म	प धॅ	म प
								च •	त •	रं	ग	र •	स	स •	न •
(म)गॅ	—रे	(सा)रे	—	म	—	प	—	(म)गॅ	—	(म)गॅ	—	(सा)रे	—	सा	—
गा	• ऽ	•	ऽ	इ	ऽ	ए	ऽ	ले	ऽ	जा	ऽ	इ	ऽ	ए	ऽ
रे	(म)गॅ	—	(सा)रे	—	(गॅ)रे	सा	सा	(म)रे	म	—	म	प	धॅ	सां	—
सु	र	ऽ	ता	ऽ	ल	प	र	आ	ला	ऽ	प	क	र	सु	ऽ
निॅ सां	रैं सां	रैं	निॅ	धॅ	प	प धॅ	म								
ना •	• •	•	•	इ	•	ए •	•								

अन्तरा

म	म म	म	म	प	—	(निॅ)धॅ	धॅ	(निॅ)धॅ	—	सां	—	सां	सां	सां	सां
ना	दि दि	धि	ति	ला	ऽ	न	त	दीं	ऽ	दीं	ऽ	त	न	न	न
रैं	धॅ	—	धॅ	सां	सां	—	रैं	(मं)गॅं	—	—	—	(सां)रैं	—	सां	—
नि	ता	ऽ	रे	नि	ता	ऽ	रे	ता	ऽ	ऽ	ऽ	दीं	ऽ	•	ऽ

×				२				०				३			
सा	—	सा	—	सा	रे	म	—	रे	म	प	—	म	प	(नि॑) ध॑	—
सा	ऽ	सा	ऽ	सा	रे	म	ऽ	रे	म	प	ऽ	म	प	ध	ऽ
प	नि॑	ध॑	—	म	प	सां	—	—	म	—	प	(नि) ध॑	—	(प) ध॑	—
प	नि	ध	ऽ	म	प	सा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ज़	में	ऽ	गो	ऽ
— —म	(प) सां	—	सां	सां	नि॑	सां	—	—	(नि॑) ध॑	—	ध॑	सां	सां	रें गं॑	सां रें
ऽ ऽ•	यं	ऽ	के	फ़	र	दां	ऽ	ऽ	त	ऽ	कें	म	न	सौं •	• •
(म) गं॑	—	—	रें सां	रें	—	सां	—	—	(नि॑) ध॑	—	ध॑	प	ध॑ प	म	म
दा	ऽ	ऽ	कु •	नं	ऽ	•	ऽ	ऽ	बा	ऽ	दे	चूं	• •	फ़	र
म प	ध॑ सां	—	नि॑	सां	— सां	प ध॑	म प	(प) गं॑	—	—	रें सां	रें	—	सां	सां रें
दा •	• •	ऽ	श	ब	ऽ दू	फ़ी •	• •	रो	ऽ	ऽ	ज़ •	रा	ऽ	दु	नि •
नि॑	सां	रें	सां	नि॑	ध॑	प ध॑	म								
या	•	•	कु	नं	•	• •	•								

———

राग आसावरी

तराना—त्रिताल

गीत—४

स्थायी—दानी ना दिर दिर दानि त दानि, दीं तन नन दिरि ना,
तन देरे ना तन देरे ना दानि, उदन दीं तन न नित्रों, तों ततन देरे ना ॥

अंतरा—ना दिर दिर दिर, तुं दिर दिर दिर, दिर दिर तन देरे ना,
दिर दिर दिर दिर तुं दिर दिर दिर, दिर दिर, ताना देरे ना,
ताना देरे ना, ताना देरे ना, ताना देरे ना ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
						प धॅ	म	प	सां सां	निँ निँ	सां	प	धॅ	म	प
						दा •	नी	नी	दि र	दि र	दा	नी	त	दा	नी
निॅ	—	धॅ	प	(म) गॅ	गॅ	(सा) रे	—	म	—	प	—	—	—	धॅ	म
दीं	ऽ	त	न	न	न	दे	ऽ	रे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	त	न
प	सां	धॅ	—	—	—	प	धॅ	म	प	(म) गॅ	गॅ	(सा) रे	—	सा	—
दे	रे	ना	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	दे	रे	ना	•	दा	ऽ	नी	ऽ
सा	सा	रे	म	—	म	प	प	प	(निॅ) धॅ	—	सां	सां	सां	सां	रे
उ	दा	न	दीं	ऽ	त	न	न	नि	त्रों	ऽ	तों	•	त	न	न
सां रें	(म) गॅ	रें	सां	निॅ	धॅ	प धॅ	म								
दे •	•	रे	•	ना	•	दा •	नि								

———

अंतरा

×				५				०				१३			
								म	म म	म म	म म	प	प प	धॅ धॅ	धॅ धॅ
								ना	दि र	दि र	दि र	तुं	दि र	दि र	दि र
धॅ धॅ	धॅ धॅ	सां	सां	रें	निॅ	सां	—	धॅ धॅ	धॅ धॅ	धॅ धॅ	धॅ धॅ	सां	सां सां	सां सां	रें रें
दि र	दि र	ता	ना	दे	रे	ना	ऽ	दि र	दि र	दि र	दि र	तुं	दि र	दि र	दि र
मं गॅं गॅं	गॅं गॅं	रें	सां	निॅ	सां	(निॅ) धॅ	—	प	मं	मं	गॅं	गॅं	रें	रें	सां
दि र	दि र	ता	ना	दे	रे	ना	ऽ	ता	•	ना	•	दे	•	रे	•
सां	रें	मं	गॅं	गॅं	रें	रें	सां	सां	निॅ	निॅ	सां	गॅं	रें	रें	सां
ना	•	ता	•	ना	•	दे	•	रे	•	ना	•	ता	•	ना	•
सां	निॅ	सां	—	धॅ	प	प धॅ	म								
दे	•	रे	ऽ	ना	•	दा •	नी								

मुखड़े के प्रकार

×				५				०				१३			
१) नीॅ सां	रें	सां नीॅ	सां--नीॅ	धॅ	प	प	म								
दी •	•	त •	नऽऽ•	न	न	दा	नि								
२)	नीॅ रें	नीॅ सां	(नीॅ) सां	—	पनीॅ	प धॅ	(म) प								
	त•	दा •	नी	ऽ	त•	दा•	नी								
३) प धॅ	नीॅ	नीॅ धॅ	धॅ	प	प	प धॅ	म	प धॅ	सां	सां	सां	सां	नीॅ	(रें) सां रें	गॅ रें
दी •	•	त •	न	न	न	दा •	नि	दी •	•	त	न	न	न	दा •	• नी

×				५				०				१३			
सांनी˘	सां-नीं˘	धँ	धँ	प	प	प	म								
दी•	•ऽम्	त	न	न	न	दा	नि								

४)

रें गं˘	-रें	सां रें	-सां	नीं˘सां	-नीं˘	प धँ	धँसां	सां रें	-सां	नीं˘सां	-नीं˘	धँ	प	प धँ	म प
दीं•	ऽ•	दीं•	ऽ•	दीं•	ऽ•	त•	न•	दीं•	ऽ•	दीं•	ऽ•	दीं	•	त•	न•
प	सां	-	धँ	—	प										
दीं	म्	ऽ	दीं	ऽ	म्										

५)

	मं गं˘	गं˘ रें	रें	सां	गं˘ रें	रेंसां	सां	नी˘	रें सां	सांनी˘	नी˘ धँ	प धँ	प धँ	म प	प म
	दीम्	दीम्	दी	म्	दीम्	दीम्	दी	म	•दीम्	दीम्	दी म्	दी•	•म	त•	न
प	सां	-नी˘	रेंनी˘सां-	धँ	प	प धँ	म प	प	सां	-नी˘	रेंनी˘सां-	धँ	प	प धँ	म
दी	म	-•	दी• म् ऽ	दी	म्	त•	न•	दी	म्	ऽ•	दी• म्ऽ	दी	म्	त•	न

६)

															गं˘ रें
															त •
रें सां	सांनी˘	रें सां	सांनी˘	नी˘ धँ	सांनी˘	नी˘ धँ	धँ प								
दा •	नी •	त •	दा •	नी •	त •	दा •	नी •								

७)

रेंगं˘	सा रे	म	—	म प	रे म	प	—	प धँ	म प	नीं˘ धँ	—	सां	—	रें गं˘	सां रें
त न	न न	तों	—	त न	न न	तों	—	त न	न न	तों	—	तों	—	तो•	• म्
मं	गं˘	—	गं˘ रें	रें सां	सांनी˘	नी˘ धँ	धँ म	म मं	गं˘	—	गं˘ रें	रें सां	सांनी˘	नी˘ धँ	धँ म
तो	म्	—	तों •	तों •	तों •	दा •	नी•	तो	म्	—	तों •	तों •	तों •	दा •	नी •
म मं	गं˘	—	गं˘ रें	रें सां	सांनी˘	नी˘ धँ	धँ म								
तों	म्	—	तों •	तों•	तों •	दा •	नी•								

×				५				०				१३			
८)रें में	गं रें	सांगं	रें सां	नी रें	सांनी	धॅ	म								
तन	न न	तन	नन	त न	न न	दा	नीं								
९)में गॅं	रें गॅं	रें सां	रें सां	नीं सां	नीं धॅं	धॅं	म								
तन	नत	नन	तन	नत	न न	दा	नी								
१०) मरे	रें प	म प	धॅ प	प नी	धॅ प	प	म								
तन	नत	नन	तन	नत	नन	दा	नी								

तानें

×				५				०				१३			
१) सारे	म रे	रे म	प म	प निं	धॅं प	प धॅं	म								
						दा	नी								
२)निंसा	रे म	प धॅ	म प	निं निं	धॅं प	”	”								
३) रेसा	म रे	प म	धॅ प	निं निं	धॅं प	”	”								
४) सारे	म रे	म प	म प	निं निं	धॅं प	”	”								
५)निंनिं	धॅ प	म प	धॅ प	म गॅ	रे सा	”	”								
६) सारें	गॅ रें	सांनिं	सां रें	सां निं	धॅ प	”	”								
७)में गॅं	रें सां	निं सां	रें रें	सांनिं	धॅ प	”	”								
८)रें गॅं	रें, सां	रें सां	निं सां	निं, प	निं धॅ	”	”								
९) सां	– रें	सांनिं	धॅ प	म गॅ	रे सा	”	”								
१०)निंसा	रे म	प धॅ	सां रें	गॅ रें	सांनिं	”	”								

× ५ ० १३

११) | नि॒ सा | रे म | प ध॒ | सां रें | म ग॒ | रें सां | नि॒ सां | रें रें | सांनी॒ | सां नि॒ | ध॒ प | म ग॒ | रे सा | ध॒ | म प |
| | | | | | | | | | | | | | त | दा नी |

१२) | म ग॒ | रे सा | सांनि॒ | ध॒ प | मं ग॒ | रें सां | सांनि॒ | ध॒ प | म ग॒ | रे सा | सां नि॒ | ध॒ प | ध॒ | म | प |
| | | | | | | | | | | दा • | नी • | त | दा | नी |

१३) रे म | म ग॒ | रे सा | प सां | सां नि॒ | ध॒ प | रें मं | मं ग॒ | रें सां | नि॒ सां | रें रें | सांनि॒ | ध॒ प | म ग॒ | रे सा | नि॒ सां

रें रें | सांनि॒ | ध॒ प | म ग॒ | रे सा | नि॒ सां | रें रें | सांनि॒ | ध॒ प | म ग॒ | रे सा | ध॒ | प | ध॒ | म | प
| | | | | | | | | | | दा | नी | त | दा | नी

सा रे | म प | — प | म प | नी॒ नी॒ | ध॒ प | प | म | म प | ध॒ सां | — सां | नी॒ सां | रें रें | सांनी॒ | ध॒ | म
| | | | | | दा | नी | • | | | | | | दा | नि

सां रें | मं पं | — पं | पं मं | ग॒ रें | सांनी॒ | ध॒ | म | | | | | | | |
| | | | | | दा | नि | | | | | | | |

राग आसावरी

धमार

गीत—५

स्थायी—सखी री जा दिन ते फागुन आयो, चित को और सुहायो।
अंतरा—कुल की कान लाज सब तजि के, मोहन मनही लुभायो॥

स्थायी

× ० ६ ० ११ ०

| | | | | | | | | सा | म रे | म | प | म प |
| | | | | | | | | स | खी | • | री | • |

| नि ध॒ | — | — | नि ध॒ | — | ध॒ प | ध॒ म | ध॒ म | ध॒ प | प ध॒ | म ग॒ | — | रे | सा |
| जा | ऽ | ऽ | दि | ऽ | न • | • • | त | जे | • | फा | ऽ | गु | न |

×			०		६		०			११		०	
म गॅ	सा रे	सा	सा रे	नि॒ ध॒	—	—	नि॒ ध॒	नि॒ ध॒	—	सा	—	रे म	प धँ म प
आ	•	•	•	यो	ऽ	ऽ	चि	त	ऽ	को	ऽ	औ •	र • सु •
म गॅ	—	—	सा रे	—	—	—	गॅ सा	—					
हा	ऽ	ऽ	•	ऽ	ऽ	ऽ	था	ऽ					

अंतरा

म	प	—	नि धॅ	—	—	—	सां	—	—	नि सां सां	—	सां	रें रें
कु	ल	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	• •	ऽ	न	• •
नि धॅ	—	—	धॅ सां	—	रें गॅं	सां रें	मं गॅं	—	—	रें सां	रें	नि धॅ	—
ला	ऽ	ऽ	ज	ऽ	स •	• •	ब	ऽ	ऽ	त •	जं	के	ऽ
धॅ प	धॅ प	धॅ म	धॅ प	रें	सां	—	सां रें	नि धॅ	—	धॅ प	धॅ म	धॅ प	प धॅ
मो	•	•	ह	•	न	ऽ	म	न	ऽ	ही	•	लु	•
गॅ	—	—	सा रे	—	—	—	गॅ सा	—					
भा	ऽ	ऽ	•	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ					

राग बहार

आरोहावरोह—सा म, प गॅ म नी ॅ–ध निसां, नी ॅ-प, मप गॅ–,म रेसा ।

जाति—षाड़व-वक्र संपूर्ण ।

ग्रह—षड्ज।

अंश—शुद्ध मध्यम ।

अनुगामी स्वर—गान्धार और निषाद ।

न्यास—पंचम ।

विन्यास—मध्य षड्ज ।

मुख्य अंग—सा म–, प गॅ–म, नि ॅ–ध निसां ।

समय—वसंत में सर्वदा । अन्यथा रात्रि का द्वितीय प्रहर ।

प्रकृति—युवा, उत्साहप्रद ।

विशेष विवरण

बहार वसन्त ऋतु का एक विशेष राग है। इसमें कोमल गान्धार और दो निषाद (कोमल और शुद्ध) का प्रयोग होता है, अन्य स्वर शुद्ध हैं। सा म–, प गॅ–म–यों सा–म की स्वर जोड़ी एवं मुक्त मध्यम का प्रयोग वसन्त के उल्लास के सूचक हैं। साथ-साथ इस राग की तार सप्तक की गति भी उसी उल्लास को बढ़ाती है और हृदय की उमंग को परिपोषित करती है। स्थूल दृष्टि से यह राग दो रागों के सम्मिश्रण का परिणाम है। पूर्वांग में गॅ म रे सा–यह प्रयोग कान्हड़ा को सूचित करता है और उत्तरांग में म गॅ म नि ॅ–ध, यह बागेश्री का सूचन करता है। किन्तु बागेश्री के अंग को तिरोहित करने के लिए म गॅ म नि ॅ–ध नि नि सां–सां, यों तीव्र निषाद का प्रयोग करने से बागेश्री तिरोहित हो जाती है और बहार का आवाहन होता है।

और अवरोह करते समय नि ॅ प करने से बहार की छाया छा जाती है। पूर्वांग में भी गॅ म रे सा से जो कान्हड़े की छाया खड़ी होती ई, उसको सा म—इस स्वरावली से तिरोहित करके उत्तरांग में बहार की स्वर-मूर्ति खड़ी की जाती हैं। बहार का संपूर्ण स्वर-स्वरूप यों होगा।

सा म–, प गॅ–म, म नि ॅ–ध निसां–, नि सां रें सां नि सां नि ॅ–ध, सां नि ॅ–प, म प गॅ म, नि ॅ ध नि ॅप

म प गॅ म, प गॅ म रे सा। रे नि ॅ सा म, प गॅ म नि ॅ–ध, नि नि सां–सां।

पंजाब में वसन्तोत्सव के अवसर पर वहाँ की जनता पीली पगड़ी और पीले वस्त्रों में सुसज्जित होकर गाँवों के हरे भरे खेतों में और आम्र की घटाओं में खाती पाती और बहार राग गाती हुई देखी सुनी जाती है। इस राग के चलन में हृदय का उत्साह और उमंग प्रदर्शित होते हैं; और कवियों ने भी इसे वसन्त के गीतों से ही अलंकृत किया है। 'नई रुत नई फूली', 'बहार आई बलेरिया फूली'—इत्यादि ऐसे कई पद बहार में पाए जाते हैं। यह बड़ा ही मधुर, भावनापूर्ण उत्साह प्रेरक और युवा प्रकृति का राग है। युवा प्रकृति का होने पर भी उसमें उद्दण्डता, तीव्रता आदिक से युक्त वीर रस के अनुकूल रचना नहीं है। वह अन्तर की स्वाभाविक उमंगों को अभिव्यक्त करता है।

इस राग का ग्रह स्वर षड्ज है। यद्यपि इसकी सभी तानें प्रायः गान्धार और निषाद से ही उठती हैं, तथापि राग का मुख्य अंग जो आलाप है, उसका सभी चलन षड्ज से ही आरंभ होता है। वास्तव में सा सा म म प म गँ म यों करते समय अनजानपन से नि॒ँ सा म म प म–हो जाता है। गुरु के वैठ कर जो लोग नहीं सीखते, उनसे ऐसी भूलें प्रायः हो जाया करती हैं।

सा म–, प गँ–म, निँ–ध नि सां—यह क्रिया इस राग को आविर्भूत कराने के लिए परमावश्यक है। इसे बार-बार रट कर गुरुमुख से सीख लेना चाहिए।

राग बहार

मुक्त आलाप

[इस राग की आलापचारी के पूर्वांग में कान्हड़ा अंग ही प्रयुक्त होता है। केवल सा–म, किंवा सा रे नि॒ँ सा म, ये स्वर-समुदाय पूर्वांग में कान्हड़ा को तिरोहित करके बहार की अभिव्यक्ति स्थापित करते हैं। किन्तु बहार का स्पष्ट स्वरूप तो उत्तरांग में ही प्रदर्शित होता है—जब मध्यम से म निँ–ध निसां–यों किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि यह राग उत्तरांग प्रधान है। इसलिए इसकी आलापचारी में भी राग की अभिव्यक्ति के लिये तारसप्तक की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। जिन्होंने गुरु का सान्निध्य प्राप्त नहीं किया है और जो केवल पुस्तकों के अभ्यासी हैं, वे मंद्र में भी इसी प्रजार की आलापचारी करने का यत्न करते हैं। और तब नि॒–ध॒ नि॒ सा–यों करते समय मल्हार को निमंत्रण देते हैं। मंद्र में भी यदि नि॒–ध॒ नि॒ सा लेना हो तो मंद्र मध्यम पर ठहर कर ग॒ँ म॒ नि॒ँ–ध॒ नि॒ सा–यों ही जाना चाहिए। और यह क्रिया गुणी गुरु के पास 'सीना-ब-सीना' सीखने से स्पष्ट अभिज्ञात हो जाएगी।]

(१) सा। सा म, प गँ~~ म–रे सा। रे नि॒ँ सा म, म प–ध म प गँ~~, म रे–सा।

रे रे–सा नि॒ँ सा म, प गँ~~म निँ–ध नि–सां, निँ–प, म प गँ~~म–रे सा।

(२) सा, रे रे सा नि॒ सा नि॒ँ–ध॒ नि॒ँ–प॒, म॒ प॒ ग॒ँ म॒ नि॒–ध नि॒ँ–प॒, म॒ निँ–ध॒ नि॒ सा। रे रे सा नि॒ सा

म, (म सा)गँ–म रे–सा। म॒, नि॒ँ ध॒ नि॒ँ प॒, म॒ नि॒ँ–ध॒ नि॒ सा, म, गँ (सा)म रे सा। रे रे सा नि॒ सा म, प (गँ)गँ~~ म,

रे सा सा म, म प ध म प गँ~~, म प म प–म, ध म प (म)गँ~~, (म)गँ म निँ–प, म प ध ध प म प गँ~~म रे सा।

(३) (म सा म)सा म, प गँ~~, म गँ–म निँ–ध सां निँ निँ–प, म प निँ निँ प म प गँ~~, म निँ–प,

म ध प गँ~~, सा म, प गँ~~, म (सा)रे–सां।

(४) रे रे सा नि सा म, ध ध प म प गॅ~~म, म निॅ – ध निॅ म – प, ध म प गॅ~~,
म प निॅ निॅ प म प गॅ~~, म निॅ – ध नि सां, सां निॅ निॅ – प, म ध प गॅ – म, गॅ म निॅ ध नि सां
निॅ – प, म प गॅ म, गॅ म निॅ – ध नि सा, रें नि सां निॅ – प, म प गॅ म, प गॅ – म रे सा।

(५) सा रे नि सा म, म प गॅ म निॅ – ध, सां रें नि सां निॅ – प, म प गॅ – म, सा सा म, म म प,
ध प प गॅ~~म, सा नि रे सा म, प म ध प गॅ~~म, सां नि रें सां निॅ – ध, नि सां निॅ – प, प म ध प
गॅ~~म, म प गॅ~~गॅ म रे सा।

(६) सा रे – सा निसा म, म प – म गॅ म निॅ – ध, नि सां – नि सां, सां, नि सां रें सां निॅ – ध,
ध नि सां – नि सां, नि सां रें – सां, रें सां सां निॅ – ध, नि सां रें – सां रें गॅ रें सां नि सां निॅ – ध, ध निॅ
ध सां नि रें सां रें नि सां निॅ – ध, ध निॅ सां रें गॅ – मं रें – सां रें सां सां निॅ – ध, गॅ गॅ रें, रें रें सां, नि सां
रें सां सां निॅ – ध, ध निॅ सां – नि, ध निॅ सां रें – सां, ध निॅ सां गॅ मं रें सां, रें सां सां निॅ – ध, ध नि सां
निॅ प म प ध म प गॅ~~, गॅ म रे – सा।

(७) निॅ सा गॅ म ध निॅ सां – नि सां, सा सा म म ध निॅ सां – नि सां, रे रे सा नि सा म,
प प म गॅ म निॅ ध, ध नि सां – नि सां, सा नि रे सा म, प म ध प गॅ, म निॅ – ध, ध नि सां – नि सां,
निॅ निॅ प म प गॅ – म, ध नि सां – नि सां, निॅ सा गॅ म ध नि सां मं, म, प गॅ – म निॅ – ध, नि सां – नि सां,
निॅ – प, म – प ध म प गॅ~~, गॅ म प गॅ – म रे – सा।

(८) रे रे सा नि सा गॅ म ध नि सां – नि सां, निॅ रें सां रें नि सां निॅ – ध, ध नि सां – नि सां, सां रें, सा रें – सां, नि सां नि सां – निॅ, ध निॅ सां निॅ – ध, ध निॅ सां – निॅ सां, निॅ रें रें सां धसांसां निॅ – ध, ध निॅ सां – नि सां; म निॅ निॅ प – प, प सां सां निॅ – निॅ, ध रें रें सां – सां, ध सां सां निॅ – ध, ध निॅ सां – नि सां; ध निॅ सां रें गॅ गॅ मं सा रें – सां, रें रें सां नि सां सां निॅ निॅ – ध, ध नि सां – नि सां, ध निॅ – ध नि सां – नि सां रें – सां रें गॅ – रें नि सां निॅ – ध, ध नि सां – नि सां, गॅ गॅ रें, रें रें सां, नि सां, रें रें सां, सां सां निॅ ध निॅ, म निॅ – ध, ध निॅ सां – नि सां, निॅ ध सां नि रें सां गॅ – मं रें – सा, गॅ – म रे – सा, म प गॅ – म निॅ – ध, ध नि सां – नि सां, निॅ – प, म प निॅ निॅ प म प गॅ, म निॅ – ध निॅ – प, म प गॅ, गॅ म सा रे – सा।

राग बहार

मुक्त तानें

सा सा म म प म गॅ म रे सा नि सा। रे नि सा, म गॅ म, निॅ निॅ प म गॅ म रे सा नि सा। सा रे रे, नि सा सा, गॅ म म, म प प, गॅ म म सा रे सा नि सा। सा म – म गॅ म रे सा नि सा, म निॅ – निॅ प निॅ प म गॅ म, प प गॅ म रे सा नि सा। सा सा म म निॅ निॅ प म गॅ म रे सा। सा सा सा, म म म, निॅ निॅ निॅ, ध निॅ प म प गॅ म रे सा नि सा। निॅ निॅ ध, सां सां निॅ, रें रें नि सां, ध निॅ प म गॅ म रे सा नि सा। म प निॅ निॅ प म गॅ म रे सा नि सा। गॅ म ध निॅ सां रें रें, नि सां सां, प निॅ निॅ, म प प गॅ म म, सा रे रे, नि सा। गॅ म ध नि सां रें गॅं रें सां निॅ प म गॅ म रे सा। सा सा म म निॅ निॅ प म, गॅ म ध नि सां रें गॅं रें सां निॅ प म गॅ म रे सा। सा रे नि सा, म प गॅ म, प ध म प, नि सां ध निॅ सां रें गॅं रें सां निॅ प म गॅ म रे सा। नि सा गॅ म ध निॅ सां – – निॅ प म गॅ म रे सा नि सा – –। गॅ म ध नि

सां रें 'गॅं- मंमंरेंसां निॅ निॅ प म 'गॅ म रे सा। म गॅ गॅ, म गॅ गॅ, म म रे सा नि़ सा, निॅ ध ध, निॅ
ध ध, निॅ निॅ प म गॅ म, मं 'गॅं 'गॅं, म 'गॅं 'गॅं, मं मं रें सां नि सां, सां रें नि सां प निॅ म प गॅ म रे सा।
गॅ - - म निॅ निॅ प म गॅ म रे सा, ध - - निॅ रें रें नि सां निॅ निॅ प म गॅ म रे सा। गॅ म, प गॅ
- गॅ, गॅ म रे सा नि़ सा, ध निॅ सां, ध - ध ध निॅ निॅ प म प, गॅ म प, गॅ - गॅ गॅ म रे सा नि़ सा।
म निॅ - ध नि सां - नि प निॅ प म गॅ म रे सा। ध निॅ सां रें 'गॅं रें सां निॅ प म गॅ म रे सा नि़ सा।
सा म म, म प प, म निॅ निॅ ध सां सां नि रें रें, नि सां सां, सां मं मं, 'गॅं मं मं सां रें रें, नि सां सां, प निॅ
निॅ, म प प गॅ म म, सा रे रे, नि़ सा सा, म - म निॅ निॅ प म गॅ म रे सा। रें - रें सां नि सां प निॅ
म प गॅ म रे सा नि़ सा, गॅ - गॅ म सा रे नि़ सा प निॅ म प गॅ म रे सा। नि़ सा गॅ म ध नि सां -
सा - सां- निॅ निॅ प म गॅ म रे सा। रे सा सा, रे सा सा, म गॅ गॅ, म गॅ गॅ, म म रे सा, प म म, प
म म, निॅ प प निॅ प प निॅ निॅ प म, सां निॅ निॅ, सां निॅ निॅ, रें सां सां, रें सां सां रें रें नि सां
निॅ निॅ प म गॅ म रे सा। गॅ - - म ध निॅ सां निॅ प म गॅ म रे सा नि़ सा, ध - - निॅ सां रें 'गॅं रें
सां निॅ प म गॅ म रे सा। रें 'गॅं रें, सां रें सां निसां, नि सां नि, नि सां नि ध निॅ, नि सां नि, प निॅ प म प,
प निॅ प, निॅ प म गॅ म, गॅ म ध नि सां रें 'गॅं रें सां निॅ प म गॅ म रे सा। निॅ ध नि सां निॅ ध, ध निॅ
सां रें सां नि नि सां रें 'गॅं रें सां, नि सां रें सां निॅ ध ध निॅ सां निॅ प म, म प निॅ प म गॅ गॅ म रे सा
नि़ सा - -। नि़ सा गॅ म ध निॅ सां रें 'गॅं 'गॅं रें, रें रें सां, सां सां निॅ, निॅ निॅ प प प म, म म गॅ, म म
रे सा नि़ सा। नि़ सा गॅ म ध निॅ सां रें 'गॅं मं पं मं 'गॅं मं रें सां निॅ निॅ प म गॅ म रे सा।

———

राग बहार

ख्याल—तिलवाड़ा

गीत—१

स्थायी—नई रुत नई फूली, नई बेली बहारियाँ, नयो कलियन को, नयो नयो रस ।

अन्तरा—नये नये द्रुमन के, नये नये पतवा, ता पर भंवरी, भयो बस ॥

स्थायी

० | | | | १३ | | |
| | | | मम | प-नि॒ पम | नि॒-नि॒पमपनि॒प | ग॒म
| | | | नई | रुऽ• त• | नऽ•••••• | ई•

× | | नि॒ | | ५ | | म | म
नि॒--प पसांसां-- | ----रें | सां | | नि॒ प | ---नि॒ | मपग॒- | ग॒मग॒ मनि॒प
फूऽऽ• •• •ऽऽ | ऽऽऽऽ• | ली | — | न ई | ऽऽऽ• | बे••ऽ | •••ली•ब

० मम | | सा | | १३ | | | म
ग॒ग॒ | मप मम -- | रे | सां | सांरें नि॒सां- | — | मम | -म पनि॒ प
हा• | •• ••ऽऽ | रि | याँ | न••योऽ | ऽ | कलि | ऽय•• न

× म | ग॒ | | | ५ | | |
ग॒ | म | ग॒म नि॒ - | ---ध | ध-नि॒ सां- | ----नि॒ | नि॒सां रें--ग॒ | रें सां
को | • | न• यो ऽ | ऽऽऽ• | नऽ• यो | ऽऽऽऽ• | ••••ऽऽ• | ••

० | | | १३ | | |
ग॒ग॒रेंसांरें-सांनि॒ | सां--ध | --नि॒नि॒रें | सांरेंनि॒सांधनि॒सां- | नि॒ प | | |
•••••ऽर• | स ऽऽ• | ऽऽऽ• •• | •••••••ऽ | न ई | | |

अन्तरा

०				१३			
				(म गँ) गँ म	(म) निँ - ध नि -	सां सां	- - - सां
				न ये	न ऽ • ये ऽ	द्रु म	ऽ ऽ ऽ न

×				५			
सां	- - सांसां -	(रें) नि सां	- - - - - नि	निसां रें - -	(सां) रें - - - गँ	रें	सां
के	ऽ ऽ •• ऽ	न ये	ऽ ऽ ऽ ऽ •	न • • ऽ ऽ	• ऽ ऽ ऽ •	ये	•

०				१३			
सां- -निँ रेंनिँसां- -	निँ - - - ध	(प) ध	—	(म) सां -सां गँ -	- - गँ म	(सां) रें	सां
पऽऽ • त• • ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ•	•	ऽ	ता ऽ• • ऽ	ऽ ऽ • •	प	र

×				५			
सां- -निँ रेंनिँसां- -	निँ - - - ध	(प) ध	—	(निँ) ध -निँ सां-	- - - - निँ	निसां रें - - गँ	रें सां
भँ ऽऽ • व• • ऽऽ	रा ऽ ऽ ऽ•	•	ऽ	भ ऽ• योऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ •	•• •ऽ ऽ•	• •

०				१३			
गँगँरेंसांरें-सांनिँ	सां - - - ध	- - - निँ निँ रें	सांरें निसांधनिँसां-	निँ प			
• ••• •ऽ ब •	स ऽ ऽ ऽ•	ऽऽऽ • • •	•• •• •• •ऽ	न ई			

—

आलाप

१)

×				५			
				सा	म	नि॑-नि॑पमप--	म ग॑म
०				**१३**			
नि॑	---ध	नि	सां	नि॑प	प-नि॑पम	नि॑-नि॑पमपनि॑प	ग॑म
				न ई	रुऽ • त •	नऽ • • • • • •	ई •

२)

×				५			
				रे नि॑ रे सा	म	प म नि॑ म प	ग॑ म
०				**१३**			
नि॑-नि॑पमप--	म ग॑म	म नि॑	---ध	ध नि सां नि	सां	नि॑ नि॑ प प	-पमग॑म
						न ई रु त	ऽन• ई•

३)

×				५			
				रे रेसा नि सा-	प पम ग॑म-	नि॑ नि॑पमप-	ग॑ म
०				**१३**			
म-मनि॑-ध	धनि सां-नि	निसां रें-सां	सांरें गं॑रेंसांरेंनिसां-	नि॑-धधनि सां	म-मधनि सां	नि॑ नि॑ प प	-पमग॑म
						न ई रु त	ऽन• ई•

४)

×				५			
		सारेनि॑सा,मपग॑म	नि॑--ध	धनि सां --	नि सां ---	सांरेंनि सां-नि॑प	मप नि॑प ग॑म
०				**१३**			
नि॑--ध	धनि सां --	निसां-नि,सांरें-सां	रेंगं॑-रेंसांनिसां-	नि॑ नि॑ प प	नि॑ -प ग॑ म	-सांरेंनि॑सां-	नि॑ -पग॑म
				न ई रु त	ऽ न ई ऽ	ऽन• ई• ऽ	ऽन ई•

५)

×				५			
		सामग॑म,मनि॑धनि	सां --रें सां	नि॑--ध	धनि सां --	निसां-नि,सांरें-सां,	रेंगं॑-रें,सां-रें

०				१३			
नि॑ - - ध	धनि सां - -	गं॑ - मं रें सां	नि॑ - - ध, धनिसां -	- - धनि सां	- - धनि सां -	नि॑ नि॑ प प	नि॑ - प ग॑ म
						न ई रु त	ऽ न ई ऽ

× ६)				५			
		पमग॑म - मरेसा	नि॑ सा-सा, सांनिधनि	- नि॑, पमग॑म - म	रेसानि॑ सा-सा, पमं	गंमं - मंरेंसांनिसां	- सां, निसांनि॑नि॑ - नि॑

०				१३			
पमग॑म-मरेसा	नि॑ सा-सा, धनिसां -	नि॑ नि॑ प प	- - - - ध नि सां -	नि॑ नि॑ प प	- - - - सांरेंनिसां	नि॑ नि॑ प प	नि॑ - प ग॑ म
		न ई रु त	ऽ ऽ ऽ ऽ • • • ऽ	न ई रु त	ऽऽऽऽ • • • •	न ई रु त	ऽ न ई •

× ७)				५			
		ममरेसारेसानिसा	म	नि॑नि॑प, मपम, ग॑म	नि॑ - - ध	मंमंरेंसांसांरेंनिसां	गं॑ - - मं

०				१३			
ग॑ - - म	ग॑ - - म	ग॑ - - ग॑म	नि॑ - - धनि	सां - - ग॑म	नि॑ - - धनि	सां - - नि॑ प	नि॑ - प ग॑ म
		रु•	त ऽ ऽ न•	त ऽ ऽ न•	त ऽ ऽ न•	ई ऽ रु त	ऽ न ई •

× ८)				५			
		सा म - म	म प - पनि॑ मप	ग॑ - ग॑ म	म	म नि॑ - ध नि	सां - रें गं॑ रें
		न ई ऽ रु	त ऽ न• ई•	फू ऽ • •	ली	न ई ऽ• बे	• ऽ• ली ब

०				१३			
सां निसांरेंनिसां	नि॑ - - ध	मं सां गं॑ - गं॑	मं रें - सां	नि सां - नि॑ ध	धनि॑नि॑ध, निसांसांनि	सांरेंगं॑ रेंसांनिरेंसां	नि॑ - - ध
हा • •• रि •	यां ऽ ऽ •	न ई ऽ क	लि य ऽ न	को ऽ • •	न• ई•, न• ई•	क•लि• य • न•	को ऽ ऽ •

×				५			
म नि॑ ध, नि	सां नि, सां रें	सां, रें - गं॑ रें	सां - - नि॑ प	ग॑ - - ग॑म	नि॑ - - धनि	सां - - गं॑ रें	सां - - नि॑ प
• • •, •	• •, • •	•, • ऽ न•	यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ र•	सा ऽ ऽ न •	यो ऽ ऽ न•

०				१३			
ग॑ - - ग॑म	नि॑ ऽ ऽ धनि	सां - - गं॑ रें	सां - - नि॑ प	ग॑ - - ग॑म	नि॑ - - धनि	सां - नि॑ प	- प ग॑ म
यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ र•	स ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ न •	यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ र•	स ऽ रु त	ऽ न ई •

बोल तानें

१)

×				५			
				गॅरेंसानि सां	निॅप पम प	गॅम निॅप	गॅ गॅम रेसा
				नई रु• त	नई फू• ली	नई बेली	बहा• रियां
०				१३			निॅ
सा सा सा	म म म	निॅ ध नि	सां – – नि सां	रें– – गॅ रें	सां धनिरेंसां	निॅ निॅ प प	– प गॅ म
न ई क	लि य न	को • न	यो ऽ ऽ न •	यो ऽऽ र •	स • • • •	न ई रु त	ऽ न ई •

२)

×				५			
				गॅ--म रें--सां	गॅ- -म रे- -सा	सामगॅम, मनिॅधनिॅ	निसांरेंसां
				नऽऽई रुऽऽत	नऽऽईफूऽऽली	न• ई•, बे•ली•	बहा रियां
०				१३			निॅ
गॅरेंसां--निॅप	-गॅ गॅम रे सा	म – – गॅम	निॅ – – धनि	सां – – गॅरें	सां-धनिरेंसां	निॅ निॅ प प	– प गॅ म
न •योऽऽकलिऽ	य न• को न	यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ न•	यो ऽ ऽ र•	स ऽ •• ••	न ई रु त	ऽ न ई ऽ

३)

×				५			
				सा म म	प गॅ म	धनि सां - सां	गॅ म रें सां
				न ई रु	त न ई	फू • • ऽ ली	न ई बे ली
०				१३			निॅ
प निॅ प म प	गॅ गॅम निॅ प	गॅ-गॅम रेसा, गॅरें	सां – – निॅ प	गॅ - - ध नि	सा - - गॅरें	सा – निॅ प	– प गॅ म
ब हा रि• यां	न ई• क लि	यऽन•को•, न•	यो ऽ ऽ न •	योऽऽ न •	यो ऽऽ र•	स ऽ रु त	ऽ न ई •

४)

×				५		मं	
		ममरेंसां रेंरेंसानि	सांसानिॅ धनिॅ निॅपम	गॅ गॅम निॅ प	गॅ गॅम रेसा	सा गॅ – गं	म रें निरेंसां
		न•ई• रु•त•	न • ई • फू• ली•	न ई• बे ली	ब हा• रियां	न ई ऽ क	लि य न• को
०				१३			निॅ
म निॅ –ध नि	सां - रेंनि सां	म निॅ –ध नि	सां – रेंनि सां	म निॅ –ध नि	सां - रेंनि सां	नि निॅ प प	– प गॅ म
न यो •• र	सा ऽ •• •	न यो ऽ• र	स ऽ •• •	नयो ऽ• र	स ऽ •• •	न ई रु त	ऽ न ई •

× ५)
| | | 'गँ रें 'गँरें सां रें | सांनिसां निँधनिँ | ५ प म प मगँ म | म निँ ध नि सां | सा - सा म - म | म - प गँ - म |
| | | न • ई रु • त | न • ई फू • ली | न • ई बे•ली | ब हा • रि यां | न ऽ ई कऽलि | यऽ न कोऽन |

० निँधनिसांनिसां | रें 'गँ रे सां - म | निँधनिसांनिसां | रें 'गँ रें सां - म | १३ निँधनिसांनिसां | रें 'गँ रें सां - - | निँ निँ प प | निँ - प गँ म
यो•नयो • न | यो • र स ऽ न | यो•नयो • न | यो • र स ऽ न | यो•नयो•न | यो • र स ऽ ऽ | न ई रु त | ऽ न ई •

× ६)
| | | सा सा म म | प म निँ प म गँ म - | ५ निँ---निँनिँपम | गँम गँमधनिसां– | ध नि सां रें | 'गँ रें सां रें |
| | | न ई रु त | न • • • ई • • ऽ | फूऽऽऽ •• •• | •• ली••• •ऽ | न ई बे • | • ली • ब |

० नि सां नि सां रें | निँ ध | ध नि सां रें | 'गँ 'गँम रें सां | १३ निसांनिरेंसां | नि – ध धनि सां | निँ निँ प प | निँ – प गँ म
हा • • रि | यां ऽ | न ई क लि | य न • को • | न यो • र • | स ऽ• •• • | न ई रु त | ऽ न ई •

× ७)
| | | | | ५ प - गँ- - -मम | रेंसानिसा,रें-सां- | - -रेंरें सांनिँधनिँ | पं- गँ- - -मंमं |
| | | | | नऽ ईऽऽऽरु• | त• • •, नऽईऽ | ऽऽफू•ली••• | नऽईऽऽऽबे • |

० रेंसांनिसां,रें-सां- | - -रेंरेंसांनिँधनिँ | सानिसा, मगँम | प निँप, म गँ म | १३ निँधनि,सांनिसां | रें 'गँ रें,सांनिसां | सांनिसां,निँधनि | पमप, मगँम
ली• • •,बऽहाऽऽऽरि•यां • •• | न • ई, क•लि | य • न, को• न | यो• न,यो •न | यो • र, स • • | न • ई,न • ई | रु•त, न • ई

× सां - - -रें | नि सां | सानिसा,मगँम | प निँप, प गँ म | ५ ” | ” | ” | ”
फू ऽ ऽ ऽ• | ली | न • ई, क•लि | य • न, को• न |

० ” | ” | ” | ” | १३ ” | ” | ” | ”

× ८)
| | | | ५ | 'गँ 'गँ मं पं | 'गँ 'गँम रें सां | गँ गँ म प |
| | | | | न ई रु त | न ई• फू ली | न ई बे ली |

० गँ गँ म रे सा | सानिरेसा मगँपम | निँपसांनिँ रेंसां गँ- | रें गँ रें गँ सांरेनिसां | १३ धनि पधनि सां | निसां - निँ - -प- | निसां-निँ- -प- | निसां-निँ-पमप
ब हा• रि यां | न • ई • कलि• | य • न • को••ऽ | न• यो• र• स• | न• यो• र स | न ई ऽ रु ऽऽतऽ | न ई ऽरुऽऽतऽ | नईऽ रुऽतनई

तानें

× १)		सा – म – – – नि॑ नि॑	प म ग॑ म रे सा नि॒ सा
५ म – नि॑ – – – ध नि	सां रें 'गॅं रें सां नि सां –	सां – 'गॅं – – – 'गॅं मं	पं मं 'गॅं मं रे सां नि सां
० 'गॅं – – मं रें सां नि सां	ग॑ – – म रे सा नि॒ सा	ग॑ म ध नि सां – ध नि	सां – – – ग॑ म ध नि
१३ सां – ध नि सां – – –	ग॑ म ध नि सां – ध नि	सां – – – नि॑ – नि॑ – न ऽ ई ऽ	प प – प ग॑ म रु त ऽ न • ई
× २)	•	'गॅं रें सां रें, रें सा नि सां	सां नि ध नि॑, 'ग रें सां रे
५ रें सा निसां, सां नि॑ध नि॑	नि॑ प म प, 'गॅं रें सां रें	रें सां नि सां, सां नि॑ध नि॑	नि॑ प म प, प म ग॑ म
० 'गॅं रें सां रें, रें सां नि सां	सां नि॑ ध नि॑, नि॑ प म प	प म ग॑ म, म रे सा रे	रे सा नि॒ सा, प म ग॑ म
१३ नि॑ प म प, सां नि॑ ध नि॑	रें सां नि॒ सां, 'गॅं रें सां रें	रें सा नि॒ सा, नि॑ प म प	ग॑ म रे सा, – प ग॑ म ऽ न ई ऽ
× ३)		रें 'गॅं रें सां रें सा नि सां	सां रें सा नि सां नि॑ ध नि॑
५ नि सां नि प नि॑ प म प	प नि॑ प म प म ग॑ म	म प म ग॑ म रे सा रे	ग॑ म रे सा रे सा नि॒ सा
० रे रे सा रे रे सा नि॒ सा	प प म प प म ग॑ म	नि॑ नि॑ प नि॑ नि॑ प म प	सां सां नि॑ सां नि॑ ध नि॑
१३ सां रें 'गॅं रें सां नि सां –	सां रें 'गॅं रें सां नि सां –	सां रे 'गॅं रें सा नि सां –	नि सां – नि॑ – प ग॑ म न ई ऽ रु ऽ त न ई

× ४)			प – गॅ – – – म म
५ रे सा नि॒ सा, रें – सां –	– – रें रें सां निॅ ध निॅ	पं – गॅं – – – मं मं	रें सां नि सां, निॅ निॅ प म
० ग म रे सा, नि॒ सा गॅ म	ध नि सां – ध नि सां –	निॅ निॅ प प – प गॅ म	नि॒ सा गॅ म ध नि सां –
		न ई रु त ऽ ब ई •	आ • • • • • • ऽ
१३ ध नि सां – निॅ निॅ प प	– प गॅ म, नि॒ सा गॅ म	ध नि सां –, ध नि सां –	निॅ निॅ प प – प गॅ म
• • • ऽ न ई रु त	ऽ न ई •, आ • • •	• • • ऽ • • • ऽ	न ई रु त ऽ न ई •

× ५)			
५ सा – म –	निॅ – ध नि सां	मं गॅं – मं –	पं मं गॅं मं रें सां नि सां
आ ऽ • ऽ	• ऽ • • •	• ऽ • ऽ	• • • • • • • •
० निॅ निॅ प म गॅ म रे सा	नि॒ सा गॅ म ध नि सां –	सां नि सां निॅ ध निॅ	प म प म गॅ म
• • • • • • • •	• • • • • • ऽ •	न • ई न • ई	रु • त न • ई
१३ प सां – – – रें	नि सां	सा – म –	निॅ – ध नि सां
फू ऽ ऽ ऽ ऽ •	ली	आ ऽ • ऽ	• ऽ • • •
× मं गॅं – मं –	पं मं गॅं मं रें सां नि सां	निॅ निॅ प म गॅ म रे सा	नि॒ सा गॅ म ध नि सां –
• ऽ • ऽ	• • • • • • • •	• • • • • • • •	• • • • • • • ऽ
५ सां नि सां निॅ ध निॅ	प म प म गॅ म	प सां – – – रें	नि सां
न • ई न • ई	रु • त न • ई	फू ऽ ऽ ऽ ऽ •	ली

०			
सा – म –	निॅ – ध नि सां	मं ॅग – मं –	पं मं ॅगॅ मं रें सां नि सां
आ ऽ • ऽ	• ऽ • • •	• ऽ • ऽ	• • • • • • • •
१३			
निॅ निॅ प म गॅ म रे सा	नि़ सा ग म ध नि सां	सां नि सां निॅ ध निॅ	प म प म गॅ म
• • • • • • • •	• • • • • • •	न • ई न • ई	रु • त न • ई
×			
६)		ॅगॅ ॅगॅ रें, रें रें सां नि सां,	सां सां नि सां सां नि ध निॅ,
५			
निॅ निॅ प, निॅ निॅ प म प,	प प म, प प म गॅ म़	म म रे म, म रे सा रे,	रे रे सा, रे रे सा नि़ सा,
०			
सा रे नि़ सा, म प गॅ म़	प निॅ म प, नि सां ध निॅ	सां रें नि सां, ॅगॅ मं रें सां	निॅ निॅ प म गॅ म रे सा
१३			
ॅगॅ मं रें सां निॅ निॅ प म	गॅ म रे सा, ॅगॅ मं रें सां	निॅ निॅ प म गॅ म रे सा	नि सां – निॅ – प म प
			न ई ऽ रु ऽ त न ई
×			
७)		गॅ – – म ध नि सां निॅ	ध – – निॅ सां रें ॅगॅ रें
५			
ॅगॅ – – मं पं मं ॅगॅ म	रें सां नि सां, निॅ निॅ प म	गॅ म रे सा, म निॅ ध सां	निॅ रें सां रें नि सां ध निॅ
०			
सां – – – म निॅ ध सां	निॅ रें सां रें नि सां ध नि	सां – – –, म निॅ ध सां	निॅ रें सां रें नि सां ध निॅ
१३			
सां – – –, ॅगॅ – मं –	रें सां गॅ म	रे सां नि सां	निॅ प गॅ म
न ऽ ई ऽ	रु त न ई	रु त न ई	रु त न ई
×			
८)		रे सा सा, म गॅ गॅ, म गॅ	गॅ, प म म, प म म, निॅ
५			
प प, निॅ प प, सां निॅ निॅ	सां निॅ निॅ, रें सां सां, रें सां	सां, म ॅगॅ ॅगॅ, मं मं रें सां	निॅ निॅ प म गॅ म रे सा

० मं मं रें सां, निॅ निॅ प म	गॅ म रे सा, मं मं रें सां	निॅ निॅ प म गॅ म रे सा	रे सा सा, म गॅ गॅ, प म
			न • •, ई • •, रु त
१३ म, निॅ प प, प म म, निॅ	प प, सां निॅ निॅ, रें सां सां,	सां रें रें, नि सां सां, प निॅ	निॅ, म प प, म प गॅ म
•, त • •, न • •, ई	• •, रु • •, त • •,	न • •, ई • • रु •	•, त • •, न • ई •

राग बहार

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—सघन बनी अमराई बड़ी भोर भई तामें पुकारे मलियाँ,
किनी वाले लाल झूले।

अन्तरा—ले ले ले ले चितवा, भंवरन के पास, कोयलिया बोले कूक कूक,
सरस बसन्त मोरे, विरहिन के संग भाम फिरत,
मोरा जिया डोले डोले।

स्थायी

×				५				०				१३			
								म	म	प	प म	नीॅ-नीॅ प	मप - -	गॅ	म
								स	घ	न	ब •	नी ऽ • •	• • ऽऽ	अ	म
नीॅ	—	—	ध	ध नी	सांनी	सां	—	नीॅ	नीॅ	प	प	नीॅ-नीॅ प	मप — —	गॅ	म
रा	ऽ	ऽ	•	• •	• •	ई	ऽ	स	घ	न	ब	नी ऽ • •	• • ऽऽ	अ	म
नीॅ	— ध	ध नी	सांनी	सां	सां	नीॅ ध	सां नी	—	रें	गॅ नीॅ	सां	प नीॅ	—	प म	नीॅ प
रा	ऽ •	• •	• •	ई	ब	ड़ी	भो	ऽ	र	भ	ई	ता	ऽ	मे •	पु

×				५				०				१३			
गॅ	—	म प	म म	रे	रे	सा	—	—	—	—	सां	नीॅ	सां	नीॅ	रें सां
का	ऽ	रे •	• •	म	लि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कि	नी	वा	ऽ	ले •
नीॅ	—	ध	नी	सां रें	गॅं रें	सां नी	सां	निॅ	निॅ	प	प म	निॅ निॅ प	म प	गॅ	म
ला	ऽ	•	ल	भू •	• •	ले •	•	स	घ	न	ब •	नी ऽ • •	• •	अ	म

अन्तरा

×				५				०				१३			
म	गॅ	(म)गॅ	म	नीॅ	—	(ध)नी	—	सां	नी	सां	—	प	नीॅ	प	नी
ले	•	ले	•	ले	ऽ	ले	ऽ	चि	त	वा	ऽ	भ	व	र	न
सां	सां	—	सां	प	रें	सां	रें	नीॅ	सां	प	नीॅ	प	प	नीॅ	प
के	पा	ऽ	स	को	य	लि	था	बो	ले	कू	•	क	कू	•	क
प	म	प	नीॅ प	गॅ	—	म	गॅ	म प	गॅ म	—	रे सा	(सा)रे	—	सा	—
स	र	स	ब •	सं	ऽ	•	त	मो •	• •	ऽ	• •	•	ऽ	रे	ऽ
सा	रे	नी̱	सा	म	—	म	म गॅ	म	नीॅ	ध	नि	सां	सां	रें	नीॅ
बि	र	ह	न	के	ऽ	सं	ग •	भा	•	म	फि	र	त	मे	रो
सां	मं गॅं	मं	रें	सां	रें	सां रें	नीसां	निॅ	निॅ	प	प भ	निॅ - निॅ प	मप - -	गॅ	म
जि	या •	•	डो	ले	डो	ले •	• •	स	घ	न	ब •	नी ऽ • •	ऽऽ • •	अ	म

तानें

× | | | | ५ | | | | ० | | | | १३ | | |

१) | | | | | | | | | गॅम | धनिॅ | सां | निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम |
| | | | | | | | | | | | सघ | नब | नी• | अम |

२) | | | गॅम | धनिॅ | सां | गॅम | धनिॅ | सां | गॅम | धनिॅ | सां | ” | ” | ” | ” |

३) | | | | निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा | ऩिसा | गॅम | धनिॅ | सां | ” | ” | ” | ” |

४) | | | | | | | | | | | | | | गॅमं | रेंसां |

निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा | गॅमं | रेंसां | निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा | गॅमं | रेंसां | निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा |

निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम | निॅ | –ध | निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम | निॅ | –ध | निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम |
स घ | नब | नी• | अम | रा | ऽ• | सघ | नब | नी• | अम | रा | ऽ• | सघ | नब | नी• | अम |

५) | | | | रेंरें | सांरें | सांनिॅ | सांसां | निसां | निॅप | निॅनिॅ | पम | पप | मगॅ | मम | रेसा |

ऩिसा | गॅम | धनि | सां | ऩिसा | गॅम | धनि | सां | ऩिसा | गॅम | धनि | सां | निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम |
| | | | | | | | | | | | सघ | नब | नी• | अम |

६) | | | | | | | | | गॅ | – | मंमं | रेंसां | निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा |
निॅसा | गॅम | धनिॅ | सां | – | धनिॅ | सां | – | ऩिॅसा | गॅम | धनिॅ | सां | – | धनिॅ | सां | – |

ऩिसां | गॅम | धनिॅ | सां | — | धनिॅ | सां | — | निॅनिॅ | पनिॅ | प प | –निॅ | म प | –निॅ | म प | गॅम |
| | | | | | | | सघ | नब | नी | ऽब | नी | ऽब | नी | अम |

७) | | ऩिसा | गॅम | धनि | सां | सा | सां | निॅनिॅ | पम | गॅम | रेसा | निॅनिॅ | पनिॅ | मप | गॅम |
| | | | | | | | | | | | सघ | नब | नी• | अम |

८) | | | | | | | | ऩिसा | गॅम | धनि | निसां | गॅमं | पमं | गॅमं | रेंसां |

× ५ ० १३

नि॑ नि॑ | प म | ग॑ म | रे सा | रें ग॑ | रें, सां | रें सां, | नि सां | नि॑, प | नि॑ प, | म प | म, ग॑ | म म | रे सा | रें ग॑ | रें, सां

रें सां, | नि सां | नि, प | नि॑ प | म प | म, ग॑ | म म | रे सा | रें ग॑ | रें, सां | रें सां, | नि सां | नि, प | नि॑ प | म प | म, ग॑

म म | रे सा | नि॑ नि॑ | म प | सां | — | नि॑ नि | म प | सां | — | नि॑ नि॑ | म प | सां | — | ग॑ | म
| | स ध | न ब | नी | ऽ | स ध | न ब | नी | ऽ | स ध | न ब | नी | ऽ | अ | म

९) | | | | | | | | ग॑ रें | रें सां | रें सां | सां नि॑ | सां नि॑ | नि॑ प | नि॑ प | प म

प म | म ग॑ | म म | रे सा | रे सा | नि सा | प म | ग॑ म | नि॑ प | म प | सां नि॑ | ध नि॑ | रें सां | नि सां | सां नि॑ | ध नि॑

नि॑ प | म प | प म | ग॑ म | रे सा | नि सा | नि॑ नि॑ | म प | सां | ग॑ म | नि॑ | — ध | ग॑ म | नि॑ | — ध | ग॑ म
| | —• | | | | स ध | न ब | नी | अ म | रा | ऽ ई | अ म | रा | ऽ ई | अ म

१०) | | | | ग॑ ग॑ | रें, रें | रें सां, | सां सां | नि॑, नि॑ | नि॑ प, | प प | म, म | म ग॑ | म म | रे सा | नि सा

ग॑ म | ध नि॑ | सां रें | ग॑ मं | पं मं | ग॑ मं | रें सां | नि॑ नि॑ | प म | ग॑ म | रे सा | नि सा | नि॑ नि॑ | प नि॑ | म प | ग॑ म
| | | | | | | | | | | | स ध | न ब | नी• | अ म

११) | | | | | | | | | रे सा | सा, म | ग॑ ग॑ | प म | म, नि॑ | प प, | सां नि॑ | नि॑ रे

सां सां | सां रें | रें, नि | सां सां, | प नि॑ | नि॑, म | प प, | ग॑ म | म, सा | रे रे | नि सा | सा — | नि॑ नि॑ | प नि॑ | म प | ग॑ म
| | | | | | | | | | | | स ध | न ब | नी • | अ म

———

राग बहार

त्रिताल

गीत—३

स्थायी—बहार आई बेलरियाँ फूली, रही अमरैयाँ मोरी, बाग बाग मलियाँ बोले,
'लाम्बे थाम्बे थाम्बे', किनी वाले लाल, बेलो वाले राम।

अंतरा—डार डार अरु पात पात पर, भँवर फिरत मँडराये, अमरैयन पर बैठ कोयलिया,
कूकत सबद सुनाए, पियु पियु करत पपीहरा, चहूँ ओर हसन बसन्त फुलाए, अत मन भाए।

स्थायी

×				५				०				१३			
											नी	सां	नी	सां रें	नी सां
											ब	हा	र	आ •	• •
नी˘	ध	नी˘	—	प	प	म	गँ	प	—	म	म	—	—	—	म
प	•	बे	ऽ	ल	रि	याँ	•	फू	ऽ	ली	•	ऽ	ऽ	ऽ	र
प ध	नी˘	ध	प	म	प	गँ	—	म प	गँ म	—	रे सा	रे	—	सा	—
ही •	•	अ	म	रै	•	याँ	ऽ	मो •	•	ऽ	• •	•	ऽ	री	ऽ
रे नि	—	सा	सा	म	—	—	म	म	म	प	नी˘	म	प	गँ	म
बा	ऽ	•	ग	बा	ऽ	ऽ	ग	म	लि	याँ	•	बो	•	ले	•
म	गँ	म	म	नी˘	प	नी˘	प	नी˘	प	नी˘	प	म	प	नी	सां
ला	•	•	म्बे	था	•	•	म्बे	था	•	•	म्बे	कि	नी	वा	ले
गं	—	मं मं	रें	सां	सां	नी	रें सां	नी˘	—	- ध	नी	सां	सां	सां रें	नी सां
ला	ऽ	• लु	बे	लो	वा	•	ले •	रा	ऽ	ऽ म्	ब	हा	र	आ •	• •

अंतरा

×				५				०				१३			
(म) ग॑	—	म	नी॑	—	ध	नी	नी	सां	—	सां	सां	—	सां	सां	सां
डा	ऽ	र	डा	ऽ	र	अ	रु	पा	ऽ	त	पा	ऽ	त	प	र
म	नी॑	ध	नी	सां	सां	सां	सां	रें	रें सां	नी सां	—	नी॑	—	ध	—
भँ	व	र	फि	र	त	मँ	ड	रा	• •	• •	ऽ	ये	ऽ	•	ऽ
म	म	म	—	प	प	प	प	(नी॑) म	—	प	नी॑	प म	नी॑ प	ग॑	म
अ	म	रै	ऽ	य	न	प	र	बै	ऽ	ठी	को	य •	लि •	या	•
म	सा	सा	सा	(प) म	म	प	प म	नी॑	नी॑ प	म प	—	(ग॑) नी॑	—	प	—
कू	•	क	त	स	ब	द	सु •	ना	• •	• •	ऽ	•	ऽ	ए	ऽ
ग॑	ग॑	(ग॑) म	—	नी॑	ध	नी	—	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	—
पि	•	यु	ऽ	पि	•	यु	ऽ	क	र	त	प	पै	य	रा	ऽ
नी॑	नी॑	नी॑	नी॑ ध	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी॑	ध
च	हूँ	ओ	र •	ह	स	न	ब	सं	•	त	फु	ला	•	ये	•
नी	सां	रें	सां	रें	रें सां	नी सां	—	नी॑	—	ध	नी	सां	सां	नी सां	रें सां
अ	त	म	न	भा	• •	• •	ऽ	ये	ऽ	•	ब	हा	र	आ •	• •

राग बहार

त्रिताल

गीत—४

स्थायी—सकल बन गगन पवन चलत पुरवारो री, माई रुत बसन्त आई फूलन छाई बेलरियाँ,
डार डार अंबुवन की कोयलिया रही पुकार, और अंबुवा बूंदन झर लाई।
स्थायी—मुरवा बोले कुंजन कुंजन, कलियन कलियन भौंरा, बरन बरन बिरवन की कलियाँ,
पिक शुक चातक रहे पुकार, और हरखत निरखत कुंवर कन्हाई ॥*

स्थायी

×				५				०				१३			
प	रें	सां	रें	नि	सां	नि	सां	प	(प) निॅ	प	म	म	(निॅ) प	गॅ	म
स	क	ल	ब	न	ग	ग	न	प	ब	न	च	ल	त	पु	र
म	निॅ	ध	निॅ	(प) ध	—	नि	—	सां	—	—	—	—	रें नि	सां	निॅ ध
वा	•	•	•	•	ऽ	रो	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा •	•	ई •
नि	नि	नि	नि	—	नि	सां	– रें	(नि) सां	—	(प) निॅ	—	प	प निॅ	(प) म	प
रु	त	ब	सं	ऽ	त	आ	ऽ •	ई	ऽ	फू	ऽ	ल	न •	छा	•
(प) गॅ	—	(म) गॅ	म	रे	रे	सा	—	(सा) रे	नि॒	सा	म	—	म	म	गॅ
ई	ऽ	बे	•	ल	रि	यां	ऽ	डा	•	र	डा	ऽ	र	अं	बु
म	निॅ	ध निॅ	प ध	नि	नि	नि	नि	सां	—	सां	सां नि	रें सां	निॅ	—	ध
व	न	की •	• •	•	को	य	लि	या	ऽ	र	ही •	पु •	का	ऽ	र
सां	(मं) गं	(मं) गं	मं	रें	—	सां	नि	सां	नि	सां	रें	सां	सां	(निॅ) ध	निॅ
औ	र	अं	बु	वा	ऽ	बूं	ऽ	द	न	•	झ	र	ला	•	ई

---

* इस चीज में तार सप्तक में शुद्ध गान्धार का प्रयोग बहार के उस रूप को निर्दर्शित करता है जो लोकगीतों में प्रचलित है।

अंतरा

×				५				०				१३			
गॅ	गॅ	म	—	निॅ	ध	नि	—	सां	—	सां	सां	सां	—	सां	सां
मु	र	वा	ऽ	बो	•	ले	ऽ	कुं	ऽ	ज	न	कुं	ऽ	ज	न
रें	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि रें	रें सां	निॅ	—	—	—	—	ध
क	लि	य	न	क	लि	य	न	भौं •	• •	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	•
गॅ	गॅ	म	प	निॅ	सां	निॅ	प	गॅ	गॅ	म	—	रे	रे	सा	—
ब	र	न	ब	र	न	बि	र	व	न	की	ऽ	क	लि	याँ	ऽ
सा	रे	नि॒	सा	म	—	म	म	म	निॅ ध	नि	सां	—	सां	सां	निं
पि	क	शु	क	चा	ऽ	त	क	र	हे •	पु	का	ऽ	र	औ	र
सां	गं	गं	मं	रें	रें	सां	सां	नि	सां	नि सां	रें	सां	सां	ध	निॅ
ह	र	ख	त	नि	र	ख	त	कुँ	व	र •	•	क	न्हा	•	ई

———

राग मालवकौशिक (मालकौंस)

आरोहावरोह—नि़ॅ सा गॅ म धॅ निॅ सां। सां निॅ धॅ म, गॅ म गॅ सा।

जाति—औड़व-औड़व।

ग्रह—आलाप में मध्य षड्ज और तानों में मन्द्र निषाद।

अंश—मध्यम। गान्धार धैवत—अनुगामी स्वर।

न्यास—मध्यम।

विन्यास—मध्य षड्ज।

मुख्य अंग—सा म—गॅ ∽∽ सा गॅ म गॅ सा।

समय—मध्य रात्रि।

प्रकृति—शान्त, गंभीर।

विशेष विवरण

मालवकौशिक एक परम मधुर एवं शान्त-गंभीर भाव को निदर्शित करने वाला पुरुष राग है। राग और रागिनियों द्वारा राग-वर्गीकरण करने वाली परंपरा में इसे छः रागों में से एक मुख्य राग माना है। संभवतः मालवकौशिक का ही अपभ्रंश रूप 'मालकौंस' होगा।

इसमें ऋषभ पंचम का समूचा त्याग है और गान्धार धैवत, निषाद—ये कोमल स्वर हैं। सम, गॅ धॅ और मनिॅ—ये तीन स्वर-जोड़ियां इस राग में परस्पर संवादित होती हैं। जिन-जिन रागों में इस प्रकार की स्वर-जोड़ियां आपस में संवाद करती हैं, वे राग प्राकृतिक माधुर्य से ओतप्रोत रहते हैं। निसर्ग का विकास संवाद से ही होता है और हुआ है। रागों में भी इसी प्रकार के संवाद, शास्त्र सम्मत हैं। इसीलिये मालव-कौशिक सब को परिचित, सब के हृदय को झंकृत करने वाला और आदर पाने वाला राग है।

इस राग का प्राचीन ग्रन्थोक्त रूप दर्शन करने से ऐसा प्रतीत होता है मानो इसे वीर और भयानक इसका निदर्शक माना हो। संभव है उस काल के 'मालवकौशिक' में निराले स्वर रहे हों। आजकल दाक्षिणात्य पद्धति में 'मालकौंस' को 'हिण्डोल' कहते हैं। औत्तरात्य हिण्डोल का स्वरूप वीर रस का द्योतक अवश्य है, क्योंकि उसमें तीव्र धैवत, तीव्र मध्यम और तीव्र निषाद का प्रयोग होता है। किन्तु अधुना प्रचलित 'मालव-कौशिक' में गान्धार, धैवत निषाद कोमल हैं और आरंभ ही में सा–म का उच्चार शान्त-गंभीर भाव का द्योतक है। तद्वत् अवरोह करते समय भी सां निॅ धॅ–म, यों धैवत को दीर्घ करके मध्यम पर उतरने से वही शान्त-गंभीर भाव निदर्शित होता है। इससे इस राग के स्वरों, उनके उठाव, ठहरने के स्थान इत्यादि—सब बातों को देखते हुए यह राग शान्त रस और गंभीर भाव का द्योतक प्रतीत होता है। मध्य रात्रि के प्रशान्त वातावरण के लिये यह विशेष रूप से प्रशस्त भी है। कारण इसमें जागृति प्रदान करने वाले ऋषभ पंचम का त्याग, गांधार, धैवत, निषाद का कोमलत्व, षड्ज-मध्यम का संयोग और मध्यम का अंशत्व तथा न्यासत्व—ये सब प्रशान्त वातावरण को पुष्ट करने वाले उपादान हैं।

इस राग के स्वरों पर आघात नहीं देना चाहिए। मींड का अधिकतर उपयोग करना चाहिये और मन्द गति से आन्दोलित गमक की बरतना चाहिये। इससे रस-भाव के निर्माण में सहायता मिलेगी।

राग मालवकौशिक

मुक्त आलाप

गॅ नि नि नि धॅ सा नि नि नि सा

(१) सा । नि सा । सा ध ~ नि सा – नि सा । सा – नि गॅ सा धॅ ~, ध नि सा–

नि धॅ नि ध नि ध

ध ~, म ध नि, ध सा ।

सा सा नि नि नि नि नि सा गॅ सा नि

(२) गॅ गॅ सा नि सा ध ~, ध नि गॅ सा ध ~, ध नि सा गॅ – सा, नि गॅ – सा

नि साम नि नि ध ध

ध ~, ध नि गॅ ~ सा, – नि, गॅ सा ध, म ध नि – ध सा ।

गॅ गॅ म

(३) नि सा गॅ ~, गॅ सा नि ध ~, ध नि सा गॅ ~, म गॅ सा नि –, गॅ सा नि ध,

धॅ नि नि ध नि

ध नि–ध, नि सा – नि, सा गॅ–, म गॅ सा गॅ सा नि – ध, ध नि नि सा – सा गॅ –, म गॅ गॅ सा, गॅ सा

नि ध नि

सा नि, सा नि नि ध, ध नि सा ।

नि सा गॅ सा सा गॅ गॅ सा

(४) ध नि सा म –, म गॅ सा नि म –, म गॅ म सा, गॅ सा गॅ नी सा ध, नि सा म –,

सा सा सा सा सा नि नि नि ध नि सा गॅ नी

म म गॅ गॅ, गॅ गॅ सा सा, सा सा नि नि, ध नि सा म – गॅ ~ नी सा ।

(५) गॅ सा नि ध नि सा म –, सा नि गॅ सा म –, नि ध सा नि गॅ सा म –, ध म नि ध

सा सा सा ध

सा नि गॅ सा म –, म गॅ गॅ सा म –, म गॅ गॅ सा सा नि म –, म गॅ गॅ सा सा नि नि ध म – म –,

म गॅ सा नि ध म –, म ध नि सा म –, म गॅ सा नि ध, म ध नि सा म –, म गॅ – म सा – गॅ नि –

गॅ गॅ गॅ म गॅ नी

सा ध, नि सा म–, म गॅ ~, सा गॅ म गॅ – सा ।

गॅ म नि म म सा

(६) नि सा गॅ म ध ~ म, म – ध म म गॅ ~ गॅ – म, ध म म गॅ ~, सा गॅ गॅ म ध म म

म नी ध सा म नी सा गॅ नि

गॅ ~, ध नि, नि सा, सा गॅ, गॅ म, ध म म गॅ ~, नि सा सा गॅ गॅ म म ध ~ ध म म गॅ ~,

सा गॅ म गॅ – म धॅ म म गॅ ~ सा, गॅ म म–, गॅ म धॅ धॅ – म, धॅ म म गॅ ~, सा म गॅ –, म सा।

(७) नि॒ सा गॅ म धॅ ~, सा नि॒ गॅ सा म गॅ, धॅ म धॅ ~, नि॒ सा गॅ म धॅ ~,

म धॅ धॅ –, गॅ, – गॅ म धॅ, धॅ,– सा – म गॅ गॅ –, गॅ – धॅ म म –, म – निॅ धॅ धॅ –, नि॒ –गॅ सा, सा–

म गॅ, गॅ – धॅ म, म निॅ धॅ –,निॅ धॅ – म, म – धॅ धॅ – निॅ, निॅ धॅ – म, धॅ धॅ म गॅ म धॅ –, निॅ धॅ – म, धॅ

म गॅ, म गॅ सा।

(८) नि॒ सा गॅ म धॅ ~, निॅ सां धॅ ~, धॅ निॅ सां निॅ – धॅ, म धॅ निॅ म निॅ निॅ धॅ,

गॅ म धॅ गॅ धॅ धॅ म, सा गॅ म सा म म गॅ, गॅ म धॅ गॅ धॅ धॅ म, म धॅ निॅ म निॅ निॅ धॅ, गॅ म म, म धॅ धॅ

धॅ निॅ निॅ धॅ –; गॅ म धॅ निॅ सां, निॅ धॅ; धॅ निॅ सां धॅ सां निॅ म धॅ निॅ म निॅ धॅ –; सा नि॒ गॅ सा म गॅ

धॅ म निॅ धॅ निॅ धॅ; नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां निॅ धॅ, म धॅ निॅ धॅ, धॅ म गॅ ~, सा गॅ म गॅ सा।

(९) नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां, सां निॅ निॅ धॅ –; सां सां निॅ निॅ, निॅ निॅ धॅ धॅ; धॅ धॅ म म, धॅ –,

धॅ – धॅ म म, निॅ – निॅ धॅ धॅ, सां – सां निॅ निॅ, निॅ धॅ धॅ –; सा म – म गॅ गॅ, गॅ धॅ – धॅ म म, म निॅ –

निॅ धॅ धॅ, ध सां–सां निॅ निॅ, निॅ धॅ धॅ –; सा गॅ म, सा म म गॅ, गॅ म धॅ, गॅ धॅ धॅ म, म धॅ निॅ, म निॅ निॅ धॅ

धॅ निॅ सां, धॅ सां सां निॅ, निॅ धॅ धॅ –; धॅ – सां, सां निॅ निॅ, म – निॅ, निॅ धॅ धॅ, गॅ – धॅ, धॅ म म,

सा – म, म गॅ गॅ नी॒ – गॅ, गॅ सा सा धॅ नी॒ सा – नी॒ सा।

(१०) नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां–निॅ सां; नि सा गॅ म धॅ निॅ सां–निॅ सां, सा–गॅ–म–धॅ–निॅ–सां निॅ सां,

गँ गँ म धँ निँ
सा–गँ सा, गँ–म गँ, म धँ म, धँ निँ धँ, निँ सां निँ, सां-निँ सां; नि़ँ सा गँ म धँ-, सा गँ म धँ निँ-गँ म धँ निँ सां,

म धँ निँ सां नि़ँ म गँ निँ सा सा
गँ म धँ निँ सां–निँ सां; सा गँ–, म धँ, निँ सां–निँ सां; सा म गँ, गँ धँ म, म निँ धँ, सां–निँ सां; गँ गँ सा

नि़ँ सा सा सा म म गँ म धँ धँ धँ निँ
सा, म म गँ गँ, धँ धँ म म, निँ निँ धँ धँ, सां सां निँ निँ, सां–निँ सां, निँ सां–निँ धँ–; म धँ निँ –, निँ धँ—म,

म म नीँ
धँ म ग, सा।

(११) नि़ँ सा गँ म धँ निँ सां–निँ सां; सां नि़ँ नि़ँ गँ सा सा म गँ गँ धँ म म निँ धँ धँ सां निँ निँ

सां–निँ सां; सा नि़ँ नि़ँ, गँ सा सा गँ सा सा, म गँ गँ म गँ गँ, धँ म म धँ म म, नि़ँ धँ धँ सां निँ निँ सां–

नि़ँ सा गँ म धँ
निँ सां; सा गँ, गँ म, म धँ, धँ निँ, निँ सां–निँ सां, गँ गँ सां, निँ सां, निँ गँ सां, सां सां निँ, धँ निँ धँ सां निँ–

धँ निँ सां गँ
निँ निँ धँ म धँ म निँ धँ–, म धँ निँ सां। निँ सां; सां निँ गँ सां, निँ धँ सां नि, धँ म निँ धँ, सां निँ

सां निँ निँ म धँ निँ सां
गँ सां गँ निँ सां धँ निँ सां–निँ सां, नि़ँ सां गँ, गँ–सां सां सां निँ धँ–, नि़ँ सा गँ म, ध, निँ, सां–

गँ
निँ सां; निँ सां गँ गँ सां निँ सां निँ–, म धँ सां सां निँ धँ निँ, धँ, गँ म धँ धँ म गँ म गँ, नि़ँ–सा।

सा म धँ निँ सां म
(१२) निँ सा गँ म धँ निँ सां में—म–, धँ निँ सां में–, में गँ सां निँ धँ निँ सां में—गँ, म–गँ, सां–

सां धँ गँ
गँ सां निँ–सां निँ, धँ–निँ धँ, म–धँ म, धँ निँ सां में–, में गँ गँ सां, सां निँ निँ धँ, धँ म म–म–, गँ में

गँ में गँ, सां गँ सां गँ सां, निँ सां निँ सां निँ, धँ निँ धँ निँ धँ, म धँ निँ सां में–, में गँ सां निँ–सां

सा
गँ सां निँ धँ–निँ, सां निँ धँ म–धँ, निँ धँ म गँ–म, धँ म गँ सा–गँ, नि़ँ सा गँ म धँ निँ सां में–, म–, धँ म गँ,

नी सा
म ग सा, धँ नि़ँ सा।

राग मालवकौशिक

मुक्त तानें

नि॒ सा गँ म गँ सा नि॒ सा, गँ म गँ म, गँ सा नि॒ सा। गँ म म, गँ म म, गँ सा, नि॒ सा गँ गँ सा गँ म म

गँ म गँ सा। सा नि॒ गँ सा गँ म – म गँ म गँ सा। गँ सा नि॒ सा म गँ सा गँ गँ म – म गँ म गँ सा।

सा गँ गँ सा गँ म म गँ गँ म – म गँ म गँ सा। सा गँ म, सा – म म गँ गँ म धँ, गँ – धँ धँ म

गँ म गँ सा। सा नि॒ ध॒ नि॒, सा म – म गँ म – म गँ म गँ सा। नि॒ ध॒ ध॒, सा नि॒ नि॒, गँ सा सा, म गँ गँ

गँ म गँ सा। नि॒ सा गँ म धँ म म गँ गँ म गँ सा, नि॒ सा गँ म धँ धँ – धँ म धँ म म गँ म गँ सा।

सा गँ म गँ गँ म धँ म धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा। सा सा म म गँ म गँ सा, गँ गँ धँ धँ म धँ म गँ,

म म निँ निँ धँ निँ धँ म, गँ म गँ सा। गँ – – म गँ सा नि॒ सा धँ – – निँ धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा।

नि॒ सा गँ म धँ – – निँ धँ निँ धँ म गँ म गँ सा। सा गँ म सा गँ म, गँ म गँ म धँ, गँ म धँ, म धँ

म धँ निँ, म धँ निँ, धँ निँ धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा, नि॒ सा गँ म धँ निँ निँ, धँ निँ निँ, धँ निँ धँ म गँ म

गँ सा नि॒ सा। गँ सा सा, म गँ गँ, धँ म म, निँ धँ धँ निँ निँ धँ म गँ म गँ सा। नि॒ नि॒ नि॒, सा सा सा, गँ गँ

गँ, म म म धँ धँ धँ, निँ निँ निँ, धँ निँ धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा। गँ सा निँ सा म गँ सा गँ धँ म गँ म

निँ धँ म धँ धँ म गँ म गँ म गँ सा। सा गँ गँ, गँ म म, म धँ धँ, धँ निँ निँ निँ निँ धँ म, गँ म गँ सा।

निँ सा गँ म धँ निँ सां निँ धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा। सा गँ सा गँ गँ म गँ म म धँ म धँ ध निँ ध निँ

निँ सां निँ सां धँ नि धँ म गँ म गँ सा। सा गँ सा गँ गँ म गँ म, सा गँ सा गँ गँ म गँ म म धँ म धँ

सा गँ सा गँ गँ म गँ म म धँ म धँ धँ निँ धँ निँ, सा गँ सा गँ गँ म गँ म म धँ म धँ धँ निँ धँ निँ

निँ सां निँ सां, धँ निँ धँ निँ म धँ म धँ गँ म गँ म सा गँ सा गँ नि॒ सा नि॒ सा। सा नि॒ गँ सा म गँ धँ म

निँ धँ सां निँ धँ निँ धँ म गँ म गँ सा। नि॒ सा गँ म गँ सा, गँ म धँ निँ धँ म म धँ निँ सां निँ धँ, धँ नि

धँ म गँ म गँ सा नि॒ सा। नि॒ सा गँ सा नि॒ सा, गँ म धँ म गँ म म धँ नि धँ म धँ, धँ नि सां निँ धँ निँ

म धँ निँ धँ म धँ, गँ म धँ म गँ म नि॒ सा गँ सा नि॒ सा – –। नि॒ सा गँ म धँ निँ सां मं मं गँ, गँ सां

सां निॅ, निॅ धॅ धॅ म, म गॅ गॅ सा – सा। निॅ सा सा, सा गॅ गॅ, गॅ म म, म धॅ धॅ धॅ निॅ निॅ, निॅ

सां सां, सां 'गॅ 'गॅ, 'गॅ मं मं मं 'गॅ 'गॅ, 'गॅ सां सां, सां निॅ निॅ, निॅ धॅ धॅ धॅ म म, म गॅ गॅ, गॅ सा

सा, सा निॅ सा। निॅ सा गॅ म – म गॅ म गॅ सा निॅ सा, सा गॅ म धॅ – धॅ म धॅ म गॅ सा गॅ, गॅ म धॅ नि

– निॅ धॅ निॅ धॅ म गॅ म म धॅ निॅ सां –सां निॅ सां नि धॅ म धॅ धॅ निॅ धॅ म गॅ म, म धॅ म गॅ सा गॅ

गॅ म गॅ सा निॅ सा – –। सा निॅ, गॅ सा म गॅ, धॅ म निॅ धॅ, सां निॅ 'गॅ सां मं 'गॅ मं – – – 'गॅ मं मं, सां

'गॅ 'गॅ, निॅ सां सां, धॅ निॅ नि म धॅ धॅ, गॅ म म, सा गॅ गॅ निॅ सा सा। निॅ सा गे म धॅ – – – म धॅ निॅ सां

मं – – – 'गॅ मं 'गॅ सां सां 'गॅ सां निॅ निॅ सा निॅ धॅ धॅ निॅ धॅ म म धॅ म गॅ गॅ म गॅ सा। सा म – म

गॅ म गॅ सा, गॅ धॅ – धॅ म धॅ म गॅ म निॅ – निॅ धॅ निॅ धॅ म धॅ सां – सां निॅ सां निॅ धॅ निॅ 'गॅ – 'गॅ

सां 'गॅ सां निॅ सां मं – मं 'गॅ मं 'गॅ सा निॅ 'गॅ – 'गॅ सां 'गॅ सां निॅ धॅ सां – सां निॅ सां निॅ धॅ म निॅ – निॅ

धॅ निॅ धॅ म गॅ धॅ – धॅ म धॅ म गॅ सा म – म गॅ म गॅ सा। सा सा सा, म म म, सां निॅ धॅ निॅ धॅ म

गॅ म गॅ सा, गॅ गॅ गॅ, धॅ धॅ धॅ, 'गॅ 'गॅ सां 'गॅ सां निॅ धॅ निॅ धॅ म, म म म निॅ निॅ निॅ, मं मं 'गॅ म 'गॅ सां

सां निॅ धॅ म गॅ म गॅ सा। सा – गॅ – म – – म गॅ – म – धॅ – – धॅ म – धॅ – निॅ – – निॅ धॅ – निॅ –

सां – – सां सां – 'गॅ – मं – – मं 'गॅ मं 'गॅ सां सां 'गॅ सां निॅ निॅ सां निॅ धॅ धॅ निॅ धॅ म म धॅ म गॅ

गॅ म गॅ सा। गॅ सा सा, म गॅ गॅ, धॅ म म, नि धे धॅ सां निॅ निॅ, 'गॅ सां सां, मं 'गॅ गॅ, मं – मं, मं 'गॅ 'गॅ सां

'गॅ सां सां नि सां निॅ निॅ धॅ निॅ धॅ धॅ म धॅ म म गॅ म गॅ गॅ सा। निॅ सा गॅ म धॅ निॅ निॅ सां

'गॅ मं 'धॅ निॅ *सां निॅ 'धॅ मं 'गॅ मं 'गॅ सां सां निॅ धॅ म गॅ म गे सा।

---

* यह तारतर षड्ज है।

राग मालवकौशिक (मालकंस)

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—अब छब देखी अपने पिया की निकसत गंगा वाउ के केस ॥
अन्तरा—कानन कुंडल गल बिच माला, कैसे सोहे मृगछाला, अंग बभूत भस्म भेस ॥

स्थायी

०		६		१२	
		नी॒ – – – सा म म ग॒	म – ग॒	मनी॒ नी॒ ध॒ – – ध॒म	म ग॒ – – म – ध॒ – (ध॒ नी॒)
		अ ऽ ऽ ऽ ब • • •	ऽ छ	ब • • • ऽऽ • •	• • ऽ ऽ दे ऽ • ऽ

×		०		५	
नी॒ सां	नी॒ सां – – –	सां ग॒ नी॒ – नी॒ सां – –	– – – नी॒ ध॒ – म –	म ध॒ नी॒ सां	ध॒ – – म ध॒ – नी॒ – (नी॒ नी॒)
खी	• • ऽ ऽ ऽ	अ • • ऽ प • ऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ • नेऽपिऽ	या • ऽ •	• ऽऽ • ऽ • • ऽ

०		६		१२	
ध॒ म	ध॒ म म ग॒ –	म ग॒ ग॒ सा –	सा ग॒ नी॒ सा –	नी॒ – – ग॒ सा – – – (नी॒)	नी॒ सा ध॒ नी॒
की •	• • • • ऽ	• • • • ऽ	• • • ऽ	नि ऽ ऽ • क ऽ ऽ ऽ	स त

×		०		५	
ग॒ सा नी॒ सा ग॒ म	– ग॒ – ग॒ म	ग॒ म	ग॒ म – – –	ध॒-ध॒म ग॒मध॒म मग॒ग॒-	– – – ग॒
गं • • • •	ऽ • ऽ • •	गा	• • ऽ ऽ ऽ	वाऽ • • • • • • • • • • ऽ	ऽ ऽ ऽ उ

०		६		१२	
ग॒मम नी॒ नी॒ ध॒	ध॒ म म ग॒ – – – –	– म ध॒ नी॒ सां	ध॒ नी॒ ध॒नी॒ सां – – – –	ग॒ नी॒ सा – –	नी॒ सां
के • • • • •	• • • • ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ के • • •	• ऽ • • • ऽऽऽऽ	स • ऽ ऽ	•

×		०		५	
सांगं नीं - नीं सां - - | - - - नीं धँ - म -		म धँ नीं सां	धँ - - म धँ - नीं -	धँ म	धँ म म गँ -
अ • • ऽ प • ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ • ने ऽ पि ऽ		या • • •	• ऽ ऽ • • ऽ • ऽ	की •	• • • • ऽ

०		६		११	
म गँ गँ सा -	गँ नी सा	नी - - - सा म म गँ	म - गँ	मनीं नीं धँ - - धँ म	म गँ - - म - धँ - (धँ नीं)
• • • • ऽ	• •	अ ऽ ऽ ऽ ब • • •	ऽ छ	• • • • ऽ ऽ • •	• • ऽ ऽ दे ऽ • ऽ

अंतरा

×		०		५	
		म - - - धँ म म गँ	- - म धँ - नीं - (नीं सां)	नीं सां	- - नीं सां सां
		का ऽ ऽ ऽ • • • •	ऽ ऽ ऽ • न ऽ न ऽ	कुं	ऽ ऽ • • ड

०		६		११	
नीं सां	नी सां - - -	सांगं नीं - सां - - - -	- - नीं धँ - म -	म धँ नीं सां -	धँ - - म धँ - नीं - (नीं)
ल	• • ऽ ऽ ऽ	ग • • ऽ ल ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ • बि ऽ च ऽ	मा • • • ऽ	• ऽ ऽ • • ऽ • ऽ

×		०		५	
धँ म	धँ म म गँ -	म गँ गँ सा -	गँ नी सा	सा नि - - गँ सा (नि)	नीं सा धँ नीं
ला •	• • • • ऽ	• • • • ऽ	• •	कै ऽ ऽ • •	से •

०		६		११	
सा - - नी सा गँ म	- - - - - - - - गँम	गँ म	- - - म म	धँ - धँमगँमधँमगँगँ -	- - गँ गँ मं
सो ऽ ऽ • • • •	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ • •	हे	ऽ ऽ ऽ मृ ग	छा ऽ • • • • • • • • • ऽ	ऽ ऽ ला अं •

× मनी नी धॅ – ध म – | म गॅ – – गॅ – गॅ – | ० मधॅनी सां – सांसां – | गं सां – नी नी | ५ नी सां | नी सां

• • • • ऽ • • ऽ | • • ऽ ऽ ग ऽ ब ऽ | भू • • • ऽ • त ऽ | भ स्म भे | • | स

० सांगं नी – सां – – – | ६ – – – नी धॅ – म – | शेष स्थायी की तरह

अ • • ऽ पऽऽऽ | ऽ ऽ ऽ • ने ऽ पि ऽ |

राग मालवकौशिक

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—२

स्थायी—पीर न जानी वे पिया, देखी तेहारी अनोखी रीत।
अन्तरा—ऐसे निरमोही भइलवा बलमा, तुम उत समझा ही ये कवन गाँव की नीत।

स्थायी

० | | ६ | | ११ सा गॅ म धॅनिंसां निं सा गॅमधॅनिं सां – | धॅ गॅ निं सा – धॅ निं

| | | | पी • • • • • • ऽ | • • ऽर न

× धॅ म | मम – – – | ० म – धॅ म म गॅ | गॅ म – सा गॅ म | ५ म निं | सांनिं निं धॅ – – –

जा • | • • ऽ ऽ ऽ | • ऽ • • • • | ऽ • • • | • | • • • • ऽ ऽ ऽ

० – म, म धॅ | म धॅ निं सांनिं – – | ६ धॅ म | धॅ म म गॅ – – – | ११ – सा, सा गॅ | सा गॅ म धॅ म – –

ऽ •, नी• | • • • • • ऽ ऽ | वे • | • • • • ऽ ऽ ऽ | ऽ •, पि • | • • • • • ऽ ऽ

×		०		५	
गॅ सा	गॅ नि॒ सा – नि॒ –	नि॒ सा – – गॅ नि॒	सा नि॒ सा गॅ सा	नि॒ सा गॅ सा धॅ	– – ध॒ – – नि॒ – –
या •	• • ऽ दे ऽ	खी ऽ ऽ • ते	• हा • • •	• • • • री	ऽ ऽ अ ऽ ऽ नो ऽ ऽ

०		६		११	
सा म – –	धॅ म म गॅ – – सा	गॅ म धॅ धॅ गॅ म गॅ सा – – गॅ	गॅ नि॒ सा		
खी • ऽ ऽ	• • • • ऽ ऽ री	• • • • ऽ ऽ •	त •		

अंतरा

अन्तरा लेते समय स्थायी को निम्नलिखित ढङ्ग से पूरा करना होगा :—

×		०		५	
धॅ म	मम – – –	म – धॅ म म गॅ	गॅ म – सा गॅ म	गॅ सा	नि॒ सा – – –
जा •	•• ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ • • • •	ऽ • • •	• •	नी • ऽ ऽ ऽ

०		६		११	
सा म – – गॅ	म निॅ – –	सांनिॅ निॅ धॅ ~~	निॅ – धॅ निॅ सां	निॅ सां	– – – सां सां
ऐ ऽ ऽ •	से • ऽ ऽ	• • • • ऽ ऽ	ऽ नि र •	मो	ऽ ऽ ऽ • •

×		०		५	
निॅ सां – – –	सां सां सां – – निॅ	निॅ सां – –	निॅ निॅ – धॅ निॅ सां गॅ	सां – निॅ सां –	निॅ निॅ – धॅ धॅ निॅ – सांनिॅ
ही • ऽ ऽ ऽ	• • ऽ ऽ भ	इ • ऽ ऽ	• ऽ ल • • •	वा ऽ • • ऽ	ऽ ब ल • ऽ • •

०		६		११	
धॅ म	धॅ म म गॅ ~~	गॅ गॅ म –, नि॒ सा गॅ	धॅ निॅ सां म धॅ निॅ सां	निॅ सां – – –	* सानिॅ धॅ म गॅ म धॅ निॅ सां – धॅ निॅ सां – – –
मा •	• • • • ऽ ऽ	ऽ, तु म उ	त स म •	भा • ऽ ऽ ऽ	• • • • • • • • • ऽ • • • • • •

* यहाँ एक—षोडशांश लय-विभाग का प्रयोग है ।

× ० ५

४) | | नी॒ सागॅम – | मगॅसानी॒ – | सागॅमधॅ – | धॅमगॅसा –

० ६ ११

गॅमधॅनी – | नी धॅमग – | मग सानी॒ - - गॅसा पी• | मगॅ म – मगॅ •• • – पी• | धॅम धॅ –, नी धॅ • • • –, पी • | सांनी गॅ नीसा - धॅनी • • • • • ऽर न

× ०

५) | | सा गॅ म धॅ नी॒ सा गॅ म | नी धॅ ∿∿ | नीसा – – धॅनी॒ | गॅ म धॅ नी सा गॅ म धॅ

० ६ ११

∿∿ | म धॅ सांसां – | सां धॅ • | सा म गॅ – – | सा गॅ सा – – | सांनी गॅनी सां धॅनी पी • • • • र न

× ० ५

६) | | सा गॅ म धॅ नी॒ सा गॅ म | नी सां धॅ धॅ नी सां नी | नी सां | नीसां - - -

० ६ ११

सां नी धॅ सां नी धॅ म | म धॅ नी सां गॅ म धॅ नी | सां | नीसां - - - | म गॅ सा म गॅ सा नी॒ | गॅ म धॅ नी सा गॅ म धॅ

× ० ५

सां | नीसां - - - | सा नी॒ सागॅ सा नी॒ धॅ नी॒ | गॅ म धॅ नी सा गॅ म धॅ | नी सां | नीसां - - -

० ६ ११

सां नी धॅ सां नी धॅ म | नी –धॅ नी धॅ | धॅ म म गॅ – म | धॅ म गॅ धॅ म गॅ सा | नी सा – नी॒सा गॅम पी • •• | धॅनी सां धॅ नी •• • र न

×		०	
७)		म ध॑ नी॑ सा नी॑ ग॑ सा म ग॑ ध॑ म	सां ग॑ं मं मं नी॑ ध॑ सांनी॑ ग॑सां ग॑नी॑
५ सां	नी॑ सां – – –	० सा नी॑ नी॑, ग॑ सा सा, म ग॑	ग॑, ध॑ म म, नी॑ ध॑ सां नी॑
६ सां	नी॑ सां – – –	११ सानी॑ नी॑-ग॑सासा-मग॑ग॑-ध॑मम-	नी॑ध॑ध॑-सांनी॑नी॑-ग॑सांसां-ग॑नी॑नी॑-
× सां	नी॑ सां – – –	० ग॑ सां ग॑ं नी॑ – –	सां नी॑ सां ध॑– –
५ नी॑ ध॑ नी॑ म – –	ध॑ म ध॑ ग॑ – –	० म ग॑ म सा – – – नी॑ सा पी •	ग॑ म ध॑ नी॑ सां – ध॑ नी॑ • • • • • र न
६ सां ग॑ंनी॑ सां – –, नी॑ सा जा • • • ऽऽ, पी •	ध॑ ग॑ म ध॑ नी॑ सां – सां नी॑ • • • • • – र न	११ सां ग॑ं नी॑ सां – –, नी॑ सा जा • • • – –, पी •	ग॑ म ध॑ नी॑ सां – ध॑ नी॑ • • • • • – र न
× ८)		० सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां ग॑ं सां नी॑ सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां ग॑ं	नी॑ सां
५ नी॑ सां – – –,	सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां ग॑ं मं नी॑ सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां ग॑ं	० ग॑ं मं	मं ग॑ं सां नी॑ ध॑ म ग॑ सा
६ सा नी॑,	नी॑ सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां ग॑ं ध नी॑ सा ग॑ म ध॑ नी॑ सां	११ सां मं ग॑ं	ग॑ं सां नी॑ ध॑ म ग॑ सा नी॑
× नी॑ ध॑	नी॑ सा ग॑ म ध॑ नी॑ सा ग॑	० ध॑ नी॑ सां म ध॑ नी॑ सां	सां मं
५ ग॑ं सां मं ग॑ं ग॑ं सां	नी॑ ध॑ सां नी॑ नी॑ ध॑	० म ग॑ ध॑ म म ग॑	सा ग॑ सा नी॑ सा,
६ – – नी॑ सा ग॑ म ऽऽ पी • • •	ध॑ नी॑ सां ग॑ं मं – • • • • • ऽ	११ सा ग॑ म – ध॑ नी॑ पी • • ऽ पी •	सां – ध॑ नी॑ • ऽ र न

×　　　　　　　　०　　　　　　　　　　५

४) | | नी॒सागॅम – | मगॅसानी॒ – | सागॅमधॅ – | धॅमगॅसा –

०　　　　　　　　६　　　　　　　　　　११

गॅमधॅनी – | नीधॅमग – | मगसानी॒ - - गॅसा पी• | मगॅ म – मगॅ •• • – पी• | ध म ध –, नीधॅ • • • –, पी • | सानी गॅनीसा -धॅनी •• ••• ऽर न

×　　　　　　　　०

५) | | सा गॅ म धॅ नी॒सा॒ ग म | नी ध ~~ | नीसा – – धॅ नी॒ | गॅ म ध नी सा ग म ध

०　　　　　　　　६　　　　　　　　　　११

~~ | म ध सांसां – | सां ध | सा म गॅ – – | सा गॅ सा – – | सांनी गॅनी सां धॅनी पी • • • • र न

×　　　　　　　　०　　　　　　　　　　५

६) | | सा गॅ म धॅ नी॒ सा गॅ म | नीसां धॅ ध नी सां नी | नी सां | नीसां - - -

०　　　　　　　　६　　　　　　　　　　११

सां नी धॅ सां नी धॅ म | म धॅ नी सां गॅ म धॅ नी | सां | नीसां - - - | म गॅ सा म गॅ सा नी॒ | गॅ म धॅ नी सा ग म धॅ

×　　　　　　　　०　　　　　　　　　　५

सां | नीसां - - - | सा नी॒ सागॅ सा नी॒ धु॒ नी॒ | गॅ म धॅ नी सा ग म ध | नी सां | नीसां - - -

०　　　　　　　　६　　　　　　　　　　११

सां नी धॅ सां नी ध म | नी –ध नी ध | ध म म ग – म | धॅ म गॅ ध म ग सा | नी सा – नी॒सा गॅम पी • •• | धनी सां धनी •• • र न

× ६)		० सा गॅ – सा गॅ म – गॅ	म धॅ – म धॅ नीॅ – धॅ
५ (सां) नीॅ सां - नीॅ सां गॅं - नीॅ	(नीॅ) सां	० नीॅ सां – – –	सा गॅ गॅ सा, गॅ म म गॅ
६ म धॅ धॅ म, धॅ नीॅ नीॅ धॅ	(सां) नीॅ सां सां नीॅ, सां गॅं गॅं नीॅ	११ (नीॅ) सां	नीॅ सां – – –
× (सा) सा गॅ गॅ सा - सा, म नीॅ	(धॅ) (सां) नीॅ धॅ - धॅ, सां गॅं गॅं सां	० (धॅ नीॅ) – सां, म नीॅ नीॅ धॅ – धॅ	(नीॅ) सां
५ नीॅ सां – – –	(गॅं सां नीॅ) मं गॅं गॅं सां सां नीॅ – सां	० (सां नीॅ धॅ) गॅं सां सां नीॅ नीॅ धॅ – सां	(नीॅ धॅ म) सां नीॅ नीॅ धॅ धॅ म – नीॅ
६ (धॅ म गॅ) नीॅ धॅ धॅ म म गॅ - धॅ	(म गॅ सा) धॅ म म गॅ सा – – सा	११ सां – धॅ नीॅ सां –, सां – पी ऽ र न जा ऽ, पी ऽ	धॅ नीॅ सां –, सां – धॅ नीॅ र न जा ऽ, पी ऽ र न

———

५)

×		०	
		नि̱˘सा ग˘सा, सा ग˘म ग˘	ग˘म ध˘म, म ध˘ नि˘ध˘
		पी • • •, र • • •	न • • •, जा • • •
५		०	
ध˘नि˘सां नि˘, नि˘सां ग˘सां	सां ग˘मं गं˘, नि˘सां गं˘सां	ध˘नि˘सां नि˘, म ध˘नि˘ध˘	ग˘म ध˘म, सा ग˘म ग˘
नी • • •, वे • • •	पि • • •, या • • •	दे • • •, खी • • •	ते • • •, हा • • •
६		११	
नि̱˘सा ग˘सा, ग˘सा नि̱˘सा	म ग˘सा ग˘, ध˘म ग˘म	नि˘ध˘म ध˘, सां नि˘ध˘नि˘	गं˘सांनि˘सां, सांनि˘ध˘नि˘
री • • •, अ • नो •	खी • • •, री • • •	त • • •, पी • र न	पी • र न, पी • र न

६)

×		०	
		गं˘मं गं मं, सां गं˘सां गं˘	नि˘सां नि˘सां, ध˘नि˘ध˘नि˘
		पी • • •, र • • •	न • • •, जा • • •
५		०	
म ध˘म ध˘, ग˘म ग˘म	सा ग˘सा ग˘, नि̱˘सा नि̱˘सा	सा ग˘सा ग˘, ग˘म ग˘म	म ध˘म ध˘, ध˘नि ध˘नि˘
नी • • •, वे • • •	पि • • •, या • • •	दे • • •, खी • • •	ते • • •, हा • • •
६		११	
नि˘सांनि˘सां, सांगं˘सांगं˘	गं˘मं गं˘मं, सां गं˘सां गं˘	नि˘सां नि˘सां, ध˘नि ध˘नि˘	नि˘सां नि˘सां, ध˘नि˘ध˘नि˘
री • • •, अ • • •	नो • • •, खी • • •	री • • •, त • • •	पी • • •, र • न •

७)

×		०	
		गं˘मं गं˘ सां गं˘सां नि˘सां	सांगं˘सां नि˘सांनि˘ध˘नि˘
		पी • • र • • न •	जा • • नी • • वे •
५		०	
नि˘सां नि˘ध˘नि˘ध˘म ध˘	ध˘नि˘ध˘म ध˘म ग˘म	म ध˘म ग˘म ग˘सा ग˘	ग˘म ग˘सा ग˘सा नि̱˘सा
पि • • या • • दे •	खी • • ते • • हा •	री • • अ • • नो •	खी • • री • • त •
६		११	
सा ग˘सां नि˘सां नि˘ध˘नि˘	सां – – सां, सां गं˘सां नि˘	सां नि˘ ध˘नि˘सां – – सां	सां गं˘सां नि˘सां नि˘ध˘नि˘
पी • • र • • न •	जा ऽ ऽ नि, पी • • र	• • न • जा ऽ ऽ नि	पी • • र • • न •

× ८)		०		५	
		मं – गं मं – – सां –	गं – सां गं – – नि –	सां – नि सां – – धं –	नि – धं नि – – म –
		पी ऽ र • ऽ ऽ न ऽ	जा ऽ • नी ऽ ऽ वे ऽ	पि ऽ • या ऽ ऽ दे ऽ	खी ऽ • ते ऽऽ हा ऽ

०		६		११	
					नि
धं – मधं – – गं –	म – गंम – – सा –	मं – गं मं – – सां –	सां – – –, गं – सां मं	– – नि – धं – – –	सां – – सां – धं नि ऽ
रीऽ अ ऽऽ नो ऽ	खीऽ • रीऽ ऽ त ऽ	पी ऽऽ र ऽ ऽ न ऽ	जा ऽ ऽ ऽ, पी ऽ • र	ऽ ऽ न ऽ जा ऽ ऽ ऽ	पी ऽ ऽ • ऽ र न ऽ

× ९)		०		५	
		सा गं म नि सा गं म	– – गं म धं म गं सा	म धं नि गं म धं नि	– – धं नि सां निधंम
		पी • र न	ऽ ऽ जा • • • नी •	वे • पि या	ऽ ऽ दे • • • खी •

०		६		११	
नि सां गं धं नि सां गं	– – सांगं मंगं सांनि	निंसांगं सांनिधं, धं नि	सांनि धंम, मधं नि धं	म गं गं मधं म गं सा	धं निंसांगंसांनि धं नि
ते • हा •	ऽऽरी • • • अ •	नो • • • खी •, री •	• • त •, री • • •	त •, री • • • त •	पी • • • र • न ऽ

तानें

× १)		०	
		नि सा गं म धं धं म गं	सा नि ध नि सा गं म धं
५ नि नि धं म गं म गं सा	नि सा गं म धं नि सां नि	धं नि धं म गं म गं सा	नि सा ग म धं नि सां गं
९ सां गं सां नि धं नि धं म	गं म गं सा, नि सा गं म	धं नि सां गं नि सां – –	– धं नि धं
	पी • • •	• • • • • • ऽ ऽ	ऽ र • न

× २)		०	
		नि सा गं म गं सा, सा गं	म धं म धं, गं म धं नि
५ धं म, म धं नि सां नि धं	धं नि सां गं सां नि, सां गं	मं गं सां नि, नि सां गं सां	नि धं, धं नि सां नि धं म
९ म धं नि धं म गं, गं म	धं म गं सा, नि सा गं म	धं नि सां –, धं नि सां –	धं नि सां –, सां – धं नि
			• • • • पी ऽ र न

×   ०

३) | | नि॒ सा गॅ सा, सा गॅ म गॅ | गॅ म धॅ म, म धॅ निॅ धॅ

५

धॅ नि सां निॅ, निॅ सां, 'गॅ सां | सां 'गॅ मं 'गॅ, निॅ सां 'गॅ सां | धॅ निॅ सां निॅ, म धॅ निॅ धॅ | गॅ म धॅ म, सा गॅ म गॅ

६   ११

नि॒ सा गॅ सा, सा म गॅ सा | म धॅ म गॅ, म निॅ धॅ — | सां — — — धॅ — सां — | — — धॅ — सां — धॅ निॅ

| पी ऽ | • ऽ ऽ ऽ पी ऽ • ऽ | ऽ ऽ पी ऽ • ऽ र न

×   ०

४) | | नि॒ सा गॅ म धॅ म म गॅ | गॅ सा, नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ

५

निॅ धॅ धॅ म म गॅ गॅ सा | नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां निॅ | निॅ धॅ धॅ म म गॅ गॅ सा | नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां 'गॅ

६   ११

गॅ सां, सां नि॒, निॅ धॅ, धॅ म | म गॅ गॅ सा, नि॒ सा गे म | धॅ निॅ सां 'गॅ मं — — — | म — — — सां — धॅ निॅ

| पी • • • | • • • • • ऽ ऽ ऽ | पी ऽ ऽ ऽ पी ऽ र न

×   ०

५) | | नि॒ सा गॅ म धॅ निॅ सां — | — — धॅ निॅ सां निॅ धॅ म

५   ०

गॅ सा नि॒ सा, गॅ म धॅ निॅ | (नि) सां — 'गॅ — — — सां 'गॅ | सां निॅ धॅ म गॅ सा नि॒ सा | गॅ म धॅ (निॅ) निॅ (सां) सां — 'गॅ —

६   ११

('गॅ) मं — — — 'गॅ मं 'गॅ सां | सां निॅ धॅ म गॅ सा, सां — | — सां | — — सां — — धॅ — निॅ

| पी ऽ | ऽ पी | ऽ ऽ पी ऽ ऽ र ऽ न

×   ०

६) | | गॅ सा नि॒ सा, म गॅ सा गॅ | धॅ म गॅ म, निॅ धॅ म गॅ

५   ०

सां निॅ धॅ निॅ, 'गॅ सां निॅ सां | मं 'गॅ सां 'गॅ, 'गॅ सां निॅ सां | सां निॅ धॅ निॅ, निॅ धॅ म धॅ | धॅ म गॅ म, म गॅ सा गॅ

६   १५

गॅ सा नि॒ सा, नि॒ सा गॅ म | धॅ निॅ सां —, सां — धॅ निॅ | सां — — —, सां — धॅ निॅ | सां — — —, सां — धॅ निॅ

| पी ऽ र न | जा ऽ ऽ ऽ, पी ऽ र न | जा ऽ ऽ ऽ, पी ऽ र न

× ७)		० नि॒ सा गॅ म गॅ, सा गॅ सा	सा गॅ म धॅ म, गॅ म ग
५ गॅ म धॅ नि धॅ, म धॅ म	म धॅ नि सां नि, धॅ नि धॅ	० धॅ नि सां ʼगॅ सां, नि सां नि	सां गॅ सां, नि सां नि, नि सां
६ नि, धॅ नि धॅ, धॅ नि धॅ, म	धॅ म, म धॅ म, गॅ म गॅ	११ गॅ म गॅ, सा गॅ सा, नि॒ सा	सां – धॅ नि पी ऽ र न
× ८)		० गॅ म गॅ, गॅ म गॅ, गॅ म	गॅ सा नि॒ सा, धॅ नि धॅ, धॅ
५ नि धॅ, धॅ नि धॅ म गॅ म	ʼगॅ मं ʼगॅ, ʼगॅ मं ʼगॅ, ʼगॅ मं	० गॅ सां नि सां, धॅ नि धॅ, धॅ	नि धॅ, धॅ नि धॅ म गॅ म
६ गॅ म गॅ, गॅ म गॅ, गॅ म	गॅ सा नि॒ सा, नि॒ सा गॅ म पी • • •	११ धॅ नि सां –, नि॒ सा गॅ म र • न ऽ, पी • • •	धॅ नि सां – सां – धॅ नि र • न ऽ पी ऽ र न
× ९)		० धॅ म म, धॅ म म, धॅ म	म ग गॅ सा, सां नि नि, सां
५ नि नि, सां नि नि धॅ धॅ म	मं ʼगॅ ʼगॅ, मं ʼगॅ ʼगॅ, मं ʼगॅ	० गॅ सां, ʼगॅ सां सां नि, सां नि	नि धॅ, नि धॅ धॅ म, धॅ म
६ म गॅ, म गॅ गॅ सा, सां नि पी •	नि सां नि नि धॅ – – – • र • न जा ऽ ऽ ऽ	११ नि सां नि सां नि नि धॅ – पी • • र • न जा	– – सां नि नि धॅ नि नि ऽ ऽ पी • • र • न

राग मालवकौशिक

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—पग घूँगरू बाँध कर नाची ।

अंतरा १—विष का प्याला राणाजी ने भेजो, मीरा पींवत हासी ।

२—बाप कहे मीरा भई बावरीं, लोग कहें कुल नासी ।

३—मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, मैं तो तेरी दासी ।

स्थायी

×				५				०				१३			
						(म) गॅ	(गॅ) सा	गॅ	म	गॅ	सा	(गॅ) निॅ	सा	धॅ	निॅ
						प	ग	घूँ	ग	रू	बाँ	•	ध	क	र
सागॅ	निॅसा	गॅ	म	—	—										
ना•	••	ची	•	ऽ	ऽ										

अन्तरा

								(म) गॅ	(म) गॅ	म	—	(निॅ) धॅ	(निॅ) धॅ	निॅ	धॅ
								वि	ष	का	ऽ	प्या	•	ला	•
निॅ	सां	सां	निॅ	सां ग	निॅ	सां	—	निॅ	—	निॅ-	(निॅ) धॅ	निॅ	सां	सां	सां
रा	णा	जी	ने	मे •	•	जो	ऽ	मी	ऽ	रा	•	पी	•	व	त
धॅ	निॅ	धॅ	म	—	—										
हा	•	सी	•	ऽ	ऽ										

अन्य अन्तरे भी इसी प्रकार ।

मुखड़े के प्रकार

×			५				०				१३				
१)नि॒ सां	गॅ सा	सा गॅ	म गॅ	गॅ म	धॅ म	म गॅ	गॅ सा	गॅ	म	गॅ	सा	नि॒	सा	ध॒	नि॒
ना •	• •	ची •	• •	• •	• •	प •	ग •	घुं	घ	रू	बां	•	घ	क	र
२)गॅ सा	नि॒ सा	म गॅ	सा गॅ	धॅ म	गॅ म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	ची •	• •	• •	• •	प •	ग •								
३)गॅ सा	सा, म	गॅ गॅ	धॅ म	म, धॅ	गॅ गॅ	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	•, ची	• •	ना •	•, ची	• •	प •	ग •								
४)सा गॅ	गॅ सा	गॅ म	म गॅ	म धॅ	धॅ म	गॅ म	म गॅ	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	ची •	• •	ना •	• •	ची •	• •								
५)नि॒ सा	गॅ म	– म	सा गॅ	म धॅ	– म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	ऽ ची	ना •	• •	ऽ ची	प •	ग •								
६)म धॅ	म धॅ	– धॅ	गॅ म	गॅ म	– म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	ऽ ची	ना •	• •	ऽ ची	प •	ग •								
७)नि॒ सा	गॅ म	निॅ	धॅ	धॅ	म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	•	•	ची	•	प •	• •								
८)नि॒ सा	गॅ म	धॅ निॅ	सां	म	धॅ	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	• •	•	ची	•	प •	ग •								
९)नि॒ सा	गॅ म	धॅ निॅ	सां निॅ	निॅ धॅ	धॅ म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	• •	• •	ची •	• •	प •	ग •								
१०)सां सां	(धॅ) निॅ निॅ	– निॅ	नि निॅ	(म) धॅ म	– म	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	ऽ ची	ना •	• •	ऽ ची	प •	ग •								
११)नि॒ सा	गॅ म	धॅ निॅ	सां गॅ	(निॅ) सां	—	म गॅ	गॅ सा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	• •	• •	ची	ऽ	प •	ग •								
१२)धॅ म	निॅ धॅ	सां निॅ	गॅ सां	गॅ निॅ	सां	– गॅ	सां	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
ना •	• •	• •	• •	ची •	•	ऽ प	ग								

	×				५				०				१३			
१३)	सां गं	गं सा	नि सां	सां नि	धं नि	नि ध	म ध	ध म	”	”	”	”	”	”	”	”
	ना •	• •	ची •	• •	ना •	• •	ची •	• •								
१४)	नि सा	गं म	धं नि	सां गं	नि सां	धं नि	म धं	गं म	सा गं	गं म	गं	सा	”	”	”	”
	ना •	• •	• •	• •	ची •	• •	प •	ग •	घुं •	घ •	रू	बां				
१५)	सां गं	नि	नि सां	धं	धं नि	म	म धं	गं	सा गं	गं म	गं	सा	”	”	”	”
	ना •	ची	ना •	ची	ना •	ची	प •	ग	घुं •	घ •	रू	बां				

तानें

१)	नि सा	गं म	ध नि	सां	ध नि	सां नि	ध मं	गं सा	गं	म	गँ	सा	नि	सा	ध	नि
									घूं	ग	रू	बां	•	घ	क	र
२)	नि सा	गं म	धं नि	सां नि	धं नि	धं म	गं म	गं सा	”	”	”	”	”	”	”	”
३)	नि सा	गं म	धं नि	सां गं	सां नि	धं म	गं सा	नि सा	”	”	”	”	”	”	”	”
४)	नि सा	गं गं	सा गं	म म	गं म	ध धं	म ध	नि नि	धं नि	सां सां	नि सां	गं गं	सां नि	धं म	गं सा	नि सा
	—	गं गं	सां नि	धं म	गं सा	नि सा	—	गं गं	सां नि	धं म	गं सा	नि सा	गं म	गं सां	नि सा	ध नि
													घूं घ	रू बां	ऽ घ	क र
५)	नि सा	गं म	गं सा,	नि सा	गं म	धं म	गं सा,	नि सा	गं म	धं नि	धं म	गं सा,	नि सा	गं म	धं नि	सां नि
	धं म	गं सा,	नि सा	गं म	धं नि	सां गं	सां नि	धं म	गं सा,	नि सा	गं म	धं नि	सां गं	मं गं	सां नि	धं म
	गं सा,	नि सा	गं म	धं नि	सां	गं म	धं नि	सां	गं म	धं नि	सां	गं सा	गं म	गं सा	नि सा	ध नि
												प ग	घूं घ	रू बां	ऽ घ	क र

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
६) नि॒ॅ गॅ | गॅ सा | सा म | म गॅ | गॅ धॅ | धॅ म | म निॅ | निॅ धॅ

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
धॅ सां | सां निॅ | निॅ 'गॅं | 'गॅं सां | सां मं | मं 'गॅं | 'गॅं सां | सां निॅ

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
निॅ धॅ | धॅ म | म गॅ | गॅ सा | गॅ म | गॅ सा | नि॒ॅ सा | ध॒ॅ नि॒ॅ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　| घूं घ | रू बां | • ध | क र

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
७) सां गॅं सां | सां 'गॅं सां | निॅ सां निॅ | निॅ सां निॅ | धॅ निॅ धॅ | धॅ निॅ धॅ | म धॅ म | म धॅ म

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
गॅ म गॅ | गॅ म गॅ | सा गॅ सा | सा गॅ सा | गॅ म | गॅ सा | नि॒ॅ सा | ध॒ॅ नि॒ॅ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　| घूं घ | रू बां | ऽ ध | क र

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
८) नि॒ॅ सा गॅ | म गॅ सा | सा गॅ म | धॅ म गॅ | गॅ म धॅ | निॅ धॅ म | म धॅ निॅ | सां निॅ धॅ

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
निॅ सां निॅ | धॅ निॅ धॅ | म धॅ म | गॅ म गॅ | गॅ म | गॅ सा | नि॒ॅ सा | ध॒ॅ नि॒ॅ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　| घूं घ | रू बां | • ध | क र

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
९) म म गॅ | म गॅ सा | धॅ धॅ म | धॅ म गॅ | निॅ निॅ धॅ | निॅ धॅ म | सां सां निॅ | सां निॅ धॅ

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
'गॅं 'गॅं सां | 'गॅं सां निॅ | सां सां निॅ | सां निॅ धॅ | निॅ निॅ धॅ | निॅ धॅ म | धॅ धॅ म | धॅ म गॅ

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
गॅ म गॅ | म धॅ म | धॅ निॅ धॅ | निॅ सां निॅ | सां 'गॅं सां | 'गॅं मं गं | सां 'गॅं सां | निॅ सां निॅ

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
धॅ निॅ धॅ | म धॅ म | गॅ म गॅ | सा गॅ सा | गॅ म | गॅ सा | नि॒ॅ सा | ध॒ॅ नि॒ॅ
　　　　　　　　　　　　　　　　　　| घूं घ | रू बां | • ध | क र

×　　　　　　　　　　　　　　　　　　५
१०) निॅ सां 'गॅं | मं 'गॅं सां | सां 'गॅं मं | 'गॅं सां निॅ | धॅ निॅ सां | गॅं सां निॅ | निॅ सां 'गॅं | सां निॅ धॅ

०　　　　　　　　　　　　　　　　　　१३
म धॅ निॅ | सां निॅ धॅ | धॅ निॅ सां | निॅ धॅ म | गॅ म धॅ | निॅ धॅ म | म धॅ निॅ | धॅ म गॅ

×				५			
गॅ म धॅ	म, म धॅ	निॅ धॅ, धॅ	निॅ सां निॅ	निॅ सां गॅं	सां, धॅ निॅ	सां निॅ, म	धॅ निॅ धॅ,
०				१३			
गॅ म धॅ	म, सा गॅ	म गॅ निॅ	सा गॅ सा	गॅ म	गॅ सा	निॅ सा	धॅ निॅ
				घूं घ	रू बां	• ध	क र
×				५			
११) सा निॅ निॅ	गॅ सा सा	म गॅ गॅ	धॅ म म	निॅ धॅ धॅ	सां निॅ निॅ	गॅं सां सां	मं गॅं गॅं
०				१३			
गॅं सां सां	सां निॅ निॅ	निॅ धॅ धॅ	धॅ म म	गॅ म म	गॅ, म धॅ	धॅ म, धॅ	निॅ निॅ धॅ
×				५			
निॅ सां सां	निॅ, सां गॅं	गॅं सां, गॅं	मं मं गॅं	सां गॅं गॅं	सां, निॅ सां	सां निॅ, धॅ	निॅ निॅ धॅ,
०				१३			
म धॅ धॅ	म, गॅ म	म गॅ, सा	गॅ गॅ सा	गॅ म	गॅ सा	निॅ सा	धॅ निॅ
				घूं घ	रू बां	ऽ ध	क र
×				५			
१२) निसा	गॅम	धॅनिॅ	सांगॅं	मं	—	—	—धॅं
०				१३			
धॅंमं	मंगॅं	गॅंसां	सांनिॅ	—	—	गॅंसां	सांनिॅ
×				५			
निॅधॅ	धॅम	—	—	निॅधॅ	धॅम	मगॅ	गॅसा
०				१३			
गॅ	म	गॅ	सा	निॅ	सा	धॅ	निॅ
घूं	घ	रू	बाँ	ऽ	ध	क	र

———

राग मालवकौशिक

त्रिताल

गीत—४

स्थायी—कैसो नीको लागो माँ, ये बनरा मोरी आँखन माँ ।

स्थायी—आवो सखी मिल मंगल गावो, आज मोरे घर काज ।

स्थायी

×				५				०				१३			
										.	नि॒॑ग॑ कै •	नि॑ सां सो •	नी॑ ध॑ नी	ध॑ ग॑ •	म को
ध॑नि॑ ला •	— S	— S	— S	— S	— S	म ला	म गो	म ध॑ मां•	नी॑ सां • •	ध॑ नी॑ • •	नी॑ ग॑ कै •	नी॑ सां सो •	नी॑ ध॑ नी	ध॑ ग॑ •	म को
नी॑ ध॑ ला	— S	— S	— S	ग॑ ये	सा •	ग॑ ब	म न	ग॑ रा	— S	सा •	— S	सा मो	ग॑ सा • •	ग॑ री	म •
ग॑ आँ	— S	सा ख	सा न	नि॒॑सा मां •	ग॑ म • •	ध॑ नी॑ • •	सां •	ध॑ नी॑ •	नी॑ सां •	— S	नी॑ ग॑ कै •				

अन्तरा

				म ग॑ आ	— S	म वो	म स	नी॑ ध॑ खी	— S	नी॑ सां मि •	ध॑ नी॑ ल •	नी॑ सां मं	— S	सां ग	सां ल
सां ग॑ गा •	नी॑ •	नी॑ सां वो	— S	सां आ	ग॑ सां • •	ग॑ ज	मं मो	ग॑ रे	— S	सां घ	सां र	सां सां ग॑ ग॑ का •	नी॑ सां,सां • •	नी॑ सांनी॑, • •	ध॑ ध॑ नी॑नी॑ • •
म ध॑, ध॑ •, •	म ध॑ म, • •	म ग॑ ज •	ग॑ सा, • •	नि॒॑सा मां •	ग॑ म • •	ध॑ नी • •	सां •	ध॑ नी॑ •	नी॑ सां •	— S	नी॑ ग॑ कै •				

राग मालवकौशिक

त्रिताल

गीत—५

स्थायी—आद्या स्मर दमना शंकरा, डमरू वर करा, अमल निधान ॥
अंतरा—१—कंठी गरल नेत्री अनल, शीर्षि शशिधरा, डमरू वर० ॥
अंतरा—२—भूतात्मा, परात्परा, महेश्वरा, उमावरा, प्रवरा, नवरा, न वरा दूसरा,
पुरा करा, सुरा दिगम्बरा, शंकरा, डमरू वर०॥
अंतरा—३—ब्रह्माच्युत युत गाती, मुनिवर योगा, वरि वरि वाचे उनि पर राहे,
गिरिवर माहात्म्य अपार, श्रुतीस ना पार ॥

स्थायी

								(सा) नी	सा	(म) गँ	म	सा	नि	ध	नी
								आ	•	धा	•	स्म	र	द	म
सा	—	—	म	—	धँ म	म गँ गँ	—	म	(नीं) धँ	(सां) नीं	सां	नीं	धँ	(म) धँ	नीं
ना	ऽ	ऽ	शं	ऽ	क•	रा••	ऽ	ड	म	रू	व	र	क	रा	•
ध	म	गँ	म	ग	—	सा	—								
अ	म	ल	नि	धा	ऽ	ना	ऽ								

अंतरा—१

म	-धँ	म	—	म	(नीं) ध	(सां) नीं	सां	—	सां	—	नीं	ध	म	धँ	नीं
कं	ऽ•	ठी	ऽ	ग	र	ल	ने	ऽ	त्री	ऽ	अ	न	ल	शी	•
(धँ) नीं	—	नीं	ध	म	ग	—	—	म	(नीं) धँ	(सां) नीं	सां	नीं	ध	(म) ध	नीं
र्षि	ऽ	शि	शि	ध	रा	ऽ	ऽ	ड	म	रू	व	र	क	रा	•
ध	म	गँ	म	गँ	—	सा	—								
अ	म	ल	नि	धा	ऽ	ना	ऽ								

अंतरा—२

×				५				०				१३			
(नीॅ)सा	—	—	—	म	—	—	—	म	गॅ	—	म	(नीॅ)धॅ	—	—	नीॅ
भू	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	त्मा	•	ऽ	प	रा	ऽ	ऽ	त्प
नीॅ	सां	—	सां	सां	—	—	नीॅ	धॅ	म	—	धॅ	म गॅ	गॅ	—	म
रा	•	ऽ	म	हे	ऽ	ऽ	श्व	रा	•	ऽ	उ	मा•	•	ऽ	व
गॅ	—	—	—	म	गॅ	म	—	धॅ	म	धॅ	—	नीॅ	धॅ	नीॅ	—
रा	ऽ	ऽ	ऽ	प्र	व	रा	ऽ	न	व	रा	ऽ	न	व	रा	ऽ
सां	नीॅ	सां	—	सां	नीॅ	—	सां	धॅ	—	नीॅ	म	—	धॅ	गॅ	—
दू	स	रा	ऽ	पू	रा	ऽ	क	रा	ऽ	सु	रा	ऽ	दि	गं	ऽ
म	सा	—	म	—	धॅ म	म गॅ गॅ	—	म	(नीॅ)धॅ	(सां)नीॅ	सां	नीॅ	धॅ	(म)धॅ	नीॅ
ब	रा	ऽ	शं	ऽ	क•	रा••	ऽ	ड	म	रू		र	क	रा	•
धॅ	म	गॅ	म	गॅ	—	सा	—	नी॒ॅ	सा	गॅ	म	सा	नी॒ॅ	ध॒ॅ	नी॒ॅ
अ	म	ल	नि	धा	ऽ	ना	ऽ	आ	•	द्या	•	स्म	र	द	म

अंतरा—३

सा	—	सा	—	गॅ	सा	नी॒ॅ	सा	म	—	म	—	धॅ	म	गॅ	म
अ	ऽ	ह्या	ऽ	च्यु	त	यु	त	गा	ऽ	ति	ऽ	मु	नि	व	र
धॅ	—	धॅ	—	नीॅ	धॅ	म	धॅ	नीॅ	—	नीॅ	—	सां	नीॅ	धॅ	नीॅ
यो	ऽ	गा	ऽ	व	रि	व	रि	वा	ऽ	चे	ऽ	उ	नि	प	र
सां	—	सां	—	(गॅ)सां	नीॅ	धॅ	म	सां	नीॅ	—	धॅ	नीॅ	धॅ	—	म
रा	ऽ	हे	ऽ	गि	रि	व	र	म	हा	ऽ	त्म्य	अ	पा	ऽ	र
धॅ	म	—	गॅ	म	गॅ	—	सा	नी॒ॅ	सा	(म)गॅ	म	गॅ	सा	(नीॅ)धॅ	नी॒
श्रु	ती	ऽ	स	न	पा	ऽ	र	आ	•	द्या	•	स्म	र	द	म

राग मालवकौंशिक

तराना—त्रिताल

गीत—६

स्थायी—तों तनन तन देरे ना तक्धारे दारे दानी तदानी, नाद्रे तुन्द्रे तदरे दानी ।

अन्तरा—यालेमो यालि यलाय यलाय लाले, तन देरे ना तन देरे ना तदान्तौ,
धा किटतक धुमकिट तक धित्ता क्ड़ान्धा क्ड़ान्धा क्ड़ान्धा ॥

स्थायी

×				५								१३			
						सां	—	सां	नी॒	ध॒	नी॒	ध॒	म	ग॒	सा
						तों	ऽ	त	न	न	त	न	दे	रे	ना
सा सा	म	—	म	म	म	म	म	ध॒ म	म	—	ग॒	(म)ग॒	(ध॒)म	(नी॒)ध॒	(सां)नी॒
त क्	धा	ऽ	रे	ता	रे	दा	नी	त •	दा	ऽ	नी	ना	द्रे	तुं	द्रे
ग॒ ग॒	सांनी॒	(ग॒)सां	ध॒	—	म	ध॒नी॒	सां								
त •	द •	रे	दा	ऽ	नि	तों•	•								

अंतरा

				सां	—	सां	—	सां	—	ध॒	नी॒	ध॒	म	म	म
				या	ऽ	ले	ऽ	मो	ऽ	या	लि	य	ला	य	य
सां	सां	सां	सां	(सां)नी॒	(सां)नी॒	सां	सां	(मं)ग॒	मं	ग॒	सां	सां	नी॒	ध॒	नी॒
ला	य	ला	ले	त	न	दे	रे	ना	•	त	न	दे	रे	ना	•
ध॒	म	—	म	सा	सा सा	सा सा	म म	म म	म म	म	म	सां	- सां	सां	(नी॒)ध॒
त	दां	ऽ	तौ	धा	कि ट	त क	धु म	कि ट	त क	धि	त्ता	क्ड़ा	ऽ न्	धा	क्ड़ा
- ध॒	म	(नी॒)ध॒	(सां)- नी॒	सां	—	सां ग॒	(नी॒)सां								
ऽ न्	धा	क्ड़ा	ऽ न्	धा	ऽ	तों •	•								

राग मालवकौशिक

ध्रुवपद—चौताल

गीत—७

स्थायी—आये रघुवीर धीर, लंकधीस अवध मान, संग सखा सुगरीव और हनूमान।
अन्तरा—रहस रहस गावत युवती, जग वंदन विधान, देव कुसुम बरसत घन, जाके नभ विमान॥
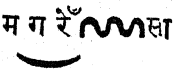
स्थायी

×		०		५		०		६		११	
(गँ) सा	—	नि॒ँ	(गँ) सा	धँ	नि॒ँ	सा	म	म	गँ	म	म
आ	ऽ	ये	•	र	घु	वी	•	र	धी	•	र
(म) गँ	—	(म) गँ	म	—	म	धँ	धँ	धँ	(म) गँ	—	(म) गँ
लं	ऽ	क	धी	ऽ	स	अ	व	ध	मा	ऽ	न
(म) गँ	(म) गँ	म	(निँ) धँ	निँ	सां	सां	–निँ	गं	सां	निँ	धँ
सं	•	ग	स	खा	•	अं	ऽ •	ग	द	सु	ग
म धँ	निँ	धँ	म	—	म	गँ	गँ	म	(सा) गँ	सा	सा
री •	•	व	औ	ऽ	र	ह	नू	•	मा	•	न

अंतरा

गँ	गँ	म	(निँ) धँ	(निँ) धँ	निँ	सां	—	सां	सां	सां	निँ
र	ह	स	र	ह	स	गा	ऽ	व	त	यु	व
सां	—	सां	(गं) निँ सां	(निँ) धँ	—	धँ	निँ	धँ	म	—	म
ती	ऽ	ज	• ग	बं	ऽ	द	न	वि	धा	ऽ	न
सां	—	मं	गं	सां	सां	सां	निँ	गं	सां	(निँ) धँ	(निँ) धँ
दे	ऽ	व	कु	सु	म	ब	र	स	त	घ	न
म	—	म धँ	निँ	धँ	म	गँ	गँ	म	(सा) गँ	सा	सा
जा	ऽ	के •	•	न	भ	वि	•	•	मा	•	न

राग भैरव

आरोहावरोह—नि़ सा ग म ध॒, नि सां। सां नि ध॒ प, म ग रे॒ सा।
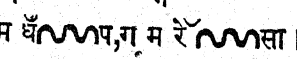
जाति—औड़व संपूर्ण।

ग्रह—मन्द्र निषाद, तानों में गान्धार भी।

अंश—पूर्वाङ्ग में कोमल ऋषभ और उत्तरांग में कोमल धैवत।

न्यास, अपन्यास—ऋषभ, धैवत और मध्यम।

विन्यास—मध्य षड्ज।
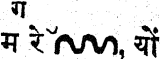
मुख्य अंग—ग म ध॒ प, ग म रे॒ सा।

समय—प्रात:काल।

प्रकृति—प्रौढ़ गंभीर। रस—रौद्र।

विशेष विवरण

भैरव एक प्रौढ़ गंभीर राग है। उसमें ऋषभ धैवत कोमल लगते हैं। अन्य स्वर शुद्ध हैं। गान्धार निषाद का प्रमाण अवरोह में अल्प है। उसी से यह राग खुलता है। सामन्यत: इसका आरोह-अवरोह—

सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां। सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा। यों कुछ अनजान लोग करते हैं। परन्तु उपरिलिखित आरोहावरोह ही गुणीजन-सम्मत है। और वह अनेक दृष्टियों से योग्य भी है। क्योंकि उससे रामकली, कालिंगड़ा आदि रागों से सहज ही में बच सकते हैं।

इस राग में धैवत और ऋषभ पर विशेष प्रकार के आन्दोलन दिये जाते हैं। सा—ग म रे॒, यों ऋषभ पर न्यास करते समय मध्यम से गभीरता-पूर्वक मींड़ से गान्धार को लेते हुए उतरना चाहिये। वहीं पर भैरव का 'भैरवत्व' दृष्टिगोचर होगा। तद्वत् आरोह करते समय ग म ध॒ के ध॒ का उच्चार निषाद को छूकर आघात के साथ करना चाहिये और अवरोह करते समय भी निषाद को अत्यल्प छू कर धैवत पर उतरना चाहिये और पंचम को थोड़ा दिखाकर मध्यम पर ठहर कर मींड़ से ऋषभ पर जाना चाहिये और अन्त में सा पर पूर्ण न्यास करना चाहिए।

इस राग में पंचम के अलपत्व का ध्यान रखा जाए; ऋषभ धैवत के अतिरिक्त मध्यम का बल भी ध्यान में रखा जाए। निषाद के अलपत्व की ओर इससे पूर्व ध्यान खींचा ही गया है। आरोह में पंचम वर्ज्य है और अवरोह में भी उसका अल्प प्रयोग है। पंचम पर अधिक ठहरने से राग का गांभीर्य तो नष्ट होगा ही, किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखनेवालों को पंचम के बढ़ने से रामकली का भी आविर्भाव होता दिखाई देगा। कोमल निषाद का अल्प स्पर्श इस राग में ग्राह्य माना जाता है।

प्राचीन ग्रन्थों में भैरव में मध्यम को ही ग्रह, अंश न्यास स्वर माना है, किन्तु प्रचार में भैरव का जो स्वरूप है, उसे देखते हुए उपर्युक्त विवरण ही अधिक युक्त है। तानपुरा मिलाते समय इस राग में पंचम की (प्रथम) तार को मध्यम ही में मिलाना समुचित होगा। उससे बड़ी सहायता पहुँचेगी। साथ ही इस राग के गंभीर और प्रौढ़ भाव की अभिव्यक्ति के लिये और कोमल ऋषभ-धैवत की संवाद-संगति के लिये भी यह प्रयोग सभी दृष्टियों से उपयुक्त होगा।

राग भैरव

मुक्त आलाप

(१) सा। रें ~ सा। *नि धॅ ~ सा। रें सा धॅ ~ सा। रें रें सा नि सा धॅ ~,

नि सा धॅ ~, धॅ नि सा धॅ ~, धॅ नि सा रें ~ सा।

(२) सा, सा धॅ ~, रें - रें सा नि सा धॅ ~, सा - नि सा धॅ ~ रें सा, रें सा नि

धॅ ~, ग म धॅ ~, सा - नि सा।

(३) सा, ग म रें ~, नि सा ग म रें ~, रें रें सा नि सा म रें ~, रें - रें सा,

ग - ग रें, म रें ~, सा रें, सा ग, म रें ~, नि सा ग म रें ~, धॅ नि सा रें ~ सा।

(४) नि सा ग, सा ग म रें ~, नि सा ग म रें ~, ग म प म ग रें ~, नि सा

ग म प म ग रें ~, ग म प ग म रें ~, म रें ~, म रें ~ सा।

(५) नि सा ग म धॅ ~, नि सा ग म धॅ ~, ग म धॅ ~, नि सा ग म धॅ ~,

ग म प ग म धॅ ~, ग म प प म ग म धॅ ~, धॅ धॅ प म प - म, ग म रें ~, सा ग म प,

प ग म रें ~, म रें ~ सा।

---

* यहाँ आघात के साथ धैवत पर निषाद का कण लेना है। मध्यम से ऋषभ गंभीरता के साथ मींड से आए और धैवत को निषाद का कण देकर लिया जाए। पंचम का अल्पत्व और मध्यम का बहुत्व इस राग को स्वाभाविक रीत्या गंभीर बनाते हैं। किन्तु भैरव का भीषणत्व कोमल ऋषभ को मध्यम की गंभीर मींड से लेने पर एवं कोमल धैवत को निषाद का आघात देने पर ही व्यक्त होगा। भैरव के भैरत्व की अभिव्यक्ति के लिये ये प्रयोग आवश्यक हैं। अन्यथा कोमल धैवत और कोमल ऋषभ इसे करुणा की ओर खींच ले जायँगे, जो कि अभीष्ट नहीं है।

नि नि ग
(६) रें रें सा नि़ सा ग म धँ, धँ धँ प म प प प ग ग म धँ, रें रें सा नि़ सा

ग ग नि ग नि नि ग
म म ग सा ग प प म म ग धँ, धँ नि़ सा रें, सा ग म धँ, धँ, नि़ सा रें,

नि सा
ग म धँ, प – म ग रें, सा।

नि धँ सा रें म प नि धँ नि
(७) नि़ सा ग म धँ सां – नि सां, नि़ सा ग म धँ सां – नि सां, नि़ सा ग म धँ

सा ग प नि धँ नि प
सां नि सां, सा ग ग म म प ग म धँ सां – नि सां, रें रें सा नि़ सा ग म धँ सां – नि सां,

धँ धँ नि नि नि सा सा सा ग
रें रें सां नि सां धँ, सां नि सां नि सां धँ, ग म धँ प म ग म, ग म प प ग म रें,

ग
रें सा।

नि रें सां सां गं
(८) नि़ सा ग म प ग म धँ सां – नि सां, रें रें सां नि सां रें सां नि सां,

नि सां रें सां सां गं गं सां सां सां
धँ नि सां गँ, मं रें, सां – नि सां, रें रें सां नि सां मं – गं मं, रें मं मं गं गं–

प गं सां प म
मं रें सां – नि सां, रें रें सां नि सां धँ धँ प म प प प म ग म प म ग रें, सा–नि़सा।

सा रें म प नि सां रें गं नि
(९) नि़ सा ग म धँ नि सां रें; नि़ सा ग म धँ नि सां रें, ग म धँ

गं ग नि गं नि
नि सां रें, नि़ सा रें ग म धँ नि सां रें, सा नि़ रें सा म ग प म ग म धँ,

ग प सा
म ग प म नि धँ सां नि रें सां रें, सां–नि सां, सां – नि रें सां नि धँ प – म प म ग रें

सा – नि़ सा।

सा ग सा नि गं
(१०) रें रें सांनि़ सा रें प प म ग म धँ रें रें सां नि सां रें सां – नि सां

सा ग म म ग म प प, म ग रे॒ सा; नि॒ सा ग म –म सा ग म प – प म ग रे॒ सा। नि॒ सा ग म

ध॒ ध॒ प म प प म ग रे॒ सा नि॒ सा ध॒ ध॒ म प ध॒ प म प प म ग म म ग रे॒ ग स ग म प ग म प म

ग प – प म ग रे॒ सा। नि॒ सा ग म प ध॒ प – – प म ग रे॒ सा नि॒ सा। नि॒ सा रे॒ सा सा ग म ग

ग म प म म प ध॒ प ध॒ नि सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा नि॒ सा। नि॒ सा ग म ध॒ नि सां नि ध॒ प म ग

रे॒ सा नि॒ सा। सां नि ध॒ नि सां रें॒ सा नि ध॒ प म ग रे॒ सा नि॒ सा। सा ग म प म ग रे॒ सा,

ध॒ नि सां रें॒ सां नि ध॒ प, सां नि ध॒ नि सां रें॒ सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा नि॒ सा। सा ग म प

सा ग म प म ग रे॒ सा, ध॒ नि सां रें॒ ध॒ नि सा रें॒ सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा। नि॒ सा ग म ध॒ नि सां रें॒

सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा, ध॒ – – नि सां रें॒ सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा नि॒ सा। ध॒ नि नि, ध॒ नि नि, ध॒ नि

सां रें॒ सां नि ध॒ प म ग ग म प, ग म प ग म प प म ग रे॒ सा नि॒ सा। सा रे॒ सा सा रे॒ सा सा रे॒

रे॒ सा, ग म ग ग म ग ग म म ग, म प प म प प म प प म, प ध॒ प, प ध॒ प प ध॒ ध॒ प, ध॒ नि ध॒ ध॒

नि ध॒ ध॒ नि नि ध॒, नि सां नि, नि सां नि नि सां सां नि, सां रें॒ सां सां रें॒ सां सां रें॒ रें॒ सां – नि

ध॒ प म ग रे॒ सा नि॒ सा। म ग रे॒, म म ग, ध॒ प म, ध॒ ध॒ प नि सां नि, रें॒ रें॒ सां, सां नि ध॒ प म ग

रे॒ सा – –। ग रे॒ रे॒, ग ग ग रे॒ सा, नि ध॒ ध॒, नि नि नि ध॒ प म ग रे॒ सा। ग रे॒ ग – – ग रे॒ सा,

नि ध॒ नि – – नि ध॒ प, गं रें॒ गं – – गं रें॒ सां सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा। सा – रे॒ – ग – म –

नि
प – – प म ग रे॒ सा ग – म – ध॒ – सां – रें॒ – – रें॒ सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा। सा ग म प

सा प म ग रे॒ सा, ध॒ नि सा रें॒ ध॒ रें॒ सां नि ध॒ प, सां गं मं पं सां पं मं गं रें॒ सां, सां नि ध॒ प म ग

रे॒ सा – –। सां प – प म ग रे॒ सा, ध॒ रें॒ – रें॒ सां नि ध॒ प, सां पं – पं मं गं रें॒ सां सां नि ध॒ प

सा ग म प नि सां
म ग रे॒ सा। रे॒ रे॒ सा नि॒ सा, म म ग रे॒ ग, प प म ग म, ध॒ ध॒ प म प, सां सां नि ध॒ नि, रें॒ रें॒ सां

गं मं सा सा
नि सां, मं मं गं रें॒ गं, पं पं मं गं मं, मं गं रें॒ सां सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा। सा रे॒ रे॒, रे॒ ग ग, ग म

ग प ध॒ नि सां
म, म ध॒ ध॒, ध॒ नि नि, नि सां सां, सां रें॒ रें॒, रें॒ गं गं गं मं मं, मं पं पं, मं गं रें॒ सां, सां नि ध॒ प म ग

रेॅ सा – –। सा रेॅ ग म सा म म ग रेॅ सा, रेॅ ग म प रेॅ प प म ग रेॅ, ग म प धॅ ग धॅ धॅ प

म ग, म प धॅ निॅ म निॅ निॅ धॅ प म धॅ नि सां रेंॅ धॅ रेंॅ रेंॅ सां नि धॅ, प प म ग रेॅ सा। सा रेॅ ग म

– म सा म म ग रेॅ सा, रेॅ ग म प – प रेॅ प प म ग रेॅ, ग म प धॅ – धॅ ग धॅ धॅ प म ग, म प धॅ नि

– नि, म नि नि धॅ प म, धॅ नि सां रेंॅ – रेंॅ धॅ रेंॅ रेंॅ सां नि धॅ धॅ प, प म म ग, ग रेॅ रेॅ सा – –।

सा सा सा. प प प, सा सा – नि धॅ प म ग रेॅ सा, रेॅ रेॅ रेॅ, धॅ धॅ धॅ, रेॅ रेंॅ – रेंॅ सां नि धॅ प म ग

रेॅ सा – – ग ग ग, नि नि नि, गं गं रेंॅ सां, सां नि धॅ प म ग रेॅ सा, म म म, सां सां सां,

मं गं मं मं रेंॅ सां, सां नि धॅ प म ग रेॅ सा – –। नि सा ग म, नि धॅ नि नि सां गं मं पं पं मं गं रेंॅ सां

सां नि धॅ प म ग रेॅ सा। सा रेॅ सा, सा रेॅ सा, ग म ग, ग म ग, धॅ नि धॅ धॅ नि धॅ, नि सां

नि, नि सां नि सां रेंॅ सां, सां रेंॅ सां, गं मं गं, गं मं गं, रेंॅ गं मं गं रेंॅ सां, सां नि धॅ प म ग

रेॅ सा – –। सा रेॅ ग म ग रेॅ, रेॅ ग म प म ग, ग म प धॅ प म, म प धॅ निॅ धॅ प प धॅ नि सां

नि धॅ, धॅ नि सां रेंॅ सां नि, नि सां रेंॅ सां नि धॅ, धॅ नि सां नि धॅ प, प धॅ निॅ धॅ प म, म प धॅ प म ग,

रेॅ ग म ग रेॅ सा – –। रेॅ सा नि सा, ग रेॅ सा रेॅ, म ग रेॅ ग, प म ग म, धॅ प म प, नि धॅ प धॅ,

सां नि धॅ निॅ, रेंॅ सां नि सां, गं रेंॅ सां रेंॅ, मं गं रेंॅ गं, पं मं गं मं, गं मं पं मं, रेंॅ गं मं ग, सां रेंॅ गं रेंॅ,

नि सां रेंॅ सां, धॅ नि सां नि, प धॅ नि धॅ, म प धॅ प, ग म प म, रेॅ ग म ग, नि सा रेॅ सा। रेॅ ग म ग

रेॅ सा, धॅ नि सां नि धॅ प, रेंॅ गं मं गं रेंॅ सां, सां नि धॅ प म ग रेॅ सा – –। रेॅ ग रेॅ ग म ग रेॅ सा,

धॅ नि धॅ नि सां नि धॅ प, रेंॅ गं रेंॅ गं मं गं रेंॅ सां, सां नि धॅ प म ग रेॅ सा। सा रेॅ ग म सा म म ग

रेॅ सा, रेॅ ग म प रेॅ प प म ग रेॅ, ग म प धॅ ग धॅ धॅ प म ग, म प धॅ नि, म नि नि धॅ प म, प धॅ नि सां

प सां सां नि धॅ प, धॅ नि सां रेंॅ धॅ रेंॅ रेंॅ सां नि धॅ, प धॅ नि सां प सां सां नि धॅ प, म प धॅ नि म नि निॅ धॅ प म

ग म प धॅ ग धॅ धॅ प म ग, रेॅ ग म प रेॅ प प म ग रेॅ, सा रेॅ ग म सा म म ग रेॅ सा – –।

राग भैरव

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—१

स्थायी—जियरा उनी सों, ना मोरे पिया को वेख,
उन बिन, उन बिन रहिलो ना जाय, रे माँ।
अन्तरा—वेग व्यथा सब, भोर भईला, दूबर भइला, का सों कैय्ये,
कौन खबरिया भी सुन ले, माँ ॥

स्थायी

०		९		११	
		ग	निॅ निॅ निॅ		प प म
		म प ग म –	म धॅ – – धॅ–धॅ–	प – मप –	– –धॅ धॅ–म प–
		जि॰ • ऽ –	• • ऽ ऽ • ऽ • ऽ	रा ऽ •• ऽ	ऽ ऽउ •ऽनी •ऽ

×		०		५	
		सा सा			
म	गम – – –	प – प म गम – –	प म ग रेॅ –	सा	नि़ सा – – –
सों	•• ऽ ऽ ऽ	• ऽ • • •• ऽ ऽ	• • • • ऽ	•	• • ऽ ऽ ऽ

०		९		११	
धॅ़ सा —	रेॅ				निॅ निॅ
रेॅ–रेॅसा नि़सा– –	– सा – – रेॅ	रेॅ म – –	गम – – –	मपग– म – – गम	निॅ–धॅ–धॅ–धॅ–
नाऽ• • • • ऽ ऽ	ऽ मो ऽ ऽ •	रे • ऽ ऽ	•• ऽ ऽ ऽ	पि••ऽ याऽ ऽ ••	• ऽ• ऽ•ऽ•ऽ

×		०		५	
		प प			
प	मप – – –	धॅ–धॅप मप – – –	म	म म – रेॅ –	—
को	•• ऽ ऽ ऽ	वे ऽ•• •• ऽ ऽ ऽ	ख	उ • ऽ न ऽ	ऽ

०		९		११	
नि़	ग	नि़	सा ग म	निॅ	धॅ
सा – –नि़ सा रेॅ –	रेॅ सा	नि़ सा – – धॅ़	नि़ सा ग गम	धॅ~~	सा
बि ऽ ऽ • • • ऽ	• न	• • ऽ ऽ उ	न बि न र•	हि~~	लो

×		०		५	
सां	नि	धॅ नि		नि निॅ नि	
ग रें ∿∿	सां	सां सां – सां धॅ	निॅ धॅ – – –	धॅ निॅ – धॅ धॅ धॅ	प – म प –
ना •∿∿	•	जा • ऽ • य	• • ऽ ऽ ऽ	रे • ऽ • • •	• ऽ • • ऽ

०		६		११	
म प					
धॅ – धॅप मप – –	म – गम –				
मांऽ •• ••ऽ ऽ	• ऽ •• ऽ				

अंतरा

०		६		११	
		मनिॅ	निॅ	धॅ	गं गं
		म प ग – धॅ – – –	धॅ – – धॅ	सां	निॅ सां – रें रें
		वे • •ऽ ग ∿∿	•∿∿व्य•	था	• • ऽस •

×		०		५	
				धॅ	नि
सां	नि सां – – –	निॅ धॅ – निॅ धॅ –	निॅ धॅ – निॅ धॅ –	सां	सां
ब	• • ऽ ऽ ऽ	भो • ऽ • • ऽ	र • ऽ भ •ऽ	ई	ला

०		६		११	
	सांगं	धॅ		म	म निॅ
सां रें नि – –	सां – – रें	सां – – रें सां	धॅ∿∿	पप – – म	प धॅ∿∿
दू • • ऽ ऽ	ब ऽ ऽ र	मै ऽ ऽ • •	ला∿∿	का• ऽ ऽ •	सों•∿∿

×		०		५	
प प			म प निॅ	धॅ	धॅ
धॅ – धॅप मप – –	म	ग म – – साग गम	प प धॅ – धॅ∿∿ धॅ	रें∿∿ रें	सां
कै ऽ •• •• ऽ ऽ	ये	• • ऽ ऽ कौ• नख	व रियाऽ•∿∿भी	सु∿∿न्	ले

०		६		५	
नि धॅ प	म				
धॅसां सांनि निधॅ धॅप	पम गम – –				
मां• • • •• ••	•• •• ऽ ऽ				

आलाप

×		०		५	
१)		म – – –, प ग म –	रे˘	सा	नि॒ सा – – –
०		**९**		**११**	
रे˘ सा नि॒ ध˘ –	ध˘ सा	ग म जि य	ध˘ •	प – म प – रा ऽ • • ऽ	प ध˘ – म प – उ • ऽ नी • ऽ
×		**०**		**५**	
२)		ध˘ – सा नि॒	रे˘ – – सा म – – ग	प म ग म रे˘	—
०		**९**		**११**	
सा	नि॒ सा – – –	”	”	”	”
×		**०**		**५**	
३)		नि॒ सा ग म	प म ग म –	ध˘ म ग म –	प म ग म –
०		**९**		**११**	
रे˘	सा	”	”	”	”
×		**०**		**५**	
४)		नि॒ सा ग म	नि ध˘	प	म प – – –
०		**९**		**११**	
ध˘ – ध˘ प, म प – –	म	प – प म ग म – –	रे˘	सा –, ग म जि य	म ध˘ –, प प रा ऽ, उ नी
×		**०**		**५**	
५)		नि॒ सा ग म	नि ध˘	सां	नि सां – – –
०		**९**		**११**	
रें˘ सां नि ध˘ –	प	प म ग म –	रे˘	सा	प ध˘ – म प – उ • ऽ नी • ऽ

६) × | ० | नि सा ग म | नि धॅ | ५ | सां | नि सां - - -

० रें - रें सां नि सां - - | प - प म ग म - - | ६ धॅ - धॅ प म प - - | नि धॅ | ११ | सां | नि सां - - -

× रें - रें सां निसां - - | नि धॅ | ० धॅ - धॅ प म प - - | म | ५ प - प म ग म - - | रें

० सा | नि सा - - - | ६ म ग
जि य | धॅ
• | ११ प - म प -
रा ऽ •• ऽ | प धॅ - म प -
उ • ऽ नी • ऽ

७) × | ० | नि सा ग म | धॅ | ५ | सां | नि सां - - -

० धॅ नि सां रें | — | ६ | सां | नि सां - - ग म | ११ | धॅ - - नि सां | रें

× सां | नि सां - - - | ० रें सां नि धॅ - | प | ५ | धॅ प म प - | म

० प म ग रें - | सा | ६ नि सा -, ग म
जि य | धॅ -, ग म
रा ऽ, जि य | ११ धॅ -, ग म
रा ऽ, जि य | धॅ -, प प (म)
रा ऽ, उ नी

८) × | ० | नि सा ग म | धॅ | ५ | गं रें | सां

० नि सां - - - | नि सां गं मं | ६ पं मं गं मं रें | — | ११ | सां | नि सां - - -

×   ०   ५

सा म - - ग रें | सां - - नि धँ | सां मं - - गं रें | सां - - नि धँ | सा म - - ग रें | —

०   ६   ११

सा | नि सा - - - | ग म | धँ - प म प | म - म म प | म - प म
  | | जि य | रा ऽ उ नी | सों ऽ उ नी | सों ऽ उ नी

×   ०   ५

६) | | नि सा ग म | प म ग रें - | ग म धँ सां | रें सां नि धँ -

०   ६   ११

नि सा ग म | प म ग रें - | सा | रें सां नि धँ - | प | प म ग रें -

×   ०   ५

सा | नि सा ग म धँ | ग म धँ सां रें | नि सां गं मं धँ | मं - - गं रें | सां - - नि धँ

०   ६   ११

म - - ग रें | — सा | - - - ग म | धँ -, नि सां | रें -, ग म | धँ -, प म प
  | | जि य | रा ऽ, जि य | रा ऽ, जि य | रा ऽ, उ नी

बोलतानें

×   ०

१) | | नी सा ग म धँ नी सां - | - - सां रें सां नी धँ -
  | | जि य रा • • • • ऽ | ऽ ऽ उ नि सों • • ऽ

५   ०

म ग रें सा, सा - - म | ग - - प म - - नी | धँ - - सां नी - - रें | सां - - सां धँ - - नी
• • • •, ना ऽ ऽ मो | रे ऽ ऽ पि या ऽ ऽ को | वे ऽ ऽ ख उ ऽ ऽ न | बि ऽ ऽ न र ऽ ऽ हि

११

६

प - - धॅ प म - प	म -, ग म धॅ - प प	म -, ग म धॅ - प प	म -, ग म धॅ - प म
लो ऽ ऽ न जा • ऽ य	मा ऽ, जि य रा ऽ उ नि	सों ऽ, जि य रा ऽ उ नि	सों ऽ, जि य रा ऽ उ नि

×
२)

		सा - सां - - रें सां नी	धॅ प म ग रे सां नी सा
		जि ऽ य ऽ ऽ रा उ नि	सों • • • • • ना •

५

ग म धॅ - - - ग म	धॅ नी रें - - - सां रें	नी सां - रें सां नी धॅ प	- - प नी धॅ प धॅ प
• • • ऽ ऽ ऽ मो •	रे • • ऽ ऽ ऽ पि •	या • ऽ को वे • ख •	ऽ ऽ उ न बि न र हि

११

६

धॅ - म प - ग म -	म ग म नी नी धॅ - -	म ग म नी नी धॅ - -	म ग म नी नी धॅ प म
लो ऽ न जा ऽ य मां -	जि य रा • • • ऽ ऽ	जि य रा • • • ऽ ऽ	जि य रा • • • उ नी

×
३)

		सा - ग - म - धॅ -	- - सां नी सां - - -
		जि ऽ य ऽ रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ उ नि सों ऽ ऽ ऽ

५

धॅ - नी - सां - रें -	- - मं गं रें सां नी सां	धॅ सां - नी रें सां नी धॅ प	नी सा ग म ग म धॅ -
ना ऽ • ऽ • ऽ • -	ऽ ऽ मो • रे • • •	पि या ऽ• को वे • ख •	उ न बि न र हि लो ऽ

११

६

धॅ नी - रें सां -, ग म	धॅ - धॅ नी - रें सां -	ग म धॅ - धॅ नी - रें	सां नी नी धॅ धॅ प प म
न जा ऽ य मां ऽ, र हि	लो ऽ न जा ऽ य मा ऽ	र हि लो ऽ न जा ऽ य	मा • जि य रा • उ नि

×
४)

		सा सा सा ग ग गं म म	म, धॅ धॅ धॅ, नी नी नी रें
		जि • • य • • रा •	• उ • • नी • • सों

५

सां सां, मं मं गं, गं गं रें	रें रें सां, सां सां नी, नी नी	धॅ, धॅ धॅ प, प प म, ग	म -, ग म धॅ नी सां रें
• • ना • • मो • •	रे • • पि • • या •	• को • • वे • • ख	• ऽ, उ न बि न र हि

११

६

रें नी - नी धॅ - - धॅ	प - -, नी धॅ - - धॅ	प - - नी धॅ - - धॅ	प -, म प धॅ - प म
लो • ऽ न जा ऽ ऽ य	मा ऽ ऽ, न जा ऽ ऽ य	मा ऽ ऽ न जा • ऽ य	मा ऽ जि य रा ऽ उ नि

५)

×		०	
		नि̣ सा ग म प नि॑ ध॒ प	म ग रे॒ सा, ग म ध॒ नी
		जि य रा • • • उ नि	सो • • •, ना • • •

५		०	
सां रें सां नी ध॒ प म ग	ध॒ नी सां गं मं पं मं गं	रें सां नी ध॒, सां रें सां, नी	सां नी, ध॒ नी ध॒, प ध॒ प
• • • मो • रे • •	पि • या • • • को •	दे • ख • उ • • न	• • बि • • न • •

६ नि॑		११	
प ग म – म ध॒ – नी	सां –, रें नी नी – नी ध॒	ध॒ –, नी ध॒ ध॒ – ध॒ प	प –, ध॒ प ध॒ म प ग
र हि लो ऽ न जा ऽ य	मा ऽ, जि य रा ऽ उ नि	सों ऽ, जि य रा ऽ उ नि	सों ऽ, जि य रा ऽ उ नि

६)

×		०	
		सा – ग – प – – –	म ग रे॒ सा, म – ध॒ –
		जि ऽ य ऽ रा ऽ ऽ ऽ	उ नि सों ऽ, ना ऽ मो ऽ

५		०	
सां – – रें सां नी ध॒ प	सां – गं – पं – – –	मं गं रें सां, सां गं गं रें	सां रें रें सां, नी सां सां नी
रे ऽ ऽ • पि • या •	को ऽ • ऽ • ऽ ऽ ऽ	दे • ख • उ • न •	बि • न • र • हि •

६		११	
ध॒ नी नी ध॒, प ध॒ ध॒ प	प ग म – ग म ध॒ नी	सां –, ग म ध॒ नी सां –	ग म ध॒ नी सां – ध॒ प
लो • न • जा • य •	मा • • – जि य रा •	• – जि य रा • • •	जि य रा • • – उ नि

७)

×		०	
		सा ग म प सा प म ग	रे॒ सा, म ध॒ नी सां ध॒ रें
		जि य रा • उ नि सो •	• •, ना • • • सों •

५		०	
सां नी ध॒ प, सां गं मं पं	सां पं मं गं रें सां, ध॒ नि	सां रें ध॒ रें सां नी ध॒ प	गं रें गं रें रें सां रें –
रे • • • पि • या •	को • • • • •, दे •	• • ख • • • • •	उ न बि न र हि लो –

६		११	
नी सां – सां, नी ध॒ नी –	प ध॒ – ध॒, ध॒ प ध॒ –	म प – ग म –, ग म	ध॒ – – प म
न जा ऽ य, र हि लो ऽ	न जा ऽ य र हि लो ऽ	न जा – य मां –, जि य	रा – – उ नि

× ८)		० सा ग – सा ग म – ग	म धॅ – म धॅ नी – धॅ
		जि • ऽ • य • ऽ •	रा • ऽ • उ • ऽ नि
५ नीसां – नी सां गं – सां	पं गं गं मं – मं रें – – गं	० सां – – रें नी – – सां	धॅ – – नी प – – धॅ
सों • ऽ • ना • ऽ मो	रे • ऽ पिया ऽ ऽ को	वे ऽ ऽ ख उ ऽ ऽ न	बि ऽ ऽ न र ऽ ऽ हि
६ म – – प ग – – म	नी धॅ सां नी रें – – –	११ – – रें नी नी धॅ, नी धॅ	धॅ – नी धॅ धॅ – प म
लो ऽ ऽ न जा ऽ ऽ य	मा • • • • ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जि य रा • उ नि	सों ऽ उ नि सों ऽ उ नि
× ९)		० सा ग म धॅ / नी सा ग म	नी सां गं मं / धॅ नी सां गं
		जि य रा उ	नि सों ना मो
५ मं गं गं रें सां नी सां नी	सां रें सां धॅ – – – – –	० नी सां रें / धॅ नी सां रें	– – – – रें नी नी धॅ
रे • पि • या • को •	वे • ख – – – – –	उ न बि न	– – – – र हि लो •
६ – – – – नी धॅ धॅ प	– – – – धॅ प धॅ –	११ म प – ग म – ग म	नी धॅ सां नी रें नी नी धॅ
– – – – र हि लो •	– – – – र हि लो –	न जा – य मा – जि य	रा • • • • • उ नि
धॅ			
सों			

तानें

× १)		० नि सा ग म प प म ग	रे सा, नि सा ग म प धॅ
५ धॅ प म ग रे सा, नि सा	ग म प धॅ नि नि धॅ प	० म ग रे सा, नि सा ग म	प धॅ नि सां, रें रें सा नि
६ धॅ प म ग रे सा नि सा	ग म	११ धॅ	म प ए
	जि य	रा	उ नी

× २)			० नि सा ग म, सा ग म प	ग म प धँ, म प धँ नि
५	प धँ नि सां, धँ नि सा रें	सां नि धँ प म ग रे सा	० सा –, सां – – रें सां नि	धँ प म ग रे सा, सा –
६	सां – – रें सां नि धँ प	म ग रे सा, सा – सां –	११ – रें सां नि धँ प म ग	रे सा, ग म धँ – प प(म) / जि य रा ऽ उ नी
× ३)			० ग म रे ग रे सा, म म	ग म ग रे, धँ धँ प धँ
५	प म, नि नि धँ नि धँ प	सां सां नि सां नि धँ, रें रें	० सां रें सां नि, सां सां नि सां	नि धँ, नि नि धँ नि धँ प
६	धँ धँ प धँ प म, प प	म प म ग, ग म धँ नि	११ सां रें सां नि धँ प म ग	रे सा, " " "
× ४)			० सा ग म प सा प म ग	रे सा, ग म प धँ ग धँ
५	धँ प म ग, म प धँ नि	म नि नि धँ प म, प धँ	० नि सां प सां सां नि धँ प	धँ नि सां रें धँ रें रें सा
६	नि धँ, धँ सां सां नि धँ प	प नि नि धँ प म, म धँ	११ धँ प म ग, म प म ग	रे सा, " " "
× ५)			० सा ग रे सा, रे म ग रे	ग प म ग, म धँ प म
५	प नि धँ प, धँ सां नि धँ	नि रें सां नि, सां गं रें सां	० नि रें सां नि, धँ सां नि धँ	प नि धँ प, म धँ प म
६	ग प म ग रे सा, ग म	धँ नि सां –, ग म धँ नि	११ सां –, ग म धँ नि सां –	सां – नि धँ, धँ – प म / जि ऽ य रा, • ऽ उ नी
× ६)			० रे ग म ग रे सा, धँ नि	सां नि धँ प, रें गं मं गं
५	रें सां, धँ नि सां नि धँ प	रे ग म ग रे सा, रे ग	० म – – ग रे सा, धँ नि	सां – – नि धँ प, रें गं

६ मं – – गं रें॒ सां, सां नि | ध॒ प म ग रे॒ सा, सां नि | ११ ध॒ प म ग रे॒ सा, सां नि | ध॒ प म ग रे॒ सा, प म
, उ नी

× ७) | | ० रे॒ ग म रे॒ ग म रे॒ ग | म ग रे॒ सा, ध॒ नि सां ध॒

५ नि सां ध॒ नि सां नि ध॒ प | रें॒ गं मं रें॒ गं मं रें॒ गं | ० मं गं रें॒ सा, सां नि ध॒ प | म ग रे॒ सा, रे॒ ग म ग

६ ध॒ नि सां नि, रें गं मं गं | रें सां, सां नि ध॒ प म ग | ११ रे॒ सा ऩि सा, ग म ध॒ –
जि य रा ऽ | सां नि सां, सां नि ध॒, ध॒ प
उ नी सों, उ नी सों, उ नी

× ८) | | ० ऩि सा ग म मं ध॒ नि नि सां | गं मं पं पं मं गं रें॒ सां

५ सां नि ध॒ प॒ म ग रे॒ सा | ऩि सा ग म – म, म ध॒ | ० नि सां – सां, नि सां गं मं | – मं, मं गं रें सां, सां नि

६ ध॒ प म ग रे॒ सा, म – | – म, सां – – सां, मं – | ११ – मं, मं गं रें॒ सां सां नि | ध॒ प म ग रे॒ सा, प म
उ नी

× ९) | | ० ग म म, ग म म, ग म | म ग रे॒ सा, नि सां सां, नि

५ सां सां, नि सां सां नि ध॒ प | गं मं मं, गं मं मं, गं मं | ० मं गं रें सां, सां नि ध॒ प | म ग रे॒ सा, प प – प

६ सां सां – सां, पं पं – पं | मं गं रें सां, सां नि ध॒ प | ११ म ग रे॒ सा, रें॒ – नि नि
आऽ उ नी | नि–, ध॒ ध॒ ध॒ – प म
सोंऽ, उ नी सोऽ उ नी

राग भैरव

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—प्रभु दाता रे, न करे मन जीवन घरि पल छिन ॥
अन्तरा—जो तू चाहे अन धन लछमी, दूध पूत बहुतेरो,
वा को नाम भज गुरु को नाम ॥

स्थायी

×				५				०				१२			
														ग	म
														प्र	भु
प म	ग रे॒	—	—	—	—	सा	रे॒	म	—	—	—	—	—	ग	ग
दा •	• •	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ता	•	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	क
म	—	(नि)ध॒	ध॒	नि	सां	सां	नि	ध॒	(नि)ध॒	ध॒	ध॒	प	प	म ग	म
रे	ऽ	म	न	जी	•	व	न	घ	री	प	ल	छि	न	प्र •	भु

अंतरा

(प)ग	—	म	—	म	—	(नि)ध॒	—	ध॒	ध॒	सां	सां	नि	सां	सां	—
जो	ऽ	तू	ऽ	चा	ऽ	हे	ऽ	अ	न	ध	न	ल	छ	मी	ऽ
ध॒	—	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	सां	रें॒ रें॒	सां नि	सां	—	ध॒	—	प	—
दू	ऽ	ध	पू	•	त	ब	हु	ते •	• •	•	ऽ	रो	ऽ	•	ऽ
ग म	ध॒	(नि)ध॒	म	—	प	म	प	ग	म	प म	(ग)रे॒	—	सा	ग	म
वा •	को	•	ना	ऽ	म	भ	ज	गु	रु	को •	ना	ऽ	म	प्र	भु

राग भैरव

त्रिताल

गीत—२

स्थायी—घूंगरवा प्यारी रे, मोरे घरवा लेहो लेहो बजाय ।

अंतरा—सननन ननननन तान सुनैया थैया थैया थैया ॥

स्थायी

×				५				०				१३			
								ग	म	धॅ	धॅ	प	—	धॅ	म
								घूं	•	ग	र	वा	ऽ	प्या	•
म प	धॅ प	म	—	म प	म म	ग	—	—	ग	प	म ग	रेॅ	रेॅ	सा	—
री •	• •	रे	ऽ	• •	• •	•	ऽ	ऽ	मो	•	रे •	घ	र	वा	ऽ
सां रेॅ	सां नि	प धॅ	प	—	प निॅ	धॅ प	म ग								
ले •	हो •	ले •	हो	ऽ	ब •	जा •	• •								

अन्तरा

								—	ग म	(म) म	म	धॅ	धॅ	धॅ	म
								ऽ	स न	न	न	न	न	न	न
—	धॅ	– सां	– नि	सां	रेॅ	सां	—	—	रेॅ रेॅ	मं गं	रेॅ	सां	—	सां सां	रेॅ रेॅ
ऽ	ता	ऽ न	ऽ सु	नै	•	या	ऽ	ऽ	थै •	• •	या	•	ऽ	थै •	• •
रेॅ सां	नि	—	धॅ धॅ	निॅ निॅ	धॅ प	म ग	म								
या •	•	ऽ	थै •	• •	या •	• •	•								

तानें

× ५ ० १३

१) नि़सा | ग म | धॅ प | ग म | धॅ प | म ग | रेॅ सा | नि़ॅ सा | ग | म | धॅ | धॅ | प | — | धॅ | म
घूं | ग | र | वा | • | ऽ | प्या | •

२) म धॅ | धॅ प | म ग | सा ग | म धॅ | धॅ प | म ग | रेॅ सा | " | " | " | " | " | " | " | "

३) रेॅ रेॅ | सा, ग | ग रेॅ | म म | ग, धॅ | धॅ प | म ग | रेॅ सा | " | " | " | " | " | " | " | "

४) नि़सा | ग म | धॅ नि | सां – | – नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | " | " | " | " | " | " | " | "

५) ग म | धॅ नि | सां – | – धॅ | नि नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | " | " | " | " | " | " | " | "

६) | रेॅ रेॅ | रेॅ, म | म म | धॅ धॅ | धॅ, रेंॅ | रेंॅ रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | नि़ॅ सा | निॅ निॅ | धॅ प | धॅ धॅ | प म
घूं • | ग र | वा • | प्या •

७) | रेॅ रेॅ | रेॅ, म | म म | म म | म, धॅ | धॅ धॅ | धॅ धॅ | धॅ, रेंॅ | रेंॅ रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | धॅ धॅ | धॅ रेंॅ
रेंॅ रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | धॅ धॅ | धॅ रेंॅ | रेंॅ रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | ग म | धॅ धॅ | प धॅ | धॅ म
• घूं | ग र | वा • | प्या •

८) | | सां नि | धॅ नि | सां रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | सा | सां | – रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा
ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ म | प | — | ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ म | प | — | ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ म
घूं • | ग र | वा • | प्या • | री | ऽ | घूं • | ग र | वा • | प्या • | री | ऽ | घूं • | ग र | वा • | प्या •

९) धॅ नि | सां रेंॅ | – रेंॅ | धॅ नि | धॅ रेंॅ | – रेंॅ | धॅ रेंॅ | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | नि़ सा | " | " | " | "

१०) रेॅ ग | म | – ग | म ग | रेॅ सा | धॅ नि | सां | – नि | सां नि | धॅ प | रेंॅ गं | मं | – गं | मं गं | रेंॅ सां | सां नि
धॅ प | म ग | रेॅ सा | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | सां नि | धॅ प | म ग | रेॅ सा | नि़ सा | ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ म
घूं • | ग र | वा • | प्या •

× ५ ० १३

११) ग ग | रें,म | म ग | धॅ धॅ | म,नि | नि धॅ सां नि | नि रें सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | " | " | " | "

१२) मम | — ग रें सा | सां सां | — नि | धॅ प | मं मं | — गं | रें सां | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | मं गं | — गं | रें सां

सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | मं मं | — गं | रें सां | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | नि सा | ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ प
घू • | ग र | बा • | प्या •

१३) साग | म धॅ | — धॅ | धॅ प | म ग | रें सा | ग म | धॅ नि | — नि | सां नि | धॅ प | म ग | सां गं | मं धॅ | — धॅ | धॅ पं

मं गं | रें सां | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | ग म | धॅ धॅ | प प | ग म | धॅ धॅ | प प | ग म | धॅ धॅ | प प | धॅ म
घू • | ग र | वा • | घू • | ग र | वा • | घू • | ग र | वा • | प्या •

१४) रेंग | म,रें | ग म | रें ग | म ग | रें सा | धॅ नि | सां,धॅ | नि सां | धॅ नि | सां नि | धॅ प | रें गं | मं,रें | गं मं | रें गं

मं गं | रें सां | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | सां नि | धॅ प | म ग | रें सा | प प | धॅ म
वा • | प्या •

१५) रें रें | सां,सां | सां नि | नि नि | धॅ,धॅ | धॅ प | म ग | रें सा | ग | म | धॅ | धॅ | प | — | धॅ | म
घूं | • | ग | र | वा | ऽ | प्या | •

१६) म म | ग,ग | ग रें | सां सां | नि,नि | नि धॅ | मं मं | गं,गं | गं रें | सां सां | नि नि | नि धॅ | धॅ,धॅ | प,प | प म | प प

म,म | म ग | ग ग | रें रें | रें सा | नि सा | ग म | धॅ नि | सां | ग म | धॅ नि | सां | ग म | धॅ नि | सां | धॅ म
प्या •

———

राग भैरव

ध्रुवपद—चौताल

गीत—४

स्थायी—मोहन जागो मनोहर मधुसूदन, मदनमोहन माधो मुकुन्द मन भावन ॥

अन्तरा—जागो जागो जगदीश, जगतपति जगजीवन, जागो नाथ जगत सुख, प्राण प्यारे ॥

सञ्चारी और आभोग—जागिये जु श्रीकृष्णचन्द्र, परमानन्द, आनन्द,

रामकृष्ण के तुम हृद में बसत, तीन लोक के जग या करुणानिधान ॥

स्थायी

×		०		५		०		६		११	
							(प)ग	म	म	प	मप---
							मो	•	ह	न	••ऽऽऽ
ध॒	—	—	प	म	प	म	—	गम---	(म)रे॒	(म)ग	(ग)प
जा	ऽ	ऽ	गो	•	म	नो	ऽ	••ऽऽऽ	ह	र	•
म	म	गम	रे॒	रे॒	सा	नि॒	सा	सा	(ग)रे॒	(ग)रे॒	सा
म	धु	••	सू	द	न	म	द	न	मो	ह	न
ध॒	—	सा	—	रे॒	म	गम	रे॒	(ग)रे॒	(म)ग	प	मप
मा	ऽ	धो	ऽ	मु	कुं	••	द	म	न	•	••
म	—	रे॒	—	सा	—	—	ग	म	म	प	मप---
भा	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	ऽ	मो	•	ह	न	••ऽऽऽ

अंतरा

x	०		५		०		६		११		
ग	म	म	(नि)धँ	—	धँ	नि	सा	—	(रें)नि	सां	सां
जा	•	गो	जा	ऽ	गो	ज	ग	ऽ	दी	•	स
(नि)धँ	धँ	धँ	नि	सां	रें	रें	सां	रें	नि	धँ	प
ज	ग	त	प	ती	•	ज	ग	जी	•	व	न
प	(नि)धँ	धँ	प	म	प	ग	म	धँ	नि	सां	—
जा	•	गो	ना	•	थ	ज	ग	त	सु	ख	ऽ
रें	—	सां - - नि	(नि)धँ	—	प	मप - - -	म	ग	म	प	मप - - -
प्रा	ऽ	न ऽ ऽ •	प्या	ऽ	रे	•• ऽऽऽ	मो	•	ह	न	•• ऽऽऽ

संचारी और आभोग

(प)ग	म	म	प	—	प	(नि)धँ	—	धँ	नि	धँ	प
जा	•	गि	ये	ऽ	जु	का	ऽ	न	कुँ	व	र
म	प	(निं)धँ	—	नि	सां	—	रें सां	(नि)धँ	—	प	—
के	व	ल	ऽ	क	ल्या	ऽ	न •	रा	ऽ	हे	ऽ
ग	म	(म)रे	(म)ग	प	म	ग	म	म	(म)रे	—	सा
जा	•	ग	ये	•	श्री	कृ	•	ष्णा	चं	ऽ	द
नि̱	सा	सा	ग	म	म	प	धँ	सां	(नि)धँ	—	प
प	र	मा	नं	•	द	आ	•	•	नं	ऽ	द

×		०		५		०		९		११	
प	—	म	धॅ	—	नि	सां	—	—	(रें) नि	सां	सां
रा	ऽ	म	कृ	ऽ	ष्णा	के	ऽ	ऽ	तु	•	म
(नि) धॅ	(नि) धॅ	नि	सां	(गं) रें	(गं) रें	सां	—	रें	(नि) धॅ	धॅ	प
हृ	द	में	•	ब	स	त	ऽ	•	ती	•	न
धॅ	नि	धॅ	प	मप - - -	ग	म	(नि) धॅ	—	नि	सां	(गं) रें
लो	•	क	के	•• ऽऽऽ	ज	ग	या	ऽ	क	रु	णा
—	सां	(नि) धॅ	—	प	मप - - -	—	(प) ग	म	म	प	मप - - -
ऽ	नि	धा	ऽ	नू	•• ऽऽऽ	ऽ	मो	•	ह	न	•• ऽऽऽ

परिशिष्ट

१. राग भूप

ख्याल—तिलवाड़ा

गीत

स्थायी—सूधे बोल तानन, रूप की मरोर।

अंतरा—कर रही मान, मान ले प्यारी, कीने जतन करोर।

स्थायी

				१३			
				सां ध • सां –	सां – – सां	धपप• –	प ग प
				सू • S • S	• S S •	धे••S –	• •

×				५			
प रे	ग	– रे	ग रे	सा	—	सारेसासा –	ध़ सा
बो	•	S •	•	ल	S	ता••• S	S न

०				१३			
ग रे	ग	रे ग ग –	—	पधपप –	सां ध –	पधपप –	प प ग रे
न	•	• • S	S	रू••• S	• • S	प••• S	• •

×				५			
प ग –	प	—	सां ध –	सां	—	सांसां -सां रें -	—
की• S	•	S	म • S	•	S	• • S • • S	S

०				१३			
सांरेंसांसां –	सां ध	पप – पध –	ध ग – प –				
रो••• S	र	•• S •• S	• • S • S				

अंतरा

०				१३			
सां	सां ध	सां सां ध ध	सां	सां	—	सां	– – सां सां –
क	र	• •	र	ही	ऽ	मा	ऽ ऽ • • ऽ
×				५			
सां	—	ध सां सां रें	—	गं रें	गं रें	ध सां	—
न	ऽ	मा • • •	ऽ	न	•	ले	ऽ
०				१३			
सांरेंसांसां –	—	सां ध	—	सां ध –	सां	ध प प – –	प ग प रे
प्या•• • ऽ	ऽ	री	ऽ	की • ऽ	•	ने • • ऽ ऽ	•• ••
×				५			
प ग	ध प	सां ध	सां	—	सां सां– – –	सां सां– – –	सां रें – – –
ज	त	न	क	ऽ	• • ऽऽऽ	• • ऽऽऽ	• • ऽऽऽ
०				१३			
सांरेंसांसां –	सां ध	पप – पध –	धग – प –				
रो • • • ऽ	र	•• ऽ •• ऽ	•• ऽ • ऽ				

२. राग जैमिनि-कल्याण

ख्याल—विलम्बित एकताल

गीत—६

स्थायी—कै (कह) सखी, कैसे के करिये, जी भरिये, जिन ऐसे लालन के संग।
अन्तरा—सुन री सखी मैं का कहूं तोसे, उनही के जानत ढंग ॥

स्थायी

०		९		११	
रे	प	रे			
ग नि – ग ग –	— रे	ग	ग – – ग रे	निसारेरेसानिसा –	— — नि ध
के • ऽ • • ऽ	ऽ स	खी	• ऽ ऽ • •	कै • • • • • • ऽ	ऽ ऽ से के

×				५	
				सा सा	नि नि
सा – सानिधनि – –	— ध	प	— — मि प —	रे नि – नि नि	ध — मि —
क ऽ • • • • ऽऽ	ऽ रि	ये	ऽ ऽ • • ऽ	जी • ऽ • •	• ऽ भ ऽ

०		९		११	
ध सा	– – – नि सा	सा	गि सा – – –	रे नि — नि रे	— — रे ग
रि •	ऽ ऽ ऽ • •	ये	• • ऽ ऽ ऽ	जि • ऽ • •	ऽ ऽ • •

×		०		५	
			रे		
सा रे नि सा –	—	ग नि – रे नि –	ग ग – – –	प रे — — —	रे ग — —
न • • • ऽ	ऽ	ऐ • ऽ से • ऽ	• • ऽ ऽ ऽ	ला • ऽ ऽ ऽ	ल • ऽ ऽ

०		९		११	
रे	रे	निं प प प	मि	ग	
ग	ग ग – – –	मि मि मि मि	ग	प	— — मि प —
न	• • ऽ ऽ ऽ	के • • •	•	•	ऽ ऽ • • ऽ

×		०		५	
	प	ग रे गप	गम	नि	
प ध प प – – –	रे	रे ग ग म	ग रे	ध नि	सा
• • • • ऽ ऽ ऽ	•	सं • • •	• •	ग •	•

अंतरा

०		६		११	
		मी मी		ध	
		ग ग	मीं – नि ध नि मीं	सां	– – – सां सां
		सु न	री ऽ स • • •	खी	ऽ ऽ ऽ • •

×		०		५	
					नि
सां	– – नि सां –	निसांरें रेंसांनि सां–	– – नि ध	सां–सांनि धनि– –	– – ध नि
मैं	ऽ ऽ • • ऽ	का• • • • • • ऽ	ऽ ऽ क हूँ	तोऽ• • • • ऽ ऽ	ऽ ऽ • •

०		६		११	
		सां मी		प	मींमीं धध
पधमींप – – –	—	प ग	– – प ध मीं प –	रे	मपप,निनिध,मपनिसां-
से • • • ऽ ऽ ऽ	ऽ	उ न	ऽ ऽ ही • • • ऽ	के	जा••,•••,••••ऽ

×		०		५	
	प	ग रे गप	गम	नि	
– – ध प	रे	रे ग ग म	ग रे	ध नि	सा
ऽ ऽ न त	ढं	• • • •	• •	ग •	•

———

३. राग बिहाग

ख्याल—तिलवाड़ा

गीत

स्थायी—कैसे सुख सोवे नींदरिया, श्याम मूरत चित चढ़ी।

अन्तरा—सोच सोच सदारंग अकुलाये, या विध गात परी ॥

स्थायी

०				१३			
				प प ग म	प ग – – रे	नि सा	प ग म
				कै से	से ऽ ऽ •	• •	सु ख
×				५			
प ग	—	रे नि – सा –	सा	सा – सा नि	प नि – –	– – सा –	नि रे सा
सो	ऽ	• • ऽ • ऽ	वे	नीं ऽ • •	• • ऽ ऽ	ऽ ऽ • ऽ	द रि
०				१३			
रे नि	—	प ध मं प –	—	ग सा	म	प ग	म
या	ऽ	• • • • ऽ	ऽ	श्या	म	मू	र
×				५			
म – म ग	सा ग – –	—	म ग	ग प	—	मंप –	—
त ऽ • •	• • ऽ ऽ	ऽ	चि •	त	ऽ	• • ऽ	ऽ
०				१३			
सां नि रें नि सां	रें नि	ध मं प – – मं	ग म	म ग	रे नि सा – –	रे नि – – –	सा म
च • • • •	ढ़ी	• • • ऽ ऽ •	• •	कै	से • • ऽ ऽ	• • ऽ ऽ ऽ	सु ख

अंतरा

०				१३			
				(सां) प	– नि	सां	– – नि सां–
				सो	ऽ च	सौं	ऽ ऽ• •ऽ

×				५			
सां	—	नि सां – – –	—	सांनि रेंसां नि–	—	सां – (प) नि नि	–सां रें सां
च	ऽ	• • ऽ ऽ ऽ	ऽ	स• •• दाऽ	ऽ	• ऽ • •	ऽ• • रं

०				१३			
नि	धमंप –	(ध) ग म	प ध गं म	(प) ग	—	रे नि सा – –	सा
ग	••• ऽ	• •	अ• कु•	ला	ऽ	• • • • •	ये

×				५			
(ग) नि सा	म ग प म	पग –	—	(प) ग	म ग	(ग) प	सांनिरेंनिसां
या •	बि • • •	ध• ऽ	ऽ	गा	• •	त	प • •• •

०				५			
(रें) नि	—	ध मं प– ऽमं	ग म				
री	ऽ	• • •ऽ ऽ•	• •				

४. राग सारंग

ख्याल--विलम्बित एकताल

गीत

स्थायी—मैं समझ्यो निरधार सब जग काचो कांच सो।

अन्तरा—एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखिये जहां।।

स्थायी

०		६		०		११			
						रे म प - - - म रे म	रेसानि॒ ॅपुसा नि॒ रेस		
						मैं • • ऽऽऽ • • •	• • • • स • म •		

×		०		५			
म रे	—	म - म रे,सारे - -	- - - म रे - सा -	रे म रे सा रे म प नि	सां — नि ॅ प		
झ्यो	ऽ	• ऽ • • • • ऽऽ	ऽऽऽ • निऽ र ऽ	धा • • • • • • •	• ऽ • •		

०		६				११	
नि ॅ नि ॅ प म प - -	प म म - रे - (म)	सा रे (म म)	नि॒ सा (म)			सारेरेसा-सा,साम	म रे - रे,रे प प म
रऽ • • • • ऽऽ	• • • ऽ • ऽ	• •	• •			स • • • ऽ •, ब •	• • ऽ •,ज • • •

×		०		५			
-मपनि ॅनि ॅप-प	म पनिसांरें - मं -	(मं रें) रें मं	(मं सां) सां रें		(मं नि) नि सां	सांरेंनिसां - - - नि ॅ	
ऽ • ग • • • ऽ •	का • • • • ऽ • ऽ	चो •	• •		• •	कां • • • ऽऽऽ च	

०		६				११	
नि ॅसांनि ॅनि ॅ---प	म प म म - - - रें	सा रे (म म)	नि॒ सा (म)				
सो • • • ऽऽऽ •	• • • • ऽऽऽ •	• •	• •				

अन्तरा

०		६		११	
		म	— प निं प	नि सां — —	— — निसां —
		ए	ऽ कै • •	रू • ऽ ऽ	ऽ ऽ • • ऽ

×		०		५	
रें		नि निं	सां	मं	
नि सां - -	- - - प	म प	नि सां	रें मं	- मं
प • ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ अ	पा •	• •	• •	ऽ •

०		६		११	
मं मं		मं			मं
सां रें	- रें	नि सां	- सां	रें सां	रें नि
• •	ऽ •	• •	ऽ र	प्र ति	विं •

×		०		५	
			मं	सां रें	नि निं
सां सां - - रें	निं निं - प -	निं निं पमपनिसांरें	मं सां	रें नि	सां प
वि त ऽ ऽ •	ल • ऽ खि ऽ	ए • • • • • • •	• •	• •	• •

०		६		११	
प निं	म म	म म	म		
निं म	प - - रे	सा रे	नि सा		
• •	• ऽ ऽ ज	हाँ •	• •		

शुद्धि-पत्र

प्रस्तावना

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२०	रे ग प ग, रे सा	रे ग प ग, रे सा
५	२२	ग प ग–रे, सा	ग प ग रे–, सा
८	१६	उच्यो	उच्चो
६	७	करूणोष्विष्टा	करुणोष्विष्टा
१५	१	मातंग	मतंग
१७	३१	स्वरो	स्वरौ
२१	२५	शुद्धच्छायालगभिज्ञः	शुद्धच्छायालगाभिज्ञः
२१	२५	सर्वकाकविशेषवित्	सर्वकाकुविशेषवित्

मूल पुस्तक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२०	सा रे म प सा – – प	सा रे म प सां – –प,
२	४	प ग रे ग सा रे म	प ग रे ग सा रे म
२	७	रे ग रे रे – ग – सा	रे ग रे रे – ग – सा
४	१०	नि सां, प नि	नि सां, प नि
७	६	सां – | म ग |	सां – | म ऽ |
८	५	म ग | अ ट |	प म | अ ट |
१२	१६	ध नि सा	ध नि सा
१७	७	सा नी ध धनी – |	सा नी ध धनी – |

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१३	नी - - - ध नी |	नी - - - ध नी |
१८	१०	रे म ग - - |	रे म ग - - |
२३	६	सां सां - नी ध प म ग | दै ० ऽ या ० ० ० ० |	सां सां - नी ध प म ग | दै ० ऽ ० या ० ० ० |

इससे आगे वाली मात्रा में भी इसी प्रकार शुद्धि कर ली जाए।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	३	ग रे ग प ध नी ध प।	ग रे ग प ध नी ध प
२५	३	रे सां; ग रे - ग प म | दै ० ऽ या ० क |	रे सा, ग रे - ग प म , दै ० ऽ या ० क
२६	१	पं मं गं रें सा नी ध प।	पं मं गं रें सां नी ध प
२६	८	गं - - पं मं गं रे सा।	गं - - पं मं गं रें सां
२६	८	सां गी ध प म ग रे सा।	सां नी ध प म ग रे सा
२६	११	पं मं - पं मं ग रें सां।	पं पं - पं मं गं रें सां
२७	२१	नीं | प | प | ० |	नीं | प | ० | ० |
२८	५	रे सा। - ।	रे सा। निसा।
२९	३	सागं। गंरें। सांनि। धप। नग।	सागं। गंरें। सांनि। धप। मग
३०	१८	सां | - नी | ग्वा | ऽ ० |	सां | - | ग्वा | ऽ |
३१	१	धि सा ध निं रे	नि सा ध निं रे
३१	२१	नि सा ध नि रे	नि सा ध निं रे
३२	१६	रे सा ग नि सा ध निं रे	सा ग नि सा ध निं रे
३२	१६	रे ग सा ध - निं रे	रे ग सा ध - निं रे
३२	१८	रे सा सा निं	रे सा सा निं
३४	१२	नि सां रे ग	नि सा रे ग
३४	१७	म सां सां नि	म सां सां निं
३७	६	नि सा ध निं।	नि सा ध निं।
३७	११	- सा रे ध निं।	- सा रे ध निं।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८	१	–सा रे धु निँ	–सा रे धु निँ
३८	५	रे सा – रे धु नि	रे सा – रे धु निँ
३६	१	– – ध नि।	– – ध निँ।
३६	११	सा – रे – ग धु।	सा ग – रे धु निँ
३६	१३	निँध धुप धप पम।	नि ध धप धप पम।
३६	१५	– रे – ग धु।	ग – रे धु निँ
४०	३	– – धु नि।	– – धु निँ
४०	५	निँ ध निँ।	म निँ ध निँ
४०	७	– – रे धु निँ	– – रे धु निँ
४०	६	रें 'गँ रें, सां रें सां, नि सां।	रें 'गँ रें, सां रें सां, निँ सां
४०	१३	रें 'गँ रें, सां रें सां, नि सां। नि	रें 'गँ रें, सां रें सां, निँ सां। निँ
४०	१५	रे गँ रे – – – ग रे।	रे गँ रे – – – गँ रे।
४०	२०	प ध म – प ग – म | ० से ऽ क टे दि ऽ न |	प ध म – प ग – म | ० से क ऽ टे दि ऽ न |
४३	४	रें गँ रे सां नि सा, रे – |	रे गँ रे सा नि सा, रे – ल ऽ |
४३	१४	सा – रे धु निँ | ० ऽमा ० ई |	सा – रे धु निँ रा ऽमा ० ई
४४	१०	म रे द | म गँ रे |	म रे द | म गँ र |
४४	१५	ध र | नि प |	ध र | निँ प |
४७	७	ग रे, म ग, प म, ध प	ग रे, प म, ध प
४६	६	| म म गँ गँ गँ ० ० ० |	| म गँ ० |

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६	१५	| ध म • | म • |	ध म ० | ग ० |
४६	१७	| सां रे रें - - भ ० ऽ ऽ | सां ई |	सां रें भ | सां ई |
५३	१३	धमंपम मरेसासा	धपमंप ममरेसा
५४	१४	प जु | प च पधमंप ० ० ० ०	पप जुच | प ० पधमंप ० ० ० ०
५५	१२	म - मंनिध |	मं - मंनि ध |
५६	१२	म - पं - धमंप - - ।	मं - प - धमंप - - म ।
५६	१५	पधमंप - |	पधमंप - |
५६	१६	सा रे नि सा |	सारे निसा - |
५६	१७	पमं धमं पसां निरें निसां |	पमं धमं प, सां नि रेंनि सां |
५७	६	रें - रेंसां नीसा - - |	रें - रेंसां नीसां - - |
५७	६	-धपमंप - - ।	ध- धपमंप - - ।
५७	१०	मं-पं - धं मं पं - - ।	मं - पं - धं मं पं - - ।
५८	६	ध नि सा ध च ० ले ऐ |	ध नि सां ध च ले ० ऐ |
५६	१	मंपधनिसां - - रे ।	मंप ध निसां - - रें ।

६० ग्यारहवीं, बारहवीं, चौदहवीं, सोलहवीं, अट्ठारहवीं पंक्तियों में ताल के चिह्न इस क्रम में दिए हैं—

६, ११, ०, ५। उन्हें इस प्रकार शुद्ध किया जाए— ०, ६, ११, ×।

६१ १४ सारें निसा, पध मंप, सारे निसां, पंधं मं पं। सारे निसा, पध मंप, सारें निसां, पंधं मंपं

६१ १४ मंमं रेंसां, सासा धप, मम रेसा, मम रेसा । मं मं रेंसां, सांसां धप, मम रेसा, मम रेसा।

६२ ऊपर से नीचे को चौथा ताल चिह्न ६ की बजाय ११ होगा।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	१२	नी॑ध | प मी | क रे | रे • |	नी॑ ध | प मी क • | रे •
६३	१७	नी॑ नी॑ ध | — | ध | — | प्या | ऽ | रा | क |	नी॑ नी॑ ध | — | ध | — प्या | ऽ | रा | ऽ
६४	६	म म । रे म । रेसा ।	म म । रेसा । ऩिसा
६५	७	म प । ध प ।	मैं प । ध प ।
६६	६	नी ध | — | — | — | — | — | बा | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |	नी ध | — | — | — | प | — बा | ऽ | ऽ | ऽ | • | ऽ
७१	१८	प धृ नि॑ – प, सां	प धँ नि॑ – प, सां ।
७१	२३	प सां सा नि॑, नि रें रें सां, रें सा (नि॑)	प सां सां नि॑, नि॑ रें रें सां, रें सां (नि॑)
७३	१०	म प नि॑ म, नि॑ नि॑ प म गँ म प गँ, प म गँ म	म प नि॑ म, नि॑ प प म गँ म प गँ, प गँ मम
७४	२२	म | रे | प | म | नी॑ | धँ | हां | रे | • | • | • | • |	म | रे | प | म | नी॑ | प हां | • | • | • | • | •
७६	१	प | धँ प | • | • • |	प | नि॑ प • | • •
७६	१७	मं नि॑ सां रें | गँ | • • • | • |	मं नि॑ सां | रें गँ • • | • •
८०	२	सां | रें | ऽ | ऽ |	नि॑ सां | — • • | ऽ
८४	५	प धृँ ∿∿ प,	प धँ ∿∿ प,
८५	५	मं सां – गँ ∿∿,	म सां – गँ ∿∿,

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८७	१५	धँ प म म प सां निँ सां ० ० ० ० ह ० र ०	धँ प प म प सां निँ सां ० ० ० ० ह ० र ०
८८	१०	धँप मम पसां निँसां | – –,प धँप पम–पधँ	धँप पम पसां निँसा | – –, प धँप पम - पधँ
९१	१	। रें मं पं पं म ।	। रें मं पं पं धँ ।
९५	१५	मं 'गँ रें सां, सा निँ धँ प	मं 'गँ रें सां, सां निँ धँ प
९५	१५	सां निँ धँ प, म 'गँ रें सां	सां निँ धँ प, मं 'गँ रें सां
९६	१६	निँ धँ । — । सां । धँ ।	निँ धँ । — । सां । सां ।
९७	१२	प न । रे म ।	प म । रे म ।
९७	१४	रें । मं । प । — ।	रें । मं । पं । — ।
९७	१८	सां 'गँ । रे सां ।	सां 'गँ । रें सां ।
९९	२१	म | म म | ना | दि दि |	म | म म | ना | दि रि |
१०१	११	प धँ | म | प | सां सां | दा ० | नी | नी | दि र |	प धँ | म | प | सां सां दा ० | नी | ना | दि र
१०२	४	सां | सां | ता | ना |	सां | सां | त | न |

अन्तरे में जहाँ-जहाँ 'ताना' लिखा है, वहाँ 'तन' कर लें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०६	३-४	गँ सा | — | या | ऽ |	गँ सा | — | यो | ऽ |
११०	१२	रे सा नि सा	रे रे नि सा
११५	७	'गँ – – म ।	'गँ – – म ।
११५	७	सां – – गँम | त ऽ ऽ न० |	सां – – गँम | ई ऽ ऽ रु० |

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११७	१	म – प ॅग – म / य ऽ न को ऽ न	प निॅ प ॅग – म, / य • न को ऽ न
११८	६	रें सां नि सां, 'ॅग रें सां रें	रें सां नि सां, 'ॅग रें सां रें
१२१	१८	नी सां / सां | ध | नी | / ब | ड़ी | भो |	ध | निॅ | सां | / ब | ड़ी | भो |
१२४	११	निॅ निॅ | प निॅ / स घ | न	निॅ निॅ | प निॅ | / स घ | न ब |
१२५	११	म | ॅग | प | / यां | • | फू |	म | — | प | / यां | ऽ | फू |
१२६	८	ॅग / नीॅ | — | प | — / • | ऽ | ए | ऽ	निॅ / ॅग | — | म | — / • | ऽ | ए | ऽ
१२८	६	ॅग | ॅग | म | प | नि | / ब | र | न | ब | र |	म | म. | प | प | सां / ब | र | न | ब | र
१२८	८	म | — | म | म | / चा | ऽ | त | क |	म | — | म | ग | / चा | ऽ | त | क |
१३५	१४	'ॅग / नीॅ सा – – | / स • ऽ ऽ |	'ॅग / नीॅ सां – – | / स • ऽ ऽ |
१३६	८	नी / सां | / ल |	नीॅ / 'ॅगनीॅ सां – – / ल • • ऽ ऽ
१३६	८	नीॅ – सां – – धॅ – नीॅ / • ऽ • ऽ ऽ र ऽ न	धॅ / नीॅ – सां – – धॅ – नीॅ / • ऽ ऽ ऽ ऽ र ऽ न

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	१२	ध॑	नी॑ / ध॑
१४३	६	गंनि॑ / सां / या	गॅं नि॑ / सां / या

ऐसे ही दसवीं पंक्ति में भी शुद्धि कर लें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४४	१७	सा गॅं सां नि॑ सां नि॑ धॅं नि॑।	सां गॅं सां नि॑ सां नि॑ धॅ नि॑
१४५	३	सां — — —, गॅं — सां मं।	सां — — —, गॅं — सां गॅं।
१४६	३	म धॅ म गॅ, म नि॑ धॅ —।	गॅ धॅ म गॅ, म नि॑ धॅ —
१४६	१३	धॅ म गॅ म, नि॑ धॅ म गॅ।	धॅ म गॅ म, नि॑ धॅ म धॅ।
१४९	१	नि॑ सां। गॅ सा।	नि॑ सा। गॅ सा।
१४९		ध। नि॑।	धॅ। नि॑।
१५१	१	मि॑ गॅं। गॅ सा।	नि॑ गॅं। गॅ सा।
१५२	४	सा नि॑ नि॑। गॅ सा सा।	सा नि॑ नि॑। गॅ सा सा।
१५४	१८	म / ठी ¦ ऽ ¦ म / ग	म / ठी ¦ गॅ / • ¦ म / ग
१५५	४	सां / है ¦ — / ऽ	धॅ / है ¦ — / ऽ
१५६	५	देरे ना तदान्तौ	देरे ना तदानी
१५६	१६	धॅ / या ¦ नी॑ / ली	धॅ / य ¦ नी॑ / ली
१५६	१९	धॅ / त ¦ म / दां ¦ — / ऽ ¦ म / तौ	धॅ / त ¦ म / दा ¦ — / ऽ ¦ म / नी
१५७	९	धॅ / अ ¦ धॅ / व ¦ धॅ / ध	धॅ / अ ¦ म गॅ / व • ¦ म / ध
१५७	१६	गॅ / र ¦ गॅं / ह ¦ म	गॅ / र ¦ गॅं / ह ¦ म / स

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५७	१७	सां | नि॑ सां (गं॑) / ज | • ग	सां नि॑ | सां (गं॑) / ज • | ग
१६०	२	प प म म ग (ग)	प प म ग म (ग)
१६०	६	सां नि सां नि सां	सां नि रें॑ नि सां
१६०	६	प म ग म, ग म प प ग म प म ग म ग म प प म ग म (सा सा सा सा सा सा)	

पृष्ठ १६०–६३ पर मुक्त तानों में जहाँ कहीं रें॑ सा – – आता है, वहाँ रें॑ सा नि॒ सा कर लें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६३	७	मं गं मं मं	मं मं मं गं
१६४	९	म प ग म – (ग) / जि • • ऽ –	म प ग म – (ग) / जि • • य ऽ
१६६	१	| रें॑ |	| रें॑ (ग) |
१६६	२	| सा (धँ) | ग म | धँ |	सा (ध॑) | ग म (प) | धँ (नि)
१६६	६	धँ म ग म – |	धँ प म प – |

पृ० १६६-६८ पर जहाँ-जहाँ धँ और रें॑ पर कोई कण-स्वर नहीं लगे हों, वहाँ-वहाँ (नि)ध॑, (ग)रें॑ कर लिया जाए।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६८	२	म – प म / सोंऽ उ नी |	म – प प (म) / सोंऽ उ नी
१६६	११	ध॑ सां – नी रें॑ सां नी ध॑ प / पिया ऽ • को वे • ख •	ध॑ सां नी रें॑ सां नी ध॑ प / पिया • को वे • ख •

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७२	५	। ग म रे ग रे सा, म म	। ग ग रे ग रे सा, म म ।
१७६	१५	म म रे | ग | ग | ये |	म म रे | ग | गि | ये |
१८१	८	सां ध • सां – | सां – – सां | ध प प – | सां ध – – – | सां | – सां ध प प	
१८२	८	सां सां – – – | सां सां – – – | सां रें – – – | सां सां – – – | सां सां – सां रें – |	
१८५	७	प प प ग म | ग – – रे | कैसे | से ऽ ऽ • |	प प प ग म | ग – – रे | कै • | से ऽ ऽ • |
१८५	१५	रे नि सा – – | रे नि – – – से • • ऽ ऽ | • • ऽ ऽ ऽ |	रे नि सा – – | रे नि – – – • • • ऽ ऽ | से • ऽ ऽ ऽ